RJ-06

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

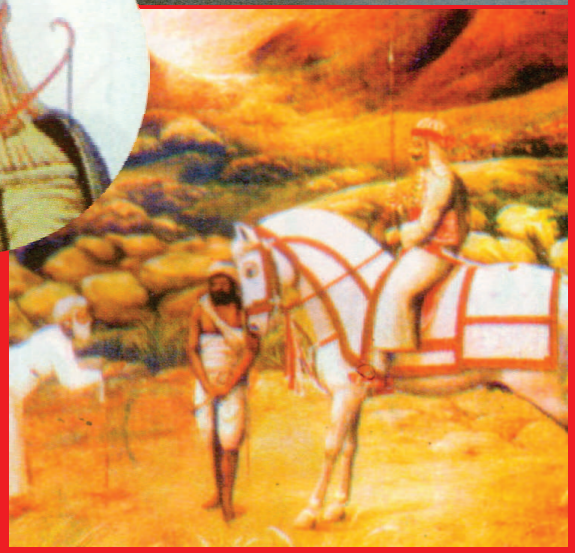

राजस्थानी भासा अर साहित्य रो इतिहास

RJ-06

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

राजस्थानी भासा अर साहित्य रो इतिहास

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

अध्यक्ष

प्रोफेसर (डॉ.) नरेश दाधीच
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक, समन्वयक एवं सदस्य

संयोजक

प्रो. (डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत
परामर्शदाता, राजस्थानी कार्यक्रम
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्याल, कोटा

समन्वयक :

डॉ. मीता शर्मा
सहायक-आचार्य, हिन्दी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सदस्य

1. **डॉ. हीरालाल माहेश्वरी**
   पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
2. **प्रो. (डॉ.) अर्जुनदेव चारण**
   अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
   जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
3. **श्री रघुराजसिंह हाडा**
   पूर्व प्रधानाचार्य, उच्च माध्यमिक विद्यालय (राजस्थान सरकार)
   झालावाड़ (राजस्थान)
4. **डॉ. गोरधनसिंह शेखावत**
   निदेशक, श्री कृष्ण सत्संग बालिका महाविद्यालय
   सीकर (राजस्थान)

सम्पादन एवं पाठ्यक्रम-लेखन

सम्पादक :

प्रो. (डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत
परामर्शदाता, राजस्थानी कार्यक्रम
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

लेखक	इकाई
1. सतपाल जॉगिड शोधार्थी, राजस्थानी विभाग जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर (राज.)	**1, 2, 6**
2. डॉ. रणजीत सिंह राठौड़ राजस्थानी विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर	**3,4,5,13,14**
3. डॉ. उषा कंवर राठौड़ राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर (राज.)	**7,8,9,10,12,15**
4. अतुल 'कनक' कवि-साहित्यकार, कोटा (राज.)	**11**

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. (डॉ.) विनय पाठक **कुलपति** **वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा**	**प्रो. (डॉ.) बी. के. शर्मा** निदेशक (अकादमिक) **संकाय विभाग**	**डॉ. याकूब अली खान** निदेकशक (भाषा) **संकाय विभाग**	**प्रो. पी. के. शर्मा** निदेशक **पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन : **ISBN-**

सर्वाधिकार सुरक्षित : इस सामग्री के किसी भी अंश की वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में 'मिमियाग्राफी' (चक्रमुद्रण) के द्वारा या अन्यथा पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
कुलसचिव, व.म.खु.विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के लिये मुद्रित एवं प्रकाशित।

RJ-06

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

राजस्थानी भासा अर साहित्य रो इतिहास

इकाई सं.	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
	खण्ड–I राजस्थानी भासा	
इकाई 1	राजस्थानी भासा री उत्पत्ति अर विकास	1–6
इकाई 2	राजस्थानी भासा री प्रमुख बोलियां, उपबोलियां अर भौगोलिक क्षेत्र	7–13
इकाई 3	राजस्थानी भासा री व्याकरण री खास विसेसतावां	14–24
इकाई 4	राजस्थानी भासा रा खास छंद अर अलंकार	25–37
इकाई 5	प्रमुख भारतीय लिपियां : देवनागरी अर मुड़िया लिपि	38–48
	खण्ड–II साहित्य रो इतिहास लेखन	
इकाई 6	राजस्थानी साहित्य रो इतिहास लेखन : प्रमुख विद्वान अर मत मतांतर	49–55
इकाई 7	राजस्थानी साहित्य रो आदिकाल अथवा वीरगाथा काल	56–70
इकाई 8	राजस्थानी साहित्य रो मध्यकाल : ख्यात साहित्य	71–81
इकाई 9	राजस्थानी साहित्य रो उत्तर मध्यकाल अथवा रीतिकाल	82–98
इकाई 10	राजस्थानी साहित्य रो आधुनिक काल	99–108
इकाई 11	आज री राजस्थानी कविता	109–132
इकाई 12	राजस्थानी भासा रो महिला लेखन	133–142
	खण्ड–III राजस्थानी लोक साहित्य	
इकाई 13	राजस्थानी भासा रो लोक सहित्य : परिभासा	143–154
इकाई 14	राजस्थानी भासा रो लोक साहित्य : प्रमुख विधावां	155–167
	• वात (कथा)	
	• लोक गाथा	
	• लोकगीत	
	• लोकनाट्य	
इकाई 15	राजस्थानी भासा रा कहावतां अर मुहावरा	168–184

राजस्थानी भासा अर साहित्य रो इतिहास

खण्ड–I

इकाई –1 इण इकाई में राजस्थानी भासा री उत्पत्ति अर विकास री सार रूप में जाणकारी दी गई है। सगळी भारतीय भासावां री जननी संस्कृत है। संस्कृत सूं ही पालि, प्राकृत, अपभ्रंश अर आज री भारतीय भासावां रो जलम हुयौ है। राजस्थानी भासा रो उद्‌भव अपभ्रंश भासा सूं विद्वानां मान्यो है। अपभ्रंश भासा में भी मरूगुजरी अपभ्रंश, नागर अपभ्रंश मांय सूं किणी एक सूं राजस्थानी भासा रो जलम हुयौ है।

इकाई – 2 ईं इकाई में राजस्थानी भासा री प्रमुख बोलियां, उपबोलियां अर वारां भौगोलिक खेतर री जाणकारी पाठकां नै कराई गई है। मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ौती, ढूंढाड़ी, मेवाती, वागड़ी सेखावाटी, माळवी

राजस्थानी भासा री खास बोलियां उपबोलियां है। आं सबां रो विसाळ भौगोलिक खेतर है।

इकाई – 3 राजस्थानी एक जुगांजूनी, समुद्र और सुतंत्र भासा है। इणरो न्यारो व्याकरण, लिपि, सबदकोस, बोलणवाळा जन, विसाळ भू–भाग, भरियोपूरो अर विध विध रो ग्रंथ भण्डार है।

इकाई – 4 राजस्थानी भासा काव्य रा खुद रा मोकळा छंद अर अलंकार है जिणा री जोड़ रा दुनियां री किणी दूजी भासा में कोनी। राजस्थानी छंदां में वरणिक अर मात्रिक दोनूं भांत रा छंदां री छटा देखी जा सकै।

इकाई –5 भासावां रो आधार लिपियां हुया करै। दुनियां री जगळी भासावां री जकी लिखण री विधि है– बो ही लिपि कहीजै। रोमन अंग्रेजी आदि विदेसी लिपियां जगचावी है। भारतीय लिपियां में ब्राह्मी, खरोष्टी, शारदा, देवनागरी प्रमुख गिणीजै। मुड़िया लिपि में राजस्थानी भासा रो लिखित रूप सामी आयौ है। मुड़िया देवनागरी सूं अलग है अर गुप्त लिपि कहीजै। इणनै महाजनी लिपि भी कयौ जावै ।

खण्ड–II

इकाई – 6 ई में इकाई राजस्थानी साहित्य रा इतिहास लेखन बाबत मानीता विद्वानां रा जका मत–मतांतर है – उणरी पूरी विगत मांडी गई है । राजस्थानी भासा का उद्‌भव सूं लैयर अजै लग अलग–अलग काल खण्डां में अर भांत–भांत री विधावां, काव्य सैलियां अर वीरता, भगती सिणगार अर नीति रो अपार साहित्य मिळै–उणरीं निरख परख ई ईकाई में हुई है।

इकाई – 7 राजस्थानी साहित्य रो आदिकाल खण्ड, वीरगाथा काल भी कहीजै। ईं आदिकाल रा लेखन में यूं जो वीरगाथावां मोकळी लिखीजी पण भगती री सगुण अर निरगुण धारावां में भी घणा साहित्य रो सिरजण हुयौ है। इणी भांत नीति अर सिणगार सम्बंधी राजस्थानी साहित्य भी महताऊ है। लोक साहित्य रो सिरजण भी इण जुग में खूब हुयौं। रणमल्ल छंद, बीसलदैव रासो, खुमाणरासो, जयचंद जस चंद्रिका जयचंद रासो, इण समै रा नामी ग्रंथ है जिणां रै कारण ही ई कालखण्ड रो नामकरण वीरगाथा काल हुयौ है। ईं इकाई में आदिकाल री पूरी विगत मंडी है।

इकाई – 8 ईं ईकाई में राजस्थानी साहित्य रा पूर्व मध्यकाल रो अध्ययन हुयौ है। ईं जुग नै भगतीकाल अथवा संत साहित्य काल रो नाम भी दियो गयौ है। भगती काल में सगुण भगत अर निरगुण संतां री लांबी परम्परा निगै आवै । भगती री आं दोनूं धारावां में अलेखूं रचनाकार अणपार साहित्य रच्यौ है जिणरै कारण ईं जुग नै राजस्थानी साहित्य रो 'स्वर्णयुग' भी कयौ जावै है।

मीरांबाई, ओपाजी आढ़ा, ईसरदास, सम्मानबाई, दादूदयाल, जांभोजी, रामस्नेही संतगण, राणी रूंपादे सहजोबाई, दयाबाई आद इणी जुग रा चावा रचनाकार है।

इकाई – 9 इण इकाई में उत्तर मध्यकाल अथवा रीतिकाल रा सम्रद्ध साहित्य अर प्रमुख रचनाकारां री जाणकारी दी गई है। राजस्थानी भासा में रीति काल में सिणगार री रचनावां भी लिखी गई पण साथ ही वीरता, देसभगती, लोकसंगळ, लोक जागरण अर नीति परक रचनावां री भी कमी कोनी।

राजिया रा सोरठा नीति काव्य री दीठ सूं महताऊ है। इणी भांत भानिया अर चकरिया रो नीति काव्य लोक काव्य रै रूप में जगचावो हुयौ । इण जुग में लोक साहित्य अर गद्य साहित्य रो सिरजण भी अणमाप हुयौ।

इकाई–10 इण इकाई में राजस्थानी साहित्य रा आधुनिक काल खण्ड रा सिरजण री विगत विस्तार सूं मांडी गई है। सन् 1850 सूं लै यर आज तक रो काल खण्ड आधुनिक काल कहीजै औ आधुनिक काल काव्य लेखन रै साथै ही गद्य सिरजण रो जुग कहीजै । गद्य री नुंई विधावां रो जलम इण समै सै सूं ज्यादा हुयौ। उपन्यास, कहाणी, निबंध, नाटक, एकांकी, रूपक, डायरी लेखन, रिपोरताज जिसी विधावां राजस्थानी साहित्य रा आधुनिक काल री ही देन है।

इकाई–11 ईं इकाई में आज री राजस्थानी कविता री जातरा रो दरसाव है। आज री राजस्थानी कविता भाव री प्रधानता नै छोड चिंतन नै प्रधानता दी। भारत रा सुतंत्रता संग्राम री अलख जगाई अर 'राष्ट्रीय चेतना' नै आगै बढाई, प्रकृति री गोद छोड जथारथ अर प्रगतिवाद रा मंगळगीत गाया आज री राजस्थानी कविता छंद अर अलंकार री जूनी लीक छोड़ नया प्रयोग कर्‌या अर बदळाव रो चितराम मांड सामाजिक सरोकार निभायौ।

इकाई–12 ई ईकाई में राजस्थानी भासा रा महिला लेखन नै सामी राख'र उणरी समीक्षा हुई है। अजै ताई ई लेखन री उपेक्षा हुई ही । राजस्थानी भासा में महिलावां गद्य अर पद्य री सगळी विधावां में भाव अर विचार प्रधान साहित्य री सिरजण कर रही है। मुक्तक अर प्रबंध दोनूं रूपां में काव्य सामी आवैं। जूनी कथावां नै आज री कहाणी रो रूप मिलयौ अर जथारथवादी नव कहाणी रो लेखन गंभीरता सूं हूं रयौ है।

खण्ड–III

इकाई–13 आ इकाई राजस्थानी भासा रा लोक साहित्य री जाणकारी करावै। लोक साहित्य री परिभासा कांई है? लोक साहित्य किण नै कैंवा ? लोक साहित्य अर अभिजात्य साहित्य में कांई फरक हैं। आं सवालां रा जवाब ईं इकाई में दिया गया है, जिणसूं राजस्थानी लोक साहित्य नै भलीभांत पाठक समझ सकै। लोक साहित्य आमजन री भासा में जन का लोक मानस नै, बींका सोच, हरख उयाव अर दुःख–दरद नै सामी राखै–ईं खातर बो लोक सूं पूरी तरै जुड़यौडौ व्है।

इकाई–14 ईं इकाई में राजस्थानी भासा रा लोक साहित्य री प्रमुख विधावां ज्यूं कथा, गाथा, लोकगीत, लोकनाट्य, कहावतां अर मुहावरां रा भण्डार री विगत मांडी गई है। राजस्थानी लोक साहित्य में हजारू लोक कथावां, गाथांवां, लोकगीत, लोकनाट्य अर कहावतां मुहावरां है। ओ साहित्य कम छप्यौ है अर अपार अंण छप्यौ है। ओ सगळो साहित्य छप्यां सूं ही राजस्थानी भासा री लोक सम्पदा री कूंत करी जा सकै।

इकाई–15 ईं इकाई में राजस्थानी लोक साहित्य री प्रमुख विद्या कहावतां अर मुहावरां री विस्तार सूं निरख–परख हुई है। कहातवां री जूनी परम्परा अर आज तक री विकास जग्तरा रो दरसाव हुयौ है। अतं प्रमुख कहावतां अर मुहावरां रा उदाहरण भी दिया गया है।

bdkbl & 1

jktLFkkuh Hkkl k jh mRifr vj fodkl

bdkbl jk eMk.k

1.0 उद्देस्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 भासा–परिवार परम्परा अर भारतीय आर्य भासावां री ओळखांण

1.3 राजस्थानी भासा रौ उद्भव अर विकास

1.4 राजस्थानी भासा री लिपि

1.5 भासा–विग्यान री दीठ सूं राजस्थानी भासा री समीक्षा

1.6 इकाई रौ सार

1.7 अभ्यास सारू सवाल

1.8 सन्दर्भ पोथ्यां

1-0 mnnL;

इण इकाई रौ खास उद्देस्य –

- विद्यार्थियां नैं राजस्थानी भासा रै उद्भव अर विकास री विगतवार जांणकारी करावणौ है।
- 1200 बरसां रै गरबाजोग इतियास अर सिमरध साहित्य–भण्डार री धणियाणी मायड़भासा राजस्थानी रै उद्भव सूं ले'र विकास तांई री जातरा बाबत हुयौड़ा अध्ययन सूं विद्यार्थियां नै अवगत करावणौ है।
- विद्यार्थियां री राजस्थानी भासा अर साहित्य रै अध्ययन सारू हूंस में अवस बधापो करावणौ है।

1-1 iLrkouk

भासा विग्यानिकां री दीठ सूं राजस्थानी भासा सगळी कसौटियां माथै सौ–टंच खरी उतरण वाळी भासा है। इण भासा कनै 1200 बरसां सूं बत्तौ लाम्बो भासाई अर साहित्यिक इतिहास है। अजै तांई री 15–16 नाममाळावां अर सबदकोस इणरै अखूट सबद सामरथ रौ परिचै करावै। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, पद्मश्री सीताराम लालस जैड़ा विद्वानां री व्याकरण बाबत रचियौड़ी पोथियां राजस्थानी री भासागत सुतंतरता सिद्ध करै। राजस्थानी भासा में अेक सुतंतर भासा रा सगळा गुण मिळै। आं गुणां रै पांण ई डॉ. ग्रियर्सन, अेल. पी. टैस्सीटोरी, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, डॉ. नामवर सिंह, प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी आद विद्वानां राजस्थानी भासा री गिणती घणी सिमरधवान भासावां में करी है।

1-2 Hkkl k&ifjokj ijijk vj Hkkjrh; vk; Hkkl kok jh vkG[kk.k

संसार री सगळी भासावां अठारै भासा–परिवारां में बांटी जावै। भारतीय भासावां भारोपिया या कै भारतीय आर्य–भासा परिवार रै भैळी गिणी जावै। राजस्थानी भासा भारत रै राजस्थान प्रदेस री भासा है। भारतीय आर्य–भासावां रै विकास नै तीन काल खण्डां में बांट्यौ जा सकै–

7.2.1 जूनौ भारतीय आर्य–भासा काल (1500 बरस ईसा पैलां सूं 500 बरस ईसा पैलां तांई)

7.2.2 मध्यकालीन भारतीय आर्य–भासावां (500 बरस ईसा पैलां सूं 1000 ईसा तांई)

7.2.3 आधुनिक भारतीय आर्य–भासावां (1000 ई. सूं अजै तांई)

भारतीय आर्य–भासावां में सैं सूं जूनी भासा वैदिक संस्क्रत है। भासा–सास्त्री मानै कै आदिपुरूस जिकी आर्य भासा बोलता, उणसूं ई वैदिक संस्क्रत री उत्पति हुई। वैदिक संस्क्रत घणी चावी हुई पण जनसाधारण में संस्क्रत आपरै नेम्–कायदां री दोराई रै कारण वैवारिक भासा नीं बण सकी। लोक में अेक नुंई भासा रौ जलम हुयौ जिणरौ नांव प्राक्रत भासा हो। होळै–हौळै इण प्राक्रत सूं पालि अर मागधी बणी। पैली प्राक्रत में पालि अर अर्धमागधी गिणी जावै जदकै दूजी प्राक्रत में सौरसैनी, मागधी अर महारास्ट्री गिणीजै। बगत रै साथै इणा प्राक्रत भासावां में ई साहित–सिरजण हुवण लाग्यौ अर अै साहित्यिक भासावां बणगी। लोक भासा सूं अपभ्रंस भासा रौ जनम हुयौ। विक्रम री छठी सदी सूं लेयर दसवीं –ग्यारहवीं सदी तांई देस रा न्यारा–न्यारा भागां में अपभ्रंस भासा रौ जोर रै'यो, पण भासा कदेई थिर नीं रैवै, वा लगोलग बैंवती रैवै। अपभ्रंस जद व्याकरण रा करड़ा नेम–कायदां में बंधगी तो लोक में इणरा मौकळा भेद पनप्या।

''प्राक्रत चंद्रिका'' में अपभ्रंस रा सताईस भेद गिणाईज्या है–

''ब्राचड़ो लाटवैददर्यावुप नागर नागरौ।

बार्बरावन्तय पांचाल टाक्क मालव कैकयाः।।

कालिंग्य प्राच्य कर्नाटकाअचंय द्राविड़ गोर्जराः।।

सप्तविशव्रूभ्रंशः वैतालादि प्रभेदत।।''

इणी आर्य भासा विकासक्रम सूं राजस्थानी भासा रौ इतियास जुड़ियोड़ौ है।

1-3 jktLFkkuh Hkkl k jk mn~Hko vj fodkl

विक्रम री छठी–सातवीं सदी सूं लेय'र दसवीं– इग्यारवीं सदी तांई देस में ऊपर गिणाईजी अपभ्रंस भासावां रौ घणौ जोर रै'यौ। राजस्थानी भासा रै चलण रौ जिकर पैलपोत 'मरूभासा' नांव सूं जैन मुनि उद्योतन सूरी री रचना 'कुवलयमाळा' में मिळै। वि. सं. 835 में जालौर में रचियौड़ै इण ग्रंथ में उण बगत री चावी अठारै देसी भासावां रा नांव इण भांत दियौड़ा है–

'अप्पा–तुप्पा', भणिरे अहपेच्छउ मारूए तत्तो

'न उ रे भल्लउं', भणिरे अह पेच्छई गुज्जरे अवरे

'अम्हं काडं तुम्हं', भणिरे अह पेच्छई लाडे

'भाइ य भरणी तुब्भे', भणिरे अह मालवे दिट्ठे।''

राजस्थानी भासा उण जुग में मरूभासा नांव सूं लोकप्रचलित हुयौड़ी ही। राजस्थानी भासा री उत्पति किण अपभ्रंस सूं हुई है, इण बाबत विद्वानां में अेकराय नीं है। इण मुजब तीन मानतावां चावी है– पैली, राजस्थानी री उत्पति सौरसैनी अपभ्रंस सूं, दूजी–मरूगुर्जर अपभ्रंस सूं अर तीजी राजस्थानी भासा री उत्पति नागर अपभ्रंस सू मानी जावै।

सौरसैनी अपभ्रंस सूं राजस्थानी भासा री उत्पति मानणिया विद्वानां में डॉ. अेल.पी. टैस्सीटोरी, रिचर्ड पिसल, डॉ. उदयनाराण तिवारी अर डॉ. नामवर सिंह खास है।

डॉ. ग्रियर्सन मुजब राजस्थानी भासा नागरी अपभ्रंस सूं विकसित हुई।

''मरूगुर्जरी कै गुर्जर'' अपभ्रंस सूं राजस्थानी भासा री उत्पति मानण वाळा विद्वानां में श्री केम. एम. मुंशी, अेन. वी. दिवेटिया, मुनि जिनविजय, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी आद खास है।

आं सगळी मानतावां नै दीठ में राखता थकां राजस्थानी भासा री उत्पति वाळै अपभ्रंस री पड़ताळ करां तो 'मरूगुर्जरी' या 'गुर्जर' अपभ्रंस सूं राजस्थानी री उत्पति रौ मत घणौ सारथक लागै। उण बगत रो राजस्थान, गुजरात अर मध्यप्रदेस नै 'गुर्जर देस' नांव सूं जाणीजतौ। 'मरूगुर्जरी' अर गुर्जर' अपभ्रंस रै नांव सूं राजस्थानी

भासा रै जूनै बोलीखेतर बाबत सारथक अनुमान ई हुवै। इणी गुर्जरी अपभ्रंस सूं राजस्थानी भासा रौ उद्‌भव अर विकास हुयौ। भारतीय आर्य भासा परंपरा अर राजस्थानी भासा रै उद्‌भव नैं इण तरै सावळ समझयौ जा सकै–

राजस्थानी भासा रौ 'वंस–व्रक्ष' –

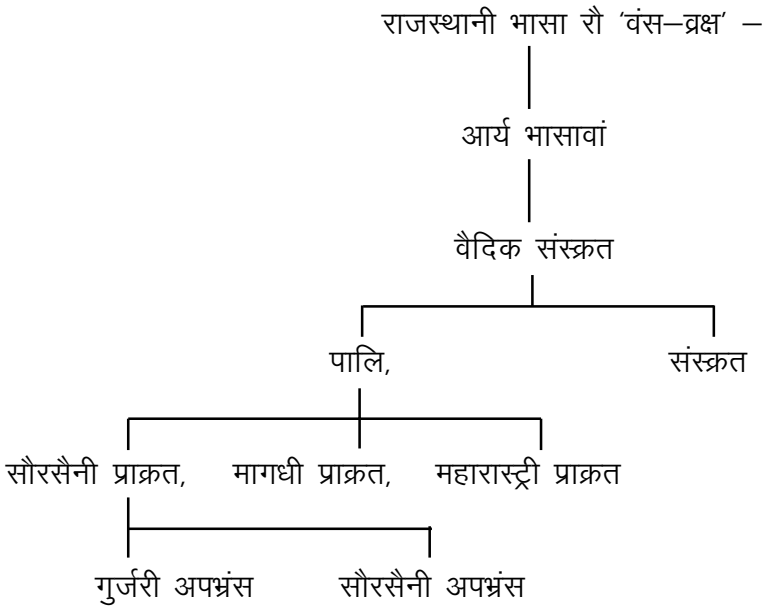

jktLFkkuh fgUnh

राजस्थानी भासा रौ उद्‌भव हुयां पछै विक्रम री दसवीं सदी में आंवता–आंवता बा विकसित रूप धारण कर लियौ। बारवीं सदी तांई पूगतां–पूगतां राजस्थानी भासा अपभ्रंस रै प्रभाव सूं पूरी तरह मुगत होय'नै साहित्यिक भासा रै रूप में घणी चावी हुयगी।

1-4 jktLFkkuh Hkkl k jh fyfi &

राजस्थानी भासा री जूनी लिपि रौ नांव 'मुड़िया' है। इणनै मौडकी, मुड़ियावटी, महाजनी, बणियावटी नांवां सूं ई जाण्यौ जावै। डॉ. मोतीलाल मेनारिया इण लिपि रौ परिचै देंवता थकां लिख्यौ है कै 'इण लिपि में लकीर मांड'नै घसीट रूप में लिख्यौ जावै अर इणमें मात्रावां नीं हुवै।'' आदिकाल अर मध्यकाल रै राजस्थानी साहित्य रै ग्रंथां में इण लिपि रौ प्रयोग देखण नै मिळै।

आधुनिक काल में राजस्थानी भासा दूजी कैई भारतीय भासावां रै ज्यूं 'देवनागरी लिपि' अंगेज लीवी है अर सगळौ सिरजण इणी लिपि में हुवण लाग रै'यौ है।

1-5 Hkkl k&foX;ku jh nhB l s jktLFkkuh jh ij[k

राजस्थानी भासा–साहित्य री सिमरध परंपरा सूं सिद्ध हुवै कै राजस्थानी अेक सुतंतर भासा है। कैई लोग इण भासा बाबत मौकळी भ्रांतियां मन में पाळ राखी है अर इणनै बोलियां रौ समूह मात्र मानै जको उणारै घणै अग्यान रौ सूचक है। किणी ई भासा नै सुतंतर भासा रो दरजो देवण सूं पैलां भासा विग्यान री कसौटियां माथै उणरी परख करी जावै। इण परख में छः तत्वां रै आधार माथै उण भासा री विसेसतावां नै ओळखीजै। अै छः तत्व है। 1. भूभाग 2. जनसंख्यां 3. साहित्य भण्डार 4. व्याकरण 5. सबदकोस 6. लिपि

राजस्थानी भासा रा मानीता विद्वान प्रो. कल्याणसिंह शेखावत आं तत्वां रै आधार माथै कूंत कर्‌यां पछै राजस्थानी भासा नै अेक सुतंतर भासा सिद्ध करी है।

भासा–विग्यान रै आं छः तत्वां रै आधार माथै राजस्थानी भासा री परख इण भांत है–

7-5-1 folkG HkHkkx&

किणी ई प्रांत या कै देस री थरपणा सारू उणरौ भूभाग हुया करै। इणीज भांत भासा सारू ई उणरौ बोलीखेतर हुवणौ घणौ जरूरी मान्यौ जावै अर वा भासा किणी न किणी भूभाग सूं जुड़ियौड़ी हुवणी चाईजै। इण दीठ सूं राजस्थानी भासा नै देख्यौ जावै तो राजस्थानी भासा रौ बोलीखेतर या कै भू–भाग सगळौ राजस्थान अर उणरी सीमावां सूं लागता राज्यां हरियाणा, पंजाब अर मध्यप्रदेस रै कैई जिलां तांई है। क्षेत्रफळ री दीठ सूं राजस्थान भारत रौ सैं सूं बड़ौ राज्य है। बोलीखेतर अर विसाळ भूभाग रै तत्व माथै परख कर्‌यां राजस्थानी भासा न्यारी भासा खरी उतरै।

7-5-2 tul[;k&

जिण भांत सूं जनता रै बिना किणी राज्य अर देस री बणगट संभव नीं है, उणीज भांत जिण भासा नै लोग आपरै रोजीना रा वैवार, कामकाज अर विचार प्रगट करणै में बरतै, उण भासा नै भासा–विग्यान 'जीवंत भासा' रौ दरजो देवै।

भासा नै बोलण वाळा लोगां री संख्या ई किणी भासा री विसाळता नै मापण वाळी कसौटी है। राजस्थानी भासा बोलण वाळा री दीठ सूं विसाळतम भासा है। राजस्थानी रा स्थायी रैवासी, भारत भर में बसियौड़ा राजस्थानी अर विदेसां में रैवणियां राजस्थानी लोगां नै मिलाय'र दस करोड़ सूं बेसी लोग इण भासा नै आपरै रोजीना रा वैवार में बरतै। इण संख्या रै बोलण वाळा री दीठ सूं राजस्थानी भासा भारतीय भासावां में आठवीं अर विस्व भासावां में सोळहवीं ठौड़ राखै।

7-5-3 lkfgR; Hk.Mkj&

किणी ई भासा रौ भौतिक अर परतख रूप साहित्य सूं जाण्यौ जावै। भासा री प्राचीनता, सिमरधता अर परंपरा री औळखांण उण भासा रै साहित्य–भण्डार रै पांण ई करी जा सकै।

राजस्थानी भासा रै साहित्यिक रूप रा अैनांण विक्रम रै नौवैं सईकै सूं ई मिलणा सरू हुय जावै। राजस्थानी भासा रा सरूआती दरसण सिलालेखां, तांबापतरां, ताड़पतरां अर भोजपतरां माथै छपियोड़ै रूप रै मारफत हुवै। राजस्थानी भासा रौ बारह सौ बरसां रौ इतिहास घणौ गरबजोग है। राजस्थानी भासा लोक अर लिखित साहित्य दोनूं कानीं सूं घणी सिमरध है। इणरौ लोक साहित्य सदियां सूं जन–जन रै कंठां रम्योड़ौ है तो दूजी कानीं लिखित साहित्य में साहित्य रा सगळा भाव, प्रव्रतियां अर सैलियां रा लूंठा दरसाव देख्या जा सकै।

राजस्थानी भासा रै आदिकाल अर मध्यकाल री रचनावां में साहित्य रा सगळा रसां वीर, सिणगार अर भगती री त्रिवेणी रा दरसण कर्‌यां जा सकै। राजस्थानी भासा रौ साहित्य सिरजण बगत सूं हमेस पांवडा जोड़. यां राख्या अर बगत परवांण आपरी सैली, प्रव्रति आद में सिरजणगत बदळाव ई करतौ रै'यो है।

राजस्थानी भासा री जूनी रचनावां में सूं फकत चाळीस हजार ग्रंथां नै ई छापणौ संभव हुयौ है, अजेस दो लाख रै लगैटगै जूना ग्रंथ छपण री उडीक में है। ग्रंथां री इण संख्या सूं राजस्थानी भासा रै साहित्य–भण्डार रो अंदाजौ लगायौ जा सकै।

राजस्थानी भासा रै आधुनिक साहित्य में सगळी साहित्यिक विधावां में लूंठौ सिरजण हुय रै'यो है अर समकालीन भारतीय साहित्य में इणरी ठावी ठौड़ बणियौड़ी है।

इण भांत राजस्थानी भासा साहित्य भण्डार री दीठ सूं घणी सिमरध है।

7-5-4 0;kdj.k&

व्याकरण रै बिना भासा नैं 'पांगळी', 'गंवारू', 'उज्जड़', 'अविकसित' मान्यौ जावै अर उणनै भासा रै रूप में स्वीकार नीं करीजै। व्याकरण रै नेम– कायदां रै आधार माथै ई साहित्यकार सिरजण करै।

भारतीय भासावां रै व्याकरण माथै 'संस्क्रत' रौ गै'रो असर मिळै क्यूंकै सगळी भारतीय भासावां री उत्पति ई संस्क्रत सूं मानी जावै। राजस्थानी भासा रै व्याकरण माथै ई संस्क्रत रौ प्रभाव है पण फेर ई इणरी कीं न्यारी

विसेसतावां देखी जा सकै। इणमें सैं सूं खास विसेसता छंदां री विविधता है। राजस्थानी भासा में कैई भांत रा वरणिक अर मात्रिक छंदां रौ प्रयोग करयौ जावै जिणरा न्यारा–न्यारा नियम बणियौड़ा है।

छंदां रा मौकळा भेद–उपभेद है। राजस्थानी रै 'गीत' छंद रा 104 भेद मानया जावै। किणी दूजी भासा रै छंदां में इतरा भेद–उपभेद देखण नैं नीं मिळै। 'राजस्थानी रौ' वयणसगाई' अलंकार ई न्यारी–निरवाळी भांत रौ है।

राजस्थानी साहित्य में काव्य सास्तर अर व्याकरण रै नेम–कायदां बाबत मौकळा ग्रंथां रौ सिरजण हुयौ है जिणमें डिंगल प्रकास, रघुनाथ रूपक गीतां रौ, काव्यालंकार, रघुवरजस प्रकास, भासा–भूसण, डिंगळ गीत, राजस्थानी व्याकरण, मारवाड़ी व्याकरण आद ग्रंथ खास है।

इण विवेचन सूं स्पस्ट हुवै कै राजस्थानी भासा व्याकरणिय दीठ सूं ई अेक सुतंतर अर सबळी भासा है।

5- lcndkl&

भासा रौ सरूप सबदां सूं प्रगट हुया करै। सबदां रौ भण्डार ई किणी भासा री सिमरधता मापण री कसौटी हुवै। इण महताऊ मापदण्ड री दीठ सूं राजस्थानी भासा नै देखी जावै तो इण भासा रै सबद–भण्डार में विसाळता, सिमरधता अर विविधता रा स्पस्ट दरसण कर्‌या जा सकै। अेक ई मिनख, उणरी क्रिया अर स्थिति सूं जुड़ियौड़ा मौकळा पर्यायवाची सबद मिळै जका उण मिनख री न्यारी–न्यारी मनगत नै स्पस्ट कर देवै। राजस्थानी भासा री सबदावळी में चार स्थितियां हुवै–पैली स्थिति में अनाहर सूचक, दूजी स्थिति में सामान्य अरथ, तीजी में सनमान सूचक अर चौथी में पूजनीक अवस्था रौ भाव मिळै। दूजी किणी भासा में इण भांत री विविधता रा दरसाव नीं मिळै। राजस्थान भासा में अेक ई भांत रै काम सारू कैवणै में मौकळी सबद विविधता मिळै। जियां भोजन करण सारू मिनख नै केवण रौ ढाळौ उणरी मिनख रै आदर माथै ई निर्भर करै– रोटी गिट ले, रोटी खा ले, भोजन जीमलो, तासळी अरोगलो आद में न्यारा–न्यारा भाव समायौड़ा है।

राजस्थानी भासा में सबदकोस लेखण परंपरा घणी सिमरध रै'यी है। जूनै बगत में ''नाममाळा, नागराज डिंगळ कोस, हमीर नाममाळा, अवधानमाळा, अनेकार्थी कोस, डिंगळ अेकाक्षरी कोस, डिंगळ कोस'' आद सबदकोसां में राजस्थानी सबदां रौ संकलण मिळै।

डॉ. सीताराम लालस दो लाख दस हजार रै लगैटगै सबदां रै संकलण रौ सबदकोस' राजस्थानी सबद कोस' लिख्यौ जिणरा नौ खण्ड है। इणरै टाळ आचार्य बद्रीप्रसाद साकरिया रौ सबदकोस ई घणौ महताऊ है। सबदकोस री दीठ सूं अजेस ई घणौ काम हुय रै'यो है।

राजस्थानी भासा री लूंठी सबद सम्पदा उणनै विस्व री सिमरधतम भासावां री पांत में ऊभी करणै में सांगोपांग सहायक सिद्ध हुई है।

6- fyfi&

आदिकाल अर मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में सिरजण 'मुड़िया' लिपि में कर्‌यौ जावतौ रै'यो जिणरा मौकळा जूना हस्तलिखित ग्रंथा में देखण नै मिळै। आधुनिक काल आंवता–आंवता राजस्थानी भासा रो सगळौ सिरजण 'देवनागरी लिपि' में हुवण लाग्यौ। देवनागरी लिपि रै सरूप नैं देख'र कैई भारतीय भासावां उणनै 'लिपि' माध्यम' रै रूप में स्वीकार करी, जिणमें राजस्थानी ई अेक भासा है।

भासा विग्यान रै सगळा तत्वां री कसौटी माथै राजस्थानी भासा री परख कर्‌यां पछै सिद्ध हुय जावै कै राजस्थानी सगळी दीठ सूं अेक सिमरध, सुतंतर अर जीवंत भासा है।

1-6 bdkbZ jk Ikj

इण इकाई सूं आपांनै राजस्थानी भासा री उत्पति अर विकास जानरा नैं सावळ समझण में मदत मिळैला। राजस्थानी भासा रौ 1200 बरसां रौ सिमरध इतिहास है। राजस्थानी भासा रौ 'राजस्थानी' नांव आधुनिक है, जको

राजस्थान प्रांत रै नांव माथै थरपीज्यौ। इण भासा रा जूना नाम मरूभासा, डिंगळ, मारू आद हा।

राजस्थानी भासा री परख भासा–विग्यान रै मापदण्डा माथै कर्‌यां पछै इणरी सुतंतरता अर सिमरधता में कठैई सक री गुंजायस नीं रैवै। भासा–विग्यान रा छः तत्वां रै आधार माथै परख करणै सूं राजस्थानी री अेक–अेक विसेसतावां उजागर हुय जावै। आदिकाल अर मध्यकाल री सिमरध साहित्यिक जातरा पछै आधुनिक राजस्थानी साहित्य में वा साहित्यिक सिमरधता लगोलग बण्यौड़ी रै'यी है। आधुनिक राजस्थानी साहित्य ई भासा रै मान में बधायो करण में सांगोपांग सक्षम लागै।

1-7 vH;kl Ik: loky

नीचै दियौड़ा सवाल रा पडूतर सबदां रै लगैटगै देवौ–

1. भारतीय आर्य भासावां नै किता काल खण्डां में बांटयौ जा सकै?
2. 'प्राक्रत चंद्रिका' में अपभ्रंस रा किता भेद गिणाईज्या है?
3. 'कुवळयमाळ' पोथी रा रचयिता रौ नांव, सिरजण बगत अर स्थान बताऔ।
4. राजस्थानी भासा री उत्पति 'मरूगुर्जरी' अपभ्रंस सूं मानण वाळा विद्वानां रा नांव बताऔ।
5. भासा–विग्यान री दीठ सूं किणी भासा री परख करण वाळा तत्व बताऔ।

नीचै दियौड़ा सवालां रा पडू.तर सबदां में देऔ –

1. भारतीय आर्य भासा परंपरा री औळखांण कराऔ।
2. राजस्थानी भासा री उत्पति बाबत सांतरौ आलेख मांडौ।
3. राजस्थानी भासा री लिपि बाबत सारगर्भित विचार माड़ौ।
4. भासा–विग्यान रै तत्व 'जनसंख्या माथै राजस्थानी भासा री परख करौ।
5. राजस्थानी सबद भण्डार अर सबदकोस लेखण परंपरा बाबत आप कांई जाणौ? स्पस्ट करौ।

1-8 lUnHk xzFkk jk foojk

1. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य।
2. प्रो. कल्याणसिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा एवं साहितय।
3. संपादक डॉ. देव कोठारी – राजस्थानी भाषा और उसकी बोलियां ।
4. सीताराम लालस – राजस्थानी सबद कोस (प्रथम भाग री भूमिका)
5. डॉ. एल.पी. टैस्सीटोरी, अनु.–डॉ. नामवर सिंह – पुरानी राजस्थानी

bdkb & 2

jktLFkkuh Hkklk jh ie[k ckfy;k&mickfy;k vj Hkkxkfyd {k=

bdkb jk eMk.k

2.0 उद्देस्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 बोली–उपबोली रौ अरथ

2.3 राजस्थानी भासा री बोलियां बाबत न्यारा–न्यारा विद्वाानां रा वरगीकरण

2.4. राजस्थानी भासा री खास बोलियांः बोलीखेतर अर विसेसतावां

2.4.1 मारवाड़ी

2.4.2 ढूंढाड़ी

2.4.3 हाड़ौती

2.4.4 मेवाती

2.4.5 वागड़ी

2.4.6 मेवाड़

2.4.7 मालवी

2.4.8 सेखावाटी

2.5 इकाई रौ सार

2.6 अभ्यास सारू सवाल

2.7 सन्दर्भ पोथियां रौ विवरौ

2-0 míL;

इण इकाई रौ उद्‌देस्य –

- राजस्थानी भासा री खास–खास बोलियां अर बोलीखेतर सूं विद्यार्थियां नै जाणकारी करावणौ है।
- इणरै साथै ई विद्यार्थियां नै इण बोलियां री विसेसतावां उदाहरणं री मारफत समझाईजैला।
- इण इकाई रै पांण विद्यार्थी बोली–उपबोली रौ अरथाव करता थकां राजस्थानी भासा रै खेतर नै सांगोपांग औळख सकैला।

2-1 iLrkouk

कैई बोलियां रै मेळ सूं भासा बठौ। किणी भासा में बोलियां री अधिकप्ता उणरी सिमरधता रौ अैनांण मान्यौ गयौ है। बोलियां री दीठ सूं राजस्थानी मौकळी सिमरध अर सांवठी भासा है। राजस्थानी भासा नै सगळै राजस्थान प्रांत रा रैवासियां रै साथै–साथै भारत भर में बस्योड़ा प्रवासी राजथानी आपरै रोजीना रै वैवार में बोलै–बरतै। राजस्थानी विस्व री सिमरधतम भासावां में सोहळवीं ठोड़ राखै। इणनै बोलण वाळा री संख्या दस करोड़ रै लगैटगै है। राजस्थानी भासा आपरी माठौठ रै पांण देसी–विदेसी विद्वानां इणरी बोलियां, साहित्य अर व्याकरण माथै महताऊ सोध कर्‌या है अर अजे लग आ परंपरा बणियोड़ी थकी है। विद्वानां रा सोध अर विवेचना सूं स्पस्ट हुवै कै राजस्थानी भासा में कैई बोलियां सामल है जिणमें बोलण री दीठ सूं घणौ फरक नीं मिळै। भासा वैग्यानिक ई कै'वै कै बोली अर उपबोली रौ विभाजन सगळी भासावां में मिळ्या करै। राजस्थानी री बोलियां–उपबोलियां

उणरी सिमरधता अर विकास री सूचक है।

2-2 ckyh&mickyh jk vjFk

भासा वैग्यानिकां री दीठ में भासा रा तीन स्तर बोली, विभासा अर भासा हुवै अर उण रौ सरूआती सरूप 'बोली' मान्यौ जावै। प्रो. कल्याणसिंह शेखावत मुजब 'बोली' रौ अरथ भासा रौ पैलो स्तर है जिणरौ मोखिक स्वरूप किणी अेक निश्चित भौगोलिक खेतर में रैवणियां रैवासियां तांइ सीमित हुवै। डॉ. भोलानाथ तिवारी इणरौ अरथ स्पस्ट करता थकां लिखै कै 'बोली' अर 'उपबोली' उण सीमित खेतर री भासा नै कै'यो जावै, जिणरै बोलण वाळा रौ उच्चारण लगैटगै इकसार हुवै अर जिणमें रूप रचना, वाक्यां रौ बणाव, सबदां अर अरथ सूं जुड़ियोड़ी खास भिन्नता नीं हुवै।

आथूणा भासाविद् अेडवर्ड सेपियर मुजब बगत परवांण कोई खास बोली भासा रै रूप में ई बदळ सकै। आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा री दीठ में भासा अर बोली में घणौ फरक नीं हुवै अर बोलियां ई बरगत रै साथै भासा में बदळण री खिमता राखै।

भासा– विग्यान रौ नेम है कै बोली रौ विकसित स्वरूप ई भासा है। इण अरथां में भासा रौ अविकसित रूप 'बोली' कै'यो जावै। बोली रौ स्वरूप मौखिक हुवण रै कारण उणनै व्याकरण रा नेम–कायदां में नी बांध्यौ जा सकै।

विस्व री सगळी सिमरधतम भासावां बोलियां– उपबोलियां सूं बणियोड़ी है। वा भासा सिमरध मानीजी है जिणमें मौकळी बोलियां–उपबोलियां हुवै। जिण भांत सूं आपणी रास्ट्रभासा हिन्दी में अवधी, मैथिली, ब्रज, खड़ी बोली, भोजपुरी, हरियाणवी, बुदेलखण्डी आद बोलियां है, उणीज भांत राजस्थानी भासा मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, मेवाड़ी हाड़ौती, सेखावटी, मेवाती, मालवी अर वागड़ी बोलियां सूं बणियोड़ी है। जठै तांई राजस्थानी बोलियां में थोड़ै–थोड़ै अंतर रौ सुवाल है, उणरौ पडू.न्तर भासा विग्यान रौ ओ सिद्धान्त देवै कै पन्द्रह–बीस किलोमीटर री दूरी पछै बोली में थोड़ौ'क फरक आवै। इण बाबत लोक में कैई मानतावां ई कैवतां में कैईजै। मौकळी प्रचलित मानतावां में सूं आ कैवत घणी चावी है–

''बारै कोसां बोली पळटै, बन फळ पळटै पाकां।

बरस छतीसां जोबन पळटै, लखण न पळटै लाखा।।''

राजस्थानी भासा रौ जुगां जूनो साहित्य इणरी बोलियां में अेकरूपता रौ सैं सूं लूंठो प्रमाण है। आधुनिक जुग रै राजस्थानी भासा रै साहित्य में भासा रौ 'मानक सरूप बरत्यौ जावै।

सार रूप में भासा वैग्यानिक दीठ सूं परख कर्यां पछै राजस्थानी भासा अपरी न्यारी–न्यारी बोलियां रै ओपतै मेळ सूं बणियोड़ी सिमरध भासा सिद्ध हुवै।

2-3 jkt LFkkuh Hkk lk jh ckfy;k ckcr fo}kuk jkk U;kjk&U;kjk ojxhdj.k

राजस्थानी भासा आपरै सिमरध साहित्य अर सांवठी मठोठ रै कारणै सदीव सूं ई देसी–विदेसी विद्वानां सारू आकरसण रौ केन्द्र रैयी है। राजस्थानी भासा अर साहित्य माथै केन्द्रत मौकळा सोध अर अध्ययन हुया है अर लगोलग हुंवता रैसी। ठणीज भांत राजस्थानी भासा री बोलियां माथै देसी–विदेसी विद्वानां आपरी सोधपरक विवेचना प्रस्तुत करी है। इण अध्ययन री परंपरा नै समझण सारू आपांनै न्यारै–न्यारै विद्वानां री सोधपरक दीठ नै साम्हीं राखणी पड़ैला।

भारतीय भासावां रै तुलनात्मक अर अेतियासिक विवेचना बाबत सैं सूं पैलो ग्रंथ जॉन बीमज् रौ मिळै, जिणमें तीन खण्ड छप्या। इणमें बीमज् राजस्थानी नैं स्वतंत्र भासा नीं मानता थकां भूल सुं हिंदी री बोली कै उपभासा गिण लिवी। इणरै तीस–चाळीस बरसां पछै कर्नन जेम्सटॉड राजस्थानी भासा बाबत खासा सोधपरक जाणकारी भेळी करी पण बगत रै असर सूं वा साम्हीं नीं आ सकी। बीमज् टॉड आद रै पदै रामक्रस्ण गोपाल भंडारकर, रूडोल्फ होरनले, केलॉग आद री कर्योड़ी विचनावां सूं राजस्थानी भासा री बोलियां बाबत घणी

जाणकारी नीं मिळै।

राजस्थानी भासा री बोलियां बाबत पैलो सरावणजोग सोध सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन सन् 1907–1908 में आपरी पोथी 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' में कर्‌यौ। ग्रिर्यसन इण में राजस्थानी भासा री पांच बोलियां गिणाई, जकी इण भांत है–

1. पस्चिम राजस्थानी
2. उत्तरी–पूर्वी राजस्थानी
3. मध्यपूर्वी राजस्थानी
4. दक्षिणी–पूर्वी राजस्थानी–मालवी
5. दक्षिणी राजस्थानी

ग्रियर्सन रै पछै इटली रा रैवासी अर राजस्थानी भासा–साहित्य रा विद्वान डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी राजस्थान अर मालवा री बोलियां रा दो वरग वणांवता थकां विवेचन प्रस्तुत कर्‌यौ। डॉ. टैस्सीटोरी रौ विवेचन इण भांत हैः–

¼1½ ifLpeh jktLFkkuh & सेखावाटी, जोधपुर री खड़ी राजस्थानी, थटकी, थळी, बीकानेरी, बागड़ी खैराड़ी सिरोही री बोलियां, गोडवाड़ी देवड़ावटी।

¼2½ iwohZ jktLFkkuh ¼<<kMh½ & तोरावाटी, खड़ी जयपुरी, काठैड़ा, राजावाटी, अजमेरी, किसनगढ़ी, चौरासी, नागरचाळ, हाड़ोती।

राजस्थानी भासा रा मानीता विद्वान री प्रो. नरोत्तमदास स्वामी मुजब राजस्थानी री बोलियां नै चार वरगां में बांटी जा सकै–ः

1. पस्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी)–जोधपुर, उदयपुर, जैसलमेर, बीकानेर अर सेखावटी खेतर।
2. पूर्वी राजस्थानी (ढूंढ़ाड़ी)– जयपुर अर हाड़ौती खेतर।
3. उत्तरी राजस्थानी –मेवाती, अहीरी बोलियां।
4. दक्षिणी राजस्थानी (मालवी) मालवा अर नीमाड़ री बोलियां।

डॉ. मोतीलाल मेनारिया आपरी पोथी 'राजस्थानी भासा और साहित्य' में राजस्थानी री पांच बोलियां मानता थकां उणारौ उदाहरणां साथै परिचै दरसायौ है। डॉ. मेनारिया रौ बोली वरगीकरण इण भांत है–

1. मारवाड़ी
2. ढूंढाड़ी
3. मालवी
4. मेवाती अर बागड़ी।

सगळै विद्वानां रा सोध अर बोलियां री विसेसतावां नै दीठ में राखतां थकां राजस्थानी भासा री आठ बोलियां मानी जा सकै। अै बोलियां इण भांत है–

1. मारवाड़ी
2. ढूंढ़ाड़ी
3. हाड़ौती
4. मेवाती
5. वागड़ी
6. माळवी सेखावाटी

विद्याथियां री सहायाता सारू इण बोलियां रौ खेतरवार विवरौ नक्सै री मारफत दरसायौ जा रैयो है– राजस्थानी भासा री बोलियां अर बोलीखेतर–

2-4 jktLFkkuh Hkklk jh [kl ckfy;k % ckyh [krj vj fol:lrkok

2-4-1 ekjokMh&

मारवाड़ी राजस्थान रै मारवाड़ खेतर री बोली है। इणरा जूना नांव मरूभासा, मरूगुर्जरी अर डिंगळ है। मारवाड़ी रौ बोली खेतर जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, सिरोही रै साथै–साथै अजमेर–मेरवाड़ा–किसनगढ़, सिंध प्रांत रै थोड़ैक भागां सणैं पंजाब रै दिखणादै हिस्सौ तांई मान्यौ जावै। इण लाम्बे–चौड़े भूभाग में मारवाड़ी बोली जावै। इणरी खास–खास उपबोलियां में थळी, जोधपुर अर बीकानेर गिणी जावै। बोली खेतर अर साहित्य दोवूं दीठ सूं मारवाड़ी राजथानी भासा री सैं सूं सांवठी बोली है। आदिकाल सूं लेय'र अजेलग तांई मारवाड़ी नै राजस्थानी भासा रै 'मानक सरूप' में स्वीकार करीज्यौ है अर आ बोली राजस्थानी री साहित्यिक भासा रै'यी है। सिमरध साहित्यिक परंपरा री धणियाणी इण बोली में डिंगळ जैड़ी लूंठी काव्यसैली, सोरठा जिस्यौ छंद अर मांड राग जैड़ी जगचावी विसेसतावां मिळै। इण बोली में संस्क्रत, प्राक्रत, अपभ्रंस अर अरबी–फारसी रै सबदां रा सहज अर ओपता मेळ ई मिळै।

ekjokMh ckyh jh fol:lrkok&

(अ) सम्बन्धकारक सारू रा, री, रै, रौ बोल्या जावै।

(ब) संयोजक–अव्यव रै रूप में 'नै' कै 'अर' बरतीजै।

(स) ताळव्य 'श' री ठौड़ दन्ती 'स' ई बरत्यौ जावै।

(द) वैदिक 'ळ' इणरी खास ओळखांण है।

ekjokMh ckyh jk nk[kGk &

''सियाळै री हाड कंपावती सरदी। बीं सरदी में तो घर आळा मुरदै नै ई बारै नीं काढ़े मुंह अंधारै आंख्यां में गीढ़ भर्योड़ो, फाट्योड़ी कांबळ ओढ़्योड़ो भीखो चूल्है माथै पाणी तातो करै हो। सामै धापूड़ी ठाष्ठा नैं दूवती चाय री त्यारी करै ही।'' (जूझती जूण–गोपाल जोसी)

2-4-2 <w<kMh &

ढूंढाड़ी बोली ढूंढाड़ी खेतर में बोली जावै। इणनै 'जयपुर' ई कै'यो जावै। ढूंढाड़ी जयपुर रै साथै–साथै किसनगढ़–टोंक रै घणकरै भाग रै अलावै अजमेर–मेरवाड़ा रै उत्तरादै– उगमणै खेतर तांई बोली जावै। इणरौ ढूंढाड़ी नांव इण अंचल रै नांव 'ढूंढाड़' रै आधार माथै यड़्यौ। 'ढूंढाड़ नांवकरण' रौ आधार 'ढूंढ' कै 'ढूंढाक्रति परबत' जको जोबनेर रै कनै रो स्थित है, मान्यौ जावै।

ढूंढाड़ी बोली री उपबोलियां में तोरावाटी, काठैड़, चौरासी, नागरचाळ अर राजावाटी उल्लेखजोग है। इण बोली में गूजराती अर मारवाड़ी रै बरोबर प्रभाव साथै ब्रज री विसेसतावा ई निगै आवै। ढूंढाड़ी बोली साहित्यिक परंपरा री दीठ सूं मौकळी सिमरध रै'य है। संत कवि दादूदयाल अर वांरी सिस्य–परांपरा रा कवियां ढूंढाड़ी बोली में मौकळै साहित्य री सिरजणा करी।

<w<kMh ckyh jh fol:lrkok &

(अ) सम्बन्धकारक सारू का, की, कै बरव्यौ जावै।

(ब) वर्तमानकाल सारू 'छ' भूतकाल सारू 'छी' अर भविस्यकाल सारू स्यूं, स्या, ला, ली आद रौ प्रयोग कर्यो जावै।

<wVkMh ckyh jk uewuk& ''अेक मूंजी कनै थोड़ो–सो धन छो। ऊंनै हर भगत यो ही डर लग्यौ रह छो दुनिया भर का सगळा चार–धाड़ेती म्हारा ई धन पर आंख गाड मेली छै। कांई ठा कै कद आर'र लूट लैला।''

(राजस्थानी भासा और साहित्य– मोतीलाल मेनारिया)

2-4-3 gkMkSrh&

हाड़ौती कोटा, बूंदी अर झालावाड़ खेतर में बोली जावै। इण भूभाग रै नांव 'हाड़ौती खेतर 8 रै आधार माथै ई इण बोली रौ नांवकरण हुयौ। उच्चारण री दीठ सूं हाड़ौती माथै ढूंढाड़ी रौ सांगोपांग असर मिळै। हाड़ौती बोली लोक साहित्य री दीठ सूं मौकळी सिमरध रै'यी है।

(अ) सम्बन्धकारक सारू के, का, की, को, रे, रा, री, रो, णे,णा, णी बरत्या जावै।

(ब) हाड़ौती बोली में 'इ', 'अे' अर 'औ' स्वरां रौ प्रयोग नीं मिळै। जियां' इमली नै हाड़ौती में 'आम्ली' उच्चारित कर्‌यौ जावै। इणीज भांत 'मिनख' नै 'मनख' अनुनासिकता' (.) मिळ, जियां घास–घांस, राखस–रांखस, काच–कांच आद।

हाड़ौती बोली रौ नमूनौ– ''हाड़ौती का लोकनाटक खुल्या आसमान कै नीचै हावै छै, कदी–कदी मंच पै चांदणी ताण दै छै। लीलान् को टेम तो बंद्‌यो छै पण खेल कदीं बी कर्‌या जा सकै, पण करसाणी सूं नचींत होबो जरूरी छै।'' (हाड़ौती का लीला–ख्याल–पूरवी राजस्थान री बोली है।)

2-4-4 eokrh&

मेवाती उत्तर–पूरवी राजस्थान री बोली है। इणरै बोलीखेतर में अलवर, भरतपुर रौ उत्तरादौ–आथूणौ भाग अर हरियाणा रै गुड़गांव रौ दिखणादौ भाग सामल गिणीजै। इण बोली माथै ब्रज अर खड़ीबोली रौ सांगोपांग असर निगै आवै। मेवाती री खास–खास उपबोलियां में कठेर मेवाती, भयाना मेवाती, आरेज मेवाती, नहेड़ा मेवाती, बीघोता मेवाती, अर खड़ी मेवाती गिणी जावै। चरणदासी पंथ राव संत कवियां रौ साहित्य इणी बोली में मिळै।

eokrh jh fo'ks"krkok&

(अ) मेवाती– 'ओकारान्त' बोली है। इणमें 'आकारान्त' संग्यावां अर भूतकालिक 'आकारान्त' क्रियावां 'ओकारन्त' व्है जावै। जियां–भेड़ियो, मैंणो, कागलो, बिटोड़ो आद।

(ब) 'अ' स्वर ध्वनि रौ 'आ', 'इ', 'उ' में बदळाव मेवाती बोली री विसेसता है। जियां–जलसा–जिलासा, खजूर–खिजूर, सरकारी–सिरकारी आद।

(स) 'आकारान्त' सबदां में अेकवचन सूं बहुवचन बणांवती बगत 'अनुस्वार' ( ) 'क', 'न' रौ प्रयोग मिळै। जियां–चेलां, चेलान।

(द) सम्बन्धकारक सारू का, की, के आद बरत्या जावै। मेवाती बोली रौ नमूनौ– (अ) तोलू मैंनू कही ही, वाड़ी तू आयो नांय।''

(स) ''सुपना में छळ ली बन्दी आधी –सी रात,

पिया मेरो चौपड़ कौ खिलारी रै।

तोडूं. चरखा दे दूं तो में आग रचखो मेरी छाती को जळावा रै!''

2-4-5 okxMh

डूंगरपुर अर बांसवाड़ा रौ खेतर वागड़ नांव सूं जाणीजै। इणी रै आधार माथै अखरी बोली रौ नांव 'वागड़ी' थरपीज्यौ। आ मेवाड़ रै दिखणाद अर सूंथ रै उत्तराद में ई बोली जावै। डॉ. ग्रियर्सन अर डॉ. दिनेश आद विद्वान इण बोली नै 'भीली' नांव दियौ। वागड़ी बोली माथै गुजराती रौ खासा प्रभाव निगै आवै। वागड़ी लोक साहित्य री दीठ सूं मौकळी सिमरध है। इण बोली रा साहित्यकारां आधुनिक राजस्थानी साहित्य में सांगोपांग जस कमायौ है।

okxMh jh fo'ks"krkok वागड़ी बोली रौ नमूनौ–''अॅणनै मोटे भागे सभ्यता नी गणतरी मए लई शकाय है जेनूं के मने आजनी फेशन ना परमणो संस्कृति ने बजाय सभ्यता ने संस्कृति नो शेरौ (मुखोटो) पेरावी, नै,

अणगमतेस, वर्ण करवुं पड़ी र्‌यू है।'' (बागड़ नी संस्कृति, पृ.51)

2-4-6 eokMh&

मेवाड़ खेतर रै दिखणी–ऊगमणी भाग नैं टाळ'र सगळै मेवाड़ अर उणरै सीमाड़ै रै प्रदेसां रा कुछेक भागां (नीमच–मध्यप्रदेस) में मेवाड़ी बोली जावै। इणरौ असली रूप मेवाड़ रै गांवां में सुण्यौ जा सकै, जठै आ सुद्ध रूप में बरतीजै। सहरी मेवाड़ी माथै हिन्दी, उर्दू अर अंग्रेजी भासावां रौ असर बधतौ जाय रै'यौ है। मेवाड़ी साहित्यिक दीठ सूं सिमरध परंपरा री धणियाणी रै'यी है। इणी बोली में महाराण कुभाजी (सं. 1490–1525) च्यार नाटकां री सिरजणा करी। उण पछै मेवाड़ी बोली में लूंठा साहित्यकारां री परंपरा सांम्ही आई। इणमें हेमरतन सूरि, किसना आढा, महाराज चतुरसिंह, नाथूसिंह महियारिया, रामसिंह सोलंकी, राणी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत आद उल्लेखजाग नांव है। डॉ. ब्रजमोहन जावलिया मेवाड़ी री दो उपबोलियां पार्वती अर मैदानी गिणाई है।

eokMh cksyh jh fo'ks"krkok&

(अ) मेवाड़ में 'इ–कार' अर 'उ–कार'री ठौड़ 'अ–कार' री प्रव्रति मिळै। जियां–हाजर, मनख, मालम, वराजौ आद।

(ब) भूतकालिक सहायक क्रियावां सारू था, थी, हो अर भविस्यत् कालिक क्रियावां सारू गा, गी, गो रौ प्रयोग कर्‌यो जावै। इणरै टाळ भविस्व्यत्कालिक क्रियावां में प्रसंग मुजब ला, ली, लो ई बरत्या जावै।

(स) मेवाड़ी बोली में सम्बन्धकारक परसरगां रै रूप में का, की, कै रै सागै रा, री, रै, रौ ई प्रयोग मिळै।

eokMh cksyh jk ueuk& ''पोह रो मींनो। ईयां ही ठंड घणी अर आज रा ओळा मेह सूं तो चोगणी व्हैगी। वासदी सुलगाय तावै। टाबर मावों ने नीं छोड़ै। डोकरा डोकरी बैठ्या ''राम–राम'' करता, इन्दर सूं कोप कम करणै री अरदास करै। (मांझल रात, पृ.88)

2-4-7 ekyoh& उज्जैन रै आखती– पाखती रौ इलाकौ मालवा नांव सूं ओळखीजै। इण खेतर में प्रचलित बोली रौ नांव मालवी है। इणरै आथूण में प्रतापगढ़ (राजस्थान), रतलाम (मध्यप्रदेस), दिखण–आथूण में इन्दौर, उत्तर–पिच्छम में नीचम अर उतराद में ग्वालियर रौ थोड़ौ'क हिस्सौ सामल है। मानवी में मारवाड़ी अर ढूंढाड़ी री विसेसतावां देखण नै मिळै, सागै ई सेखावाटी रौ प्रभाव इण बाली रै मीठास में बधेपौ करै। मालवी बोली रै सबद भण्डार माथै मराठी रौ असर ई निगै आवै। इणरी उपबोलियां में नीमाड़ी, उमढवाड़ी, रतलामी, सोंधवाड़ी आद खास है। मालवी लोक साहित्य री दीठ सूं सांगोपांग सिमरध बोली है।

ekyoh cksyh jh fo'ks"krkok&

(अ) काल नै दरसावण सारू 'हो', 'ही' री ठौड़ 'थो', 'थी' रौ प्रयाग कर्‌यौ जावै।

(ब) 'घ' री ठोड़ 'य' कै 'व' ध्वनि मिळै।

(स) 'स' री ठोड़ 'ह' रौ प्रयोग कर्‌यौ जावै। मालवी बोली रौ नमूनौ–

''अेक मूंजी रै कनै थौड़ो माल थो। वणी नैं हदांई ओ डर लाग्यो रेतो थो के आखी दूनिया रा चोर नै डाकू म्हाराज धन पर आंख्या लगायां थका है, नी मालम कही आई नै वी लूटी लेगा।''

2-4-8 'kkokVh&

राजस्थान प्रांत रै ऊगूणै–उत्तरादै खेतर री भोम सेखावाटी नांव सूं औळखी जावै। खेतर रै नांव रै आधार माथै ई अखरी बोली रौ नांव 'सेखावाटी' पड़्‌यौ। आज रा सीकर झुंझुनु अर चुरू रा कुछेक हिस्सै तांई सेखावाटी बोली जावै। ओ खेतर राजस्थान री साहित्यिक अर सांस्कतिक सिमरधता रौ केन्द्र मान्यौ जावै। राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल सूं लेय'र आधुनिक बगत तांई इण खेतर री लूंठी साहित्यिक परंपरा रै'यी है। सेखावाटी बोली में कोई उपबोली नीं मानी जावै। पण इण माथै मारवाड़ी अर ढूंढाड़ी बोली रौ सांगोपांग असर मिळै।

l[kkokVh ckyh jh fol lrkok&

(अ) भविस्यतकालिका क्रिया सारू सा, सी रौ प्रयोग कर्‌यौ जावै।

(ब) सम्बन्ध–कारकां रै वास्तै का, की, के परसरगां रौ प्रयोग करीजै।

ckyh jk ueuk&

''मेरा बाप का नौकर–चाकरां नै रोटी घणी अर मैं भूको मरूं। में उठस्यूं अर मेरै बाप कै कनै जास्यूं अर बै नै केस्यूं बाप, मैं रामजी को पाप कर्‌यौ अर मैं तेरो बेटो कुहवावण जागो कोनी। तेरै नौकरां में अेक मत्रौ बी राख ले।'' (राजस्थान का भासा सर्वेक्षण, पृ.129)

2-5 bdkbZ jk lkj

राजस्थानी री खास–खास बोलियां रौ परिचै कर्‌यां पछै आ बात द्वि हुवै कै राजस्थानी अेक सांवठी भासा है। न्यारै–न्यारै खेतरां में बोलीजण वाळी आं बोलियां रौ मानक रूप ई राजस्थानी हैं अठै औ तथ उजागर करणौ घणौ सहायक रैसी कै राजस्थानी साहित्य में आदिकाल सूं ई भासाई अेकरूपता रा दरसण मिळै।

जालौर रा मुंहता नैणसी, जोधपुर रा कविराजा बांकीदास, बीकानेर रा दयालदास, बूंदी रा महाकवि सूर्यमल्ल मीसण अर अलवर रेवासी रामनाथ कविया रे साहित्यकार राजस्थान में नयारी–न्यारी जिग्यां रा रेवासी हा पण इणारै सिरजण में राजस्थानी भासा रो मानक रूप सांम्ही आवै।

राजस्थानी भासा री बोलियां–उपबोलियां उणरी सिमरधता में बधेपौ करै। राजस्थानी भासा घणी लूंठी अर विस्व री जूनी अर सिमरध भासा में सूं अेक है।

2-6 vH;kl lk: loky

¼v½ uhp fy[;kMk lokyk jk iM-Urj lonk j yxVx nok&

1. राजस्थानी भासा बाबत सोध करण वाळा देसी–विदेसी विद्वानां रो उल्लेख करौ।
2. राजस्थानी भासा री खास–खास बोलियां रा नांव बताऔ।
3. मारवाड़ी बोली राजस्थान री विसेसतावां बताऔ।
4. ढूंढ़ाड़ी बोली राजस्थान रै कुणसै खेतर में बोली जावै।
5. हाड़ौती बोली री विसेसतावां बताऔ।

¼c½ uhp fy[;k lokyk jk iM-Urj lcnk e nokA

1. सर जॉर्ज अब्राहम ग्रिर्यसन रौ भासा सर्वेक्षण स्पस्ट करौ।
2. भासा विग्यानिकां री परिभसावां अर अरथां री सहायता सूं 'बोली' रो अरथ आपरै सबदां में समझावौ।
3. मेवाती बोली बाबत खुलासौ करौ
4. मेवाड़ी बोली रौ बोलीखेतर बतांवता थकां इणरी विसेसतावां रौ खुलासौ करौ।
5. सेखावाटी रै बोलीखेतर अर विसेसतावां नै दरसावै।

2-7 lUnHk ikfFk;k jk foojk

1. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भासा और साहित्य।
2. प्रो. कल्याणसिंह शेखावत – राजस्थानी भासा एवं साहित्य ।
3. सं. डॉ. देव कोठरी – राजस्थानी भासा और उसकी बोलियां ।
4. बी. एल. माली 'अशांत' – राजस्थानी साहित्य का आदिकाल।
5. जागती जोत (मासिम राजस्थानी पत्रिका)।

bdkbl&3

jktLFkkuh Hkkl k jh O;kdj.k jh [kkl folsl rkok

bdkbl jh foxr

3.0 उद्देस्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 राजस्थानी भासा री व्याकरणगत विसेसतावां रौ वरगीकरण

3.2.1 संग्या (संज्ञा) सम्बन्धी विसेसतावां

3.2.2 सरवनाम (सर्वनाम) सम्बन्धी विसेतावां

3.2.3 क्रिया सम्बन्धी विसेसतावां

3.2.4 लिंग सम्बन्धी विसेसतावां

3.2.5 वचन सम्बन्धी विसेसतावां

3.2.6 प्रत्यय सम्बन्धी विसेसतावां

3.2.7 ध्वन्यात्मक अर उदाहरण सम्बन्धी विसेसतावां

3.3 इकाई रौ सार

3.4 अभ्यास रा सवाल

3.5 संदर्भ ग्रन्थ सूची

3-0 míL;

इण इकाई रौ मूळ उद्देस्य राजस्थानी भासा री खास–खास विसेसतावां री विगत नै उजागर करणौ है। राजस्थानी री व्याकरणगत विसेसतावां भी भांत–भांत तरै री है, जिणांरी जांणकारी इण इकाई में प्रस्तुत करी जावैली, अध्ययन रै पछै निम्न बिन्दुवां रे रूप में राजस्थानी री व्याकरणगत विसेसतावां सांमी आसी–

- संग्या सम्बन्धी विसेसतावां
- सर्वनाम सम्बन्धी विसेसतावां
- लिंग सम्बन्धी विसेसतावां
- वचन सम्बन्धी विसेसतावां
- प्रत्यय सम्बन्धी विसेसतावां
- ध्वन्यात्मक सम्बन्धी विसेसतावां

3-1 iLrkouk

भासा मिनख रै विकास रो सब सूं महताऊ साधन है। भासा ही बौ साधन है, जिणरै द्वारा मानखौ आपरा विचारां रौ आदान–प्रदान करै है। किणी भी भासा नै सुसंगगठित रूप में प्रस्तुत करण में उण भासा रौ व्याकरण

खास महत्व राखै है। राजस्थानी रौ व्याकरण वस्तुतः सम्पन्त्र नै सिमरध है। इणरे व्याकरण में संग्या, सरवनाम, लिंग, बचन, प्रत्यय, क्रिया, री खास भोमिका है। अर राजस्थानी में ध्वन्यात्मकता भी देखण मिळै है। राजसथानी री व्याकरण घणी सिमरध है।

3-2 jktLFkkuh Hkkl k jh 0;kdj.kxr fol l rkok jk ojxhdkj.k

राजस्थानी भासा वसतुतः सम्पन्त्र अर सिमरध भासा है। अैतिहासिक दौर सूं पैला मिनख बोलणौ सीख्यों पछै लिखणौ। आखरां री बणावट ई बोली रौ ई मौन रूप है। अनुनासिक ध्वनियां रै खातर नाक रौ खास महत्व है। इण खातर उच्चारण री ध्वनियां री समानता होण रै पछै भी हरैक जात री ध्वनि सम्पति न्यांरी है। भांत–भांत विसेसता रै होवण रे कारण हरैक भासा री व्याकरण आपरौ न्यांरौ अस्तित्व राखै है। राजस्थानी री खास–खास विसेसतावां रौ वरगीकरण निम्न भांत सूं कर्‌यो जा रैया हैः–

3-2-1 lX;k lEcU/kh fol l rkok&

राजस्थानी में संग्या सम्बन्धी विसेसतावां रा रूप इण भांत है–

(1) जातिवाचक संग्या रै विसेसण सबदां रै आगे 'पण' 'पणौ' लगावण सूं भाववाचक संग्या वण जावै है ज्यां–टांबर–टांवरपणौ मिनख–मिनखपण/मिनखपणौ

(2) कदैई– कदैई धातु सबदां रै पछै 'आवट' प्रत्यय लगा'र भाववाचक नाम बण जावै है। ज्यां–

लिखणौ–लिख–लिखावट

(क्रिया) (धातु सबद) (भाववाचक)

(3) कठैई–कठैई विसेसण सबदां रै पछै 'पौ' प्रत्यय लगा'र भाववाचक नाम वण जावै है। ज्यां–

बूढ़ौ–बूढ़ापौ

राजी–राजीपौ

(4) क्रिया रै सबदां सूं भी भाववाची सबद बणै है। ज्यां–

दौड़णौ–दौड़

चालणौ–चाल

हसणौ–हस/हसो

(5) विसेसण सबदां रै पछै 'औ' व्है तो उणनै हय'र उणरी ठौड़ 'आई' प्रत्यय लगाय'र भाववाचक नाम बण जावै है। ज्यां–

मोटौ–मोटाई

भलौ–थलाई

बुरौ–बुराई

3-2-2 ljouke lEcU/kh fol l rkok

(1) सम्बन्धवाची सरवनाम जिण नामां सूं सम्बन्ध राखै है, वै घणखरां उणारै साथै जुड़यां रैवै है। जिणसूं सम्बन्ध्वाची सरवनाम विसेसण री तरै प्रयुक्त होवै है।

ज्यां– जकीबात होणी वां होयेगी

(2) जदै कोई अनिश्चयवाची, सरवनाम रो प्रयोग 'जदै, जकौ, जका, जिण, जी' रूप में होवै है तदै किणी वाक्य रै दूजै उपवाक्य में तद, तिका, तिण, वी, वो, वा, व्है जावै है। ज्यां–

जिकोई आई तिकोई खाई'

(3) किणी व्यक्ति या वस्तु माथै जोर देवण रै खातर पुनरूळि करी जावै है। ज्यां –

चूंतरी माथै कुण उभौ है?

(4) प्राणी, पदारथ अर धरम निर्धारण खातर कीं, कांई, कुंण, कियौ, कयौ, किसौ, जैड़ां सरवनामा रौ प्रयोग व्है है। ज्यां–निमख कांई?

(5) जिण सरवनाम सबदा सूं कैवण वाळां व्यक्ति या वस्तु रौ बोध व्है उणांनै उतम–पुरूष सरवनाम कैयो जावै है। ज्यां–मै, सब, मैं सारा, मै सारा जिणा, मैं सबद उतम पुरूष सरवनाम है।

(6) अनिश्चवाचक सरवनाम कोई रै रूप में डिंगळ में 'को' आद बणै है अर निजवाचक 'आप' के आपां, आपण, आपणौ आद देखण मिळै है।

(7) राजस्थानी रा सरवनाम बहुवचन में इकारान्त व्है जावै है अर स्त्रीलिंग में अकारान्त भी व्है जावै है।

ज्यां– जै, यै नै (बहुवचन)

जा, या (स्त्रीलिंग)

(8) उत्तम पुरूष सरवनाम रा दोय भेद (रूप) मिळै है, जिणमें म्है, आया, इणमें 'म्है' श्रोत निरपेख अर 'आया' श्रोत सापेख है।

(9) सम्बन्धवाचक सरवनाम रै जूंनै रूपां में ट्टिका अर आधुनिक रूपा में सो, ज्यो, ज्यारो, जकौ, जिणरौ आद खास है।

(10) सम्बन्ध वाचक सरवनाम सरल वाक्य में कदैई नीं आवै। वै हमेसा मिश्र (भैळै) वाक्य रै आश्रित विसेसण उपवाक्य में ई आवै है।

ज्यां– जकौ सोवैला वौ खोवैला,

वौ मकान गिर गयो जिणमें थूं रैवतो हो,

(11) कुछैई सरवनाम संग्या रै पैला विसेसेणवत् काम करै है। ज्यां–

बौ जा रैयो है?–बौ मिनख जा रैयो है।

कोई गयो– काई मिनख गयो।

(12) जदै 'कियौ, कयौ, कुंण' रौ प्रयोग नीं रै अरथ में होवै है तदै नै क्रिया विसेसण री तरै प्रयुक्त होवै हो। ज्यां–

औ कांम किसौ दोरौ है?

आ बात आपरै सारू किसी दोरी है?

(13) 'कांई, कंई की, कई, काई, री पुनरूक्ति सूं निराळैपण रौ बोध भी होवै है। ज्यां–

थूं जोधपुर सूं कंई–कंई / कांई–कांई / की–की चीजां लायौ,

अेक घड़ी में कांई रौ कांई / कंई रौ कंई / की रौ की' होय गयौ,

(14) किणी नै आव–आदर देखण खातर संग्या सबदां री कळा सरवनाम सबदां रौ ई बहुवचन में प्रयोग होवै है। ज्यां–

अै लोक चांवा माताजी है।

आज यां रौ भासण व्हैलां,

3-2-3 fØ;k lEcU/kh fo l:l rkok

(1) अकरमक क्रिया में करम नीं रैवै है। सकरमक क्रिया रौ करम करतां री तरै ई नाम, सरवनाम, या विसेसण सबदां में रैवै है।

ज्यां– 'बांप बेटे नै दूथ पायौ,'

इण वाक्य में 'नै' विभक्ति चिन्ह है, 'दूथ' करम है अर 'पायौ' सहायक क्रिया है।

(2) कदैई–कदैई अकरम नै सकरमक क्रियावां रै साथै उणी क्रिया सूं निर्मित भाववाचक नाम सबद करम रै रूप में आवै है।

ज्यां छोकरा रमंत रमै है।

(3) अकरम क्रियावां नै सकरम बणावण खातर उणमें 'आ' जोड़ दियो जावतो हो, ज्यां–

मरणौ–मरणौ

करणौ–कारणौ,

(4) ध्वनिमूळक धातुवां में 'णौ' प्रत्यय लगाय'र बणायी जावै है। अैड़ी धातुवां भारतीय परिवार री सगळी भासावां में मिळै है। अैड़ी धातुवां में धमकणौ, थरथणौ, खटखटाणौ खास है।

(5) राजस्थानी में अरथ प्रकट करण खातर करमवाचक क्रिया आवै है। जदै किणी क्रिया रै करतां रौ पतो नीं व्है तो उणनै प्रकट करण री जरूरत नीं होवै है।

ज्यां –चोर पकड़ियौ गयौ है।

(6) आधुनिक राजस्थानी री भविस्यत काल री क्रिया में 'सी' लाग'र ही रूप बणै है। ज्यां–

करीज– करीजसी,

खवीज– खवीजसी,

(7) किणी भी क्रिया रौ भूतकालिक सुरूप क्रिया नै 'ओकारान्त' या 'यो' लगा'र प्रमुख कर्‌यो जावै है।

ज्यां– देख्यौ (देख)

भागौ (भागै)

(8) राजस्थानी में अकरम नै सकरम बणावणौ निम्न भांत सूं कर्‌यो जावै है।

आव लगा'र –जागणौ–जगावणौ,

आड़ लगा'र –जीवणौ–जीवाड़णौ,

धातु रै उपान्व्य स्वर में बदलाव'र– उतरणौ,

धातु में बदलाव करनै– टूटणौ–तोड़णौ

(9) डिंगल में वरतमान काल दोय तरै सूं व्यक्त कर्‌यों जावै है। अेक तो मूळ क्रिया में 'इ' विभक्ति लगाय'र अर दूजौ मूळ क्रिया रै लारै छै, छूं अर छाँ लगाय'र,

ज्यूं म्हाँरी आँखड़ली फरकै छै, ढ़ोलौ आवसी,

(10) पूर्वकालिक क्रियावां डिंगळ में प्रायः क्रिया रै अंत में 'अ' 'ई' 'एवि' 'नै' 'है' आद प्रत्यय लगाय'र बणायी जावै है। ज्यां–

पालिअ–(पालनकर)

जयर– (जाकर)

लिखनै–(लिखकर)

(11) आग्यारथ क्रियावां रै रूप में डिंगळ में प्रायः मूळ क्रिया रै अंत में 'वै' या 'जै' प्रत्यय जोड़ण सूं वणै है। ज्यूं–

लिखावै, करावै, दिखवै पेखिजै,

(12) क्रिया धातु रै अंत में 'णा' जोड़ण सूं जको सबद बणै है बो क्रिया रौ सामान्य रूप होवै है, ज्यां– आन्णौ, जाणौ, होणौ, सोणौ, पीणौ आद,

3-2-4 fyx lEcU/kh fol l rkok

(1) राजस्थानी में कुछैई अैड़ी संग्यावां है जकी कुछैई पसु, कीड़ा आद जातियां रौ बोध करावै है, वै यातो केवल पुल्लिंग होवै है या कैरूं केवल केवल स्त्रीलिं होवै है। ज्यां–

खटमट– माछली

माछर–पुल्लिंग माखी–स्त्रीलिंग

पंखी चील–

(2) पण, पणौ, पौ, चारौ प आद प्रत्यय लगाय'र बणण वाळां भाववाचक नाम सबद भी पुल्लिंग होवै है। ज्यां–भलपंण, टावरपणौ, बुढ़ापौ, गोलीपौ, मिनखीचारौ, भाईचारौ, मिलाप, आद,

(3) मिनख रै शरीर रा अंगा रा नाम–माथौ, लिलाड., नाक, कान, होठ, गळौ, दांत, अंगूठौ, हाथ, पग आद सैं सबद पुल्लिंग होवै है।

(4) जकां सबदां रै अंत में 'ई' री मात्रा व्है, वै घणखरां सबद स्त्रीलिंग होवै है। ज्यां–नाड़ी, चोटी, खेती, पोथी, दरी, टोपी आद।

(5) काम–धंधा अर जातिवाची ईकारान्त पुल्लिंग सबदां रै आगै अण' प्रत्यय लगावण सूं स्त्रीलिंग सबद बण जावै है। इणमें 'ई' रौ लोप व्है जावै है।

ज्यां– माळी–मालण

पुल्लिंग धोबी– धोबण स्त्रीलिंग

दरजी–दरजण

(6) 'आ' रै अंत में होण वाळी कुछ पुल्लिंग संग्यावां–'आ' रै ठौड़ माथै–इया नै ग्रहण करनै भी स्त्रीलिंग बण जावै है। ज्यां –

बूढ़ा – बूढ़िया

बेटा – बिटिया

कुता – कुतिया

(7) कुछैई पुल्लिंग संग्यावा नै 'आणी' रै योग सूं स्त्रीलिंग जावै है। ज्यां–

पुल्लिंग स्त्रीलिंग

सेठ – सेठाणी

नौकर – नौकराणी

3-2-5 cpu lEcU/kh fol:lrkok

राजस्थानी में एक वचन सूं बहुवचन बणावण रा नियम इण मुजब है–

(1) ओकारान्तक सबदां रै बहुवचन में 'औ' री ठौड़ 'औ' लगाय'र आकारान्त सबद बणाया जावै है। ज्यां–

घोड़ौ–घोड़ा

गधौ– गधा

भालौ–भाला

छोरौ–छोरा

बेटौ–बेटा

(2) आकारान्त अर उकारान्त सबदां में 'वा' रे प्रयोग सूं एकवचन सबद बहुवचन में बदल जावै है। ज्यां– मावा (मा), लूवा वहूवां (बहू)।

(3) दीर्घ या लघु 'इकारान्त' एकवचन सबदां रौ बहुवचन रूपान्तरण 'या' आखर रै प्रयोग सूं व्है जावै है। ज्यां–

कवि–कविया,

रोटी–रोटिया,

(4) आकारान्तक एकवचन रौ बहुवचन रूपान्तरण आकारान्तक रै रूप में होवै है।

ज्यां– नर–नरां, रात–रातां, खेत–खेतां।

(5) कदेई–कदेई कुछ सबद लगाय'र भी बहुवचन प्रकट कर्‌यो जावै है। ज्यां–लोग, गण, जन आद लगाय'र, ज्यां–

राजा – राजा लोग

छात्र – छात्रगण

कवि – कविजन,

(6) कैई ऊकारान्त एकवचन सबदां मांय सूं 'ऊ' री मात्रा आगै करणी पडै., पछै सबद रै आगै 'आं' जोड़ण सूं बहुवचन बणै है। ज्यां–

डाकू– डाकवां

साधू–साधवां

3-2-6 iR;; lEcU/kh folslrkok

(1) आधुनिक राजस्थानी री संग्यावां में 'औ, ई, 'प्रत्यय जोड़ण सूं घणा ई घणा च्यार रूप बाट्यां जा सकै है। ज्यां–सोनिया, सोनो, सोनी,

(2) आणी, णी, ई' प्रत्यय सूं राजस्थानी संग्यावां रै लिंग रूपा री रचना होवै है। ज्यां–

बाणियौ– बणियाड़ी

सेठ – सेठाणी

कुम्हार– कुम्हारी

(3) राजस्थानी में धातुवां सूं भैळौ व्हे'र जकां प्रत्यय संग्या, विसेसण आद सबदां री रचना करै है, वै कृत–प्रत्यय कैहलावै है। कृत प्रत्यय में आई अर आऊ' देखण मिळै है। ज्यां– आईं–पढ़ाई, लिखाई, चढाई,

आऊ–बिकाऊ, टिकाऊ, उड़ाऊ'

(4) राजस्थानी में धातु रै टाळवां सबद संग्या, सरवनाम, विसेसण आद रै आगै लागणियां प्रत्ययां नै 'तन्दित' प्रत्यय कैवै है। इणारों आयौ आई, ई पणौ आद सूं सबद बणै है। ज्यां

आई– मेहाई, मिठाई, सफाई

आपौ– बूढ़ापौ, फुटरापौ

ई– खेती, तेली, चांदनी

पणौ– माई पणौ, मिनखपणौ, टावरपणौ,

3-2-7 /oU;kRed ;k mPpkj.k lEcU/kh&folslrkok

(1) राजस्थानी में सामान्यतया दूजी भासावां में जका कठोर या दीर्घ वरण मान्या गया है उणांरौ सहज रूप सूं प्रयोग व्हीयो है। आ वरणाव रै प्रयोग सूं भासा में ध्वन्यात्मकता आ जावै है। उण वरणां रै प्रयोग सूं नै उणांरै उच्चारण रै समै बै सबद ध्वनि रै रूप में गूंजै है। इण तरै रा वरण दूजी ठौड. नीं मिळै है। ज्यां– ट, ठ, ड, ढ़, ण, अ, ळ।

(2) राजस्थानी भासा री खास ध्वनियां में 'ळ' वरणा रै प्रयोग री भी आपरी विसेसता है। तेलगुअर मराठी में भी इणरौ प्रयोग व्हीयों है। प्रायः 'ळ' नै 'ल' रौ बदलयोड़ौ सुरूप मानण री भूळ करी जावै है, पण वास्तव में अै दोनूं आपरै सुवतंतर प्रयोगां में सुवतंतर अरथ लियां थकां होवै है। ज्यां–

पाळौ–पैदल

पालो– झाड़ी रौ पतो

काळौ–काला

कालौ–पागल

(3) प्राकृत अर अपभ्रंस भासावां रै प्रभाव रै कारण अर मध्यकालीन राजस्थानी भासा रै सबदां रै लारै विसेस रूप सूं 'उ' अर 'इ' री मात्रावां जुड़ जावती है। आ मात्रावां रै प्रयोग सूं अरथ नीं बदलतौ, केवल सबद

रूप अर बोलण रूप अर बोलण रौ सुरूप बदल जावतो हो। ज्यां–

आवियउ, जोवइ, खैंचइ

(4) राजस्थानी भासा में हरैक स्वर री अनुनासिकता स्वीकार करी गयी है। अनुनासिक स्वरां रै उच्चारण में सबदां री ठौडत्र बठैई रैवै है, पण साथै ई कोमल तालु अर 'कौआ' नीचै झुक जावै है, जिणसुं मुख द्वारा निकलण स्वरां में अनुनासिकता आ जावै है। भासा रै आधुनिक प्रयोग में अनुसाकितां नै स्वीकार नीं कर्‌यो गयो है। ज्यां–

आंम रांम कांम

आम राम काम

(5) राजस्थानी भासा में महाप्राण, अघोष वरणां रौ अर्थात् 'घ, झ, ढ़, ध, भ' रौ विसेस उच्चारण अर मौलिक 'ह' रौ विकृत उच्चारण मिळै है।

(6) घोष, महाप्राण 'घ, झ, ढ़, ध, भ' सबद रै आदि में रैहण सूं वै कंठ–नालीय स्पर्श सूं मिलित व्है जावै है। ज्यूं– घोड़ा, झूठ, ढ़ाई धन रै क्रमसः गो'ड़ा, जू'ठ, डा'ई द'न आद,

(7) घोष, महाप्राण सबद रै विचाळै या अंत में रैहण सूं उणांरौ असर सबद रै आदि आखर माथै पड़ै है। ज्यूं–रौ जो'ध, बाध रौ बा'ग सांझ रौ सा'ज,

(8) राजस्थानी भासा में 'ड' अर 'ड' री भी न्यांरी ध्वनियां होवै है। हिन्दी में अै न्यांरी न्यांरी ठौड़ प्रयुक्त होवै हैं राजस्थानी में इणांरौ प्रयोग अे ठौड. भी व्है सकै है। पण अरथ में हर ठौड़ अंतर होवै है। ज्यां–

ड ड.

मोडो(माथै रा बाळ करयौड़ो) मोड़ो (देर व्हैणी)

नाड़ी (पाणी रौ गढ़ौ) नाड़ी (हाथ री नाड़ी)

(9) राजस्थानी भासा रै व्यंजना में मूर्धन्य 'ण',ल, क इणांरी पिंछाण होवै है। 'ल' ध्वनि वैदिक संस्कृत रै पछै राजस्थानी रै अळावा गुजराती, मराठी, पंजाबी अर सिन्धी में भी 'ळ' मिळै है। पण मराठी अर राजस्थानी में औ व्यंजन लिपि री साख प्रमाणित करै है। ज्यां–

माली– (आरथिकस्थिति)

माळी– (जाति विसेस)

खाल– (चमड़ी)

खाळ– बैहणौ (नाळौ)

(10) राजस्थानी भासा में मूर्धन्य 'ष' अर तालुव्य 'श' री ठौड़ दंती 'स' रौ प्रयोग ही देख्यौ जावै है। अर्थात् जठै भी 'स' वरण री ध्वनि रौ प्रयोग वठै केवल दंती 'स' ही आवैला। ज्यां–

भाषा–भासा

प्रकाश–प्रकास

(11) 'ज्ञ' री जकी लिपि ध्वनि है, उणरौ सुवतंतर संकेत नीं है, इणनै 'ग्य' रै रूप में लिख्यो जावै है। ज्यूं–

ज्ञान–ग्यान

विज्ञान–विग्यान

(12) राजस्थानी भासा में 'ऋ' रौ सुवतंतर प्रयोग नीं व्है'र इणनै 'र' व्यंजन रै साथै ई लिख्यो जावै है। 'ऋ' रौ काई लिपि संकेत नीं है। इणरै खातर 'रि' रौ प्रयोग कर्‌यो जावै है। ज्यां–

ऋषि–रिषि

ऋतु –रितु

(13) राजस्थानी भासा में रेफ (ि) रौ प्रयोग नीं होवै है। रेफ या तो पूरे 'र' रै रूप में बदल जावै है। ज्यां– धर्म–धरम कर्म–करम, मूर्ख–मूरख,

(14) 19वीं सदी तांई राजस्थानी भासा में अनुस्वार(–) रौ प्रयोग घणौ व्हैतो हो, जठै जरूरत नीं व्हैती, वठै भी अनुस्वार लगावण री परम्परा देखी जा सकै है, पण अवै इणरौ प्रयोग नीं मिळै है। ज्यां–

रांणी, भीमां, कवरांणी, कांम,

(15) संस्कृत अर हिन्दी रै 'न' 'ह' सूं पूरा होवण वाळां सबदां रौ प्रायः 'ण', 'न' अर 'ख' रै साथै लिख्यौ जावै है। ज्यां–

नयन–नयण, सिंह–सिंघ, रानी–राणी,

(16) राजस्थानी भासा में ह्रास्व 'इ' स्वर उच्चारण री दीठ सूं हिन्दी रै 'इ' सूं न्यारौ है, व्याकरण में इणनै अग्रस्वर कैवै है। राजस्थानी भासा में इणंरा कैई रूप 'अ' रै रूप में बदल जावै है। कदैई 'ह' रौ 'अ' भी लिख्यौ जावै है। ज्यां–

मिनख–मनख, चिमनी–चमणी, सरदार–सिरदार, कुंवर–कंवर

(17) राजस्थानी भासा में 'य' व्यंजन रौ उच्चारण 'ज' रै रूप में भी प्रस्तुत करण री प्रवृति भी देखी जा सकै है। ज्यां –

यश–जस, यशोदा– जसोदा, योद्धा–जोद्धा, यात्रा–जात्रा,

(18) राजस्थानी भासा में मूर्धन्य 'ष' रौ उच्चारण राजस्थानी में प्रायः 'ख' व्है जावै है पण तत्सम सबदां में कठैई–कठैई शुद्ध संस्कृत रौ उच्चारण भी होवै है। ज्यां–

भीष्म–भीखम, पोष–पोख, आसाढ़–आखढ़,

(19) राजस्थानी भासा में कुछैई आखरा माथै जोर देवण सूं अर जोर नीं देवण सूं भी सबद रै अरथ बदल जावै है। ज्यां–

पीर (जोर देवण सूं पीहर)

पीर (जोर नीं देवण सूं पीड़)

नार–(जोर देवण सूं सिध)

नार–(जोर नीं देवण सूं स्त्री)

कद–(जोर देवण सूं कदै)

कद–(जोर नीं देवण सूं कद/लम्बाई)

(20) डिंगळ में विसर्ग (:) रौ प्रयोग नीं होवै अर अनुनासिग (ँ) रौ प्रयोग भी अजै होण लाग्यों हैं प्राचीन

लिख्योड़ां ग्रंथां में अनुनासिक री ठौड़ पर सगळी जगां अनुस्वार ही लिख्यों मिळै है। ज्यां–

दांत, आंत, भांत,

(21) डिंगळ में कैई ठौड़ माथै 'ए' रौ 'है' 'स' रौ 'छ' अर 'व' रौ 'म' भी व्है जावै है। ज्यां–

एक–हेक, एकठा–एकल–हेकल,

तुलसी–तुलछी, सभा– छया, अपसर–अपछर,

हैवर–हैमर, किवाड़ किमाड़, रावण–रामण,

(22) डिंगळ में 'ए' रौ कदैई–कदैई औ' में कदैई–कदैई 'ए' में बदल जावै है।

ज्यूं– तेग–तोग, गेहूं गोहूं, कौरव–कैरव, म्हौल–म्हैल,

(23) डिंगळ में सुखेच्चारण (मुख) रै द्वारा पाद री पूरति खातर किणी स्वर या कदैई 'ह', 'र', 'स', 'ज', रौ प्रयोग भी लिख्यो जावै है। ज्यूं –

रण– आरण, समर–समहर, अंनर–अंहर, सजळ–सरजळ, जतन–सहतन, थांण–अथांण, रण–आरण,

(24) राजस्थानी भासा में संस्कृति–हिन्दी रै नकारान्त सबद घणखरां णकारान्त कर दिया जावै है, अर्थात, 'न' री ठौड़ 'ण' रौ प्रयोग व्है जावै। ज्यां–मान–माण, रानी–राणी, जीवन–जीवण, पानी–पाणी, दीवान–दीवाण,

(25) ह्रास्व नै दीर्घ करण खातर अनुस्वार रौ प्रयोग कर्‌यो जावतो हो। ज्यूं–

कनक–कनक्क, सरस्वती–सरसव्ती, पटक–पटक्क, शक्ति–सगती,

(26) राजस्थानी भासा में छंद मात्रा री सुविधा खातर प्रयुक्त सबद रै किणी आखर नै हटा'र नूंवा सबदां नै जोड़ण सूं भी सबद–रूप में बदलाव व्है जावतो हो।

ज्यूं– समर्थ– समरत्थ, उपकार–उपगार, डाक्टर–डागदर आद।

(27) मोटे तौर पर प्रयत्न–लाघव रै कारण भी कैई सबदां रौ निमाण व्है जावै है। असाधारण लम्बाई नै सम्भाळ नीं सकणै रै कारण लोग सुविधा खातर उणनै छोटो कर देवै है।

ज्यूं–जयरांमजी, चाय–चा, साहब–सा आद।

(28) सादृस्यता रो प्रभाव भी जोड़ी रै सबदां में घणखरौ देखण मिळै है। स्वर्ग–नरक राजस्थानी में इणीज सादृश्य रै प्रभाव रै कारण 'सरग–नरग' व्है गयो है।

इण तरै अै राजस्थानी भासा री व्याकरणगत विसेसतावां है, जकी राजस्थानी भासा नै घणी मजबूत बणावै हैं इण तरै वर्तनी सम्बन्धी, संग्या सम्बन्धी, क्रिया सम्बन्धी, वचन सम्बन्धी, लिंग सम्बन्धी, प्रत्यय सम्बन्धी, ध वन्यात्मकता अर उच्चारण सम्बन्धी विसेसतावां भांत–भतीळी है। इण तरै राजस्थानी भासा अेक सुवतंतर नै सिमरध भासा है।

3-3 bdkbl jk lkj

इण तरै इं इकाई में राजस्थानी भासा री व्याकरणगत विसेसतावां न्यारै–न्यारै रूप में प्रस्तुत व्हीं है। संग्या सम्बन्धी विसेसता में जातिवाचक नै भाव–वाचक संग्या कैया वणावै है। इण रौ चित्रण व्हीयों हैं सरवनाम सम्बन्धी विसेसतावां में सम्बन्धवाची, अनिश्चयवाची, आद रौ चित्रण व्हीयो है। क्रिया सम्बन्धी विसेसतावां में अकरम क्रियावां सूं सकरम क्रिया बणै है, उणरौ सांगोपान चित्रण व्हीयों है। लिंग सम्बन्धी विसेसतावां में पुल्लिंग नै स्त्रीलिंग सबदां रौ बदलाव रौ बरणाव व्हीयौ है। वचन सम्बन्धी विसेसतावां में एकवचन सूं बहुवचन बणावण

रा नियम सम्बन्धी विसेसतावां देखण मिळै है। प्रत्यय सम्बन्धी विसेसतावां में आणी, णी, ई प्रत्यय सूं राजस्थानी भासा री विसेसतावां नै दरसायो गयो है। ध्वन्यात्मक नै उच्चारण सम्बन्धी विसेसतावां में मूर्धन्य 'ष', 'क' रौ चित्रण व्हीयों है। अनुनासिक स्वर, घोष, महाप्राण, रेफ, अनुस्वार, मुख–सुख नकारान्त–णकारान्त, साहश्यता आद रै कारण आयी विसेसतावां नै उजागर करियो गयो है।

3-4 vH;kl jk loky

नीचै लिख्यां सवालां रौ पडूतर दिखो–

1. सरवनाम सम्बन्धी व्याकरण री विसेसतावां नै सोदाहरण समझावौ।
2. क्रिया सम्बन्धी राजस्थानी व्याकरणगत विसेसतावां नै उजागर करो।
3. वचन अर प्रत्यय सम्बन्धी विसेसतावां नै दरसावो।
4. राजस्थानी भासा री ध्वन्यात्मक अर उच्चारण सम्बन्धी विसेसतावां माथै लेख लिखो।
5. राजस्थानी भासा री व्याकरण गत विसेसतावां माथै टिप्पणी लिखो।

3-5 lanHkZ xzUFk lwph

1. सीताराम लालस – राजस्थानी सबद कोस – (भूमिका)।
2. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य।
3. सीताराम लालस – राजस्थानी व्याकरण।
4. डॉ. सोहनदान चारण – राजस्थानी साहित्य व्याकरण रचना।
5. डॉ. कल्याणसिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा एवं साहित्य।
6. रामकरण आसोपा – राजस्थानी व्याकरण।

bdkbl & 4

jktLFkkuh Hkkl k jk [kkl Nn vj vyadkj

bdkbl jk eMk.k

4.0 उद्देस्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 राजस्थानी रा खास छंदा रो वरगीकरण

  4.2.1 मात्रिक छंद अर उणारा भेद

  4.2.2 वरणिक छंद अर उणारा भेद

  4.2.3 राजस्थानी रा खास–खास छंदा रौ वरणाव

4.3 राजस्थानी रा खास अलंकारा रौ वरगीकरण

  4.3.1 सबदालंकार अर उणारां भेद

  4.3.2 अरथालंकार अर उणारा भेद

4.4 इकाई रौ सार

4.5 अभ्यास रा सवाल

4.6 संदर्भ ग्रन्थ सूची

4-0 mnnL;

इण इकाई रौ मूळ उद्देस्य राजस्थानी काव्यशास्त्र रै मांय छंदा अर अलंकारा रौ साहित्य में कांई महत्व होवै है उणनै दरसावण रै साथै ई राजस्थानी रा खास–खास छंदा अर अलंकारा री बणगट नै उजोगर करणौ है। इकाई रा उद्देस्य री टिप इण भांत है–

- राजस्थानी छंदा रा भेद अर परकार री जाणकारी प्रस्तुत करी जावैली।
- राजस्थानी अलंकारा रा भेद अर परकार की जाणकारी प्रस्तुत करी जावैली।

4-1 iLrkouk

काव्य या साहित्य मांय छंद अर अलंकारा रौ खास महत्व होवै है। आखै पद्य (काव्य) रौ मूलाधार छंद होवै है। काव्य में लयबद्धता अर चमत्कारिकतां देखण में मिळै है। छंद काव्य री आतमा होवै है। छंदा री भांत अलंकार भी काव्य री सोभा बढ़ावै है। इणारै प्रयोग सूं काव्य में चमत्कार नै चारू तत्व रौ समावेस होवै है। अलंकार योजना में काव्य रा वरण्य–विसय अर बरणाव दोनूं नै सुंदर बणावण री कोसिस देखण मिळै जिणसूं काव्य रौ फूटरापौ बधै अर फूटरापां सूं काव्य री सोभा बधै।

इण इकाई में राजस्थानी रा खास–खास छंदा अर अलंकारा रौ सांगोपाग बरणाव कर्‌यो जासी। इणांनै उदाहरण समेत समझायो जासी।

4-2 jktLFkkuh Hkkl k jk [kkl Nnk jk ojxhdj.k

काव्यशास्त्र रै नियम मुजब जिण रचना में मात्रा, वरण, विराम, गति रौ विचार राख'र सबद योजना करी जावै है, जिणनै छंद कैवै है। 'छंद' सबद संस्कृत भासा रौ है जिणरी उत्पत्ति 'छदि' धातु सूं व्हीं है। जिणरौ अरथ है– प्रकासित व्हैणौ या छादन करणौ। छंद विचारां नै कम सूं कम सबदावली में बतावण रौ माध्यम है जको

अभिव्यक्ति नै सारगरभित बणावै है। रिखि–मुनियां आपरी मूळ अभिव्यक्ति छंदा रै माध्यम सूं करी ही। इण खातर छंदा नै बै वेदां रौ अेक जरूरी अंग मान्या हे। ''छंदः पादौतु–वेदस्य'' कैय'र वेदां नै समै री जात्रा करावण वाळौ जरूरी अंग रै रूप में उणांनै ग्रहण कर्‌यो है।

छंदा सूं काव्य में अेक अनुसासन लय, ताल, गति रौ समावेस व्है जावै। दंडी महाकाव्य नै पढ़ण अर सुणनै में मधुर अर रमणीक छंदा री जरूरत रौ उल्लेख भी कर्‌यौ है। वस्तुतः काव्य में छंदा रौ प्रयोग भावोत्कर्स में सहायक होवै है। आचार्य हेमचन्द्र नै ''अर्थानुरूप छंद स्वत्वम्'' लिख'र इण तथ्य नै प्रकट कर्‌यो है। छंद भासा नै भावानुकूल बणा'र पाठक में अेक विसेस ग्राहकता पैदा कर देवै है। छंदा द्वारा जको सौन्दर्य रौ उत्पादन होवै है उणरै मूळ में दूहा, सोरठा, छप्पय, झमाळ, निसाणी, रसावळा, गाहा, त्रोटक, चौपाई, कुण्डलिया, सवैया, डिंगळ गीत आद छंदा री प्रधानता रैयी है। राजस्थानी रै लौकिक काव्यां में मात्रिक छंदा रौ प्रयोग घणखरौ व्हीयों है।

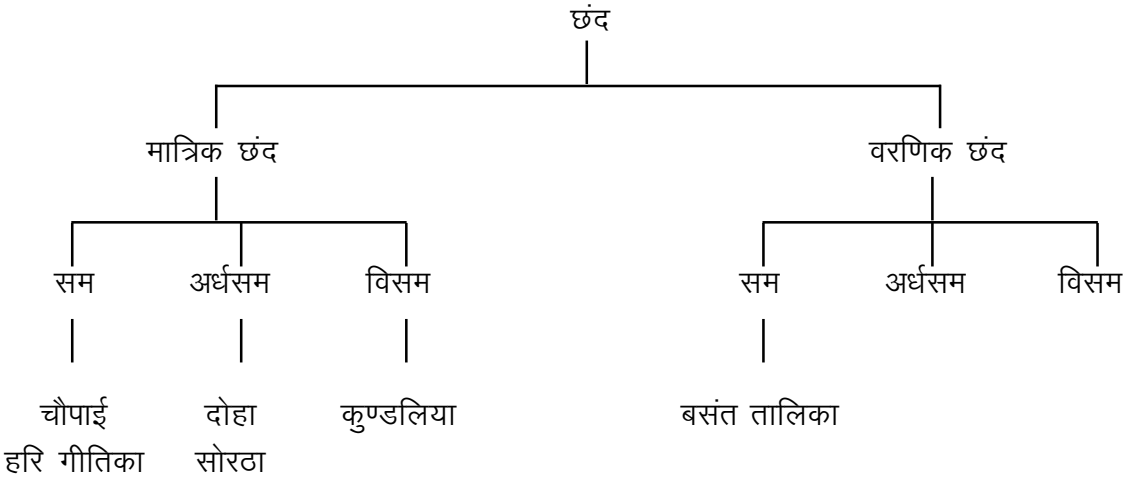

4-2-1 ekf=d Nn vj m.kjk Hkn

मात्रिक छंदा रौ मूळ सम्बन्ध मात्रावां या स्वरां सूं होवै है। इणामें मात्रावां री संख्या नै नियम रौ ध्यान राख्यों जावै है। मात्रिक छंदा रा तीन भेद बताया गया है। जिणमें सम मात्रिक, अर्धसम मात्रिक अर विसम मात्रिक।

(क) सम–मात्रिक छंद – जिण छंदा रै च्यारू चरणां री मात्रावां या वरण समान हो, बै सम–मात्रिक छं कैहलावै है। ज्यां– चौपाई, हरि गीतिका।

(ख) अर्धसम–मात्रिक छंद– जिण छंदा में पैले–तीजे नै दूजै–चौथै रचणां री मात्रावां या वरणा में समानता व्है, बै अर्धसम–मात्रिक छंद कै कहलावै है।

ज्यां– दोहा, सोरठा

(ग) विषय मात्रिक छंदा में च्यार सूं बैसी (छः) चरण हो अर बै अेक सूं नीं व्है, विषम कैहलावै है। ज्यां –छप्पय, कुण्डलिया।

4-2-2- ojf.kd Nn vj m.kjk Hkn&

वरणिक छंद रौ सम्बन्ध वरणा या स्वर नै व्यंजन दोनूं सूं होवै है। औ छंद केवल वरण गणना रै आधार माथै रच्यों गयो छंद है। इणरा भी तीन भेद बताया गया है। जिणमें सम, अर्धसम अर विषय मिळै है।

(क) सम–वरणिक–जिण छंदा में च्यारू चरणां में समान वरण हो, बै सम–वरणिक छंद होवै है। ज्यां– मालिनी।

(ख) अर्धसम–वरणिक– जिण छंदा में पैले–तीजे अर दूजै–चौथे चरणां रै वरणां में समानता होवै, बै

अर्धसम–वरणिाक छंद होवै है। ज्यां–

(ग) विषय–वरणिक–जिण छंदाा रै च्यारू चरणां में असमान वरण हो, बै विषम– वरणिक छंद होवै है।

4-2-3- jktLFkkuh jk [kkl&[kkl Nank jk cj.kko&

राजस्थानी (डिंगळ) रा खास–खास छंदा में दोहा, छप्पय, साणोर, कुण्डलिया, निसाणी, चौपाई, रसावला, सारसी, पद्धरि, गाहा, त्रोटक, झूलणा, त्रिनंकड़ो आद खास है। राजस्थानी रा चांवा छंदा रो वरणाव इण गत हैः–

¼1½ nksgk Nan¼& औ राजस्थानी रौ चांवौ छंद है। डिंगळ में इणनै दूहो भी कैयो जावै है। औ मात्रिक छंद रौ अर्धसम मात्रिक छंद रौ अर्धसम मात्रिक छंद है। छोटौ छंद होवण रै कारण औ सहज रूप सूं याद व्है जावै हैं इण खातर चारण अर चारणेतर कवियां नै इणरो प्रयोग घणखरौ कर्‌यो है। दोहा रै आदि में सम रै लारै सम अर विषम रै लारै विषम कळा रौ प्रयोग व्है है। इणरौ नाम इणी कारण दोहा है। इणमें दोय दळ होवै है। दोय पक्तियां या पंक्तियां या पंक्ति री पुनरावृति इणमें देखण मिळै है। दोहा अपभ्रंस री देन है।

नरोतमदास स्वामी नै इणरा च्यार भेद बताया है। डॉ. मोतीलाल मेनारिया नै इणरा पांच भेद बताया है, रचना री दीठ सूं राजस्थानी काव्य में दोहा रा पांच भंद है, जिणमें शुद्ध दूहो, सोरठियो दूहो, बड़ो दूहो, तूबेरी दूहो, खेड़ो दूहो।

v- 'kq) nwgks राजस्थानी काव्यां में इणरै समान रूप सूं प्रयोग व्हैतो रैयो है। इणमें च्यार चरण होवै है, इणरै पैले–तीजै चरण में 13–13 अर दूजै–चौथे में 11–11 मात्रावां देखण मिळै है। दूजै–चौथै चरण री तुक भी देखण मिळै है। ज्यां–

''रामत चौपड़ राज री, है धिक बार हजार।

धण सूंपी लूठा धकै, धरम राज धिक्कार।।''

''राजनीति रै रोग सूं, बढ़ै विपद जदै सूर।

मेटे संकट मुलक रो, कै साहित्य कै सूर।।''

c- lksjfB;k nwgks& हिन्दी साहित्य में इणनै दोहा रौ भेद बतायो गयो है। हिन्दी में इणनै सोरठा कैवै है। डिंगळ में इणनै सोरठियो दूहो कैयो जावै है। इण दूहे री लोक प्रियता बाबत कैयो गयो हैः–

''सोरठिया दूहो भलो, भल मरवण री बात।

जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात,,

'ढ़ोला मारू रा दूहा' में इण छंद रौ प्रयोग घणौ व्हीयों है। औ शुद्ध दूहो रौ उल्टो होवै है। इणरै सम अर्थात् दजै–चौथे चरणां में 13–13 अर विसम चरणां रै पैले–तीजै चरणां में 11–11 मात्रावां देखण मिळै है।

ज्यां– ''अकबर सम्बन्ध अथाह, सूरापण भरियो सजळ,

मेवाड़ौ तिण मांह, पोयण फूळ प्रतापसी,, (विरूद्ध छिहतरी)

इसड़ा सूं इकळास, राखीजै नह राजिया।।''(राजिया रा सोरठ)

l- cMk nwgk ¼& इण दूहे नै राजस्थानी लक्षण ग्रन्थकार सांकळियो दूहो भी कैवै है। औ दूहो वीर रस रै वरणाव खातर घणौ लूंठौ मान्यो जावै है। राजस्थानी री चांवी वचनिकावां में ''अचळदास खींची री वचनिका'' अर ''वचनिका–राठौड़ रतनसिघजी महेसदासोत री'' मांय इण दूहे रौ घणखरौ प्रयोग व्हीयों है। इण दूहे रै

पैले–चौथे चरणां में 11–11 मात्रावां अर दूजै–तीजै चरणां में 13–13 मात्रावां मिळै है। पैले–चौथे चरण में तुक भी देखण मिळै है।

ज्यां ''रोपी अकबर राड़, कीट झड़ै नांह कांगरा।

पटकै हांथळ सींह, पण बादल है न बिगाड़।।'' (राजस्थानी रा दूहा)

n- rcjh ngk%& तूंबेरी दूहा रै पैले–चौथे चरणां में 13–13 अर दूजै–तीजै–चरणां में 11–11 मात्रावां देखण मिळै है। औ दूहो बड़ो दूहो रौ उल्टो होवै है। इणरै तुक सदा 11–11 मात्रावां वाळै चरणां में मिळै है।

ज्यां ''मेवा तजिया महमहण, दुरजोधन रा देख।

केळा छेत विसेख, जाय विदुर घर जीमिया।।'' (वरदा–अंक2)

;- [kkMk ngk% विद्वान लोग इणनै लंगड़ियौ दूहो भी कैयो है। इणरै पैले–तीजै चरण में 11–11 मात्रावां अर दूजै चौथै चरण में 13–6 मात्रावां मिळै है।

ज्यां ''नाडी भरियो नीर, टाबरियौ झूलण गयौ।

तरै न पूगो तीर, बौ डूबौ।।'' (राजस्थानी रा दूहा)

¼2½ d.Mfy;k Nn%& कुण्डलियां छंद दोहा अर रोला रै मिश्रण सूं बणै है। औ छः चरणां रौ मात्रिक विसम छंद है। आगे री च्यार चरणां री अंत रै चरणां में पुनरावृति होवै हैं पैला दोय चरण दोहा अर आखिरी च्यार चरणां इणांरा भेदा में झड़उलट, राजवट, शुद्ध दोहला खास है। ''हाला–झाला रा कुण्डलियां'' कृति में इणरौ प्रयोग आखी कृति में व्हीयों है।

ज्यां– ''केहरि मरूं कळाइयां रूहिरज रतड़ियांह।

हेकणि हाथक गै हणै दंत दुहत्थां ज्यांह।।

दंत दुहत्था ज्यांह हाथियां सबळ दळ।

आवधां अरहरां चूर करणौ अकळ।।

रोळसी खळदकां चखं रातनंरी।

कळायां मरूं व्यां जसौ गज केहरी।।'' (हालाझाला रा कुण्डलियां)

¼3½ uhlk.kh Nn%& नीसांणी छंद राजस्थानी साहित्य रौ चांवौ छंद रैयो है। औ अेक मात्रिक छंद है। इण छंद रै च्यार चरणां में अे ई हिज भाव री पूर्ति देखण मिळै हैं औ लगातार चालण वाळौ छंद हैं नीसांणी छंद रौ प्रयोग किणी अैतिहासिक महापुरूस री जीवण घटनावां या जस बरणाव रौ चित्रण करण खातर व्हीयो है। डॉ. सीताराम लालस रै मुजब–''नीसाणी किणी रौ सुमिरण दिलावण वाळी या स्मृति रै उद्देस्य सूं रची व्हीं वस्तु या पदारथ है, जिणमें किणी रौ स्मरण कर्‌यो जावै है।''

कवि बादर ढ़ाढी नै ''वीरमायण'' जैड़ां ग्रन्थ में इण छंद रौ बखूबी प्रयोग कर्‌यो है। दूरसा आढ़ा, किसना आढ़ा चिमनजी कविया, नांकीदास, सूर्यमल्ल मिश्रण जैड़ां डिंगळ रा लूंठा कवियां नै भी इण छंद रौ प्रयोग आपरी कृतियां में कर्‌यों है। इण छंद रा भेद में शुद्ध नीसांणी, गरवत नीसांणी, सोहणी नीसांणी, मारू नीसांणी, दुमिला नीसांणी, जांगड़ी नीसांणी, वार नीसांणी आद देखण मिळै है।

इण छंद में 23 मात्रावां देखण मिळै है। 13–10 माथै यति होवै है। अंत में गुरू होवै है।

¼4½ pkikb Nn%& औ सम–मात्रिक है। इणरै हरैक चरण में 16–16 मात्रावां होवै अर इणरै अंत में जगण या तगण अर्थात–गुरू लघु (SI) नीं आवै है। अंत में लघु या क्षेय गुरू होवै है। राजस्थानी रै जैन कवियां नै इणरौ घणौ प्रयोग कर्‌यो है।

ज्यां ''गोरउ जंपइ बादिल सुणउ, सुभटे की धड., ए मंत्रणउ।

पदमिणि देइ नइ लशा राय! अबर न मंडइ कोई उपाय।।'' (गोरा बादल चरित्र चौपाई)

¼5½ dfor ¼NIi;½ Nn%& इण छंद नै हिन्दी में छप्पय भी कैवै है। ओझपूर्ण छंदा में कवित आपरौ खास स्थान राखै है। इण छंद रौ प्रयाग राज प्रशास्ति अर जुद्ध रौ वरणाव में कर्‌यों जावै है। इण रै हरैक चरण में 31 वरण होवै है। 16–15 माथै यति होवै है। डिंगळ में इणरा तीन भेद बताया गया है–

कवित, शुद्ध कवित अर दोढ़ो कवित,

1- dfor Nn& इणमें छः चरण होवै है। जिणरै पैले च्यार चरणा में रोला अर दोय चरणां में दूहो होवै है।

ज्यां ''हतो करै हित हांण, झझो, झझो तन व्याध जगावै।

धंधो राज भय धरै, ररो धन नास करावै।।''

2- 'k) dfor& इणमें छः चरण होवै है। इणरै पैले–च्यार चरणां में रोलाअर दोय चरणं में उल्लाला होवै है।

ज्यां ''एक पड़ै ऊभड़ै, रंघ ऊबड़ै बकतर।

सार वहै सूरमा, पार बिण छूंटे पजंर।।

3- nk<k dfor& इणमें आठ चरण होवै है। चरण में रोला अर दोय चरणां में उल्लाला होवै है।

ज्यां– ''प्रथम लाख समपियो, कवी बारह संकर कर।

लखपति बारट लांख, दीध दूजौ करि ऊंबर।।

¼6½ lk.kkj Nn%& औ राजस्थानी रौ चांवौ छंद है। औ डिंगळ गीत छंद है। मध्यकालीन राजस्थानी कवि इणरौ प्रयोग घणखरौ कर्‌यो है। रीति ग्रन्थ रा लिखण वाळां कविसरा नै इणरा कैई भेद बताया है, जिणामें–बड़ो सांणोर, शुद्ध सांणोर, प्रहास–सांणोर, छोटो सांणोर, खुड़द सांणोर, नजे सांणोर, आद देखण मिळै है।

v- cMk lk.kkj%& बड़ो सांणोर री पिंछाण आ है कै इणरै पैले पद में 23 अर दूजै पद में 17 मात्रावां होवै है। अर पछै तुक देंखण मिळै है। इणरै तीजै चरण में 20 अर 17 मात्रावां होवै है। पछै तुक आवै है। जैड़ो कै कवि मंछाराम नै आपरै ''रघुनाथ रूपक गीतां रो'' ग्रन्थ में बतायो हैः–

''रूप सुकविता रीतरा, चतुर मीत चित और।

कहूं प्रथम सो प्रीतकर, सिरै गीत सांणोर।।

जिण गीत में नियम मुजब लघु गुरू राख्या जावै है, उण सांणोर रा दोय व्है जावै है, जिणांनै शुद्ध सांणोर अर प्रहार सांणोर कैवै है।

'k) lk.kkj%& इण छंद रै विषय चरणां में–पैले–तीजे चरण में 20 मात्रावां, सम–चरणां रै दूजै–चौथे

चरण में 18 मात्रावां अर पैले द्धालै पैले पद में 23 मात्रावां आवै है।

ज्यां ''विध गणं फल अमरजनक माता वरण।

रिष वहण रस मुलक बंस दृग रीत।।

पुणै कवि मंछ शुभ घर अशुभ पर हरो,

गुणी रस राम मुकता करो गीत।।''

igkl lk.kkj& प्रहास सांणोर नै गरवत भी कैयो जावै है। प्रहास–गीत रै सम–चरणां में–दूजै–चौथे चरण में 17 मात्रावां अंत में गुरू समेत और छंद बणै है। बाकी सगळी सात्रावां बराबर होवै है।

ज्यां ''मांगण आद गुरू फल शमा बिहूं।

पिता पिंगल गिरहा मात तन पीत।

क्रिपी कशपा अरोहण कमठ सिंगार।।''

c- NkVk lk.kkj& छोटो सांणोर में कठैई तो तुकान्त में गुरू अर कठैई तुकान्त में लघु सूं जठै द्धाले बणै है, वठै छोटा सांणोर गीत होवै है। छोटे सांणोर गीत रै विषम पदा में 17 मात्रावां अर सम पदा में जै अंत में गुरू व्है तो 17 मात्रावां अर लघु व्है तो 15 मात्रावां होवै है अर पैले द्धाले रै पैले पद री 19 मात्रावां होवै है।

ज्यां ''राकण दिन अमर सकल मिल आया।

करी अरज संभाल कर तार।।

राज बिना मारै कुण रावण,

भूरो कवण उतारै भार।।'' (रघुनाथ रूपक गीतां रो)

छोटा सांणोर छंद रा भेदा में वेलियो, सोहणो, खुड़द, जांगड़ो साणोर मिळै है।

ofy;k lk.kkj&

डिंगळ कविता में साधारणतया प्रयुक्त भांत–भांत मात्रिक छंदा री जाति मांय सूं छोटो सांणोर नामक जाति विसेस रै च्यार उपभेदा में ''वेलियो गीत'' भी अेक है। कवि मंछ नै ''रघुनाथ रूपक गीतां रो'' ग्रन्थ में इणरा च्यार भेदा में वेलियों सांणोर रै लक्षण इण गत बताया हैः–

''चार भेद तिण चवै, कवियण बड. ओकूब।

समझ वेलियो, वेलियां, सोहणो, पुडद, जाँगड़ो खूब।।''

वेलियों छंद रै विषम चरणां री 16 मात्रावां होवै है अर सम चरणां री क्रमशः 15 मात्रावां होवै है, औतो अेक साधारण लक्षण है, पव पैले चरण अर्थात पैले द्वाले रै पैले चरण री विसेसता कठैई–कठैई इण बात में देखी जा सकै है। पिंगल शास्त्र रै मुजब इणनै अर्द्व सम मात्रिक छंद कैयो जावै है।

''वेलि क्रिस्सन रूकमणी री'' कुति में प्रिथीराज राठौड़ इण छंद रौ प्रयोग घणखरौ कर्‌यों है।

ज्यां ''सरसती कंठि श्री गृहि मुखि सोभा,

भावी मुगति तिकरि भुगति,

उवरि ग्यांन हरि भगति आत मा,

जपै वेलि व्यां ए जुगति।।''

lkg.kk lk.kkj% वेलियों गीत री विषय यतियां रै मुजब विषम पद बणै है अर सम–पदा में 14 मात्रावां नियम सूं आवै है। तुकान्त में लघु–गुरू आवै है, इण तरै नियम सूं सोहणा गीत रौ सुरूप बणै है।

ज्यां– ''राघव आदेश पाय दशरथ रो।

कवसल्यां चे आय कनै।।

दाखे राज भरथ नै देसी।

मात दियो वनवास मनै।।

tkxMk lk.kkj%&

अरटियो गीत अर जांगड़ो गीत दोनूं ई रै विषम थरणा में 16 अर सम चरणां में 12 मात्रावां सगळी बराबर होवै है। जांगड़ो में नगण जरूर होवै है।

ज्यां ''नैण झरै हरिबदन निहारे, अंक भरे निज अंगा।

बोले सिथल कहरे' बंधव, ऊठो उषण अभंगा।।''

[kMn lk.kkj%&

जिण गीत में जांगण गीत रै विषम पद में ज्यां 16 मात्रावां होवै है, उणी तरै विषम चरणां में 16 मात्रावां माथै यति होवै है अर सम पदां में 13 मात्रावां अंत में दोय लघु होवै है। पैले द्वाले रै पैले पद री 18 मात्रावां होवै है।

ज्यां ''व्याकुल लख सेस विभीषण बोले,

कमला पत सूं जोर कर,

धनुष धरण धीरज उर धरजै,

हिव कीजै उपचार हर।।

¼7½ >ekG Nn%&

झमाल राजस्थानी आपरौ छंद है। वस्तुतः औ गीत छंद है। औ छंद प्रायः वरणात्मक विसयां रै खातर घणौ प्रयोग में लियो जावै है। झमाळ रा लक्षण अै है कै– पैला दूहा, फैर अेक चन्द्रायण दूहे री चौथी तुक चन्द्रायण रै सुरूवात में दोहराई जावै है। इण खातर चन्द्रायण रै पैले चरण में 11 मात्रावां, दूजै चरण में 10 मात्रावां अर्थात् अेक तुक में 21 मात्रावां व्है है अर अंत में रगण होवै है, उणनै झमाळ कैयो जावै है।

झमाळ में पैला पूरा दूहो फैर पांचवे चरण में दूहे रै आखरी री पुनरावृति होवै है। छठे चरण में 10 मात्रावां होवै है, इण तरै पछै 'चन्द्रायण' छंद आवै है।

ज्यां '' नृप मेले आया नगर, दोड बधाईदार।

कही विगत विध विध करे आनंद भरे अपार।।

आनंद भरे अपार अंतेवर आयने।

सुभट सचव जणं साथ, सुबैण सुणायनै।।

परण पधारे रामजीत दृजराज नै।

तुरत करीजे त्यार सांमेलों साज नै।।''

¼8½ jlkoGk Nn– इण छंद हरैक चरण में 10–10 मात्रावां आवै है अर अंत में गुस (S) होवै है। इण छंद रौ प्रयोग जुद्ध वरणाव, अर जुद्ध सामग्री खातर कर्‌यो जावै है। 'रघुवर जस प्रकास' में रसावळ रै लक्षण इण गत है–

''प्रथम तीन तुक चवद मत, मोहरे रगण मिलाण।

चवथ ग्यार मत सगण मुख, रसावळौ खगराय।।''

अर्थात् जिण गीत रै पैले री तीन तुक मात्रावां 14 होवै, मोहरे रगण गण होय, तुक पैली मात्रा 14, तुकान्त रगण होय, तुक दूजी मात्रा 11 तुकान्त मोहरे रगण सगण होय सो गीत नाग गहै छै, हे खगराज गरूड़ सौ गीत रसावळौ कहावै छै।

रसावळा रै लक्षणां बाबत भरम घणौ है। सीताराम जी लालस आपरै सबदकोस रै आधार माथै इणनै 24 मात्रावां रौ मात्रिक छंद मानै है। अचळदास खीचीं री वचनिका में 'रसावळा' रा लक्षण इणांसू मैळ नीं खावै। इणरौ उदाहरण इण भांत है–

''बिहु छेह वाणाळी, सर पुडंग सळळी,

अणी अणी अतुळी, खग खग्गा खळी,

रूधिकर धर रळतळी, बहु नाचइ कमंध महाबली आळू झई आंन्तावली,

आलम अचकेसरि अड्.यां सेन बिन्हे इम संमिळी।।''

¼9½ lkjlh& औ नाक्षत्रिक जाति रौ सम मात्रावृत छंद है। इणरै हरैक चरण में 27 मात्रावां होवै हैं अंत में अेक गुरू नै अेक लघु होवै है अर 16–11 माथै यति होवै है। इण छंद रौ प्रयोग जुद्ध –वरणाव खातर होवै है।

ज्यां ''ढ़म ढमइ ढम ढम कर ढूंसर ढोल ढोली जांगिया।

सुर करहि रण सरणाइ समुहरि सरस रसि समरंगिया।।

कळकळहि काहल कोडि कलरवि कुमल कायर थरथरइ।

संचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि संगरइ।।''

4-3- jktLFkkuh jk [kkl vyadkj jk ojxhdj.k

vyadkj jh Hkkklk– ''काव्यशोभकरान् धर्मानलंकार प्रचक्षते'' (काव्दर्श) अर्थात् काव्य री सोभा बढ़ावण वाळा तत्वां नै अलंकार कैवै है। अलंकार रौ अरथ है– ''आभूसण'' (गैणा) जिण भांत गैणां पैहरण सूं मानखै रौ शारीरिक सिणगार घणौ लूंठौ व्है जावै है। उणीज भांत काव्य में अलंकारां रौ प्रयोग सूं उणारै सिणगार अर लुभावणपण में बधोतरी व्है जावै है।

''अलंकार'' सबद रौ वाच्यार्थ है आभूसण है। भासा में शाब्दिक प्रयोग सूं चमत्कार अर चारू तत्व रो समावेस होवै है। वस्तुतः अलंकार रस रै उत्कर्स में सहायक व्हीयां करै है। अलंकार काव्य में विसय वस्तु रै वरणाव नै रोचक नै प्रभावसाली बणावण में सहायक होवै है। कवि झीणां अर अमूरत भावां नै स्थितियां नै अलंकारा

री सहायता सूं पाठक तांई सम्प्रेसित करण में सफल होवै है।

vyadkj jk ojxhdj.k

सबदालंकार	अरथालंकार
अनुप्रास	उपमा
श्लेष	उत्प्रेक्षा
वैयणसगाई	रूपक
यमक	संदेह
वक्रोळि	भ्रंतिमान
	दृण्टांत

4-3-1- lcnkydkj vj m.kjk Hkn& जदै सबदां रै प्रयोग मांय अैडै. कौसल रौ प्रयोग कर्यो जावै, जिणसूं चारूता अर चमत्कार नीजर आवै तदै सबदालंकार मान्यों जावै है। मतलब कै जठै सबदां माथै घणो जोर दियो जावै। सबदालंकार रै भेदोपभेद में अनुप्रास, श्लेष, वैयणसगाई, यमक, वक्रोळि आद खास है।

¼1½ vuqizkl%& अनुप्रास रौ मतलब है कै बार–बार नैड़ै रैणो अर्थात् वरणां रौ बार–बार प्रयोग करणौ, वरणां री रसानुकूल बार–बार आवृति करणौ ई अनुप्रास अलंकार है। राजस्थानी संत साहित्य में इणरौ प्रयोग घणौ व्हीयों है। इण अलंकार रा पांच भेद बताया गया है, जिणमें छेकानुप्रास, वृत्यानुप्रास, लाटानुप्रास, श्रुव्यानुप्रास, अन्त्यानुप्रास।

Ndkuqizkl%&

जठै कैई व्यंजना री अेक बार स्पस्टतः आवृति करी गयी हो, वठै छेकानुप्रास अलंकार होवै है।

ज्यां– धरियां नहिं धारूं अधर अधारूँ।

oR;kuqizkl%& जठै वृतियां रै मुजब अेक या कैई वरणां री कैई बार आवृति व्है, वठै वृत्यानुप्रास अलंकार होवै है।

ज्यां– ''तांणै तेज तंग दुतंग'' (बिन्नै रासौ)

निराकार निरधार सार नहकाम है (अणभै विलास)

ykVkuqizkl%& जठै सबद–अरथ री समान रूप सूं आवृति करी जावै, पण अन्वय करण पर उणांरै अभिप्राय में निराळौ पण होवै, वठै लाटानुप्रास अलंकार होवै है। ज्यां ''तनि झोला सुरताण, दिली झोला खाए दळ''। (सूरज प्रकास)

JR;kuqizkl%& जठै अेक हिज उच्चारण स्थान सूं बोल्यां जावण वाळा वरणां री समानता पायी जावै, वठै श्रुत्यानुप्रास अलंकार होवै है।

''कलि केवल मलमूल मलीना।

पाप पयोनिधि जन–मन मीना।।''

vUR;kuqikl%& जठै पद या पद रै अंत में सगळा पदा रै समान स्वर अर व्यंजन री आवृति होवै है। वठै अन्त्यानुप्रास अलंकार होवै है।

ज्यां ''अवब्देस राजेस जांनेस आया।।'' (सूरज प्रकास)

½2½ o.kZlxkbZ vyadkj%& औ अलंकार राजस्थानी रौ आपरौ खास अलंकार है। राजस्थानी रै मध्यकालीन काव्य में वीर रस रै रूप में इणरौ प्रयोग घणखरौ मिळै है। वैणसगाई रौ सीधो अरथ है वरणा सूं सम्बन्ध, राजस्थानी रौ विसिस्ट अलंकार है। जिणरौ उद्देस्य अशुभ गुणां अर दग्धाक्षरां रौ परिहार करणौ अर काव्य में ध्वनि–सौन्दर्य री सृस्टि करणौ हैः–

''आवै इण भाषा अमल वैण सगाई वेस।

दग्ध अगण वद दुगण रौ लागै नह लवलेस।।

इण रै प्रयोग सूं काव्य में विसेस नाद–सौन्दर्य प्रकट होवै है। इणरै प्रयोग सूं काव्य–दोस मिट जावै हैं इण बाबत 'वीर–सतसई' मांय सूर्यमल्ल मिश्रण (मीसण) कैयो हैः–

''वैण सगाई वाळियां, पेपीजै रस पोस।

वीर हुवासण बोल में, दीखै हेक न दोस।।'' (वीर–सतसई)

वैण सगाई दोय आखरां सूं मिल'र बण्यो है, जिणमें वैण–सगाई अर्थात आखरां सूं सम्बन्ध जोड़यो गयो है।

किसना आढ़ा रै ''रघुवर जस प्रकास'' ग्रन्थ में इण अलंकार रै लक्षण अर उदाहरण नै भेदां रै बारै में जांणकारी देखी जा सकै है। मंछाराम रै ''रघुनाथ रूपक गीता रौ'' में भी इण अलंकार री सविस्तार वरणाव कर्‌यो गयो है। वैण सगाई नै थरपित करण वाळां वरण कदैई अंतिम सबद रै खुस (आदि) में आवै तो कदैई मध्य (बिचाळै) अर कदैई अंत में आवै है।

1- vkfneG– जदै काव्य में चरणां रै पैले सबद रै आदिवरण स्वर या व्यंजन री पुनरावृति चरण रे अंत में आवण वाळा सबद रै आदि में होवै है। इणमें पैले सबद अर आखरी रै आदिवरणां में मेळ नीजर आवै है। इण खातर आदिमेळ कैयो जावै है।

T;k& ''सहणी सबरी हूं सखी, दो उर उलटी दाह''। (वीर–सतसई)

''जहर विखम जारंग, भुजां धारंग भुजगम।

भाल तेज भारंग, जरा हारंग लसे जम।। (सूरज प्रकास)

2- e/;eG जदै काव्य में चरण रै पैला सबद (वरण) री पुनरावृति चरण रै आखरी सबद रै पैला मध्यम (बिचाळै) वरण में सम्बन्ध बैठायो है तो उणमें मध्यमेळ वैणसगाई कैवै है।

T;k& ''नाम लिया था मानवा, सरक कलुष विसाल''

''वीर हांक वांप रै, धीर जुट पगधारा''

3- vUreG%& जदै काव्य रै किणी चरण रै पैले सबद रै आदि वरण री पुनरावृति चरण रै आंखरी वरण रै अंत में आवै है। अर्थात् चरण रै आदि रै नै आखरी अखरां में मेळ होवै है। इणनै अन्तमेळ कैयो जावै है।

T;k ''रूगनाथ चरण कुंता री।

जिकै विध कीध फतै महाराज।।'' (सूरज प्रकास)

¼3½ जदै सबद री आवृति बार–बार होवै अर अरथ बार–बार न्यांरौ आवै, वठै यमक अलंकार होवै है।

T;k& ''अचळ बेवि कीधा अचळ,(अचळदास खींची री वचनिका)

''चम्मर जेमि चम्मर चार'', (बिन्नै रासो)

''औदके पवै अढ़ार, भारही अढ़ार'' (सूरज प्रकास)

¼4½ oØkfDr& जदै काव्य में कोई वक्ता कोई बात श्रोता नै किणी अेक अरथ सूं कैवै पण श्रोता उणरौ अरथ दूजौ अरथ निकाल लैवै, तदै बठै वक्रोक्ति अलंकार होवै है। वक्रोळि रौ मतलब टेढ़ी बात उक्ति सूं होवै है।

T;k ''होई हरखि घणई सिसुपाल हालियउ।

ग्रन्थै गायउ जेणि गति।।'' (वेलि क्रिस्सन रूकमणी री)

¼5½ iqu:fDr½& भाव या वरणाव री सुन्दरता बढ़ावण खातर इणरौ उपयोग कर्‌यो जावै है।

T;k ''खण्ड खण्ड नगर नगर का''।

''हरि हरि हरि हरि होइ रहयड, विसन विसन तिणि वार।।'' (अचळदास खीचीं री वचनिका)

4-3-2- vjFkkyadkj vj m.kjk Hkn&

जठै अरथ रै कारण काव्य में चमत्कार री सृस्टि होवै, वठै अरथालंकार होवै है। इणरै बिन सबद–सौन्दर्य भी छोखौ नीं लागै। जठै अरथ माथै घणौ जोर दियो जावै। अरथालंकारा रा भेदो भेदां में उपमा, उत्प्रक्षा, रूपक, संदेह अतिश्याक्ति, भ्रांतिमान, दृष्टांत, उल्लेख, आद खास है।

¼1½ miek½ जदै किणी विसेस गुण या सुभाव री समानता रै कारण अेक वस्तु या प्राणी री तुलना किणी लोक चांवी वस्तु रै साथै करी जावै तदै उपमा अलंकार होवै है। अर्थात् उपमेय री उपमान सूं रूप, गुण नै आकार–परकार री समानता बतायी जावै तो वठै 'उपमा' कैहलावै हैं उपमा रा च्यार अंग है।– उपमेय, उपमान, वाचक– सबद अर साधारण धरम।

उपमा रा तीन भेद है– पूर्णोपमा, लुप्तोपमा अर मालोपमा।

mnkgj.k^ ''भीवड़ौ जिसौ पण्डू रौ भींव,'' (बिन्नै रासो)

''धूवां को सौगढ़ वन्यौमन में राज संजोय,''(सैजोई री वाणी)

'जन दरिया सतगुरू इसा जैसा होय लोहार।'' (श्री रामसनेही धर्म प्रकाश)

¼2½ mRi{kk– जठै भेद ग्यांन– पूर्वक उपमेय में उपमान री संभावना करी जावै, वठै उत्प्रक्षा अलंकार होवै है। उपमेय नै उपमा सूं न्यांरौ बताय'र उणमें उपमान री बळ पूर्वक संभावना बतायी जा सकै। जठै अेक वस्तु में दूजी वस्तु री संभावना करी जावै। जठै जांणो, जनु, मनहु, मानो, किरि आद सबदां रौ प्रयोग कर्‌यो जावै, उतप्रक्षा रा तीन भेद बताया गया है।– वस्तुत्प्रेक्षा, हेतुत्प्रेक्षा अर फलोत्प्रेक्षा,

mnkgj.k& ''जांणै घर–घर जगै, दीपमाला मझि दीपक,'' (सूरज प्रकास)

''कुल बहुवां दीसै केवल, ऊगां किरि आदीत।।'' (अचळदास खींची री वचनिका)

¼3½ :id¼&

जठै भिन्नता व्हैतां व्हीयां भी उपमेय माथै उपमान रौ अभेद आरोप कर्‌यो जावै है।, वठै रूपक अलंकार होवै है। रूपक में उपमेय अर उपमान दोनूं नै अेक रूप मान लियो जावै हैं इण वास्तु दोनूं रै बिचाळै में रूपी वाचक सबद आवै है। रूपक रा भेदोपभेदां में —सांगरूपक, निरंगरूपक अर परम्परित रूपक,

उदहारण ''दावानळ जंग सवा त्रण दीह''। (सूरज प्रकास)

''सुण्यो बात आघात।।'' (नागदमण)

¼4½ lng¼& जठै रूप—रंग अर गुण री समानता रै कारण किणी वसतु नै रेख'र औ निश्चित नीं व्है सकै कै आ वस्तु बां ई हिज वस्तु है, अर्थात् उपमेय में उपमान री आखरी तांई शंका बणी रैवै तो वठै संदेह अलंकार होवै है।

उदाहरण ''के देवी के किन्नरी, के विधाधर काई'' (सीताराम—चौपाई)

¼5½ vfr';kfDr¼ जठै किणी वस्तु या व्यक्ति रौ बढ़ा'र चढ़ा'र बरणाव प्रस्तुत कर्‌यो जावै वठै अतिश्योक्ति अलंकार होवै है।

mnkgj.k ''सांजण आंवण कह गये, कर गये कोळ अनेक।

गिणते गिणते मिट गयी, आंगळियां री रेख सा।। (ढ़ोलामारू रा दूहा)

''तूटोये नदी तटाक, हींस वाजि वीर हाक।।''

¼6½ Hkkfreku& जठै प्रस्तुत नै देखण सूं सादृश्यतां रै कारण अप्रस्तुत रौ भ्रंय व्है जावै, अर्थात् किणी विसेस समानता रै कारण अेक वस्तु नै दूजी वस्तु समझ लियो जावै वठै भ्रांतिमान अलंकार होवै है। जठै उपमेय नै उपमान में भ्रंम पैदा व्है जावै।

mnkgj.k ''बादल मिट गया भर्म का उदय भया निज भांण।

पड़ी अंधारै जेवड़ी, जाण्यों सर्प अजाण।।'' (श्री रामसनेही अनुभव आलोक)

''चन्द्र जांणि वदन धावत चकोर।

सिर करत भ्रंमर गुंजार सोर।।'' (सूरज प्रकास)

¼7½ n`.Vkr¼& जदै पैली कैयी जावण वाळी बात सूं मिलती—जुलती दूजी बात पैली बात रै उदाहरण रै रूप में कैयी जावै, वदै दोय तरै रा वाक्यां में बिम्ब—प्रतिबिम्ब रा भाव व्है तदै दृण्यंत अलंकार होवै है।

उदहारण — ''मारवड़ ऊपर फिरंगी मिळ, पर दळ घाड़ा खड़ै न पास।''

¼8½ mngkj.k¼& जदै अेक बात कैय'र उणरै उदाहरण रै रूप में अेक दूजी बात कैयी जावै अर दोनूं नै ज्यां—जिमि, ज्यां आद किणी उपवाचक सबद सूं जोड़ दिया जावै, वठै उदाहरण अलंकार होवै है।

mngkj.k & ''दरिया संगत साध की, सहजै पालै भृग।

जैसे संग मजीठ के कपड़ा होय सुरग।।'' (श्री रामसहनेही संतवाणी)

''उडै गजसूंड चढ़ै असमांण, जाए आहि उड्डि भळै गिर जांण।'' (सूरज प्रकास)

4-4 bdkbZ jk lkj

इण इकाई रौ सार औ है कै इण इकाई में राजस्थानी काव्यशास्त्र रै अन्तरगत रास्थानी काव्य में छंद अर अलंकार री महतां नै दरसावतां थकां राजस्थानी रा भांत–भांत छंदा रौ परिचै उणांरौ वरगीकरण समेत दरसायो गयो है। साथै ई हिज राजस्थानी अलंकारां रौ वरगीकरण नै दरसावतां थकां सबदालंकार नै अरथालंकार रै अन्तरगत राजस्थानी रा चांवा अलंकारां नै उदाहरणा समेत समझायों गयो है। छंद अर अलंकार काव्य री आत्मा होवै है। इणारै प्रयोग सूं काव्य में चमत्कारिकता नै निराळौपण नीजर आवै है।

4-5 vH;kl jk loky

नीचै लिख्योड़ां सवालां रौ पडू.तर .....सबदां में दिखावौ–

1- राजस्थानी छंदा रौ महत्व नै दरसावतां थकां इणांरै भांत–भांत भेदा नै स्पस्ट करो,

2- राजस्थानी दूहो छंद नै स्पस्ट करतां थकां इणरा भेदोपभेद नै उदाहरण समेत समझावौ।

3- राजस्थानी रा निम्न छंदा माथै टिप्पणी, लिखो (कोई दोय)

(क) कवित छंद (ख) नीसांणी छंद (ग) सांणोर छंद

4. वैण सगाई अलंकार रौ राजस्थानी रौ राजस्थानी साहित्य में महत्व नै दरसावतां थकां इणरा भेदोपभेद नै उदाहरण समेत स्पस्ट करो।

5- अनुप्रास अलंकार नै उदाहरण समेत समझावौ।

6- उपमा अर उत्प्रेक्षा अलंकार में अंतर स्पस्ट करो।

7- राजस्थानी रा निम्न अलंकारां माथै टिप्पणी लिखो– (कोई दोय)

(क) यमक (ख) रूपक (ग) भ्रांतिमान (घ) अतिश्योक्ति (ङ) संदेह

4-6 lanHkZ xzUFk lwph

¼1½ डॉ. कल्याण सिंह शेखावत – राजस्थानी भासा साहित्य–संस्कृति ।

¼2½ डॉ. मोतीलाल मेनारियां – राजस्थानी भासा और साहित्य।

¼3½ परम्परा (भाग–76) ''राजस्थानी काव्य में छंद, अलंकार व रस वैशिष्टय'' विशेषांक।

¼4½ नरोमतम दास स्वामी – अलंकार पारिजात ।

bdkbl&5

ie[k Hkkjrh; fyfi;k % noukxjh vj efM;k fyfi

bdkbl jh foxr&

5.1. उद्देस्य

5.2. प्रस्तावना

5.3. लिपि रो उद्‌भव अर विकास

5.4. भारत री प्राचीन लिपियां

5.4.1 ब्रह्मी लिपि

5.4.2 खरोष्ठी लिपि

54.3 शारदा लिपि

54.4 नागरी लिपि

5.4.5 मुड़िया लिपि

5.5. भारत री आधुनिक लिपि देवनागरी

5.5.1 देवनागरी लिपि–रौ नामकरण

5.5.2 देवनागरी लिपि री विसेसतावां

5.6. इकाई रो सार

5.7. अभ्यास रा सवाल

5.8. संदर्भ ग्रंन्थ

5-1 mnnL;

इण इकाई रौ खास उद्देस्य विद्यार्थियां नै लिपि बाबत सांगोपांग जांणकारी देवणौ है। लिपि रौ उद्‌भव अर विकास कीकर हुयौ, भारत री प्राचीन लिपियां कुण–कुण सी ही, बांरी जांणकारी सूं विद्यार्थियां रा ग्यांन में बद्योतरी व्हैला आद बिन्दु इणरा उद्देस्य है। इण भांत इण इकाई री विसय–वस्तु सूं विद्यार्थियां–नै नीचै लिख्यां तथ्यां रौ खुलासौ होसी–

- लिपि कांई व्है?
- लिपि री सरूवात कींकर व्हीं?
- लिपि रौ उद्‌भव अर विकास कद हुयौ।
- भारत की प्राचीन लिपियां कुण–कुणसी ही ?
- भारत री आधुनिक लिपियां में देवनागरी रो उदभव, विकास अर उणरी विसेसतावां कांई है?

5-2 iLrkouk

लिपि किणी भासा नै आखरां में बांट'र देखण अर पढ़ण जोग बणाय देवै है। लिपि रौ मतलब है लिखित रूप जकौ चिन्ह या संकेत रूप में होवै है। लिपि भासा रो किणी ध्वनि रै चिन्ह हिज होवै हैं। भासा नै स्थायीत्व देवण री भावना सूं ई लिपि रौ आर्विर्भाव व्हीयों है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में 'लेखणी' सबद रौ प्रयोग घणा व्यापक अरथ में व्हीयों है। जिणसूं भी लिखण री क्रिया व्है, बां लेखनी है, बां कलम, या कूची या छैणी, वर्णिका, तूलिका, सलाका भी लेखन री क्रिया नै सम्पादित

करै।

न्यारै–न्यारै समै में न्यांरी न्यांरी लिपियां ही, ज्यूं ब्राह्मी, खरोष्ठी, गुप्त, कुटिल लिपि रै विकास रै साथै छापाखानां रौ विस्तार हुयौ अर ग्यांन– विग्यांन रौ विकास हुयौ।

5-3- fyfi jk mnHko vj fodkl

मानखै री सभ्यता रै विकास में लिपि रौ महताऊ जोगदान रैयो है। लिपि मिनख रै दिमाग री निराळी कल्पना है, हजारूं बरसां री ग्यांन रासी इणरै माध्यम सूं सहज सुलभ है।

अनुमान रौ सहारौ लैय नै कैयो जा सकै है कै आज सूं लगैटगै पचीस हजार बरस पैला मानखौ जदै टेढ़ी–मेढ़ी लकीरा खींचण लांग्यो या उण भाट्टे माथै भूंडी सी कोई खुदाई करी व्हैला पण, कैवणो कठिन है अैड़ो उण क्यूं कर्‌यो व्हैला? उणरै मन रै किणी भाव री अभिव्यक्ति रै खातर सायद बो अैड़ो कर्‌यो व्हैला। इणनै किणी विचारगत प्रतिक्रिया रौ प्रतिफळ भी मान्यो जा सकै है। कैवै है, लिपि री सुरूवात अठै सूं मानणी चाहिजै। औ भी कैयो जा सकै है, कै भासा अर लिपि रौ जळम इण तरै साथै–ई साथै व्हीयो व्हैला। आं मान्यतावां सूं और चाहे कोई फळ न निकळै, पण ईतौ साफ है कै लिपि री महता अर सामर्थ्य में कदैई किणी नै संदेह नीं रैयो है। आज तांई लिपि रै सम्बन्ध में जकीं प्राचीनतम सामग्री मिळै है, उणरै आधार माथै कैयो जा सकै है कै 4000 ई. पू. रै विचाळै तांई लेखण री किणी भी व्यवस्थित पद्धति रौ कठैई भी विकास नीं व्हीयौ हो अर इण तरै रा प्राचीनतम अव्यवस्थित जतन 10,000 ई. पू. सूं भी कुछैई पैला कर्‌यां गया हा। इण तरै आं दोनूं रै विचालै अर्थात् 10,000 ई.पू. अर 4000 ई.पू. रै बिचालै लगैटगै 6000 बरसां में होळै–होळै लिपि रौ सुरूवाती विकास व्हैतो रैयो, आज लिपि रौ जकौ विकसित रूप आपांरै सांमी है उणनै दैख'र लिपि रै सुरूवाती रूप री कल्पना करणौ कठिन है, पण इतिहास बतावै है कै लिपि रा भी विकास–सोपान रैया है जिणांनै खासतौर सूं च्यार भागां में बाट्‌यो जा सकै है।

fyfi jk mn;&

सबद थिर कोनी–बेगा ही मिट जावै–लिपि उणनै काळजयी बणावै। आ ही लिपि रै उतपत अर विकास जातरा री कथा है। लिपि रै विकास रा च्यार पगोथिया मानीजै–

(1) चितराम लिपि

(2) भाव लिपि

(3) ध्वनि लिपि

(4) सूत्र लिपि

आखी दुनियां री अे सगळी लिपियां भारतीय, यूरोपीय, सामी अर चीनी–समूह री लिपियां सूं निकळी मानीजै। ब्राह्मी लिपि सूं भारत री सगळी लिपियां निकळी मानीजै। ग्रीक लिपि सूं योरोप री लिपियां निकळी, अरबी, फारसी लिपियां 'सामी' लिपि सूं अर सगळी चितराम वाळी लिपियां (चित्रात्मक लिपियां) चीनी लिपि सूं निकळी है। भारतीय लिपियां रो 'वंशवृक्ष' देखीजै

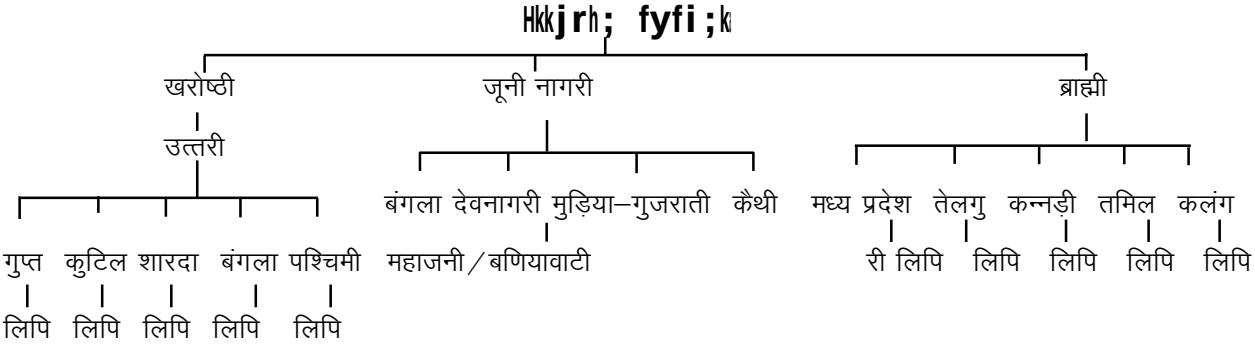

fp=fyfi&

चित्रलिपि हीज लेखन रै इतिहास री पैली सीढ़ी है। चितरामा सूं चित्रकला रौ इतिहास सुरू होवै है अर लेखन रौ भी इतिहास पुराणां जमाने में मानखौ कंदरावा, भाखरां माथै रेखावां खीचतौ हो, इणी तरै रूंखड़ां, पसुवां–पखेरवां आद रा भी चितराम भी मांडतौ हो, औ भी संभव है कै कुछैई चितराम धारमिक करमकाण्डां रै खातर देवी–देवतावां रा बणाया जावता रैया हो। चित्रलिपि में किणी विसेस वस्तु रै खातर उणरौ चितराम बणा दियो जावतो हो, ज्यूं सूरज रै खातर गोळो अर उणरै च्यारू ओर निकळती रेखावां, भांत–भांत रा जिनावरां रै खातर उणांरा चितराम, मिनखां रै खातर मिनाख रा चितराम अर उणांरा भांत–भांत अंगा रै खातर अंगा रा चितराम आद। भौगोलिक नक्सां में मिंदर, मस्जिद, बाग, भाखर आद चितराम उकेर्यां जावतां हा।

Hkkofyfi&

भावलिपि चित्रलिपि रौ ई विकसित रूप है। भावलिपि में स्थूल वस्तुवां रै अलावा भावां नै भी व्यक्त कर्यो जावै है। ज्यूं सूरज रौ गोळो सूरज रै अलावा दूजां भावां नै भी व्यक्त करण लाग्यो, ज्यूं–सूरज देवता, गरमी, दिन, चांनणौ आद, भावमूलक लिपि रै उदाहरण उतरी अमेरिका, चीन अर आथूणी अफ्रीका में भी मिळै है। भावलिपि री सहायता सूं कोई वस्तु ही नीं घटना भी अंकित करी जा सकती ही।

/ofufyfi&

इणमें हरैक ध्वनि नै अंकित करण री खिंमता रौ विकास पायो जावै है। ध्वनि लिपि रै उदाहरण में देवनागरी, रोमन, अरबी आद नै लियो जा सकै है। ध्वनि लिपि रा दोय भेद है– आखरिक (Syllablic) अर वरणिक (Alphabetic) कुछैई लोग देवनागरी नै आखरमूलक अर रोमन नै वरणमूलक लिपि मान्यो है अर आखरमूलक लिपि सूं वरणमूलक लिपि नै लूंठी बतायो है, पण अै दोनूं ई थरपणावां चावी नीं है।

l=fyfi&

सूत्रलिपि रौ इतिहास भी घणौ जूनौ है। आज भी लोग रूमाल में गांठ देवै हैं। बरसगांठ में भी बां परम्परा देखी जा सकै है। प्राचीनकाल में सूत्र, रस्सी अर रूंखड़ां री छाळ आद में गांठ दी जावती ही। किणी बात नै सूत्र में राख'र या सूत्र नै याद'कर आखी बात नै याद राखण री परम्परा रौ भी सम्बन्ध इणीज सूं मालूम होवै है।

इण तरै लिपि रै विकास–क्रम में चित्रलिपि पैली अवस्था ही अर वरणिक ध्वनिमूलक लिपि री आखरी अवस्था ही।

विस्व री खास लिपियां रा दोय खास वरग हैं– (1) जिणमें आखर या वरण नीं है, ज्यूं क्यूनीफॉर्म अर चीनी (2) जिणमें आखर या वरण है, ज्यूं रोमन अर नागरी, पैले वरग री खास लिपियां–क्यूनीफॉर्म, हिट्टाइट, हीरोग्लाफिक, चीनी, सिन्धुघाटी लिपि, क्रीट–लिपियां, प्राचीन मध्य अमेरिका नै मैक्सिकों री लिपियां, दूजै वरग री खास लिपियां–दिखणी सामी लिपि, फोनेशियन लिपि, हिब्रू लिपि, खरोष्ठी–लिपि, अरबी लिपि, आर्मेइक लिपि, लैटिन लिपि, भारतीय लिपि, ग्रीक लिपि आद।

5-4- Hkkjr jh ikphu fyfi;k&

भारत में लिखण री कला रौ ग्यांन लोगां नै घणै प्राचीनकाल सूं हो, भारत री प्राचीन लिपियां तीन ही–ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि अर सिन्धु लिपि। ब्राह्मी अर खरोष्ठी घणी जूंनी ही, जिणरौ उल्लेख अभिलेखा में देख्यौ जा सकै है पण सिन्धु लिपि रौ ठा सन् 1922–27 में मोहनजोदड़ो अर हड़प्पा री खुदाई रै पछै व्हीयौं हो, जैन साहित्य रै 'पन्नवणासूत्र' अर 'समवायाङ्ग सूत्र' में अठारह लिपियां रा नाम गिणाया गया है–

बंभी, जवणालि, दोसापुरिया, खरोस्टी, पुक्खरसारिया, भोगवइया, पहाराइया उप अन्तरिक्खया, अक्खर पिट्टिया तेवणइया, गि (णि) राहइया, अंकलिवि, गणितलिवि, गंद्यव्वलिवि, आदंसलिवि, माहेसरी, दामित्नी, पोलिन्दी।

इणीज तरै बुद्ध धरम री संस्कृत पोथी 'ललितविस्तार' में चौसठ लिपियां रा नाम गिणाया गया है–

ब्राह्मी, खरोष्ठी, पुष्करसारी, अंगलिपि, वंगलिपि, मगधलिपि, मांगल्यलिपि, मनुष्य लिपि, अंगुलीयलिपि, शकारिलिपी, ब्रह्मबल्लीलिपि, द्राविड़ लिपि, कनारिलिपि, दक्षिणलिपि, उग्र लिपि, संख्या लिपि, अनुलोमलिपि, उर्ध्वधनुर्लिपि, दरद लिपि, खास्यलिपि, चीनलिपि, हूण लिपि, मध्याक्षर विस्तरलिपि, पुण्यलिपि, देवलिपि, नागलिपि, यक्षलिपि, गन्धर्वलिपि किन्नरलिपि, महोरगलिपि, असुरलिपि, गरूड़लिपि, मृगचक्रलिपि, चक्रलिपि, वायुमरूलिपि, भौमदेवलिपि, अंतरिक्षदेवलिपि, उत्तरकुरूदीपलिपि, अपरगौडादिलिपि, पूर्व विदेहलिपि, उच्क्षेपलिपि, निक्षेपलिपि विक्षेपलिपि, प्रक्षेपलिपि, सागरलिपि, वज्रलिपि, लेखप्रतिलेखलिपि, अनद्रतलिपि, शास्त्रावर्तलिपि, गणावर्तलिपि, उत्क्षेपावर्तलिपि, विक्षेपावर्तलिपि, पादलिखितलिपि, द्विरूत्तरपदसंधिलिखितलिपि, दशोत्तरपदसंधिलिखितलिपि, अध्– याहारिणीलिपि, सर्वरूत्संग्रहणीलिपि, विद्यानुलोपलिपि, विमिश्रितलिपि, ऋषितपस्तप्त लिपि, धरणीप्रेक्षणालिपि, सर्वोषधनिष्यनंदलिपि, सर्वसारसंग्रहणीलिपि, सर्वभूतरूद्ग्रहणीलिपि।

इणांमें ब्राह्मी अर खरोष्ठी आ दोय रौ पतो ई अजै तांई लांग्यो है, बाकी घणखरां नाम कल्पित मालूम होवै है।

अबै ब्राह्मी अर खरोष्ठी लिपि री विस्तृत जाणकारी इणगत–

5-4-1- ckãh fyfi

ब्राह्मी रा जूंना लेख आपानै पांचवीं सदी ई.पू. रै पैला रै नीं मिळै। पण जकी उपलब्ध सामग्री रै मुजब औ स्पस्ट व्है जावै है कै ब्राह्मी ई भारत री चांवी अर सगळी ठौढ़ व्याप्त लिपि ही। पछै री सगळी लिपियां ब्राह्मी सूं ई विकसित व्हीं है। आ शुद्ध लिपि मानीजै, आ डांवी सूं जीवणी कांनी लिखीजै। इणरो प्राचीनतम नमूना बस्ती जिले में प्राप्त पिपरावां रै स्तूप में अर अजमेर जिले रै वडली गांव रै शिलालेख में मिलै है। इणरौ समै गौरीशंकर हीराचंद ओझाजी नै पांचवीं सदी ई. पू. मान्यो है। उण समै सूं लैय'र 350 ई. तांई इण लिपि रौ प्रयोग मिलै है। 'ब्राह्मी' 'सबद' री तीन उत्पतियां बतायी गयी है–

- ब्रह्म द्वारा निर्मित होने सूं आ लिपि बह्मी कैहलायी, संस्कृत में 'ब्राह्मी' 'सबद' रौ प्रयोग भासा खातर भी व्हीयों है क्यूकै भासा भी ईसरीय सृस्टि मानी गयी है।
- बामणां द्वारा निर्मित या प्रयुक्त होण रै कारण इण लिपि रौ नाम ब्राह्मी पड़यो।
- ब्रह्म (वेद या ग्यांन) री रिच्छा खातर आ लिपि बणायी गयी, इण खातर ब्राह्मी कैहलायी।

ब्राह्मी रै उद्गम नै लैय'र विद्वानां रा ऐकमत्य नीं है। कैई विद्वान उणरौ उद्गम चीनी, यूनानी आद दूजी लिपियां सूं मानै है अर कैई विद्वान अैड़ा भी है, जकां उणनै किणी दूजी लिपि सूं उद्भूव नीं मान'र भारत री आपरी लिपि मानै है। पख–विपख रै सगळां तर्कों री परीक्षा'र गौरीशंकर हीराचंद ओझा नै घणी चतुराई सूं औ प्रमाणित कर्यो है कै ब्राह्मी लिपि सर्वव्यापक भारतीय लिपि है जिणरौ सम्बन्ध किणी दूजी लिपि सूं नीं जोड़यो जा सकै है। उणारै मुजब इणरौ विकास क्रम इण गत है–

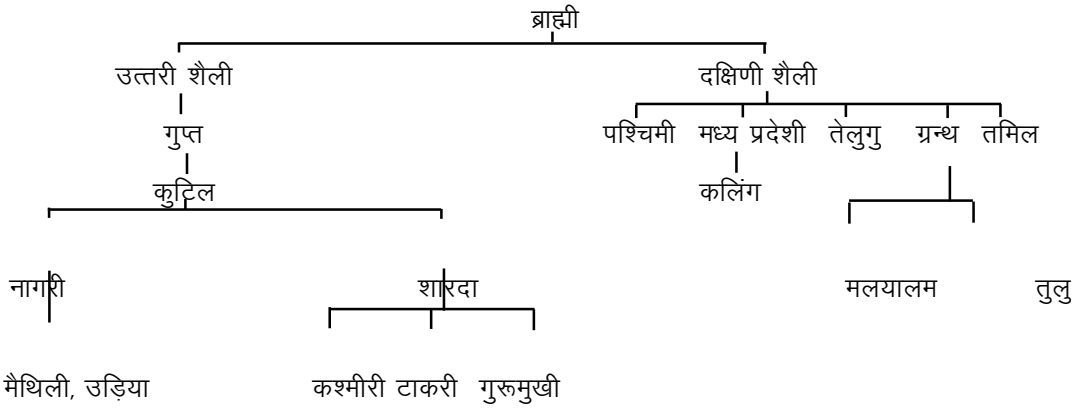

ब्राह्मी लिपि री उत्पति रै सवाल नै लैय'र विद्वानां में विवाद रैयो है। इण विसय में दोय मत रैया है– अेक तो ब्राह्मी री उत्पत्ति विदेशी लिपि सूं मानण वाळा तो दूजा ब्राह्मी री उतपत भारत में मानै है।

- ब्राह्मी री उत्पति विदेसी लिपि सूं मानणवाळा–
  (i) फ्रेंच विद्वान कुपेरी ब्राह्मी री उत्पति चीनी लिपि सूं मानै है।
  (ii) डॉ. अल्फ्रेड मूलर, सेनार्ट आद यूनानी लिपि सूं मानै।
  (iii) हलवे रै मुजब ब्राह्मी मिश्रित लिपि है।
  (iv) कस्ट, बेनफे अर जेनसन सामी लिपि री फोनीशियन साखा सूं ब्राह्मी री उत्पति मानै है।
  (v) टेलर अर सेथ रै मुजब ब्राह्मी लिपि दक्षिणी सामी लिपि सूं निकळी है।
  (vi) डॉ. डेबिड डिरिंजर ब्राह्मी री उतरी सामी सूं उत्पति मानी है।
- ब्राह्मी री उत्पति भारतीयता सूं मानण वाळा–
  (i) एडवर्ड थॉमस ब्राह्मी री उत्पति द्रविड़ीय मानै है।
  (ii) जगमोहन वरमा वैदिक चित्रलिपि सूं ब्राह्मी उत्पति मानी है।
  (ii) डाउसन, कर्निघम, लासन, थॉमस आद विद्वानां आर्य–उत्पति मानी है।
  (i) गौरी शंकर हीराचंद ओझा ब्राह्मी री दोय–उतरी अर दक्षिणी शैलियां बतायी है।

mrjh 'kSyh&

¼1½ xIr&fyfi&

गुप्त राजावां रै समै (चौथी–पांचवी सदी) में इणरौ प्रचार रैयो हो, गुप्तवंसी शासकां रै लेख में प्रयुक्त होवण रै कारण इणनै गुप्त लिपि कैयो गयो है।

¼2½ dfVy fyfi –

इण लिपि रौ विकास गुप्त लिपि सूं व्हीयो, आखरां री आकृति कुटिल (टेढ़ी) होवण रै कारण इणरौ नाम कुटिल लिपि पड़्यों हो।

¼3½ ikphu ukxjh –

इणरौ प्रचार उत्तर भारत में नौवी सदी रै आंखिरी चरण में मिळै है। इणनै दिखणाद में नंदी नागरी भी कैवै है। प्राचीन नागरी री अगूणी साखा सूं बंगला लिपि रौ विकास व्हीयों अर आथूणी साखा सूं महारानी, देवनागरी, गुजराती, मुड़िया, कैथी आद लिपियां रौ विकास व्हीयों हो।

¼4½ 'kkjnk&

इण लिपि रौ प्रसार कश्मीर अर पंजाब में पायो जावै है। कुटिल लिपि सूं ई दसवीं सदी में इणरौ विकास व्हीयों हो, शारदा सूं ई कश्मीरी, टक्की अर गुरूमुखी लिपियां निकळी है।

¼5½ cxyk&

बंगला री उत्पति प्राचीन नागरी सूं दसवी सदी रै लगैटगै व्हीं है।

¼6½ efM;k fyfi –

राजस्थान, उत्तर प्रदेस, बिहार अर मध्यप्रदेस आद में समै हिसाब–किताब सारू बहीखाता रै रूप में इणरौ प्रयोग व्हैतो रैयो है। इणरा आखर मुड़ियां अर घुमावदार होवण सूं इणरौ नाम मुड़ियां पड़ियो हो, इणमें मात्रावां नीं होवै है।

¼7½ dSFkh –

पुराणी नागरी लिपि रै ऊगणे रूप सूं उत्पन्न आ लिपि कायस्थां में विसेस रूप सूं चावी होण रै कारण कैथी कैहलायी है। इणरौ खेतर बिहार रैयो है।

nf{k.k 'kSyh&

¼1½ if'peh ¼vkFk.kh½ –

आ लिपि दक्षिणी महारास्ट्र, मैसूर रा कुछैई भागां में ईस्वी सन् री पांचवीं सदी रै लगैटगै प्रयुक्त हूती ही।

¼2½ e/; izns'kh –

आ लिपि मध्य प्रदेस, हैदराबाद रै उतरी भाग अर बुंदेलखण्ड में पांचवीं सूं आठवीं सदी तांई मिळै है।

¼3½ rsyxq&dUuMh – पांचवी सूं चौदहवीं सदी तांई इणरा कैई रूप–भेद व्हीयां है। आ लिपि महारास्ट्र, शोलापुर, बीजापुर, धारवाड़, हैदराबाद, मद्रास आद भागां में देखी जा सकै है। इणसूं वरतमान में तेलुगु नै कन्नड़ी लिपियां निकळी है।

¼4½ xzUFk fyfi –

आ लिपि मद्रास में चावी री है। 7वीं सूं 15वीं सदी तांई इणरा कैई रूपान्तर व्हीयां है। संस्कृत रा ग्रन्थ ग्रन्थ लिपि में ईं लिख्या गया है।

¼5½ rkfey fyfi&

तमिल लिपि री आ जननी है अर दक्षिणी ब्राह्मी सूं आ निकळी है।

¼6½ dfyax fyfi –

कलिंग लिपि रै लेख 7वीं–11वीं सदी तांई मिळै है। इणरा आखर प्रायः समकोण वाळा है।

5-4-2- [kjks"Bh fyfi&

खरोष्ठी रौ प्रयोग उतराद्धै–आथूणी भारत में व्हैतो हो, शाहबाजगढ़ी अर मनसेरा में अशोक रै कैई अभिलेख प्राप्त व्हीयां है जकां खरोष्ठी में लिख्या मिळै है। खरोष्ठी लिपि विदेसी लिपि ही जकी उण भू–भाग में चावी ही, कारण कै बा कुछैई दिनां तांई ईरानियां रै अधिकार में रैयी ही अर उणांरै सम्पर्क रै कारण खरोष्ठी रौ प्रचार वठै तांई व्है गयो हो।

[kjks"Bh jS uke jS lEcU/k esa dbZ vuqeku yxk;k x;k g&

- चीनी विश्वकोष 'फा–वान शुलिन' रै मुजब किणी 'खरोष्ठ' नाम रै व्यक्ति इणनै बणाई ही।
- गधे री खाल माथै लिखण जावण रै कारण भी इणनै खरोष्ठी कैयो गयो है।
- इब्रानी भासा में लिखावट नै 'खरोरोथ' कैवै है। 'खरोरोथ' रौ संस्कृत रूप खरोष्ठ व्है गयो अर उणसूं खरोष्ठी।

• डॉ. राजवली पाण्डेय रै मुजब इण लिपि रा घणखरां आखर गधे रै ओठ री तरै बेढंगा हां, इण खातर औ नाम पड़यों हो।

• आ 'खरोष्ठ' नामक सीमाप्रान्त सूं अर्धसभ्य लोगां में चावी होण रै कारण अलिपि इण नाम री अधि कारिणी बणी ही।

[kjks"Bh jh fo'ks"krk&

- खरोष्ठी जीवणी सूं डावी ओर लिखी जावती है।
- खरोष्ठी में वरणां री संख्या केवल 37 है।
- खरोष्ठी में स्वरां अर मात्रावां में ह्रस्व अर दीर्घ रौ भेद नीं है।
- खरोष्ठी में संयुक्तक्षार लिखण री सुविधा नीं है।

- खरोष्ठी रौ प्रचलन ई.पू. छठी सूं 14वीं सदी तांई हो।
- भारत में इणरौ प्रयोग शाहवाजगढ़ी अर मनसेरा रै अशोक रै अभिलेखां में मिळै है।
- इणरा मूळ वरण आरमेइक लिपि सूं लिया गया है।
- आक्षरात्मक लिपि है, इणमें अनुस्वार रौ प्रयोग भी देखण नै मिळै है।

5-4-3- flU/k fyfi –

सिन्धु लिपि नै भारत में लिपि रौ प्राचीनतम नमूनो मान्यो जा सकै है। इण लिपि री जाणकारी मोहनजोदड़ो अर हड़प्पा री खुदाई रै पछै लाग्यों हो। सरजान मार्शल सिन्धु–सभ्यता रौ समै 3250 ई.पू. सूं 2750 ई. पू. तांई मान्यो है। राजवली पाण्डेय इण सभ्यता नै ई. सन् 4000 बरस री मानी है। मोहनजोदड़ों री खुदाई में मिळी मोहरा में इणरौ प्रयोग व्हीयों है। अै मोहरा माटी अर रै भाट्टे री बण्योड़ी है। सिन्धु लिपि नै चित्रलिपि भी कैय सका हा, क्यूं कै इणमें वस्तुवां रै चितरामां नै लिपि चिन्ह री तरै प्रयोग कर्‌यो गयो है। हंटर रै मुजब मूलतः आ लिपि चित्रलिपि अर विचार लिपि व्हैतां थकां भी ध्वनितत्व–समन्वित है। इण लिपि में प्रयुक्त चित्र कैई तरै रा है, जका रूढ़ लिपि चिन्हा में परिवर्तित होवण रै क्रम में है। निराळौपण लावण खातर इण लिपि में चिन्हां रै बदलाव अर संयोजन खातर काम लियो गयो है। सिन्धु लिपि में स्वराघात रौ अर दूजा मात्रिक सहाचिन्हां रौ व्यवस्थित प्रयोग व्हीयों है। अेक चिन्ह रै दूजै चिन्ह रै साथै संयोग री बाहुलता भी इणमें मिळै है। सिन्धु घाटी में प्राप्त सगळा लेख छोटा है अर वै पीतळ या भाट्टे री वस्तुवां माथै खुदयोड़ौ है या माटी माथै अंकित है। सिन्धुलिपि की जीवणी ओर सूं डावी ओर लिखी जावती ही अर्थात् लिपि चिन्ह अेक रै पछै दूजा लकीर री सीध में जीवणी कानी सूरू करनै डावी ओर अंकित कर्‌यो जावतो हो। अजै आ लिपि पढ़ी नी जा सकी है पण विद्वान मानै कै आ लिपि भाव–ध्वनिमूळक लिपि है।

5-4-4 ukxjh fyfi&

नागरी लिपि री सरूवात भारत री प्राचीन लिपि ब्रह्मी सूं व्हीं है। ब्राह्मी री दोय साखावां ही जिणमें–उत्तरी शैली अर दक्षिणी शैली।

उतरी शैली में गुप्त लिपि ही, गुप्त लिपि सूं छठी सदी में कुटिल लिपि विकसित व्हीं। कुटिल लिपि सूं नौवी सदी में नागरी रै प्राचीन रूप रौ विकास व्हीयों जिणनै प्राचीन नागरी भी कैयो जावतो हो।

नागरी रौ पैलो प्रयोग गुजरात रै राजा जयभट्ट (7वीं–8वीं सदी) रै शिलालेखां में मिळै है।

'नागरी सबद री उत्पति रै सम्बन्ध में मतभेद है। कुछैई विद्वान इणरौ सम्बन्ध नागर बामणां सूं लगावै है। अर्थात् नागर बामणां में चावी लिपि नागरी कैहलायी, कुछैई लोग 'नागर' सबद सूं इणरौ सम्बन्ध जोड़'र इणरौ अरथ नागरी अर्थात् नगरां में चावी लिपि सूं लगावै है। अेक मत औ भी है कै तांत्रिक मंतरा में कुछैई चिन्ह वण्यां था जकां देवनगर कैहलावता हा, आ आखरां सूं मिलता–जुलता होवण रै कारण औ हिज नाम इण लिपि रै साथै जुड़ग्यौ हो, तांत्रिक समै में नागर लिपि नाम चावौ हो, दक्षिण भारत में नागरी लिपि नै 'नंदि नागरी' कैवै है। संभव है, वठै 'नंदिनगर' नामक स्थान हो, जठै सूं चावौ होण रै कारण इणरो नाम 'नंदिनागरी' पड़्यों हो।

ग्यारहवीं सदी री नागरी लिपि वरतमान नागरी सूं मिलती–जुलती है अर बारहवीं सदी सूं वरतमान नागरी बणी है।

5-5- Hkkjr jh vk/kfud fyfi% nsoukxjh&

नागरी लिपि सूं ई देवनागरी वणी है। सभ्य लोग जिण लिपि में लिखता हा, बा नागरी ही। आ भारत में 8वीं सदी सूं चालती री है। इणरौ प्रचार उतराद्वै भारत मांय 9वीं सदी रै आखती–पाखती सूं मिलै है। इण उतराद्वै री लिपि रौ सबसू पैलो प्रयोग दक्षिण में मिळै है।

5-5-1- nsoukxjh jk ukedj.k&

आधुनिक देवनागरी लिपि रौ विकास 10वीं सदी रै लगैटगै नागरी लिपि सूं व्हीयों है। दक्षिण में नागरी नै

'दिनागरी' कैयो जानतो हो, दक्षिण में अेक देवनगर हो, जठै देवतावां री मूरतियां सूं इणरौ राम देवनागरी बण्यों हो। देवनगर मध्यप्रदेस में लखावै है। देवनगर रै विचाळै इणरौ स्थान होवण सूं इणरौ नाम देवनागरी पङ्यों। दूजौ मत है कै अेक देव चक्र हो, जिणरै आधार माथै लिपि, वरणां रौ इतिहास व्हीयों, जदै इणरौ नाम देवनागरी व्हीयों, तीजो मत है कै देवतावां री वाणी संस्कृत ही अर आ लिपि ही, इण वास्तै इणरौ नाम देवनागरी लिपि पङ्यों हो, चौथो मत है कै चन्द्रगुप्त– द्वितीय रै पाटलीपुत्र (पटना) रौ अेक उपनांम देव हो, इणरै नाम सूं भी देवनागरी कहलावै है।

अै सगळा मत न्यांरा–न्यांरा है, सही रूप में प्राचीन नागरी सूं ई हिज देवनागरी वणी है। देवनागरी अेक आदर्स लिपि है। हिन्दी रै अलावा देवनागरी रौ प्रयोग मराठी अर नेपाली रै खातर भी व्हीयों है। उतराद्धै भारत री प्रायः सगळी लिपियां देवनागरी रो ही रूपभेद है अर उणमें घणौ साम्य है। नेपाली री आ राजलिपि है। मिथिला अर बंगला में इणरौ घणौ मान है। भारत री आ रास्ट्रलिपि है। भारतीय संविधान भी इणनै राजभासा लिपि रै रूप में स्वीकार करै है।

5-5-2- nsoukxjh jh folsl rkok&

देवनागरी लिपि में कैई विसेसतावां है। अठै उणांरौ सामान्य संकेत कर्‌यो जा रैयो है–

¼1½ oSKkfud fyfi – देवनागरी अजै संसार री वैज्ञानिकि लिपि है। अंगरेजी या उर्दू रै समान इणमें बोलण अर लिखण में फरक कोनी। इणरी ध्वनियां ईती पूर्ण है कै इणमें जकौ लिख्यों जावै है, वौ ई पढ़यों जावै है। देवनागरी लिपि रै आखरां री सहायता सूं संसार री किणी भासा री ध्वनि नै लिख्यों जा सकै है। देवनागरी लिपि रा आखर विभाजन सर्वथा समीचीन है।

इणमें स्वरां अर व्यंजना रौ वरगीकरण हमेसा न्यांरौ–न्यांरौ होवै है। आपांरै उच्चारण स्थान (मुख, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ) जिण क्रम सूं है, उणीज क्रम में स्वरां अर व्यंजना नै स्थान दियो गयो है। स्वरा अर व्यंजना रै उच्चारण स्थानां री निम्नलिखित तालिका इणरौ प्रमाण है–

vk[kj	**mPpkj.k LFkku**
¼d½ Loj	
अ	मुख
इ	तालु
ऋ (र)	मूर्धा
ङ	ओष्ठ

विसेस– ए, ऐ, ओ, औ, मूळ स्वर नीं व्है'र संयुक्त स्वर है–

अ+इ=ए, अ+ए=ऐ, अ+उ=ओ, अ+ओ=औ।

¼[k½ O;atu	
क, ख, ग, घ, ङ (क वर्ग)	कंठ
च, छ, ज, झ, ञ (च वर्ग)	तालु
ट, ठ, ड, ढ़, ण (ट वर्ग)	मूर्धा
त, थ, द, ध, न (त वर्ग)	दन्त
प, फ, ब, भ, म (प वर्ग)	ओष्ठ
य	तालु
र	मूर्धा
ल	दन्त

व	दन्तोष्ठ
ष	मूर्धा
स	दन्त
ह	कंठ

उच्चारण स्थानां रै साथै ई हिज मांयली अर बारला जतना रौ भी इणरै आखरा में समुचित प्रयोग कर्‌यो गयो है।

½2½ vk[kj i/kku oj.kekyk –देवनागरी लिपि री वरणमाला में आखरां री प्रधानता है। इणमें अंगरेजी रै समान 26 आखर नीं है जकां कैई ध्वनियां रा संकेत नीं कर सकै। देवनागरी लिपि रा आखरां री संख्या इण गत है–

½d½ Loj&

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ (रि), ए, ऐ, ओ, औ=11

½[k½ 0;atu&

क वर्ग– क, ख, ग, घ, ङ		= 05
च वर्ग–	च, छ, ज, झ, ञ	= 05
ट वर्ग–	ट, ठ, ड, ढ़, ण	= 05
त वर्ग–	त, थ, द, ध, न	= 05
प वर्ग–	प, फ, ब, भ, म	= 05
अन्तस्थ–	य, र, ल, व	= 04
ऊष्म–	श, ष, स	= 03
आखरी वर्ण– ह		= 01
संयुक्त व्यंजन–क्ष, त्र, ज्ञ, श्र		= 04
अनुस्वार– अं		= 01
विसर्ग– अः		= 01
	;kx	**¾ 50**

इण तरै देवनागरी लिपि में 50 आखर अर्थात् संकेत चिन्ह है।

½3½ /ofu i/kku fyfi– देवनागरी लिपि ध्वनि प्रधान है अर्थात् इणमें लगैटगै सगळी ध्वनियां नै संकेतित करण वाळै चिन्हां नै रखण री व्यवस्था करी गयी है। व्यंजना में पैले 25 व्यंजना नै 5 वरगां में बांट्‌यो गयो है। वरगां नै उच्चारण स्थाना (ठौड़) अर्थात् कंठ, तालु, मूर्धा, दंत अर ओष्ठ रै मुजब कमबद्ध कर्‌यो गयो है। इणमैं पछै च्यार अर्द्धस्वर अर व्यंजन है। अर्धस्वर में य, र, ल, व नै भी उच्चारण स्थानां अर्थात् तालु, मूर्धा, दंत अर दन्तोष्ठ रै मुजब क्रमबद्ध कर्‌यो गयो है। तीन ऊष्मा नै भी उच्चारण स्थानां अर्थात् श (तालु), ष (मूर्धा), स (दंत) रै रूप में क्रम दियो गयो है। नागरी वरणमाला रौ पैलो वरण 'अ' कंठ सूं बोल्यो जावै है। इणी कारण 'ह' नै सैं सूं अंत में राख्यों गयो है, जको कंठ सूं उच्चारित होवै है। मतलब ओ है कै जठै सूं सुरू व्हीयों, वठैई ही समाप्त कर्‌यो है। पांचू वरगा में भी व्यंजना रौ क्रम हमेसा वैज्ञानिक है। सबसूं पैला अघोष अल्पप्राण व्यंजना में क, च, ट, त, प नै ठौड़ मिळी है। इणरै पछै संघोष महाप्राण व्यंजन ख, छ, ठ, थ, फ है। तीजो क्रम घोष अलापप्राण व्यंजना अर्थात् ग, ज, ड, द,व रौ है। चौथै क्रम घोष महाप्राण व्यंजन घ, झ, ढ़, ध, भ है। पांचवी ठौड़ माथै अनुनासिक व्यंजन ङ, भ, ण, न, म है। हरैक उच्चारण ठौड़ री ध्वनि न्यांरी होवै है। इण खातर सगळा रा अनुनासिक व्यंजन न्यांरा–न्यांरा है।

¼4½ ek=kok jh i.k 0;oLFkk– देवनागरी लिपि में स्वरां अर व्यंजना रौ खाली न्यांरौ न्यांरौ विभाजन ही नीं है, स्वरां री मात्रावां भी निश्चित करी गयी है। मात्रावां रौ व्हैणो संभवतः देवनागरी लिपि री आपरी विसेसता है। संसार री किणी भी लिपि में स्वरां री मात्रावां नीं है। औ अेक सामान्य तथ्य है कै व्यंजना रौ उच्चारण स्वरां री सहायता रै बिना संभव नीं है। हरैक व्यंजन रै पछै स्वरां नै पूर्ण रूप सूं लिखणौ घणौ भद्दो लागे है। मात्रावां रै साथै व्यंजना नै मिला'र लिखण सूं संक्षिप्तता अर सुंदरता आवै है। देवनागरी लिपि री सगळी मात्रावां वैज्ञानिक है अर्थात् जिण क्रम सूं ध्वनियां रौ उच्चारण होवै है, उणीज क्रम सूं स्वरां री मात्रावां अर व्यंजन लिख्या जावै है। खाली इ मात्रा (ि) इणरौ अपवाद है, ज्यूं–'किण' में इ क उच्चारण क रै पछै होवै है, पण मात्रा क सूं पैला ई लाग जावै है।

¼5½ rjyukRed nhB l mre – आथूणै भारत में अंगरेजी (रोमन) अर उर्दू लिपियां रौ प्रचलन घणौ रैयो है। अंगरेजी में अेक ओर ध्वनियां री न्यूनता है। ज्यूं– ख, घ, च, छ, झ, ठ, ढ़, ण, त, थ, द, ध, फ, भ, श, रै खातर कोई संकेत नीं है। अेक हिज वरण 'सी' कदैई क री ध्वनि देवै है (कलकता) अर कदैई स री (सेन्टर) पी.यू.टी. = पुट अर वी.यू.टी. = बट होवै है। एस.यू.एन. अर एस. ओ. एन दोनूं रौ उच्चारण 'सन' होवै है। अंग्रेजी में आधे व्यंजना या अनुस्वार अनुनासिक री कोई व्यवस्था नीं है, 'कुंवर' नै रोमन लिपि में 'कुनवर' लिख्यों जावै।

¼6½ U;urkok– देवनागरी लिपि में कुछैई कमियां भी है, पण बै विसेसतावां री अपेक्षा बौत कम है। देवनागरी लिपि में 'ए' अर 'ऐ' री मध्यवर्ती ध्वनि रै खातर संकेत नीं है। उणीज तरै देवनागरी में 'ओ' अर औ मध्यवर्ती ध्वनि रै संकेत रौ अभाव है। क, ख, ग, ज, फ नामक लुंठित ध्वनियां रै खातर भी देवनागरी में कोई चिन्ह नीं है। क़, ख़, ग़, ज़, फ़ रै नीचे बिन्दी लगा'र काम चलायो जावै है। इण खातर टाइपराइटर अर छापखाना में बौत असुविधा होवै है।

¼7½ le; jh l fo/kk– आज देवनागरी शुद्ध रूप सूं 'कम्प्यूटर' माथै आय गयी है। नूंवा विकास 'टाईम–कम्प्यूटर' इणमें आय गया है। लेजर प्रिन्ट में अै सगळी विसेसतावां देवनागरी में आवै है। आ वैज्ञानिक लिपि री विसेसता है। देवनागरी में वैज्ञानिकता है। आ लिपि सुपाठ्य अर संदेह रहित है।

5-5-3- noukxjh jh dfe;k&

देवनागरी वैज्ञानिकता लियां थकी है। इणमें कोई गुण है तो कुछैई कमियां भी है। जकी नै सुधार्‌यो जाणौ चाहिजै। देवनागरी री जकी कमियां है, बांरा बिन्दु निम्न हैं–

¼1½ lxGh BkM fpUgk jh vd:irk jk vHko& 'र' व्यंजन नै मिला'र लिखण खातर दोय विधियां है–क्रम अर कर्म (करम)। इणी तरै अ अर अ, ण अर ण रै रूप में भी अेक ई आखर दोय तरै सूं लिख्यों जावै है।

¼2½ ek=kok j i;kx e v0;oLFkk– देवनागरी लिपि में कुछैई मात्रावां ऊपर (े, ै) कुछैई नीचै (ु, ू) कुछैई आगे (ि) अर कुछैई लाटै (ी, ो, ौ) लागै है।

¼3½ l;Dr 0;tuk u fy[k.k jh dbl 'kfy;k– कठैई पैलो व्यंजन आधो लिख्यो जावै है–गुप्त, जब्बर, कठैई दूजौ व्यंजन आधो लिख्यो जावै है– भ्रम, क्रम श्रम, क्ष (क+ष), ज्ञ (ज+ञ), त्र (त+र) संयुक्त व्यंजनां रै लिखण में हमेस नूंवौ रूप व्है जावै है।

¼4½ vk[kjkRed gko.k l /ofu'kkL=h; v/;;u jk vHkko& देवनागरी लिपि में लिख्या सबदां नै पढ़'र औ अनुमान लगाणौ संभव नीं है कै इणमें किती ध्वनियां है? ज्यूं–सकल सबद में छः ध्वनियां (स्+अ+क्+अ+ल्+अ) है, पण देवनागरी में लिखण पर केवल तीन ध्वनियां (स, क, ल) रौ प्रयोग होवै है।

¼5½ dN jk dN 0g tk.kk– देवनागरी लिपि में लिख्या कुछैई सबद लिख्या सूं न्यांरा पढ़ायां जावै है। ज्यूं–खाद = रवाद।

¼6½ vf[ky Hkkjrh; fyfi c.k.k jh f[kerk jk vHkko& देवनागरी में द्रविड़, मराठी, कश्मीरी, आद कैई भासावां री ध्वनियां रा कुछैई चिन्ह नीं है। इण खातर आ अखिल भारतीय लिपि नीं बण सकी है।

¼7½ f'kjkj[kk j dkj.k vlfo/kk– कुछैई देवनागरी रै आखरां री शिरोरेखा पूर्ण होवै है अर कुछैई री कमी व्हे है। ज्यूं– भ, म, ध, घ

¼8½ l;Drk[kjk jk lorrj 0;tu c.k tk.kk– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन देवनागरी में सुवंततर व्यंजन बण गया है।

इण तरै देवनागरी री अै कुछ कमियां है, जिणारो निदान जरूरी है।

5-6- bdkb jk lkj&

इण तरै इण ब्यौरा में लिपि रौ अरथ, उणरी उत्पति अर विकास नै बताबतां थकां भारत री प्राचीन लिपियां री पुख्ता जाणकारी प्रस्तुत करी गयी है। सै सूं पैला ब्राह्मी लिपि ही, उणसूं ही दूजी न्यांरी न्यांरी लिपियां निपजी है। न्यांरै न्यांरै समै न्यांरी–न्यांरी लिपियां रैयी है। 'ललित विस्तार' जैड़ां ग्रन्थ में ब्राह्मी सूं 64 लिपियां निकळी ही, भारत री प्राचीन लिपियां में ब्राह्मी, खरोष्ठी, सिन्धु, नागरी लिपियां री है। नागरी सूं हिज आधुनिक भारत में देवनागरी लिपि सामी आयी है। देवनागरी वस्तुतः वैज्ञानिक अर शुद्ध लिपि है।

5-7- vH;kl jk loky&

नीचै लिख्यां सवाला रौ पडू.तर राजस्थानी भासा में दिखावौ–

(1) लिपि रा उद्भव अर विकास नै समझावौ।

(2) भारत री प्राचीन लिपियां माथै टिप्पणी लिखो।

(3) ब्राह्मी लिपि री उत्पति नै दरसावतां थकां इणरी न्यांरी–न्यांरी साखावा (शैलियां) नै चित्रित करो।

(4) खरोष्ठी लिपि रा न्यांरा–न्यांरा मता नै उजागर करतां थकां इणरी विसेसतावां नै बतावौ।

(5) नागरी अर देवनागरी रै अंतर नै स्पष्ट करो।

(6) देवनागरी लिपि रा नामकरण नै दरसावतां थकां इणरी–खास विसेसतावां नै उदाहरणां सूं समझावौ।

(7) देवनागरी लिपि री कमियां नै दरसायौ।

5-8- lnHk xUFk lph&

(1) श्यामसुंदरदास – भाषा विज्ञान

(2) डॉ. भोलानाथ तिवारी – भाषा–विज्ञान

(3) डॉ. शिवशंकर प्रसाद वर्मा – देवनागरी लिपिः ऐतिहासिक तथा भाषा वैज्ञानिक अध्ययन।

(4) उदयनारायण तिवारी – हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास।

(5) डॉ. कन्हैयालाल शर्मा – हिन्दी भाषा एवं नागरी लिपि का इतिहास।

(6) डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा – भाषा विज्ञान की भूमिका।

(7) गौरीशंकर हीराचंद ओझा – प्राचीन भारतीय लिपिमाला।

(8) डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य।

(9) सीताराम लालस – राजस्थानी व्याकरण।

(10) राजस्थानी सबद कोस (प्रथम खण्ड की भूमिक)

(11) डॉ. हीरालाल माहेश्वरी – राजस्थानी भाषा और साहित्य।

(12) डॉ. कल्याण सिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति।

इकाई-6

राजस्थानी साहित्य रो इतिहास : प्रमुख विद्वान अर मत मतांतर

इकाई रो मंडांण

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 राजस्थानी भासा अर साहित्य बाबत सोध करण वाळा विद्वानां री विगत

6.3 राजस्थानी साहित्य रौ काल-विभाजन-मत-मतातंरा री विगत

6.4 राजस्थानी साहित्य रौ प्रामाणिक काल विभाजन

6.4.1. आदिकाल अथवा वीरगाथाकाल

6.4.2. मध्यकाल अथवा भगतीकाल

6.4.3. उत्तर मध्यकाल अथवा रीतिकाल

6.4.4. आधुनिक काल

6.5 इकाई रौ सार

6.6 अभ्यास रा सवाल

6.7 संदर्भ ग्रंथ

6.0 उद्देस्य

इण इकाई रौ खास ध्येय विद्यार्थियां नै राजस्थानी साहित्य रै काल विभाजन बाबत सांगोपांग जाणकारी करावणौ है। इण सारू न्यारा-न्यारा भासा विद्वानां रा काल विभाजन बाबत परगट मत आपरै साम्हीं राखता थकां उणारी परख करीजैला। इण इकाई नै बांच्या पछै आपनै जाणकारी मिलैला कै-

* साहित्य रौ काल विभाजन किण भांत हुवै।

* राजस्थानी साहित्य रौ काल-विभाजन करण वाळा खास-खास विद्वान कुण है।

* आं विद्वानां रा कर्‌यौड़ा काल विभाजन किण भांत रा है।

* राजस्थानी साहित्य रौ सर्वमान्य काल विभाजन किणनै मान्यौ जावै।

1.1 प्रस्तावना

राजस्थानी भासा अर साहित्य रौ 1200 बरसां रौ सिमरध इतिहास रैयो है। मौकळा विद्वानां आपरै सोध सूं सिद्ध कर्‌यौ है कै राजस्थानी भासा री उत्पत्ति विक्रम रै आठवैं सईकै में हुयगी ही। इणरौ जूनौ नांव 'मरूभासा' मरूवाणी, मारू हो। वि.सं. 835 में मारवाड़ रा जालोर नगर में जैन मुनि उद्योतन सूरि 'कुवळयमाला' ग्रंथ री रचना करी, जिणमें उण बगत प्रचलित 18 देसी भासावां रौ उल्लेख इण भांत करीज्यौ है-

'''अप्पा-तुप्पा', भणिरे अह पेच्छइ मारूए तत्तो

'न उ रे भल्लउं', भणिरे अह पेच्छइ गुज्जरे अवरे

'अम्हं काउं तुम्हं', भणिरे अह पेच्छइ लाडे

'भाइ य इ भइणी तुब्भे', भणिरे अह मालवे दिट्ठे।''

इण भांत सूं विक्रमी संवत् 800 रै लगैटगै उत्पत्ति हुयां पछै राजस्थानी भासा अेक साहित्यिक जातरा सरु करी है। इणरौ विसाळ साहित्य भण्डार देसी-विदेसी विद्वानां नै सदीव ई सोध सारू आकर्सित करतौ रैया है अर राजस्थानी साहित्य बाबत मौकळा सोध करीज्या है।

साहित्य रै इतियास नै सरल अर सहज बणावण सारू उणरौ काल विभाजन कर्‌यौ जावै। राजस्थानी सबदकोस रा रचयिता अर मानीता विद्वान पद्मजी डॉ. सीताराम लालस रै सबदां में-''किणी ई साहित्य रै लगोलग विकास रौ अध्ययन सुविधाजनक अर सांगोपांग ढंग सूं तद ई हुय सकै, जद अैड़ौ साहित्य वैज्ञानिक तरीकै सूं उचित कालां में विभाजित कर्‌यौड़ौ हुवै।''

काल विभाजन करण वाला विद्वान साहित्यिक प्रवृतियां रै साथै इतिहास नै ई दीढ में राखै। राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन विद्वानां री अैड़ी इज दीठ रौ दाखळौ मान्यौ जा सकै क्यूंकै राजस्थानी साहित्य री प्रवृतियां जुगीन परिस्थितियां सूं अवस ई प्रभावित हुवती रैयी है।

6.2 राजस्थानी भासा अर साहित्य रौ इतिहास लेखन करण वाळा विद्वानां री विगत

जुगा सूं सिमरध साहित्यिक परंपरा अर विसाल साहित्य भण्डार री धणियाणी राजस्थानी भासा रौ साहित्य विद्वानां नै सोध अर अध्ययन सारू आकर्सित करतौ रैयो है अर भविस्य में ई रैवैला। राजस्थानी साहित्य माथै मोकळा विद्वानां रा सोध इणरौ पुखता प्रमाण है कै इण भासा में कीं खास बात रैयी है। राजस्थानी भासा-साहित्य रौ काल विभाजन करण वाळा विद्वानां री तीन श्रेणियां बणाई जा सकै-

6.2.1. विदेसी विद्वान-सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन, डॉ. अेल.पी. टैस्सीटोरी।

6.2.2 हिन्दी भासा रा विद्वान-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मिश्र बन्धु, बाबू गुलाबराय, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. नामवर सिंह, मुंशीराम शर्मा आद।

6.2.3 राजस्थानी विद्वान-सीताराम लालस, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, किशोर सिंह वार्हस्पत्य, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, प्रो. कल्याणसिंह शेखावत अर बी.एन. माळी आद।

सगळा विद्वानां आपरै व्यापक सोध-खोज सूं राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन कर्‌यौ है। पैलां इज लिख्यौ गयौ है कै इण काल विभाजन रै लारै विद्वानां री निजू हीठ, साहित्य री प्रवृतियां अर जुगीन हालातां रौ असर खास प्रभावी रै'यो है।

6.3 राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन : मत-मतांतरां री जाणकारी

राजस्थानी साहित्य बाबत विद्वानां रा कर्‌यौड़ा खास-खास काल-विभाजन इण भांत है-

6.3.1. अेल.पी. टैस्सीटोरी-इटली रा रैवासी अर राजस्थानी भासा रा हेताळू विद्वान अेल.पी. टैस्सीटोरी री दीठ में राजस्थानी साहित्य रा दो काल है-

(अ) प्राचीन डिंगल काल-ईस्वी सन् 1250 सूं 1650 तांई।

(ब) अर्वाचीन डिंगलकाल-ईस्वी सन् 1650 सूं आज तक।

टैस्सीटोरी मुजब डिंगळ रा दो स्वरूप है, पैलो प्राचीन डिंगळ, जिणरौ बगत तेरहवीं सताब्दी रै विचाळै सूं लेय'र सत्रहवीं सदी रै बिचाळै ताई रौ है। दूजौ स्वरूप, अर्वाचीन डिंगळ सत्रहवीं सदी रै विचाळै सूं अजे तांई रौ मान्यौ जावै।

6.3.2. डॉ. मोतीलाल मेनारिया-राजस्थानी साहित्य रा विद्वान डॉ. मोतीलाल मेनारिया आपरै ग्रंथ 'राजस्थानी भाषा

और साहित्य' में 'राजस्थानी भासा अर साहित्य रै क्रमिक विकास नै दीठ में राखता थकां काल विभाजन कर्‌यौ है, जिकौ इण भांत है-

प्रारम्भकाल-संवत् 1045 सूं 1460 तांई।

पूर्व मध्यकाल-संवत् 1460 सूं 1700 तांई।

उत्तर मध्यकाल-संवत् **1700** सूं **1900** तांई।

आधुनिक काल-संवत् **1900** सूं अजे तांई।

6.3.3. प्रो. नरोत्तम दास स्वामी-राजस्थानी साहित्य रा विद्वान प्रो. नरोत्तमदास स्वामी आपरै ग्रंथ ''राजस्थान साहित्य : एक परिचय'' में राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन करता थकां लिख्यौ है-''राजस्थानी साहित्य री सरूआत ईसा री बारहवीं सताब्दी सूं हुयी। दूजी सगळी आधुनिक भारतीय आर्यभासावां रै साहित्य री सरूआत ई लगैटगै इणी बगत सूं इज हुयी। इण काल सूं पैलां री भासा अपभ्रंश ही। कैईक विद्वान भारतीय भासावां री उत्पत्ति इण बगत सूं पैलां री मानै पण उणारा मत सौ टंच खरा नीं लागै। वै अपभ्रंश नै इज गुजराती, बंगला आद मान लेवै पण अपभ्रंश अर आधुनिक भासावां में मौकळौ अंतर है। आधुनिक भासावां में कैईक अैड़ी खासियतां है, जिकी उणानै अपभ्रंश सूं अळगौ करै। अै विसेसतावां जिण बगत सूं खास सूं दिखै, तद सूं इज आधुनिक भासावां री सरूआत मानणी सही रेवैला। साहित्य में अैड़ी विसेसतावां बारहवैं सईकै सूं इज निगै आवण लागी ही।

सगळी दीठ नै ध्यान में राखतां थकां राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन इण भांत है-

(1) प्राचीन काल-लगैटगै सं. **1200** सूं **1550** तांई।

(2) माध्यमिक काल-सं. **1550** सूं **1950** तांई।

(3) अर्वाचीन काल-सं. **1950** रै पछै।

6.3.4 डॉ. हीरालाल माहेश्वरी रो काल विभाजन-हिन्दी अर राजस्थानी भासा रा लूंठा विद्वान डॉ. हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी साहित्य रै काल विभाजन में मध्यकाल नै खास महत्त्व देवै अर इण जुग नै राजस्थानी साहित्य रौ 'स्वर्णकाल' मानै। वै काल विभाजन करता थका लिखै-

(1) प्रारंभिककाल-ई.सन् **1050** सूं **1450** तांई।

(2) मध्यकाल-ई. सन् **1450** सूं **1850** तांई।

(3) आधुनिक काल-ई. सन् **1850** सूं, जिणनै दो भागां में बांट्‌यौ जा सकै-

(अ) ई.सन् **1850**-57 सूं **1947-50** तांई

(ब) ई. सन् **1950** सूं अजे तांई।

6.3.5 श्री सीताराम लालस रो काल विभाजन-राजस्थानी सबदकोस रा रचयिता डॉ. सीताराम लालस आपरै ग्रंथ ''राजस्थानी भाषा-साहित्य एवं व्याकरण'' में राजस्थानी भासा अर साहित्य रौ काल विभाजन करणै सूं पैलां री भूमिका में लिखै-''राजस्थानी भासा रै साहित्य री नींव विक्रम री नौंवी सदी में राखीज गयी ही, इण सारू राजस्थानी साहित्य रै प्राचीन काल री सरूआत ई नौंवी सदी विक्रमी सूं मानी चाईजै। डॉ. टैस्सीटोरी प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी रौ अपभ्रंश सूं अेकदम अळगौ हुवण रौ बगत तेरहवीं सताब्दी रै लगैटगै निस्चित कर्‌यौ है। अठै स्पस्ट करणौ जरूरी है कै पन्द्रहवीं सताब्दी तांई डिंगळ भासा अपभ्रंस रै असर सूं मुगत नी'' हुय सकी ही। इण सारू 15वीं सताब्दी रै पैलां रै साहित्य नै प्रारंभिक काल

रै साहित्य में मान्यौ जारणौ सारथक रैवैला। लगैटगै इणी बगत रै पछै डिंगळ अेक सुतंतर अर सुगठित काव्य भासा रै रूप में विकसित हुई। इणरै पछै रौ काल मध्यकाल मान्यौ जा सकै। इण जुग में रच्यौड़ौ सांगोपांग अर लूंठौ साहित्य ई राजस्थानी नै पूर्ण विकसित सरूप बगस्यौ अर इण भासा नै जस दिरावण वाळा घणकरा'क कवेसर इणी काल में हुया। कैई विद्वान महाकवि सूरजमल मीसण रै बगत सूं आधुनिक काल री सरुआत माने।''

अध्ययन री दीठ सूं सीताराम लालस राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन करता थका आगै लिखै-''म्हारी हीठ सूं राजस्थानी साहित्य रो इण भांत सूं काल-विभाजन कर्‌यौ जा सकै''

(1) आदिकाल-वि. सं. **800** सूं **1460** तांई।

(2) मध्यकाल-वि.सं. **1460** सूं **1900** तांई।

(3) आधुनिक काल-वि.सं. **1900** सूं अजे तांई।

प्रो. (डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत-मीरां काव्य रा जगचावा विद्वान अर राजस्थानी भासा-साहित्य रा वरिस्ठतम प्रोफेसर डॉ. कल्याणसिंह शेखावत आपरै ग्रंथ ''राजस्थान भाषा एवं साहित्य'' में राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन करता थकां लिखै कै-''म्हारी दीठ सूं काल विभाजन में इतिहास ई महताऊ ठौड़ राखै, इण सारू राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन ई अैतियासिक प्रस्ठभोम रै आधार माथै इण भांत कर्‌यौ जा सकै-

(1) आरंभिक काल-

(अ) अभिलेखीय काल-वि.सं. **800** सूं 12वीं सदी तांई।

(ब) आदिकाल (वीरगाथाकाल)-वि.सं. **1250** सूं **1450** तांई।

(2) मध्यकाल-

(अ) पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)-वि.सं. **1450** सूं **1650** तांई।

(ब) उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)-वि.सं. **1650** सूं. **1850** तांई।

(3) आधुनिक काल-

(अ) प्रथम चरण-ई. सन् **1850** सूं **1920** तांई।

(ब) द्वितीय चरण-ईस्वी सन् **1920** सूं 1947 तांई।

(स) तृतीय चरण-ईस्वी सन् 1947 सूं अजेलग।''

6.4 राजस्थानी साहित्य रौ प्रामाणिक काल विभाजन

लारै पढ्यौड़े बिन्दु में आपरै सांम्हीं राजस्थानी साहित्य रै काल विभाजन बाबत कर्‌यौड़ा सोध सामी आया। डॉ. सीताराम लालस रा अै सबद-(हिन्दी में)-''वस्तुत: साहित्य काल विभाजन किसी काल विशेष की समाप्ति और दूसरे काल के आरंभ होने के मध्य कोई निश्चित सीमा नहीं रखी जा सकती। अत: हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि काल की समाप्ति के पश्चात् उस काल की शैली एवं परंपरा में आगे कोई रचना नहीं हुई होगी। आरंभिक काल की भी कुछ विशेषताएँ ऐसी हैं जो मध्यकाल की रचनाओं में भी पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त आधुनिक काल के भी अनेकानेक कवि मध्यकालीन ऐतिहासिक परम्परा का अनुसरण करते आ रहे हैं। अत: उपर्युक्त सीमा रेखाएं भी परिवर्तन के आरंभ की ही सूचक मानी जा सकती हैं।''

काल विभाजन करणै सूं पैलां री भूमिका में प्रो. कल्याणसिंह शेखावत लिख्यौ है–''अठै साच ओ है कै राजस्थानी भासा अर साहित्य रै इतियास सूं जुड़्यौड़ौ गैरौ अध्ययन अजे तांई नीं हुयौ है। अैड़ो अध्ययन साहित्य रै बगत, प्रवृतियां, काव्य धारावां, रचनाकारां अर वारै रचनाकाल जैड़ा बिन्दुवां माथै अजेस ई कर्‌यौ जा सकै।''

वि.सं. 835 तांईं आवतै–आवतै राजस्थानी साहित्यिक भासा रौ रूप ई धारण कर लियौ हो, जिण रौ पुखता प्रमाण जैन मुनि उद्योतन सूरि रचित 'कुवलयमाळा' ग्रंथ नै मान्यौ जा सकै। दूजी कानी भासा–वैग्यानिक ई अपभ्रंस रौ छेकड़लौ बगत वि.सं. 1000 तांई मानै। इण सूं सिद्ध हुवै कै विक्रम री आठवीं सदाब्दी सूं वि.सं. 1000 तांई अपभ्रंस अर राजस्थानी रौ भेळौ रूप सांम्हीं आवै जिणमें अपभ्रंस भासा री सबदावली अर राजस्थनी रै जूनै रूप मरुभासा रै रूप में इण लौकिक सबदावली रा महताऊ उदाहरण देख्या जा सकै।

1.5.0 प्रो. कल्याणसिंह शेखावत – आपरै ग्रंथ 'राजस्थानी भाषा एवं साहित्य' में इण सरूआती काल री विवेचना करता थका लिखै कै–''ओ साच है कै वि.सं. 800 सूं लेय'र बारहवीं सताब्दी तांई रौ कोई हस्तलिखित ग्रंथ अजेस नीं मिळ्यौ है पण इण जुग–री मौकळी 'अभिलेखीय सामग्री' मिळै जिणरै आधार माथै इण जुग रौ नांव इज 'अभिलेखीय काल' राखणौ सारथक हुवैला। इण बगत नै राजस्थानी साहित्य रौ सरुआती काल कैयो जा सकै।''

प्रो. शेखावत जुग रा हालातां नै उजागर करता थका लिखै–''विक्रम रै सातवैं सईकै सूं इज भारत माथै लगोलग हमला हुंवता रैया अर इण भांत रा आक्रमणकारी धन लूटण रै साथै–साथै अठै री धार्मिक–सांस्कृतिक धरोहर नै ई नस्ट करणै री खास मंसा राखता। आं ही हमलावरां री वजह सूं आपणी सरुआती साहित्सिक सम्पदा ई नस्ट हुई।''

प्रो. शेखावत रै इण विवेचन नै बांच्यां पछै अेक महताऊ सवाल उठै कै आठवीं सताब्दी में जिण भासा नै साहित्य अर लोक दोनां प्रचलन में अंगेज ली ही, उणरौ विकास अेकाअेक रुक क्यूं गयौ? लगोलग हमलां में मौकळी साहित्यिक सामग्री खतम हुई, जिणमें राजस्थानी भासा री रचनावां ई भेळी ही। इण जुग री रचनावां भलांई आज नीं मिळै पण सिलालेखां, तांबापत्तरां, ताड़पतरां, सिलालेखां माथै मंड्यौड़ी भासा राजस्थानी भासा रौ सरुआती साहित्यिक सरूप उजागर करै।

राजस्थानी भासा रौ काल विभाजन प्रो. कल्याणसिंह शेखावत इण भांत करियौ है।

6.5 राजस्थानी साहित्य रौ आदिकालः या आरंभिक काल–(वि.सं. 800 सूं 1450 तांईं)

राजस्थानी भासा साहित्य रै इतिहास नै चौखी तरै समझण सारू आदिकाल नै दो भागां में बांट'र अध्ययन वां रै मुजब प्रो. कल्याणसिंह शेखावत कर्‌यौ है–

6.5.1 अभिलेखीय काल (वि.सं. **800** सूं संवत् **1000** तांईं)

सरुआती काल रौ राजस्थानी साहित्य अभिलेखां आद रै मारफत ई निगै आवै, इण सारु आदिकाल रौ पैलो भाग 'अभिलेखीय काल' रै रूप में प्रो. कल्याणसिंह शेखावत गिणायौ है।

6.5.2 वीरगाथा काल (वि.सं. **1000** सूं **1450** तांई)–

अभिलेखीय काल रै पछै री हाथ लिखी राजस्थानी रचनावां रौ मूळ भाव वीरता रौ रैयौ है अर 'खुम्माण रासौ', 'बीसलदेव रासो', 'रणमल्ल छंद्र' आद ग्रंथां में रजपूती सूरपणै रौ जसगान देखण नै मिळै। दूजा ग्रंथ ई वीर भावां सूं भर्‌यौड़ा है। इण भांत रै साहित्य–सिरजण री प्रवृति नै देखता थकां अभिलेखीय काल रै पछै रौ काल 'वीरगाथा काल' कैवणौ ई घणो सारथक हुवैला।

राजस्थानी साहित्य रौ आदिकाल वि.सं. **800** सूं. **1460** तांई मानणौ घणौ ठीक रैवैला।

6.5.3 मध्यकाल (वि.सं. **1450** सूं. ईस्वी सन् **1850** तांई)

राजस्थानी साहित्य री जिण जस जातरा री सरुआत विक्रम री आठवीं सताब्दी रै लगैटगै सरु हुई, उणरौ खास मुकाम पन्द्रहवैं सईकै में भळै हासल हुयौ क्यूंकै इण काल में पूगतां-पूगतां राजस्थानी साहित्य री प्रवृतियां में सरुआती काल सूं सांगोपांग बदळाव आयौ। साहित्य रा विद्वान इणनै 'मध्यकाल' रौ नांव देवै जिणरी सरूआत विक्रम संवत् **1450** रै लगैटगै सूं मानी जावै। इण जुग री जातरा ईस्वी सन् **1850** तांई दो चरणां में पूरी हुवै जिणनै 'पूर्व मध्यकाल' अर 'उत्तर मध्यकाल' रा नांमां सूं जाण्यौ जावै। मध्यकाल रै आं दो भागां री विगत इण भांत करी जा सकै-

6.5.1. पूर्व मध्यकाल या कै भगतीकाल (वि.सं. 1450 सूं. वि.सं. 1650 तांई)-

मध्यकाल रा पैला भाग में भगती अर संत साहित्य रै रूप में सिरजण रौ खास चलण देख्यौ जा सकै। इण भांत री खास काव्य-प्रवृति रौ आधार उण जुग रो वातावरण रैयो है क्यूंकै मध्यकाल रै सरुआत में लगोलग हमलावरां आम जनता नै धरम छोडण सारु मजबूर करिया जिणसूं साधारण लोग घणा दुखी हुआ। अैड़ा अवखा बगत में भगतां अर संतां आपरी वाणियां अर साहित्य सूं जनता नै अबखायां नै सहनकरण री ताकत दी।

6.5.2. रीतिकाल (वि.सं. **1650** सूं ईस्वी सन् **1850** तांई)

मध्यकाल रौ औ बगत भारतीय इतियास री दीठ सूं घणौ महताऊ मान्यौ जा सकै क्यूंकै इणी काल में लगैटगै आखै भारत में राजसत्ता मुस्लिम सासकां अर उणसूं पछै अंग्रेजां रै हाथां पूगी। रीतिकाल में घणकरीक रचनावां रौ विसै सिंणगार कै काव्य में विद्वता-प्रर्दसण करणौ रैयौ पण अठै इणरौ औ अरथ नीं है कै वीर कै भगती काव्य जाबक इज नीं रच्यौ गियौ। किणी काल रौ साहित्यिक नांवकरण उण जुग री साहित्यिक प्रवृत्तियां रै आधार माथै कर्‌यौ जावै अर इणी तथ्य नै दीठ में राखता थकां मध्यकाल रै दूजै चरण रौ नांव 'रीतिकाल' राखणौ घणौ सारथक हुवैला। इण काल खण्ड नै रीति काल रो नाम भी दियो गयो।

6.5.3 आधुनिक काल (सन् **1850** सूं अजै तांई)-

किणी ई भासा रौ साहित्य आपरै जुगीन वातावरण सूं अवस प्रभावित हुवै। राजस्थानी साहित्य रै आधुनिक काल री सरुआत सन् **1850** सूं मानी जावै। आधुनिक काल रै राजस्थानी साहित्य रौ मूळ चिन्तन पैला स्वतंत्रता संग्राम सूं उपजी चेतना सूं जुड्‌यौड़ौ रै 'यौ है। सन् **1850** सूं 1875 रौ बगत भारतीय इतियास रौ अैड़ो संधिकाल है, जिणमें रास्ट्रीय भावना, संस्कृति गौरव, स्वतंत्रता अर अेकता जैड़ा भावां रौ जलम हुयौ। इणी रौ असर राजस्थानी भासा रै साहित्य माथै ई पड्‌यौ अर इणमें परम्परागत भावबोध अर सैली सूं हट 'नै नूंवै भावबोध रौ प्रवेस हुयौ। साहित्य रा विद्वान आधुनिक राजस्थानी साहित्य नै तीन चरणां में बांटै-

(अ) पैलो चरण-ई. सन् **1850** सूं **1920** तांई।

(ब) दूजौ चरण-ई. सन् **1920** सूं 1947 तांई।

(स) तीजौ चरण-ई. सन् 1947 सूं अजे तांई।

इण भांत सूं सन् **1850** सूं राजस्थानी साहित्य रै आधुनिक काल री सरुआत हुई अर आदिकाल अर मध्यकाल री गरबजोग साहित्यिक सिरजण परम्परा इण जुग में ई लगोलग आगै बधी।

6.5 इकाई रौ सार

इण इकाई में आपां राजस्थानी भासा साहित्य रै आदिकाल, मध्यकाल अर आधुनिक काल रा साहित्य रा प्रमाणिक काल विभाजन समझण री कोसीस करी। राजस्थानी साहित्य रा विद्वानां रौ कर्‌यौड़ा काल-विभाजन नै सांम्हीं राखतां थकां

अेक प्रमाणिक अर सर्वमान्य काल-विभाजन करण री खैंचळ इण इकाई में करी गई है।

6.6 अभ्यास रा सवाल

6.6.1. छोटा सवाल

1. जैन मुनि उद्योतन सूरि किण ग्रंथ री रचना करी ?

2. राजस्थानी भासा साहित्य बाबत किण विदेसी विद्वानां सोध कर्‌यौ ?

3. राजस्थानी भासा साहित्य बाबत हिन्दी भासा रा विद्वानां सोध खोज करी है। इणमें किणी दो रा नांव मांडौ।

4. डॉ. अेल.पी. टैस्सीटोरी राजस्थानी साहित्य रौ काल-विभाजन किण भांत कर्‌यौ है ?

5. पद्‌म श्री डॉ. सीताराम लालस राजस्थानी साहित्य रै प्राचीनकाल रौ बगत कद सूं मानै ?

6.6.2. बड़ा सवाल

1. राजस्थानी साहित्य रौ काल-विभाजन करण वाळा राजस्थानी विद्वानां रा नांव मांडौ।

2. डॉ. मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी भासा साहित्य रौ काल विभाजन किण भांत कर्‌यौ है ?

3. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन किण भांत प्रस्तुत कर्‌यौ ?

4. प्रो. (डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत आपरै ग्रंथ 'राजस्थानी भाषा एवं साहित्य' में राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन किण भांत कर्‌यौ है ?

5. राजस्थानी साहित्य रौ काल विभाजन करौ।

6.7 संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. सीताराम लालस - राजस्थानी भाषा एवं व्याकरण

2. प्रो. नरोत्तमदास स्वामी - राजस्थानी साहित्य : एक परिचय

3. डॉ. मोतीलाल मेनारिया - राजस्थानी भाषा और साहित्य

4. प्रो. (डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत - राजस्थानी भाषा एवं साहित्य

5. डॉ. गोवर्द्धन शर्मा - डिंगळ साहित्य

6. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी - राजस्थानी भाषा और साहित्य

bdkb& 7

jktLFkkuh lkfgR; jk vkfndky vFkok ohjxkFkk dky

bdkbZ jk eMk.k

7.0 उद्देस्य

7.1 प्रस्तावना

(क) नामकरण

(ख) काल–निरणै

(ग) परिस्थितियां

7.2 आदिकाल री प्रामाणिक रचनावां : सामान्य परिचै

7.3 आदिकाल : अेक अध्ययन

(क) कालगत प्रवृत्तियां

(ख) काव्य–धारावां

(ग) काव्य–विधावां।

7.4 उपसंहार (सार)

7.5 अभ्यास सारू सवाल

7.6 संदर्भ–ग्रंथां री पानड़ी

7-0 mís';

1. इण इकाई रो खास उद्देस्य विद्यार्थियां नै राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल बाबत जाणकारी करावणौ है।
2. इण इकाई में आदिकाल रा प्रचलित बीजा नावां, समै बाबत विवाद रो खुलासौ करता हुया, इण काल री सियासी, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक अर आर्थिक हालातां सूं विद्यार्थियां नैं अवगत करायौ जावैला।
3. आं परिस्थितियां में किण तरियां री किसी–किसी रचनावां कठै लग प्रमाणिक है– आं सगळी बातां रो सामान्य परिचै करावणो है ।
4. आदिकाल री कालगत प्रवृत्तियां, काव्यधारावां अर काव्य–विधावां री विसद् व्याख्या करीजेला। अठै इण बात रो ई खुलासौ करीजेला कै प्रवृतियां, धारावां, विधावा रा अरथ देवण वाळा सबद दीखै, पण अै अेक–दूजा सूं अरथ भिन्नता राखै।

7-1 çLrkouk

¼d½ ukedj.k

हिन्दी साहित्य रै सरुआती काल आदिकाल रै नांवकरण ज्यांन राजस्थानी–साहित्य रै प्रारंभिक काल वास्तै ई विद्वानां री राय न्यांरी–न्यांरी रैयी। विभिन्न विद्वानां रै विस्लेसण रै उपरांत राजस्थानी साहित्य रै सरुआती काल वास्तै च्यार नांव साम्ही आवै– प्राचीनकाल, आदिकाल, वीरगाथा काल अर प्रारंभिक काल। आदिकाल अर प्राचीन काल नावां में जुगादीपण रो आभास हुवै। आं नावां रै कारण यूं लखावै कै इण काल रो साहित्य मिनख री आदिम प्रवृतियां सूं जुड़्यौड़ौ है। इणी भांत वीरगाथा काल नांव इण वास्तै ठावौ कोनी कैयौ जा सकै कै इण काल

री सगळी रचनावां वीर गाथावां या वीर रसात्मक कोनी। नरपति नाल्ह री रचना 'बीसलदेव रास' सिणगारात्मक बेसी है, वीर रसात्मक कम। फगत राणी रै ओळमें सूं नायक रै राज छोड'र चल्यौ जावणौ वीरता कोनी कही जा सकै। इणीज भांत 'प्रिथीराज रासौ' रचेता अर रचनाकाल री दीठ सूं अजैई विवादास्पद है। खुम्माण रासौ 17 वें सइकै री रचना सिद्ध हुई चुकी है। इण वास्तै राजस्थानी साहित्य रै प्रारंभिक नांव सारू प्रारंभिक काल या आदिकाल नांव ठावौ हुय सकै। इण नांव में इण काल री सरुआती रचनावां जिणां में राजस्थानी में अैड़ै–नैड़ै री भासिक प्रवृतियां अर इण काल रै छैलड़ै हिस्सै री रचनावां अर विविध प्रवृत्तियां वाळौ साहित्य सामिल कर्‌यौ जा सकै। इण रूप में आदिकाल सूं अरथ सरुआती साहित्यिक प्रवृतियां सूं लेवणौ पड़ैला। जै कोई फगत मिनख री आदिम प्रवृतियां सूं इण नै जोड़ै तौ ई मिनख री आदिम प्रवृति पण साहित्य री विसयवस्तु हुय सकै क्यूंकै हिन्दी साहित्य रै सरूआती काल सारू आदिकाल नांव सरू हुयगौ हौ। अतः इण साहित्य वास्तै आदिकाल या प्रारंभिक नाव ठीक है। इणी प्रवृति सूं राजस्थानी साहित्य रै सरुआती साहित्य रो अध्ययन–अध्यापन सार्थक हुवैला। सागैई किणी काल रै नांव सारू जरूरी विसेसतावां रो ई समावेस हुय जावैला।

¼[k½ dky&fuj.k

नामकरण री भांत इज राजस्थानी रै सरूआती साहित्य रै काल–निरणै बाबत ई विद्वान अेक मत कोनी। विद्वान इण काल नैं वि.सं. 700 सूं वि.सं. 1650 लग री सींव में बांधै। विद्वान इणरा उपभेद प्रारम्भकाल, वीरगाथाकाल अर अभिलेखीय काल रूप में ई कर्‌यौ है। इण काल री सरुआती सींव वि.सं. 700 सूं मानण वाळा रो आधार जैन कवि पुष्य, स्वयंभू अर बीजा अभिलेख रैया है। डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. उदयसिंह भटनागर, पदमश्री सीताराम लालस, प्रो. कल्याणसिंह सेखावत इण वरग रा विद्वान है। आं आधारां रै अलावां ई उद्योतन सूरि री रचना 'कुवलमाला' (वि.सं. 835) है, जिणमें मरुभासा रो वरणांव मिळै। औ वरणांव साहित्य–सिरजण रा अेहलांण ई देवै। सागै ई विद्वान इण मत सूं ई सहमत लखावै कै 8 वीं सदी सूं वि.सं. 1000 लग अपभ्रंस अर राजस्थानी रो मिळयौ–जुळयौ रूप साम्ही आयौ, जिणमें आपभ्रंस री सबदावली अर राजस्थानी रै जूनै रूप में साहित्य सिरजित हुवण लागौ। इण आधार पांण विद्वान औई मानै कै राजस्थानी साहित्य रो सिरजण नुवैं सइकै रै पूठै लगोलग बधतौ रैयौ। हौळै–हौळै जन चेतना सूं भरपूर रचनावां रो सिरजण हुयौ। अैड़ी साहित्यिक भासा अर सांतरी अनुभूतियां रो सावळ रचाव इग्यारै सइकै सूं लगोलग हुवण लाग्यौ। राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल रो समै वि.सं. 1050 सूं 1550 हुय सकै। कुछेक बीजा विद्वानां मुजब आदिकाल (प्रारंभिक काल) री समै–सींव इण भांत है–

1. अेल.पी. टेसीटरी– प्राचीन डिंगल काल– 1300 ई. सूं 1600 ई.
2. प्रो. नरोत्तमदास स्वामी– प्राचीन काल– वि.सं. 1150–1550
3. डॉ. मोतीलाल मेनारिया– प्रारंभिक काल– वि.सं. 1045–1460
4. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी– विकास काल– वि.सं. 1100–1500
5. श्री सीताराम लालस– आदिकाल वि.सं. 800 सूं 1460
6. प्रो. कल्याणसिंह सेखावत–

   आदिकाल– वि.सं. 800 सूं 1450

   (अ) अभिलेखीयकाल (वि.सं. 800–1045)

   (ब) वीरगाथा काल (वि.सं. 1045–1450)।

कुछ विद्वान आदिकाल रै समैं में राजस्थानी साहित्य रा तीन–तीन चरण बताय दिया है, जिणां री विकासात्मक दीठ वीर गाथा काल लग गई है, ज्यान डॉ. उदयसिंह भटनागर इण समै रै इतियास नै आं तीन कालां सूं सम्बोधित करे–

(अ) प्रथम उत्थान या सूत्रपात युग (वि.सं. 700–1000)

(आ) द्वितीय उत्थान या नव विकास युग (वि.सं. 1000–1200)

(स) तृतीय उत्थान या वीर गाथा युग (वि.सं. 1200–1500)

डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया इण विगत नैं यूं मांडै–

(अ) प्रारंभ काल– वि.सं. 835–1240

(आ) वीर गाथा काल– वि.सं. 1241–1584

¼x½ okrkoj.k

¼v½ jktuhfrd

राजनीतिक दीठ सूं औ समै अराजकता अर उथळ–पुथळ रो हौ। राजपूत सत्ता उत्थान कांनी बध रैयी ही तो मलेच्छ सेना च्यारू कांनी भयंकर आक्रमणां सागै नरसंहार कर रैयी ही। इणसूं बधती देसी रियासतां री सगती खीण हुवण लागी, आपसी कलह बध्या। 11–12 वीं सदी में दिल्ली में तोमर, अजमेर में चौहान अर कन्नौज में गाहड़वाल रा राज थरपीजिया। वि.सं. 1150 में अजमेर री बीसलदेव चौहान, तोमरां सूं दिल्ली अर हांसी रो राज जीत'र उणनैं हिमाळै लग बधायौ अर तुर्का नैं पंजाब सूं खदेड़ दिया। वि.सं. 1250 में भारत रै आखरी सम्राट प्रिथिराज चौहान री मुहम्मद गौरी सूं हार रै पूठै राजस्थान ही नीं आखी भारतीय राजनीति में बदळाव आयगौ। भारतीय आज़ादी सारू झगड़ै री बागड़ौर हम्मीर, कान्हड़ दे चौहान, कुंभा, सांगा जैड़ा वीर राजावां रै हाथां आयगी जिका भारतीय मान–मरजाद री पूरी रक्षा कीधी। इण भांत इण काल में भारतीय स्वाधीनता सारू राजस्थान अेक खास राजनीतिक केन्द्र बणगौ। राजपूत सेनानायक राजस्थान रै न्यारै–न्यारै सुरक्षित जगावां में आपरौ राज थरपण लागा। मेवाड़ औ काम वि.सं. 790 में ई कर लीधौ पण राठौड़ां रा जोधपुर अर बीकानेर में, कछवाहां रा ढूंढाड़ में अर हाडा चौहानां रा हाड़ौती प्रदेस में राज इण काल में थरपीजिया।

इण राजनीतिक उठा–पटक रै वातावरण में अै राजनीतिक ताकतां अेक जुट हुय'र नीं रैयी। वां में रास्ट्रीयता रो अभाव ई रैयौ। सिरफ आपरी सींव लग ई वै आपरौ राज मानता हा। आखै भारत नैं वे कदैई रास्ट्र कोनी मान्यौ। इण वास्तै ई अै सामन्त विदेसी सत्तावां सूं हारता रैया। आपसी ईसकै–द्वेसभाव रै सागै भारतीय इतियास में औ काल पतनोन्मुखी ई रैयौ। 'प्रबन्ध चिंतामणीं (मेरुतुंग), पृथ्वीराज विजय (जयनीक), समरारास (अंबदेव) आद रचनावां में आं राजनीतिक परिस्थितियां रो घणौ ई सांतरौ वरणाव हुयौ है।

¼vk½ èkkfeZd

बिगड़ी थकी राजनीतिक अवस्था में धरमान्धता रो बधणौ स्वाभाविक है। राजपूती राजा अहिंसात्मक धार्मिक विचारधारावां (बौद्ध–जैन) रा विरोधी हा। वै सैव अर साक्त धार्मिक भगती रै विकास नैं सहयोग करण लागा। इणी रै विकास सूं नाथ पंथ रो उदय हुयौ। राजपूत राजावां रै सै'योग सूं वैस्णव धरम री धजा च्यारूं कांनी फैराबा लागी।

वैस्णव–भगती आन्दोलन आपरै नुवै रूप में प्रगट हुयौ। इस्लाम रा मौलवी भारतीय राजनीतिक वातावरण नैं असान्त करण वास्तै आं सगळी धार्मिक विचारधारां रा मठाधीसां में फूट डालण री भरपूर आफळ करी, जिणसूं ब्राह्मण–जैन, बौद्ध–नैयायिक, सैव, वैस्णव, विचारधारावां में खार पड़गौ। वै आपस में लड़ीजण लागा। पण जैन मतावलंबियां अर नाथ पंथी विचारधारा रै पांण दसवीं–ग्यारवी सदी में आं धार्मिक मतावलम्बियां में अेक लूंठौ बदळाव आयौ। इण नुवीं धार्मिक सोच सूं धार्मिक सहिस्णुता रो भाव बध्यौ। इण समरसता रो खुलासौ इण काल री पंच पंडव, चरितरास, बुद्धिरास, चंदनबाला रास, समरारास में मिळै। नाथां रै धार्मिक समन्वय बाबत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी री मानता है कै' संकराचार्य रै पछै जै कोई प्रभावी चिंतक हुयौ तौ वै सिरफ गोरखनाथ ई हा। वै औ ई मानै कै 'भगती आन्दोलण रै पैलां सबसूं सबळौ धार्मिक आंदोळण गोरखनाथ रो जोग मारग इज हौ।'

सैवट, आदिकाल री धार्मिक परिस्थितियां बेसी ई विसम अर असंतुलित ही। जन–मानस में गै'रौ असंतोस, दुःख अर भरम लखावै हौ।

¼b½ lkekftd vj lkaLd`frd

जद किणी राज कै देस में राजनीतिक अर धार्मिक असान्ति हुवै तौ उठै समाज में सांवळ वातावरण कींकर हुय सकै, अर जद समाज रो सोच इज विक्रत हुय जावै तौ उण समाज री संस्क्रति कींकर आपनैं ओपती अर प्रेरणादायी बण सकै। इस्लामी सत्ता रै बधतै प्रभाव सूं राजस्थानी समाज रै सागै ई सगळी भारत भोम री सामाजिक चूलां डिग गी ही। नाथ अर कौल पंथ रै वामाचारां तथा इस्लाम री कुदीठ रै कारण समाज में लुगाई सुरक्षित नी रैयी। वा सिरफ भोग्या बणगी। करम कांड, छूआ–छूत, जंतर–मंतरां जैड़ी कुटेकां रो समाज में बोलबालौ हो। समाज री आं कुरीतियां नैं मेटण री ई आफळ इण काल रै जैन रचनाकारां करी। 'बीसल देव रास' में इण काल री नारी री दयनीय हालत अर मिनख री वासना वृत्ति आं औळियां में जोय सका–

vL=hd tue dkbl nhèkm egslA
voj tU; èkkjb ?k.kk j! ujslAA

इण वातावरण में आदिकाल दो संस्क्रतियां (हिन्दू अर मुसलमान) रै ह्रास अर विकास रो काल हौ। हर्षवर्धन जिण हिन्दु संस्क्रति नैं सिरै पुगाई, इस्लामी आक्रमण अर उणरौ नित बधतौ प्रभाव उणरी किरच्या कर दीवी। हिंदू स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, संगीत आद कलावां में धार्मिक भावनावां रो मंडाण हौ पण मुसलमान भारत में आय'र मिंदर संस्क्रति रो नुकसान कर्‌यौ। भुवनेस्वर, पुरी, खजूराहो, कांची, तंजोर, आबू रो जैन मिन्दर जिका 11 वै सइकै री स्थापत्य कला रा बेजोड़ उदाहरण है, नैं खिंडा'र संस्कृति रो विनास कर दिरायौ। राजपूत राजा वांणी रक्षा खातर विदेसी सत्ता सूं जुद्ध करण वास्तै ढूक्या पण आप स्वारथ अर रास्ट्र प्रेम री कमी रै कारण सफल नीं हुय सक्या। राजपूत राजावां रै निजू गुमेज री इच्छा पूर्ति रै कारण राजस्थान अर आखै भारत री संस्क्रति, स्थापत्य, चित्रकला, संगीत, वाद्य, रीतिरिवाज, पैरावा, खाण–पांण माथै मुस्लिम संस्क्रति छायगी।

¼b½ vkfFkZd

इण अस्थिर अर असान्त वातावरण में देस रो आर्थिक वातावरण ई बदहाल हुयग्यौ। वौ देस जिणरी ओळखांण सोन चिड़कली (सोने की चिड़िया) रै रूप में ही, इण समै अेक

गरीब अर असहाय देस बण'र रैयगौ। लगोलग जुद्धा में लाग्या रैवण सूं उतपादन री बजाय खरचौ बधतौ गयौ। फौजां रै रख–रखाव अर प्रसासनिक खरच देस नैं आर्थिक दीठ सूं निबळौ कर दियौ। प्रजा आपरै अभावां सूं दुखी हुयगी। मलेच्छा री लूटपाट अर सोसण हुवण लागौ। विलासिता बधण सूं इणमें औजूं बधावौ हुयौ।

¼m½ lkfgfR;d

आं विरोधी परिस्थितियां में आदिकाल में आखौ भारतीय जन–जीवन अबखायां अर दौरप सूं भरपूर हौ। इण वातावरण में जनता रो अेक अैड़ौ वरग साम्ही आयौ जिकौ साहस अर वीरता सागै जुद्ध कर'र जीवणौ चावतौ हौ तौ दूजी कांनी अैड़ौ वरग ई ऊपजयौ जिकौ विनासलीला देख'र वीतरागी बातां सोचण लागौ। अराजकता, गृह–कलह, विद्रोह, आक्रमण अर जुद्ध रै वातावरण में जे अेक कवि आध्यात्मिक जीवन री सोचतौ हौ तौ दूजौ मरतां–मरतां ई रस भोगणौ चावतौ हौ। अेक तीजौ कवि ई हौ– जिकौ तरवार रा गीत गाय'र पूरै गुमैज सागै जीवणौ चावतौ हौ। अै ई इण काल री राजनीतिक परिस्थितियां री निरवाळी देन है जिण रै कारण अेक स्त्री भोग हठयोग सूं लेय'र आध्यात्मिक पलायन अर उपदेसां लग सूं जुड़यौड़ौ साहित्य लिखिजियौ तौ दूजी कांनी ईस्वर री लोक कल्याणकारी सत्ता में विस्वास, वीरता अर सांसारिकता री भावना ई इण काल रै साहित्य में उकेरीजी। संस्क्रत, अपभ्रंस अर जन भासा रै कवियां सूं हर्षवर्धन कालीन दरबार सैंठौ भर्‌यौ रैवतौ, पण वां नैं किण भांत री मदत्त कोनी मिळती। 10–11 वैं सइकै सूं राजपूत राजावां री राजधानियां थरपीजण पूठै लोक भासा रो मान बध्यौ। चारण–भाट आं रै आश्रय में रैवण लागा। उणा रै विरुद में कविता करतां अर धन–धरती ईनाम रूप में पावण लागां। आं राजावां री इण प्रव्रति सूं इण अराजक समै में ई लूंठै साहित्य रो सिरजण सरू हुयौ।

अपभ्रंस, मिश्रित अपभ्रंस अर लोक भासावां में रचीजियै इण जुग रै सिद्ध, नाथ, सैव अर साक्त साहित्य री परम्परा आगै कोनी बध सकी, क्यूं कै संरक्षण रै अभाव में औ साहित्य सुरक्षित नहीं रैय सकौ। जनता आं री रहस्यमयी साधना पद्धति अर निरवाळै विस्वासां सूं डरपती ही। जैन सम्प्रदाय री दाईं आं संप्रदायां रो संगठन पण द्रिढ़ कोनी हौ। इण वास्तै राज्याश्रय री भांत इज धर्माश्रय ई आं नैं कम मिळयौ। आं परिस्थितियां में आदिकाल में लोक भासा में लिखीजी जैन कवियां री रचनावां ई सुरक्षित रैय सकी अर उणां रो लेखन ई लगौलग बधतौ रैयौ। मरु गुर्जर प्रदेस (वर्तमान राजस्थान अर गुजरात) में इण साहित्य री सांवठी परम्परा रैयी।

7-2 vkfndky jh çkekf.kd jpukvk lkekU; ifjp

राजस्थानी साहित्य रै लगोलग पठन–पाठन री प्रव्रति सागै राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री प्रामाणिक रचनावां मुजब सवाल उठण लागा। इण संका रो मूल कारण रैयौ आचार्य रामचंद्र शुक्ल रै 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में वीरगाथाकाल सारू प्रामाणिक मानीजी अै राजस्थानी रचनावां है– पृथ्वीराज रासो, विजयपाल रासो, हमीर रासो (प्राक्रत पैंगलम), खुमाण रासो। अै च्यारूं रचनावां आपरै अस्तित्त्व, भासा अर घटनावां पांण आदि काल वास्तै संदिग्ध सिद्ध हुय चुकी है। गद्य–पद्य री 21 जैन अर जैनेत्तर रचनावां नैं प्रामाणिक मान'र एल.पी. टैसीटोरी आपरी पोथी 'पुराणी राजस्थानी' लिखी। आं रचनावां में आचार्य शुक्ल कानी सूं प्रामाणिक मानीजी वां चार रचनावां रो नामोल्लेख है। टैसीटोरी मुजब प्रामाणिक गद्य–पद्य री रचनावां हैं– रिसभदेव धवल संबन्ध, कान्हड़दै प्रबन्ध (पद्मनाभ), चतुर्विंशति जिनस्तवन, जम्बू

स्वामी नउ गीता छन्दड, पंचाख्यान, रत्नचूड़ या मणिचूड़ नी कथा, विद्याविलास चरित, शालिभद्र चउपई।

x| jpukok

आदिनाथ देशनोद्धार (बालावबोध), आदिनाथ चरित, इन्द्रिय पराजय शतक (बालावबोध), उपदेश माला बालावबोध (सोमसुंदर सूरि), कल्याण मंदिर स्तोत्र (अवचूरि), दशवैकालिका सूत्र (अवचूरि), दशदृष्टान्त, प्रश्नोत्तर रत्नमाला, भव वैराग्य शतक (बालावबोध), मुग्धावबोध– मौक्तिक, हेमचंद्र योगशास्त्र, शीलोपदेशमाला (जयकीर्ति), श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र (बालावबोध), षष्टिशतक (बालावबोध)।

इणी भांत कुछ विद्वान राजस्थानी भासा री पैली प्रामाणिक रचना रै रूप में पद्मनाभ रै 'कान्हड़ दे प्रबन्ध' नैं मानै। इणरौ रचना काल वि.सं. 1512 है। इण तिथि पांण औ सवाल उठै कै इणरै पैलां राजस्थानी भासा में कोई रचना नीं लिखीजी? जद इणरै पैलां कोई रचना सिरजी ई कोनी तौ आदिकाल री सरुआत ई वि.सं. 1512 सूं मानणी चाईजै।

सरुआती रचनावां री प्रामाणिकता बाबत सवाळ उठणौ स्वाभाविक है। अतः अठै वां रचनावां नैं प्रामाणिक मानी है जकां रै रचनाकाल नैं कोई मानीतौ विद्वान पुख्ताऊ करियौ है कै अन्तः साक्ष्य अथवा इतियासिक घटनावां रै आधार माथै इण काल (वि.सं. 1050–1550) में आवै। इण सीमांकन पांण इण काल री टाळवां जैन अर जैनेत्तर प्रामाणिक काव्य रचनावां है–

जैठवै ऊजळी रा दूहा (वि.सं. 1100 रै आखती–पाखती), उपदेस रसायन (जिनदत्त सूरि (वि. 1171) बीसलदेव रास– नाल्ह (वि. 1212) भरतेस्वर बाहुबली रास–वज्रसेन (वि. 1225), भरतेस्वर बाहुबलिरास– सालिभद्र सूरि (वि. 1241), थूळिभद्र फागु– जिनपद्म सूरि (वि. 1250), जीव दया–रास, चंदनबाला रास– आसिगु (वि. 1257), स्थूलिभद्र रास– जिनधर्म सूरि (वि. 1266), नेमिनाथ रास– सुमतिगणि (वि. 1270), रेंवतागिरी रास– विजयसेन सूरि (वि. 1288), आबूरास, नेमिनाथ बारहमासा– पल्हण (वि. 1289), महावीररास– अभय तिलक (वि. 1307), नेमिनाथ फागु– राजशेखर (वि. 1370), समरारास– अंबदेव सूरि (वि. 1371), हंसाउली– असाइत (वि. 1427), वीरमायण– बादर ढाढी (वि. 1440), रणमल्ल छंद– श्रीधर व्यास (वि. 1454), सदयवत्स चरित– भीम (वि. 1466), अचलदास खीची री वचनिका– सिवदास गाडण (वि. 1480), सिद्धचक्र श्रीपाल रास– मांडण (वि. 1498), ढोला मारू रा दूहा (वि. 15वीं सदी), वसंत विलास फागु (वि. 1508), कान्हड़ दे प्रबन्ध पद्मनाभ (वि. 1512)

आं टाळवां उल्लेखनीय रचनावां में सूं कुछेक रचनावां रो सामान्य परिचै अठै दियौ जा रियौ है–

1- HkjrLoj ckgcfy jkl

इणरा रचनाकार सालिभद्र सूरि है। औ वज्रसेन सूरि रा चेला हा, जिका री अेक महताऊ 48 छंदां री लघुकाय रचना 'भरतेस्वर बाहुबलि घोर' है। रचना री पुस्पिका मुजब इण रो रचना काल वि. सं. 1241 है। इण रै अलावा कवि री बीजी उल्लेखजोग रचना है– बुद्धिरास।

आलोच्य रचना में भरतेस्वर अर बाहुबली रो चरित कथीजियौ है। यूं तौ कवि आप कांनी सूं कथावस्तु रो कोई वरगीकरण कोनी करयौ गयौ पण अध्ययन री दीठ सूं इण नैं तीन हिस्सा में बांट सकां– भरत री दिग्विजय, भरत–बाहुबली रो जुद्ध अर बाहुबली रो दीक्षित हुवणौ। कथा पांण आ रचना वीर रस प्रधान है पण जैन सैली री रचना हुवण सूं इण रो अन्त सांन्तरस में ई हुयौ है। रचना रो मूल उद्देस्य भाई–भाई रै बिचै बैर भाव नैं मिटा'र साचौ भाईपौ थरपता हुया सत्य, अहिंसा, सान्ति, स्वतंत्रता आदि जीवणमूल्यां री थरपणा करणौ है।

काव्य–सौष्ठव री दीठ सूं रचना घणी सबळी है। नाटकीय प्रसंगां री योजना सूं रचना में अणूथी रोचकता आयगी है। इण भांत आ रचना राजस्थानी ई नीं जैन रासो परम्परा री अेक ओळखांण है।

2- chlyno jkl

अजमेर रै सासक बीसलदेव रै आश्रित भाट कवि नरपति नाल्ह इणरो सिरजण वि.सं. 1212 में कर्‌यौ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल वीर गाथाकाल नामकरण सारू इणनैं प्रामाणिक वीर रसात्मक रचना मानी है पण विसय–वस्तु री दीठ सूं इणमें वीर रस मुजब कोई घटना कोनी। इणरै कथानक सूं तौ आ सिणगार रस री रचना ई सिद्ध हुवै।

बीसलदेव आपरै ब्याव पछै राणी राजमती सूं रीस'र उड़ीसा कांनी परौ जावै। उठै वौ राजा री चाकरी करण लागै। विरह–व्याकुल राजमती अेक बामण रै हाथां कागद खिंदावै। उण कागद रै पांण वौ पाछौ अजमेर आय जावै अर सुख सूं रैवण लागै। इण भांत आ रचना बारहमासा सैली रो अेक लघु खण्ड–काव्य है। विरह–विकल नारी रा घणाई फूटरा चितरांम इणमें मंडीजिया हैं। कवि इणमें आदमी रै उत्पीड़न सूं दुःखी, बेबस नारी रै हिवड़ै री पीड़ नैं वाणी देय'र उणरै प्रति सहानुभूति जगाई है–

अस्त्रीय जनम कांई दियो हो महेस?

अवर जनम थारै घणा हो नरेस।

राणि न सिरजीय धड़ळीय गाउ।

वण खण्ड काली कोइली।

हंड बइसती अंबा नइ चंचा की डाल।

भाषती दाष बीजोरड़ी।

3- pnuckyk jkl

जैन कवि आसगु इणरी रचना जालोर नगर में वि.सं. 1257 में करी। औ पैतीस छंदां में रचियोड़ौ छोटौ–सो खण्ड बाव्य है। रचना री कथा–नायिका चंदन बाला चंपा नगरी रै राजा दधिवान री बेटी है। अेक'र कौसाम्बी रै राजा सतानीक चंपानगरी माथै घमासाण जुद्ध करै अर उणरौ सेनापति चंदनबाला रो अपहरण कर'र उण नैं अेक सेठ नैं बेच देवै। सेठ री जोड़ायत उण नैं घणा दुःख दैवै। चंदनबाला आपरै अटल सतीत्त्व रै पांण सगळा दुःख सेवती रैवै। सेवट महावीर सूं दीक्षा लेय'र मुगती पावै।

इण लघु कथानक माथै रच्यौड़ी आ जैन रचना करुण रस री गंभीर व्यंजना करै। भाव–सौंदर्य रा लूंठा चितरांम कवि री काव्य–निस्ठा रो सांतरो परिचै दिरावै। कवि इणमें सत्पख री विजै दिखा'र पुण्य बद्यापो, जिन भगवान री भगती अर दुःख–विनास रै मंडाण नैं ई आपरौ उद्देस्य बतायौ है। भासा री दीठ सूं राजस्थानी रै सागै गुजराती री भेळप है। वरणावां री सजीवता सरसता अर जन भासा री मनोरमता री दीठ सूं आ आदिकाल री अेक सफल काव्य रचना है।

4- ufeukFk Qkx

राजशेखर इण री रचना 27 छंदां में वि.सं. 1405 में करी। नेमिनाथ जैनियां रो 22वों तीर्थंकर है, ज्यां नैं वै भगवान क्रिसन रो रूप मान्यौ जावै। राजुलमती सूं आपरै ब्याव रै मौकै वै जद बारातियां वास्तै वध हुवता पसुवां री चीत्कार सुणै तौ चंवरी नैं छोड'र वै वैराग धारलैवौ। विसय वस्तु री दीठ सूं आ लघुकाय रचना घणी ई मार्मिक है। इण भांत इणमें अहिंसा अर करुणा जैड़ा मानव–मूल्यां नैं थरपण री चेसटा करीजी है।

5- gilkmyh

सिद्धपुर निवासी औदिच असाइत इणरी रचना वि.सं. 1427 में कीधी। इणरी कथावस्तु विक्रम

कथा चक्र सूं जुड़यौड़ी लोककथा पर आधारित है जिकी 468 छंदां अर च्यार खण्डां में समाहित है।

पुरपट्टन रो राजा नरवाहन अेक'र रात नैं कणयापुर पाटण रै राजा कनुक भ्रम री बेटी हंसाउली नैं सुपणा में देखै। वौ उण नैं पावण सारू उतावळौ हुवै, पण अेक मालण सूं पतौ चालै कै वा तौ मिनख विरोधी है। तद वौ आपरै भंगी मनकेसर री मदत्त सूं हंसाउली सूं परणै। दूजैड़ै खण्ड में दोय बेटा वत्सराज अर हंस जळमै। हंस रै युवा रूप माथै कामातुर हुय'र पटराणी लीलावती उणरै साम्ही आपरौ प्रेम–प्रस्ताव राखै पण हंस उण नैं ठुकराय देवै। पटराणी तद दोई भाइयां नैं मरावण रो आदेस दिरावै। मनकेसर दोई भाईयां नैं चतराई सागै बचाय'र जंगळ में खिंदा देवै। उठै वां नैं घणी ई अबखायां सूं जूझणौ पड़ै।

तीजै खण्ड में राजकुमार वत्सराज अर सनक भ्रमराज री कन्या चित्रलेखा रै प्रणय–प्रसंग रो वरणाव है। चौथै खण्ड में प्रति नायक पुष्पदंत कानी सूं राजकुमार वत्सराज नैं छळ सूं समन्दर में पटक'र राजकुमारी सूं अळगी कर देवण रो वरणाव हुयौ है। संजोगवस हंसराज नैं कांतिनगर रै निपूतै राजा री मिरत्यु पूठै वठां रो राज मिळ जावै। आखेट में वत्सराज पण उण नैं मिळ जावै। इण भांत जैन कथावां रै दो भाईयां रै कथा तंतु सूं सिरज्योड़ी इण रचना में सिणगार रस रै सागै अद्‌भुत रस री सांतरी अभिव्यक्ति व्ही है। कथा रो अन्त सुखान्त है।

6- ohjek;.k

ओज गुण प्रधान इण रचना रा रचेता कवि है बादर ढाढ़ी। चारण सैली री वीर रसात्मक रचनावां में वरणाव री दीठ सूं इणरौ घणौ महत्त्व है। इण रो रचनाकाल वि.सं. 1440 है। इण में रावल मल्लीनाथ अर उणा रै पाटवी बेटै जगमाल री वीरता, राव वीरमजी रो इतियास अर आखर में उणां रै बेटै गोगाजी द्वारा आपरै बापू री मौत रो बदळौ लेवता जुद्ध में वीर गति पावण रो खुलासै रे साथ वरणाव हुयौ है। इण भांत इण में इतियास री घणी सामग्री सुरक्षित है। गो.ही. ओझा, विश्वेस्वर नाथ रेऊ, रामकरण आसोपा अर जगदीश सिंह गहलोत आद विद्वानां री इतियास रचनावां ई आं घटनावां री साख भरै। इण रै अलावा कवि आपरै चरित नायकां रो जथा–तथ वरणांव कर्‌यौ है। उणां रै गुणां नैं कठै ई बढ़ा–चढ़ा'र नहीं दरसायौ।

7- <kykek: jk nqgk

'ढोला–मारू रा दूहा' अेक लोकसैली री रचना है, जिणरौ रचनाकाल इणरै संवादकां मुजब वि. सं. 1450 रै पछै रो नीं हुय सकै। सोध रै पांण विद्‌वाण इण रचना नैं राजस्थानी रै प्रारंभिक काल री मानता हुया इण नैं जनप्रिय लोकगीत कैवै।

'ढोला–मारू रा दूहा' काव्य में नरवरगढ़ (ग्वालियर) रै राजा नल रै बेटै ढोला (साल्हकुमार) अर पूंगळ (बीकानेर) रै राजा पिंगल री डीकरी मारवणी (मारू) री प्रेम गाथा कैईजी है। दोयां रो ब्याव बाळपणै में पुस्कर में हुवै। उण वगत ढोलौ तीन बरस रो अर मारवणी डौढ़ बरस री हुवै। मोट्‌यार हुवण पर साल्ह कुंवर रो ब्याव मालवणी सागै कर दीरीजै, पण इणरी जाणकारी राजा पिंगल नैं नीं दिरायी जावै। अठीनै राजा पिंगल नरवर गढ़ घणाई संदेसा भेजै, पण उणरौ वां नैं कोई पडूत्तर कोनी मिळै।

घोड़ा रै व्यापारी सूं पिंगल नैं बैरौ हुवै कै साल्हकुंवर मालवणी सागै परणीजगौ है अर वा उणरै संदेसां नैं ढोला लग पूगण ई नीं देवै। इण संवाद नैं मारवणी ई सुण लैवै। सौदागर री सलाह मुजब मारू रा संदेसा ढाढी लेय'र नरवरगढ़ पूगै, ज्यां नैं ढोलौ सुणै। ढोलौ विरह विगलित हुय'र संवारै ढाढियां नैं तेड़ावै अर सगळी विगत सांभळ'र पूंगळ जावण री योजना बणावै।

अेक दिन ढोलौ मालवणी नैं बिळखती छोड़'र पूंगल कांनी जावै। गैला में उणरै सागै घणाई छदम खैलीजै, अबखाया आवै पण वौ आखर में मरवण कनै पूग जावै। ढोला रो संजोग हुवै। ढोलौ घणोई पिछतावौ करतौ, इण बिछोह नैं भाग रा लेख मानै। सासरै सूं बिदा हुय'र ढोलौ– मारवणी सागै नरवर कांनी निकळै। पीवणौ सांप मरवण नै डस लेवै। ढोलौ सतो हुवण नै ढूकै पण सिव–परवती प्रगट हुय'र बींनै समझावै अर मारवणी नै सरजीवित करै। वै पूंगळ कांनी आगै बधै कै ऊमरौ–सूमरौ उणसूं छळ करै। ज्यूं–त्यूं अबखायां नैं आघी करता वै नरवरगढ़ पूगै। सरू में तौ मालवणी खोड़िलाइया करै पण पछै तीन्यू घणै आनन्द सागै रैवण लागै।

आ आखी कथा 674 दूहा–सोरठा, गाहा, चंद्रायण छंदां में कैयीजी है। इणरौ विरह त्रिकोणात्मक है। ढोला– मारवणी अर मालवणी तीन्यू रै ई विरह में सात्विकता है। इण भांत प्रेम, संजोग अर विजोग री आ अेक लूंठी राजस्थानी रचना है। दाम्पत्य री लगोलग लालसा, आसक्ति अर अनन्यता तीन्यू में है। प्रसंग मुजब रौद्र, हास्य, सान्त अर करूण रस रा ई सांतरा चित्राम मिळै। इणरी सहज भासा, संवादसैली, नाटकीयता इणरै मरमीळैपण नैं औजू बधावै। सादृस्य मूलक अलंकारां रो प्रयोग इणरै वरणावां नैं ओपता बणावै। आं सगळी विसेसतावां रै सागै इणमें उण वगत रै राजस्थान री धरती, धरती रो जन अर जन रो जीवण सगळी रो बड़ौ ई सुन्दर वरणाव हुयौ है। इणमें साहित्य, संस्क्रति अर इतियास री त्रिवेणी रा दरसाव हुवै।

8- j.keYy Nn

श्रीधर व्यास रचित 'रणमल्ल छंद' इण काल री चावी अर महताऊ वीर रसात्मक रचना है। इणरा संपादक श्री मूलचंद प्राणेस ई इण नैं 'वीर रसात्मक ऐतिहासिक खण्ड काव्य' कैयौ है। कवि श्रीधर इणमें ईडरपति वीर रणमल्ल रै सुलतान ज़फ्फर खान रै सागै हुया जुद्ध रो 70 छंदां में वरणाव मांड्यौ है। औ वरणाव उण वगत रै पश्चिमोत्तर भारत री सगळी उधळ पूथळ रो सागेड़ो चितरांम है। कवि रणमल्ल री वीरता अर पुरुसार्थ नैं दरसावता उण सारू 'वीरवर, वीर कमधज, शकदल मर्दनोजयति' जैड़ा विसेसण बरतीजिया है।

कवि अठै रणमल्ल री वीरता रो बखाण निरपेख भाव सूं कर्‌यौ है। इण वास्तै मौकैसर वौ दुसमी रै बाहुबल नैं ई उपाडै। इण वीरता नैं वौ अपभ्रंस मिश्रित जूनी राजस्थानी में मांड़ी है। आपरी अनुरणात्मकता सूं वीर भाव नैं घणै सांतरै रूप में अभिव्यक्ति मिळी है। अेक उदाहरण देखणजोग है–

<e <ebl <e&<e dj <dj <ky <kyh tfx;k
lj djfg j.k lj.kkb legkfj ljl jfl lejfx;k
dGdGfg dkgy dkfM dyjfo dey dk;j Fkjijb
lpjb ld ljrk.k lkg.k lkglh lfo lxjbAA

9- vpGnkl [khph jh opfudk

सिवदास गाडण रचित 'अचळदास खीची री वचनिका' आदिकाल री अेक महताऊ रचना है। कवि इण रै रचनाकाल रो कठै ई कोई उल्लेख नहीं कर्‌यौ है पण रचना री अेतियासिक विसयवस्तु री घटनावां रै आधार पांण आ रचना वि.सं. 1480 री सिद्ध हुवै। इणमें मांडूपति बादसाह हौसंगसाह कै अलपखां (आलम खां गौरी) अर गागरोनगढ़ रै चौहानवंसी हिन्दू राजा अचळदास खीची रै जुद्ध री कथा कैईजी है। हिन्दुत्व री रक्षा खातर अचळदास रै द्रिढ़ निसचै, पराक्रम अर आखर में जौहर रो घणौ ई मार्मिक वरणांव करीजियौ है।

राजस्थानी साहित्य री वचनिका सैली री आ पैली अर प्रतिनिधि रचना है। इण री अेक औजूं खासियत है कै इण जुद्ध में खुद कवि हौ। इणमें मंडीजी हर घटना उणरी आंख्यां देखी ही है। वौ इण आंख्या देख्या जोहर रो वरणांव करता लिख्यौ है–

tmgj ekfg tkfGokg] blb r!t iblb vuGA
ifgyh Fkh jfg ikfNyh] ix vid iMkom ukgAA

10- dkUgM n! çcUèk

जालोर रै सासक सोनगरा चौहानवंसी कान्हड़ दे व अर अल्लाद्दीन अर मालदेव अर वीरमदेव रै साथै लड़ीजियै जुद्ध सूं संबन्धित इण रचना रौ सिरजण बीसलनगर (गुजरात) में जळम्यौड़ा नागर बामण कवि पदमनाभ वि.सं. 1512 में कीधो।

कवि रो इण रचना रै लिखण सारू खास उद्देस्य उणरै आश्रयदाता री कीरत गाथा नैं घणी ईमानदारी सागै मांड'र उणरी कीरती रो विस्तार करणौ ई हौ। आपरै इण उद्देस्य री पूरति वास्तै ई आलोच्य रचना में वर्णित ज्यादातर घटनावां इतियास समरथित हैं। कवि आपरी बहुग्यता सूं उण वगत री सामाजिक, सांस्क्रतिक स्थितियां रो ई सांतरौ अर ठावौ वरणाव करयौ है।

भासाविग्यान री दीठ सूं इण रचना रो घणो महत्व है। इणमैं पुराणी राजस्थानी रै 'अइ' 'अउ' रूप बरतीजिया है। विसय–वस्तु री दीठ सूं इणरौ रस वीर है। जुद्धोन्माद रो ओजस्वी वरणाव पूरी रचना में आखरां ढकिया है।

11- jk; gEehjno pkib

इण रा रचयिता भाण्डउ व्यास है। अजै लग आ रचना अणछपी है। इणमें इण रो रचनाकाल वि.सं. 1538 दियोड़ौ है। विसयवस्तु रणथम्भोर रै चौहान वीर हम्मीर हठीलै रै अल्लाउद्दीन रै सागै हुयौड़ै जुद्ध सूं सम्बन्धित है। 321 दूहा–चौपई अर गाथावां में इण जुद्ध रौ, हम्मीर री सरणागत रक्षा, पराक्रम अर आखिर में उणा री मिरत्यु रो घणौ ई सुभाविक वरणाव करीजियौ है। डॉ. माता प्रसाद गुप्त रै मुजब आ रचना महेसक्रत हम्मीर रासो सूं ई बेसी अेतियासिक अर प्रामाणिक है।

7-3 vkfndky % vid vè;;u

अठै कालगत प्रव्रत्तियां, काव्य धारावां अर काव्य विधावां माथै चरचा करण रै पैलां इण बात रो खुलासौ करणौ ठीक समझां कै आं तीन्यू सबदां रो कांई अरथ है या आं रो परस्पर सम्बन्ध कांई है? काव्य रै संदर्भ में ओई कैय सका कै कोई भी साहित्य उणरै समै में प्रचलित प्रव्रतियां सूं घणौ प्रभावित रैवै। इण वास्तै ई साहित्य समाज रो दरपण कैईजै। आं प्रव्रत्तियां रै पांण इज इण जुग रै साहित्य रो उणियारौ (सरूप) अर विकास निरधारित हुवै। इण आधार माथै प्रव्रत्तियां सूं मतळब है किणी काल विसेस में रचीजी रचना रो विसय अर उण री प्रस्तुति बाबत बरतीजी बणगत सूं है। अै प्रव्रतियां किण–किण रूपां में बुई, अर्थात् वां रो लेखन–सरूप कांई रैयौ– औ रूप इज काव्यधारा है। इणीज भांत काव्य विधावां सूं अरथ है, उणरै सरूप सूं अर्थात् रचना प्रबन्ध रूप में लिखिजी है कै मुक्तक रूप में अथवा अेकार्थ–काव्य रूप में। इण खुलासै पांण अठै राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री, कालगत प्रवृतियां, काव्य धारावां अर काव्य विधावां रो विवेचन करियौ जावैला।

¼d½ dkyxr çofr;k

¼v½ ohj jlkRed dk0; ijEijk

राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री खास काव्य धारा वीर काव्य सिजरण री रैयी। वीर रसात्मक काव्य री बहूलता रै कारण ई घणकरा विद्वान इण नैं वीर गाथा काल ई कैयौ

है। इण काल में वीर रसात्मक रचनावां रै सिरजण रो मूल कारण उण वगत रै राजस्थान रो जुद्धमय वातावरण हौ। मोहम्मद गौरी री पैली वार सूं आगै तांईं अठै लगोलग घमसाण जद्ध हुवता रैया। रासो काव्य परम्परा आं जुद्धां रो ई परिणाम है। इण काल में विविध काव्यरूपां में वीर रसात्मक रचनावां लिखिजी। आं वीर रसात्मक रचनावां रै पांण ई नस्ट हूवती धरम अर संस्क्रति री रक्षा हुय सकी। अतः वीर काव्य सिरजण आदिकाल री जरूरत ही।

वीर काव्य रा रचेता कवि राज्याश्रित हा। चारण–भाट अर बीजा राज्याश्रित कवि आपरै अश्रयदाता राजावां रा विरुद गावता हा तौ दुसमियां रो निंदा गान ई करता हा। अै रचनावां खास तौर सूं प्रबन्धकाव्य विधा में रचीजी। प्रबन्धकाव्य विधा में अै रचनावां रासो, विलास, प्रबन्ध, वचनिका, छंद, दूहा, अयण, चौपई नांव सूं रचीजी, ज्यांन– हम्मीर रासो (सारंगधर), रणमल्ल छंद (श्रीधर व्यास), वीरमायण (बादर ढाढ़ी), अचलदास खीची री वचनिका (सिवदास गाडण), कान्हड़ दे प्रबन्ध (पद्मनाभ), राव हम्मीर देव चौपई (भांडउ व्यास) आद।

आं प्रबन्ध रचनावां री सरूआत मंगलाचरण सूं व्ही है। मंगलाचरण रै उपरांत देई–देवतावां री स्तुति, रचना रै महत्त्व नैं थरपता हुया कवि राजवंसावली रो वरणांव कर्‌यौ है। फैर विसय वस्तु रै मुजब ओजपूर्ण सैली में रचना रै नायक रो वीरोचित वरणाव मांड्‌यौ है। आं रचनावां में अपभ्रंस री द्वित्त सब्दावली अर ''ट'' वरग री प्रधानता है। आं रचनावां री सैली चारण सैली कैयीजी है। चांदन खिडिया जैड़ा कवि उण वगत रै नायकां रै वीरत्व रो वरणांव दूहा, सोरठा, गीत छंदां में मुक्तक काव्य रूप में ई कर्‌या। कवि चांदण खिड़िया रचित रणमल्ल राठौड़ रा सोरठां नींबा जोधावत रा छंद इण दीठ सूं उल्लेख जोग रचनावां हैं।

¼vk½ Hkxrh dk0;

इण काल में आखौ राजस्थान आपरै दुसमियां सूं जूझ रैयौ हौ। मानखै री मनःस्थिति थिर कोनी ही। मन सूं निबळौ मिनख जुद्ध करण री सामरथ कोनी राख सकै हौ, पण भुजबळ रा धणी क्षत्रिय रणभोम सूं ई राजी हा। अतः अधिकांस कवि वीररसात्मक रचनावां रै सिरजण में ई रत हा। पण दूजी कांनी अहिंसक जैन जति, श्रावक उपासरावां में समाई अर स्तुतिगान में ई सुख री अनुभूति करता हा। इण रै अलावा नाथ–सिद्धां रै प्रभाव सूं मंत्र–तंत्र साधना रो प्रचार हौ। क्षत्रीय साक्त धरमी हा, पण उण मुजब चारण या चारणेत्तर कवि सक्ति री स्तुति में कोई उल्लेखजोग काव्य सिरजण कोनी कर्‌यौ। वैस्णव धरमी स्वतंत्र रचनावां रो ई अभाव रैयौ। अतः इण काल में जित्ती भी भगती परक काव्य रचनावां लिखीजी वै जैन भगती मुजब ई ही। अै रचनावां रास, फागु, हीयाळी, सिलोका, आख्यान आद रूपां में मिळै। आं में सान्त अर सिणगार, रसां रो अद्‌भुत मेळ लखावै। भाव–पख री दीठ सूं अै भगती मुजब रचनावां घणी मरमीली है। प्रक्रति रा ओपता उद्दीपन चित्राम काव्यत्व री लूंठी ओळखांण करावै। सक्ति पूजा रै रूप में जैन कवियां री पद्मावती देवी री भगती मुजब रचनावां सरावण जोग है। जैन भगती मुजब खास–खास रचनावां है भरतेस्वर बाहुबली रास (सालिभद्र सूरि), चंदनबाला रास (आसगु), स्थूलिभद्ररास (जिनधरम सूरि), आबूरास (पल्हण), नेमिनाथ रास (सुमति गणि), कछूली रास (प्रग्यातिलक), गौतम स्वामी रास (उदयवंत), सिरिभूळिभद्र फागु (जिन्‌पदम सूरि) आद।

अतः राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री कालगत प्रव्रतियां रै रूप में दो तरियां री काव्य–रचनावां इज रचीजी (1) धर्माश्रित काव्य अर (2) राज्याश्रित काव्य। राज्याश्रित वीर रसात्मक काव्य रचनावां में घणकरी संदिग्ध ई हैं। अतः कुछ विद्वानां री मानता है क आदिकाल री काव्य प्रव्रत्तियां रै पांण जिका विद्वान इण नैं वीर गाथाकाल नांव देवै वौ खरौ कोनी। वीर गाथाकाल री बजाय इण रो सही नांव धार्मिक रचनावां रो काल हूवणौ चाईजै।

¼[k½ dk0;&èkkjkok

¼v½ pfjrdk0; /kkjk ¼jklk@jkl vj jklkUo;h dk0;/kkjk½

राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल में चरितकाव्य री लूंठी परम्परा मिळै। इणरौ खास कारण उण समै रो जुद्धमय वातावरण हौ। इण दौरप में अहिंसावादी जैन उपासक आपरै उपासरावां में बैठ'र आपरै सलाका पुरखा पौराणिक चरितां रै चरित रो जैन–भगती मुजब वरणांव माण्ड्यौ तौ दूजी कांनी चारण अर चारणेत्तर कवि उण बगत रै जुद्धां में जूझण वाळा आपरै आश्रयदातावां रो वीरता मंडित बखांण कर्‌यौ। इण भांत जैन कवि ज्यां चरितां बाबत रचनावां लिखी वै 'रास' कहीजी। अै काव्य–रचनावां प्रायः प्रबन्ध रूप में लिखीजी, पण मुक्तक रूप में ई अै कवि आपरी रचनावां स्तवन, स्तुति, छंद, चौढ़ालियौ, छत्तीसी, हीयाळी, पारणौ, आद नांव सूं लिखी। आं रचनावां री प्रस्तुति जैन सैली कैईजी।

आं रचनावां रो प्रधान रस सान्त हौ। रचनावां री सरुआत सिणगार रस सागै करीजती, पण अन्त सान्त रस में हुवतौ। अै चरित रचनावां कथात्मक ही। घणाई मार्मिक वरणावां सागै उण वगत री सामाजिक–सांस्क्रतिक, आर्थिक अर ऐतियासिक घटनावां रा सांतरा चितरामां सूं ई भरपूर ही। आं कवियां रा प्रिय छंद दूहा–सोरठा, चौपई, गाथा, कळस, पद्धरी हा। सादृस्य मूलक अलंकार आं रचनावां में घणा बरतीजिया है। भासा माथै अपभ्रंस रो सांवठो प्रभाव लखीजै। रास संग्यक चरित काव्य परम्परा री उल्लेखजोग रचनावां है– उवसर सायणु (जिनदत्त सूरि वि. 1150), भरतेस्वर बाहुबलि घोर (वज्रसेन सूरि वि. 1225), भरतेस्वर बाहुबलि रास (सालिभद्र सूरि वि. 1241), चंदनबाला रास (आसिगु वि. 1257), रेवन्तगिरि रास (विजयसेन सूरि, वि. 1287), महावीर रास (अभयतिलक गणि, वि. 1307), सालिभद्र रास (मुनि राजतिलक, वि. 1332), समरारास (अम्बदेव सूरि, वि. 1371), पद्मावती चौपई (जिनप्रभ सूरि, वि.सं. 1385), मयणरेहा रास (हरसेवक वि. 1413), वस्तुपाल तेज पाल रास (हीराचंद सूरि, वि. 1485), नल दमयन्ती आख्यान (देववर्धन, वि. 1500), मुनिपति चरित (सालभद्र वि. 1550) आद।

चारण अर चारणेत्तर रचित रासो संग्यक रचनावां ई प्रबन्ध काव्य है। आं में अेतियासिक चरितां रो वीरत्त्व पूर्ण बखाण करीजियौ है। वीर रस, कल्पना अर ओज गुण सूं भरपूर अै रचनावां– अेतियासिक काव्य रै भारतीय सरूप रो ओपतो बखाण करै। रासो नांव री आं रचनावां में चरित काव्य अर प्रेमाख्यान काव्य री प्रव्रत्तियां रो घणौ ओपतौ मेळ लखावै। इणी वास्तै अठै वीर अर सिणगार मित्र रस रै रूप में बरतीजिया है। मां, भैण, सहेली अर जोड़ायत आद सगळा ई नारी रूप आपरै ओपतै रूप में दरसाइजिया है। वीर रसोचित छंद अर अलंकारां रो प्रयोग आं वरणावां नैं औजूं फूटरा बणावै। आदिकाल री अधिकांस रासो नांव री रचनावां संदिग्ध है। पृथ्वीराज रासो रा च्यार रूपान्तर मिळै, ज्यां में लघुत्तम संस्करण नैं प्रामाणिकता रै नैड़ै मान्यौ जा सकै। सारंगधर रचित हम्मीर

रासो ई रासो नांव री महताऊ रचना है।

¼vk½ ykd dk0; èkkjk

राजस्थानी साहित्य रै आदिकालीन काव्य रचनावां में लौकिक काव्य रचनावां ई रचीजी। अै रचनावां दो विधावां में मिळै कथात्मक अर मुक्तक। लोक धारा री आदिकालीन प्रमुख काव्य रचनावां हैं– ऊजळी–जेठवे रा दूहा, बीसलदेव रास (नरपति नाल्ह), बसन्त–विलास फागु, ढोला–मारू रा दूहा आद। आं रचनावां री विसय–वस्तु प्रेम है जिणमें सिणगार रस रा दोई रूप अर विविध काम–दरसावां रा फूटरा चित्राम मंडीजिया है।

¼x½ dk0;&foèkkok

राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल में साहित्य री दोई विधावां– गद्य अर पद्य मिळै। जदपि गद्य विधा आपरै सांतरै रूप में विकसित नीं कैयी जा सकै, फैर ई इण काल में रोडा रचित राउलवेल उण वगत रै गद्य री ओळखांण करावै।

राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल में पद्यात्मक रचनावां ज्यादा लिखीजी। पद्य री प्रबन्ध अर मुक्तक दोनूं विधावां में इण काल री ओपती कविता रा दरसाव कर सकां। प्रबन्ध काव्य रा दो रूप हुवै– महाकाव्य अर खण्ड काव्य। आं रो ठावौ विधान हुवै, ज्यांन महाकाव्य में सर्गबद्धता, उच्च कुलोत्पन्न नायक, ऐतियासिक या पौराणिक कथावस्तु, वीर, सिणगार, सान्त में सूं किणी अेक रस री प्रधानता, स्थानीयता रो निर्वाह आदि री अनिवार्यता हुवै। खण्ड काव्य में किणी अेक घटना रो वरणाव हुवै अर पूर्वापर सम्बन्ध अर सरगां री कोई अनिवार्यता कोनी हुवै।

¼v½ çc/k dk0; fo/kk

मुख्य रूप सूं इण काल रा कवि प्रबन्ध रचनावां रो ई सिरजण कर्‌यौ। इण रो खास कारण हौ कै उणां रै चरित नायकां रै वीरत्व अर आध्यात्म री खिमता अर सामरथ रो दरसाव। वीर काव्य में चारण अर चारणेत्तर कवि आपरै आश्रयदातावां रा विरुद गावता हा। उणां रै घमसाणां रो विगतवार वरणांव मांडता हा। वीर रस सूं जुड़्यौड़ी अै प्रबन्ध रचनावां खासतौर सूं रासौ नांव सूं लिखीजी। रासौ रै अलावा विलास, दूहा, छंद रूप में ई अै रचनावां रचीजी। जैन कवि आपरी प्रबन्ध रचनावां– 'रास' नांव सूं मांडी। 'रास' नांव रै अलावा जैन प्रबन्ध काव्य रचनावां आख्यान, चरित, फागु, ब्यावलौ, संधि, मंगळ, धवळ आद रूपां में ई रचीजी।

आदिकालीन प्रबन्ध काव्य रचनावां चारण, जैन अर लोकसैली में लिखिजी है। वीर रसात्मक रचनावां री सैली चारण सैली है। जैन भक्ति मुजब रचनावां री काव्य सैली जैन सैली है। लोककाव्य धारा री रचनावां री लोक सैली है। प्रबन्ध काव्य रै रचना सिल्प रो आं रचनावां में पूरौ निर्वाह मिळै, चावै वौ महाकाव्य हुवै या खण्ड काव्य सूं जुड़्यौड़ी रचना।

¼vk½ eDrd dk0; foèkk

मुक्तक काव्य रचना आपोआप में स्वतंत्र रचना हुवै। प्रबन्ध रचना री दांई मुक्तक रचना में घटनावां रो पूर्वापर सम्बन्ध कोनी हुवै। इण वास्तै ई आचार्य रामचंद्र शुक्ल कैयौ है कै जे प्रबन्ध काव्य अेक विस्तृत वनस्थली है तौ मुक्तक अेक चुणयौड़ौ गुलदस्तौ है। अतः मुक्तक रचना रै कवि वास्तै जरूरी है कै उणमें पाठकां नै रसमगन करण री खिमता हुवै तद इज मुक्तक काव्य सरस, मधुर अर नाद सौंदर्य सूं भरपूर बण सकैला।

मुक्तक किणी ई रस सूं भरपूर हुय सकै। चारण, चारणेत्तर अर जैन कवि घणी ई मुक्तक रचनावां लिखी। चारण अर चारणेत्तर वीर रसात्मक मुक्तक रचनावां दूहा, सोरठा, कुंडकियां कवित्त, झूलणा, छत्तीसी, छिहत्तरी, नीसांणी, गीत नांवां सूं लिखी मिळै, जद कै जैन मुक्तक रचनावां स्तोत्र, स्तवन, वीनंती, हीयाळी, सिलोका, कळस, छंद, पद, चौढ़ालियौ, चूंदड़ी, ढ़ाळ आद रूपां में लिखीजी। जैन मुक्तक रचनावां में उणां री प्रबन्ध रचनावां री दाई लोकतत्त्व री अधिकता ई मिळै।

वीर–रसात्मक काव्य खास तौर सूं राज्याश्रय में रचीजियौ है। औ काव्य प्रसंसात्मक (सर) अर निन्दात्मक (विसर) रूप में लिखिजियौ। अै प्रायः मुक्तक काव्य रचनावां ई हैं।

7-4 lkj

राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल बाबत विद्वान न्यांरा–न्यांरा नांव सुझाया। आं नावां में च्यार नांव खास तौर सूं सामी आवै– प्राचीन काल, आदिकाल, वीर गाथाकाल अर प्रारंभिक काल। सरुआती साहित्य री विसय वस्तु या प्रव्रत्तियां रै पाण राजस्थानी साहित्य रै सरुआती काल अर च्यार नावां में सूं आदिकाल (प्रारंभिक काल) नांव ठावौ है।

नावंकरण री दांईं ई इण काल रो कालनिरणै ई विवादास्पद है। विद्वाना री काल सीमा वि.सं. 700 सूं 1650 लग पसर्‌यौड़ी है। विद्वान इण तथ्य सूं सहमत है कै वि.री 8वीं सदी सूं वि.सं. 1000 लग अपभ्रंस अर राजस्थानी रै मिलियौ–जुलियौ रूप सूं राजस्थानी साहित्य री सरुआत व्ही जिकौ आपरौ ठावौ रूप 11 वैं सइकै सूं धार लियौ हुवैला। इण आधार पाण राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल रो सही समै वि.सं. 1050 सूं वि.सं. 1550 हुय सकै।

राजनीतिक दीठ सूं औ समै अराजकता अर उथळ–पुथळ सूं भरयौड़ौ हौ। राजपूत सत्ता उत्थान कांनी बध रैयी ही तौ मलेच्छ सेना च्यारू कांनी भयंकर आक्रमणा सागै नर–संघार कर रैयी ही। मलेच्छ हिंदुआं नै आपस में लड़ाय'र उणारी धार्मिक आस्थावां री ई किरच्यां करण लागा। पण धीजै अर आपसी समझ सूं विभिन्न धार्मिक विचार धारावां में समन्वय सधियौ। इण समन्वय में जैन अर नाथ पंथ रो बेसी सैयोग रैयौ।

इस्लामी सत्ता रै बधतै प्रभाव सूं समाज में लुगाई री हालत घणी भूंडी हुवण लागी। समाज में वा भोग री वस्तु बण'र रैयगी। करम–काण्ड, जंतर–मंतर, छुआ–छूत कानी लोग बेसी बिस्वास करण लागा, पण जैन रचनाकार आं कुरीतियां नैं मेटण री कोसीस करी। राजपूत राजा आपरै सुवारथ अर रास्ट्र प्रेम रै अभाव में मलेच्छ सत्ता सूं जूझण में असफल इज रैया। नतीजौ औ रैयौ कै आर्थिक स्थिति माड़ी पड़ती गई। आखौ भारतीय समाज दोरप में पड़गौ। अराजकता, घर–कळैह सूं जूंझतै समाज रा कवि वातावरण मुजब साहित्य लिखण लाग्या। चारण कवि जठै राज्याश्रय रै कारण ईनाम पावता हा, उठै ई नाथ–सिद्ध रचनाकारां री काव्य परम्परा संरक्षण रै अभाव में आगै जीवित कोनी रैय सकी। धर्माश्रय रै कारण इण जुग में जैन–साहित्य रो विपुल विकास हुयौ।

आं परिस्थितियां में जैन अर जैनेत्तर रचेता आपरी काव्य रचनावां लिखी, ज्यांरी प्रामाणिकता बाबत सवाल उठ्या। अठै आदिकाल री वां रचनावां नैं प्रामाणिक कैई है जिका रै रचनाकाल नैं कोई मानीता विद्वान पुख्ताऊ कर्‌यौ है या अन्तः साक्ष अथवा अेतियासिक घटनावां रै आधार पांण इण काल (वि.सं. 1050–1500) री मानीजै।

राजस्थानी साहित्य रै आदिकालीन साहित्य री दोई प्रव्रत्तियां कैयी जा सकै– वीर रसात्मक काव्य अर भगती काव्य। जुद्ध रै वातावरण रै कारण वैष्णव, सैव अर साक्त भगती री रचनावां रो प्रायः अभाव ई लखावै। भगती काव्य रै रूप में जैन रास रचनावां या जैन भगती मुजब मुक्तक काव्य रचना री ई बहुलता

रैयी।

आदिकालीन राजस्थानी काव्य री मुख्य धारावां चरित काव्य धारा (रासो अर रासान्वयी काव्यधारा) अर लोक काव्य धारा रैयी। अै रचनावां प्रबन्ध अर मुक्तक काव्य विधावां में लिखीजी।

7-5 vH;kl lk: loky

1. राजस्थानी साहित्य रै सरुआती काल रो ठावौ नामकरण करता हुया उण रो समय निरधारण करौ।
2. राजस्थानी साहित्य रै वातावरण नै समझावौ।
3. राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री प्रमुख प्रामाणिक रचनावां रो परिचै करावौ।
4. आदिकाल री लोक काव्य धारा री रचनावां रो परिचै देवो।
5. राजस्थानी साहित्य री आदिकालीन प्रमुख रासकाव्य परम्परा माथै टीप लिखौ।
6. राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री प्रमुख प्रवृत्तियां, काव्य धारावां अर काव्य विधावां रो खुलासौ करौ।
7. काव्य–प्रवृत्तियां, काव्य धारावां अर काव्य विधावां रै अरथ नै समझावता हुया राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री प्रमुख काव्य धारावां रो खुलासौ करौ।
8. आदिकाल रै नांवकरण री सारथकता थरपता हुया इणरी प्रमुख काव्य धारावां अर काव्य विधावां रो परिचै दिरावौ।

7-6 lanHk&XkaFkk jh ikuMh

1. सं. धीरेन्द्र वर्मा– हिन्दी–साहित्य कोश, भाग 1
2. प्रो. कल्याणसिंह शेखावत– राजस्थानी भाषा एवं साहित्य
3. डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया– राजस्थानी साहित्य का इतिहास
4. सं. डॉ. नगेन्द्र– हिन्दी–साहित्य का इतिहास
5. डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा एवं डॉ. रामनिवास गुप्त– हिन्दी–साहित्य का इतिहास।
6. 'साहित्यानुशीलन' त्रैमासिक शोध–पत्रिका– साहित्येतिहास विशेषांक, अप्रेल–जुलाई 1977 (हिन्दी–विभाग, रोहतक विश्वविद्यालय, रोहतक)
7. डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव– डिंगल साहित्य (पद्य)
8. श्री सौभाग्यसिंह शेखावत– राजस्थानी साहित्य संपदा

इकाई-8

राजस्थानी साहित्य रो मध्यकाल : राजस्थान रो ख्यात साहित्य

इकाई रौ मंडांण

8.0 उद्देश्य

8.1. प्रस्तावना

8.2 ख्यात साहित्य री सरुआत

8.3 प्रमुख ख्यात रचनावां

- 8.3.1 नैणसी री ख्यात
- 8.2.2 उदैभांण चांपावत री ख्यात
- 8.3.3 जोधपुर राज्य री ख्यात
- 8.3.4 मारवाड़ री ख्यात
- 8.3.5 दयालदास री ख्यात
- 8.3.6 बांकीदास री ख्यात
- 8.3.7 जैसलमेर री ख्यात
- 8.3.8 गोगूंदा री ख्यात

8.4 इकाई रौ सार

8.5 अभ्यास सारू सवाल

8.6 संदर्भ ग्रंथ

8.0 उद्देस्य

इण इकाई रै अध्ययन सूं आप राजस्थानी गद्य साहित्य री खात लेखन परंपरा री औळखांण कर पावौला अर इण बाबत सांगोपांग जांणकारी कर सकौ-

(1) राजस्थान में ख्यात लिखण री परंपरा कद सूं सरू हुई ?

(2) ख्यात साहित्य रा विसै कुण-कुण सा है ?

(3) प्रमुख ख्यात रचनावां कुण-कुणसी है ?

(4) आं रचनावां रौ सांस्कृतिक, सामाजिक अर राजनैतिक महत्व कांई है ?

8.1 प्रस्तावना

भारतीय वांगमय में ख्यात साहित्य री जुगां जूंनी परंपरा रै कारण विसेस महत्व रैयो है वठै राजस्थान री अैतिहासिक परंपरा नै मूरत रूप दैवण में ख्यात गद्य विद्या सहायक मांनीजी है। 'ख्यात' रौ मतलब ख्याति (प्रसिद्धि) सूं है। ख्याति पावणवाळा किणीं राजघराणे या कै स्थान विसेस या कै व्यक्ति विसेस री खास उपलब्धियां नै उजागर करणौं ख्यात रौ उद्देस्य रैयो है। दूजै सबदां में औ ई कैयौ जा सकै है' कै इणमें किणीं मिनख, घटना या कै काल विसेस रौ हवालौ होवै है।

राजस्थानी साहित्य री दो खास धारावां है-गद्य अर पद्य। अैतिहासिक घटनावां नै लैय'र अेक कांनी जठै रासौ, झमाळ, झूलणा, सिलोका, वचनिका, दूहा, विलास, प्रकास इत्याद पद्य रचनावां रौ सिरजण हुयौ, वठै दूजै कांनी बात, विगत, वंसावळी, हाल, हकीकत, अर ख्यात इत्याद गद्य रचनावां रौ प्रणयन होयौ। इयां देखियौ जावै तौ ख्यात साहित्य बात, विगत

वंसावळी।

गुर्रावळी रौ ई विकसित सरूप है। 15वीं व 16वीं सदी में खासतौर सूं बात अर 'वंसावळियां' नै लिखण री परंपरा रैयी, पछै होळै-होळै आं रचनावां नै 16वीं सदी री जातरा करता थकां ख्यात रौ सरूप लेय लियौ। 'मुंहता नैणसी री ख्यात' इणरौ अेक सांतरौ उदाहरण है। 17वीं सदी रै बीच तांई राजस्थान में कोई क्रमबद्ध इतिहास नीं लिखिज्यौ, बिखरियोड़ी बातां, फुटकर कवित्त प्रबंध काव्य इत्याद सामग्री अवस्य अतीत री घटनावां री पिछांण करावण में आपरी भूमिका निभाय रैयी ही। 'ख्यात साहित्य' रै सिरजण रै साथै ई क्रमबद्ध इतिहास लिखण री वेगवती धारा रौ उदय हुयौ अर पछै आगै जाय'र कैई सोधपूरण इतिहास रचिज्या।

आ विडंबना ई है'क सरूआत में ख्यात साहित्य रौ सिरजण आखै राजस्थान मांय नीं होयौ अर इणरौ छैत्र मारवाड़-बीकानेर में सिमट'र रैयग्यौ। इणरौ नतीजौ औ हौयौ'क इतिहास विसयक जूंने साहित्य रौ संकळण विवेचण ख्यात साहित्य रै माध्यम सूं मारवाड़ अर बीकानेर में तौ हौयगौ, पण मेवाड़, हाड़ौती (कोटा-बूंदी) सेखावाटी (जयपुर) अर जैसलमेर इत्याद में ख्यात साहित्य रौ प्रचळण नीं हौवण रै कारण अठै री उपलब्ध सामग्री रौ उपयोग जथा समै नीं होय सकियौ अर अठै री जूंनी सामग्री खतम होयगी। नतीजन देस री घणमोली थाती सूं आपां नै हाथ धोवणौं पड़ियौ।

8.2 ख्यात साहित्य री सरुआत

ख्यात साहित्य रै लिखण री सरुआत 17वीं सदी रै उत्तराद में हुयौ। उण समै लगैटगै 200 बरस जूंनी सामग्री रै आधार माथै ख्यात लिखण रौ काम संपादित करिज्यौ, पण इणसूं जूंनी सामग्री उपलब्ध नीं हौवण रै कारण जूंनी वंसावळियां त्यार करण रै वास्तै पौरणिक ग्रंथां अर रावां, भाटां री बहियां रौ सहारौ लैवणौं पड़ियौ जिणसूं जूनै इतिहास रै लेखण में कैई गळतियां रैयगी। सरुआत में ख्यातकारां नै जैड़ी सामग्री मिळी उण नै आपरी ख्यात में समाहित कर ली अर उण माथै कीं तरै री टीका-टिप्पणी या विसळेसण करणै रौ जतन नीं करियौ इण वास्तै कैई बातां रौ संकळण ख्यात में होयगौ पण आगै जाय'र ख्यात लेखण री परंपरा में सुधार होवणै रै कारण औ साहित्य आपरै मापदंडां नै मूरत रूप देवतौ हुयौ लखावै है।

जठै तांई ख्यात साहित्य रै विसय-वस्तु रौ सवाल है इण संदरभ में औ कैवणों गळत नीं होवैंला'कै फगत राजवंसां अर राजपूतां री साखावां रै बाबत् ई ख्यातां नीं रचीजी; बल्कि चारण, सन्यासी, कायस्थ, पुरोहित इत्याद न्यारी-न्यारी जातियां रै टाळ कैई ठिकाणां, घराणां अर नगरां री ख्यातां भी लिखीजी। अैड़ो समझियौ जावै है'कै ख्यातां में केवल राजनीतिक घटनावां रौ हवालो मिळै है पण ख्यात ग्रंथां रौ ध्यान सूं अध्ययन कियौ जावै तौ भौगोलिक स्थिति, शासन प्रबंध सामतां री भूमिका, जागीर प्रणाली, भवन निरमाण, जनकल्याण रा काम, खेती-बाड़ी आय रा स्त्रोत इत्याद कितरा ई पखां रै बारै में जांणकारी मिळै है।

राजवंसां सूं संबंधित घणकरी ख्यातां राज्याश्रय में लिखिजी, पण अैड़ौ लखावै है'कै लिखारा आपरा विचारा प्रगट करण में सुतंत्र हा। उणां माथै किणीं तरै रौ आंकस (अंकुश) नीं हौ। जोधपुर राज्य री ख्यातं में मुगलां रै साथै हुयै ब्यांव रै संबंधा, घात (षड्यंत्र) जघन्य हत्यावां रै प्रकरणां माथै ख्यातकारां खुल'र लिखियौ। इणां रै टाळ फारसी ग्रंथां में जिण भांत मुगल-सम्राटां रौ पक्षपातपूरण वरणन हुयौ है पण राजस्थानी ख्याता अेक तरफी वरणन सूं नीकरियों है। उदाहरण रै वास्ते ख्यात लिखारां (लेखक) हळदीघाटी रै जुद्ध में महाराणा प्रताप री हार, अकबर री जीत, सुमेल गिरी रै जुद्ध में राव मालदेव री हार अर धरमत रै जुद्ध में औरंगजेब री जीत अर जसवंतसिंह री हार हौवण रौ उल्लेख करियो है।

पुरालेखीय सामग्री अर सिलालेख समसामयिक हौवण रै कारण ख्यात ग्रंथ घणा प्रामाणिक मांनिजिया है पण पुरालेखां में सिरफ पट्टायतां (पट्टेदारौं) री सूचियां, राजकीय हिसाब-किताब, समचार अर सासन प्रबंध संबंधी जाणकारी

मिळै है। अर सिलालेखां में निरमाण रा काम अर अेतिहासिक मिनखां रा मिरतु संवत उपलब्ध होवै है। इण वास्तै इण सामग्री री सांगोपांग विवेचणा रै वास्तै ख्यात साहित्य रौ ई सहारौ लैवणों पड़ै है। उदाहरण रै वास्तै अमुक सिलालेख किण मिनख रौ है अर उणरी मिरतु कद होई आ सूचना सिलालेखां सूं मिळै है उण मिनख रौ वंसक्रम अर उणरै जीवण री उपलब्धियां इत्याद रौ विवरण ख्यातां में मिळै है। इण भांत ख्यात इतिहास री आंख मानीजै अर हरेक घटणा रौ सांतरौ विवरण परखणै रौ परतख प्रमाण भी मानीजै।

8.3 प्रमुख ख्यात रचनावां

17वीं अर 19वीं सदी रै बिचै अलेखूं महताऊ ख्यात ग्रंथां रौ लेखन हुयौ, इणमें सूं कीं खास ख्यातां री विवेचणा इण भांत है–

8.3.1 मुंहता नैणरी री ख्यात :

अजै तांई देखण में आई ख्यातां में आ ख्यात सबसूं जूंनी मानीजी है। जोधपुर रै महाराजा जसवंतसिंह रा जगचावा दीवाणं नैणसी द्वारा बातां, वंसावळियां, हकीकत इत्याद इतिहास विसयक सामग्री इणमें समाहित करीजी है। इण तरै इणमें मारवाड़ ई नीं आखै राजस्थान अर उणरी सीमा सूं लागोड़ै गुजरात अर माळवा रै राजवंसा रौ वरणन मिळै है। जिकौ राजनीतिक अर सामाजिक इतिहास री दीठ सूं उपयोगी है। नैणसी मुजब कियौड़ौ औ संकळणं 'नैणसी री ख्यात' रै नांव सूं चावौ है। अठै नैणसी रै रचियौड़ै ''मारवाड़ रा परगना री विगत'' रौ उल्लेख कियौ जावणौं भी आवश्यक है।

जिणमें मारवाड़ रै सात परगनां (जोधपुर, सोजत, मेड़ता, पोकरण, फलौदी, सिवाणा) रौ क्रमवार इतिहास अर पछै उण परगंना रै मांयनै पड़णै वाळां गांवां री 'रेख' अर भोम अर खेती–बाड़ी रौ विवरण दियौड़ौ है जिकौ खासकर आरथिक इतिहास रै अध्ययन वास्तै उपयोगी है। इतिहासकारां नैणसी नै राजस्थान रौ अबुलफजल कैयो है।

ख्यात साहित्य में राजनीतिक इतिहास रै साथै ई हरेक राज्य री भौगोलिक स्थितियां रै बारै में महताऊ जांणकारी दिरीजी है। जियां मेवाड़ रै वरणन में अठां रै नदी–नाळां, पहाड़ा, घाटियां, जळ–स्रोतां, खनीज–संपदा, आदिवासी अर खेतीहर जातियां फसळां, बिरखां, खास नगरां, मिंदरां, कोट महल, बाग–बगीचां रौ वरणन दियौड़ो है। साथै ई 'गुहिल राजवंस' री वंसावली अर रावळ रतनसिंह, राणा हमीर, मोकळ, कुंभा, उदयसिंह, प्रताप, अमरसिंह अर राजसिंह इत्याद सासकां री खास उपलब्धियां अर घटनावां रौ विवरण दियौ है। इणरै अतिरिक्त गहलोतां री दो खास साखावां, चूण्डावतां अर शक्तावतां रौ वंसक्रम दरसावतां थकां उणारी खास घटनावां रौ उल्लेख है।

चौहानां रौ बूंदी, कोटा, सिरौही, जालौर, सांचौर, सिवाणा अर गागरौण माथै अधिकार रैयौ। ख्यातकार बूंदी री हकीकत में पहाड़ा, जलासयां, पेड़–पौधां, बसणैं वाळी जातियां, पड़ौसी राज्यां, प्रजा माथै लागण वाळै 'करां' (टेक्स) रौ विवरण दैवता थकां हाडा सासकां री उपलब्धियां रौ विवरण दियौ है। सिरोही रा देवड़ा, जालौर रा सोनगरा अर सांचौर रा सांचोरा चौहानां री वंसावळियां अर राव सुरताणं अर कान्हड़देव जैड़े चावै अर ठावै सासकां रै सामरिक अभियानां रौ सांतरौ अर सावंठौ वरणन दियौ है। जिणसूं उणरी कुळ मरजादा अर सुतंत्रता री भावना, दसभगती अर उणों रै रांघड़ पणै री भावना रौ सरावणजोग बोध होवै है। जालौर अर सांचोर रा चौहानां रौ अवसाण किण तरै हुयौ इणरौ पडूत्तर ख्यात में इधकौ मिळै है। देवड़ां री साखावां अर गांव–पट्टां री विगत सूं आपां सिरौही रै सामंती वरग रौ अध्ययन कर सकां हां।

ख्यातं में भाटी राजवंसा रै बाबत अलेखूं महताऊ अर वंसावळियां रौ संकळण कियौड़ो है। दूजै राजवंसां री तरै पौराणिक वंसावळी देवता थकां मथुरा, गजनी, भटनेर, लोदरवा अर जैसलमेर रै भाटियां रौ वरणन दिरीज्यौ है। विजयराज चूंड़ाला, रावळ जैसळ, रावळ सालिवाहन, राव मूळराज, रावळ दूदा, रावळ घड़सी जैड़ा सासकां रै संघर्षमय जीवण रौ हवालौ

औ बतावै है'कै भाटी किण तरै जूंझता थका निरंतर आगै वधिया अर पछै उणां जैसलमेर में आपरी स्थायी राजधानी थापित कर अेक न्यारी पिछांण बणाई अर मरुमंडळ नै आबाद कियौ अर उत्तर री तरफ सूं भारत माथै हौवण वाळै हमलां रौ जवाब दियौ जिणसूं उणां रौ विरद 'उत्तर भड़ किंवाड़ भाटी वाजियौ'।

जैसलमेर री भौगोलिक स्थिति, अठै लागण वाळा कर, उद्योग-धंधा, फसळां, आय रा साधन इत्याद अलेखूं जरूरी जांणकारियां ख्यात में मिळै है। जैसलमेर रै भाटियां सूं निकळियोड़ी साखावां जथा-केलण, उर्जनोत, जैसा, सिहड़ अर रूपसी रै बारै में सांतरौ वैग्यानिक ढंग सूं वंसक्रम प्रस्तुत कर उणरी खास-खास उपलब्धियां रौ भान करायौ है। आ सामग्री उणांरी मारवाड़ अर बीकानेर में रैयी भूमिका नै समझणैं में सहायक अर उपयोगी है।

ख्यातं में राठौड़ां रै बारै में कीं क्रमवार हवालो नीं मिळै है। राव सीहा, आस्थान, कान्हड़दै, मल्लीनाथ, जगमाल, वीरमदे, गोगादे, राव रिड़मल अर राव जोधा रै बारै में लिखयोड़ी बातां खास है। इणसूं राठौड़ सत्ता री उतपत अर विकास रौ जठै पतौ चालै है। वठै पाबू जैड़ा लोकदेवतावां रै ऊजळै मानव मूल्यां री जांणकारी मिळै है। ख्यातां में संकळित बीकानेर अर मेड़तै रै राठौड़ां री बातां आ बतावै है'कै आं राठौड़ां न्यारौ राज थापित करणै रै वास्तै किण भांत संघर्ष कियौ। बीकानेर रै राठौड़ां री दिरीजी वंसावळी आपां नै उणरौ इतिहास समझणैं में सहायक है। ख्यात में कछवाह नरेसां री वंसावळी इत्यादि नारायण सूं राजा मानसिंह रै पोतै महासिंह तांई अंकित है। राजा नळ रै बेटै जगचावै ढोलै द्वारा ग्वालियर बसावणैं अर मारवणी रै साथै ब्यांव करणैं रौ उल्लेख होयौ है। नरेसां री सामायिक उपलब्धियां री जानकारी मिळै है अर इणां री संतति री जागीरी रौ विवरण खास मैतव रौ है।

पंवारां री वंसावळी में आबू अर पाटण रै पंवार सासकां री पीढ़ियां अंकित है। पंवारां री बात में जठै बाड़मेर अर उमरकोट रै सोढ़ां-पंवारां रौ विवरण दियौड़ी है। वठैई अठै रै सासाकां रै ब्यांव संबंधां अर जैसलमेर रै भाटियां रै साथै हुयै झगड़ां रो उल्लेख है।

इणीं भांत ख्यात में सोलंकी, झाला, जाडेचा, दहिया, चायल अर चंद्रावत आद राजपूतां रा क्रिया-कलापां री जाणंकारी दिरीजी है।

इण तरै आ ख्यात अठै रै सासन प्रबंध, सैन्य प्रबंध, जागीर वैवस्था, सामंतां री भूमिका, खेतीबाडी, अकाळ-सुकाळ, वैपार-वाणिज्य, नगरां व गांवां री बसावट, जळ स्रोतां, पुरातत्व-अवसेसां, पहाड़ां घाटिया रै अलावा रीति रिवांज, लोक आस्थावां, लोक देवतावां, ज्योतिष इत्याद विसयां अर पहलुवां रै अध्ययन वास्तै उपयोगी है। इणरै अलावा सामधरम, स्वाभिमान री भावना, दानसीलता, त्याग री भावना, मरजादा पाळण, सरणागत-रक्षा, वचन-पाळण अदि अलेखूं सांस्कृतिक पहलुवां रा सूत्र इण ख्यात में भरिया पड़िया है। कुल मिळाय'र मध्य जुगीन राजस्थान रै इतिहास-लेखण रै वास्तै इण ख्यात साहित्य रौ अेक आधारभूत स्रोत रै रूप में उपयोग कियौ जाय सकै है।

इणमें पुरांणां अर राव-भाटां री बहियां रै आधार माथै त्यार कियौड़ी वंसवाळियां कीं जूंनी बातां अर जूंनी घटनावां रा संवत ठीक दिखाई नीं पड़ै, जियां'कै राजस्थान रा चावा इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद औझा इण तरफ ध्यान दिरायौ है, जद'कै 19वीं, 17वीं सदी रै इतिहास नै पढण वास्तै आ ख्यात आधार सिद्ध होवै है। 'नैणसी री ख्यात' री प्रतियां अनूप संस्कृत पोथीखानैं, बीकानेर में उपलब्ध है।

8.3.2 उदैभांण चांपावत री ख्यात

17वीं सदी रै उत्तराद में लिखियोड़ी इण ख्यात में जठै महाराजा जसवंतसिंह (1638-1678 ई.) रै सासन काळ तांई रै मारवाड़ रै राठौड़ सासकां रौ क्रमबद्ध इतिहास मिळै है, वठैई राठौड़ां री न्यारी-न्यारी साखावां रै बारै में आ ख्यात अणूंती

ई महताऊ सामग्री सूं सराबोर है। महाराणा री मिरतु पछै जद मारवाड़-मुगल संघर्ष री सरूआत हुई उण समै आ ख्यात जोधपुर सैर री सैरपनाह रै अेक ताक में राख्योड़ी ही । लगैटगै **200** बरसां तांई ताक में सुरक्षित रैयां रै पछै **20**वीं सदी रै दूजै दसक में जोधपुर रा कविराज मुरारीदान नैं मिळी। विदेसी विद्वान टेसीटोरी सर्वेक्षण करती बगत जद इण ख्यात रौ अवलौकन कियौ तद इणमें कुल 980 कागद हा। 1976 ई. में जद डॉ. रघुवीरसिंह कविराजा बांकीदास रौ संग्रै श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ रै वास्तै खरीद लियौ तद आ ख्यात मारवाड़ सूं माळवा पूगी। अबै आ ख्यात बौहत ई जीरण अवस्था में है।

आ ख्यात नैणसी रै समसामयिक उदैभांण चांपावत कानी सूं कराईजी है। मुरादीदान रै संग्रै में सूं मिळणैं रै कारण इणनै 'मुरारीदान री ख्यात' भी कैयो जावै है। नैणसी री ख्यात में राठौड़ सासकां री इतिवृत्त बातां रै रूप में ई दियौड़ो है; क्रमबद्ध इतिहास नीं दियौ है पण इण ख्यात में राव सीहा सूं महाराजा जसवंतसिंह तांई क्रमबद्ध इतिहास लिपिबद्ध है। अेड़ो लागै है'कै इण ख्यात रौ लेखण जूंनै ग्रंथां रै आधार माथै कियौड़ो है। इणमें खास रूप सूं सासकां रै राज्यारौहण, जुद्ध अभियानां, भवन निरमाण अर जन हेताळू कामां इत्याद खास उपलब्धियां रै अलावा चारण अर बिरामणा नै सांसण में गांव दैवणैं, रांणियां अर संतति रौ विस्तार सूं वरणन दियौड़ो है। उण समैं री राजनीतिक हलचलां नै समझण रै वास्तै आ ख्यात उपयोगी हौवण रै साथै ई सासन प्रबंध, सैन्य-वैवस्था, मुगलां अर पड़ौसी राज्यां रै साथै संबंध अर सामाजिक पहलुवां रै अध्ययन वास्तै मैतवपूरण है।

इण ख्यात री अेक मोटी विसेसता आ रैयी है'कै इणमें राठौड़ सासकां रौ ई नीं उणांरी संतति सूं निकळी होई चावी साखावां रौ विस्तारं सूं वरणन मिळै है। ख्यात में ऊहड़ गोगादेव, देवराजोत, करमसोत, मेड़तियां, चांपावत, बालावत, मंडळा, पातावत, रूपावत, डूंगरौत, मंडणोत, करणोत, भोजराजोत, कांधलोत, साखावां री पीढ़ियां अंकित करता थकां उणां री खास उपलब्धियां रौ हावालौ दियौड़ौ है, जिणसूं जागीर-गांवां, सैनिक अभीयानां में उणरी भूमिका शाही सेवावां, उणरी संतति, जनहेताळू कामां इत्याद कितरा ई जरूरी बिंदुवां री जांणकारी मिळै है। साखावां रै विस्तार सूं क्रमवार विवरण दूजी ख्यातां में नी मिळै। इण वास्तै इण ख्यात रौ आपरौ मैतव है। सुतंत्र रूप सूं राठौड़ां री आं साखावां रौ इतिहास लिखण रै वास्तै आ ख्यात अेक आधारभूत स्रोत रै रूप में मानीजै है। सरूआत में आ ख्यात नीं मिळण रै कारण गौरीशंकर हीराचंद ओझा इत्याद इतिहासकार इणरौ उपयोग नीं कर सकिया पछै इणरौ संपादन-प्रकासण नीं हौवण रै कारण इतिहास लिखण में कम उपयोग हुयौ है। ख्यात रौ पूरण रूप सूं अध्ययन कर मारवाड़ रै इतिहास संबंधी कैई गळतियां रौ खुलासौ कियौ जाय सकै है अर अलेखूं लुप्त कड़िया जै जोड़णै में भी आ ख्यात उपयोगी सिद्ध हौय सकै है।

8.3.3 जोधपुर राज्य री ख्यात

महाराजा मानसिंह (1808-1843 ई.) रै समै में लिखियोड़ी इण ख्यात में मारवाड़ रै राठौड़ां री सरूआत सूं लैय'र महाराजा मानसिंह तांई क्रमबद्ध इतिहास लिखियौड़ो है। इणमें 'नैणसी री ख्यात' री तरै बातां, वंसावळियां, डिंगळगीतां इत्याद फुटकर सामग्री रौ समावेस नीं कर क्रमवार विवरण दियोड़ौ है। इणरी पुस्पिका सूं ठा पड़ै है'क हजारां ग्रंथां रै आधार माथै आ ख्यात खिड़िया आईदान त्यार कीनी। सबसूं पैली इणमें आदि नारायण सूं राव सेतरांम तांई री वंसावळी दरिजी है। दूजै ख्यात ग्रंथां री तरै सेतरामं नै जैचंद रौ पोतौ (पौत्र) हौवणों बतायौ है, पण गौरीशंकर हीराचन्द औझा इत्याद इतिहासकारां री मानता है'कै जयचंद गहड़वाल हो जिकौ राठौड़ां सूं न्यारौ है। इण वास्तै जयचंद मारवाड़ रै राठौड़ां रौ बडैरौ नीं होय सकै। पौराणिक आधार माथै लिखियौड़ी आ वंसावळी खरी नीं ऊतरै है। आगै ई ख्यात में मारवाड़ रै राठौड़ां रै मूळ पुरुष राव सीहा सूं वृतांत दियौ है। जिणमें हरेक सासकां रै राज्यारौहण, जुद्ध अभियानां अर दूजी उपलब्धियां रै टाळ अंत:पुर रौ विवरण दियौ है पण सरूआत रै सासकां रै बारै में घणकरी बातां इतिहास री कसौटी माथै खरी नी ऊतरै। अेड़ौ लागै है'कै राठौड़ां रै

सूरवीरता प्रगट करणै रै वास्तै अलेखूं काल्पनिक बातां जोड़ दीनी है। जदै'कै राठौड़ राज रौ क्रमिक विकास कींकर होयौ इणरी सांगोपांग जांणकारी ख्यात करावै है। राठौड़ां नै मोहिलां सूं खेड़ खोस (हस्तगत) लीनी पछै आपरी राजसत्ता जमावण रै वास्तै वै हमेस संघर्ष करता रैया। रावळ मल्लीनाथ रै पच्छिमी भोम माथै इधकार जमाय'र राठौड़ा री प्रभु सत्ता कायम करणै में सफळता पाई अर चूंडौ मंडौर पावण में सफळ होयौ।

राव जोधा जोधपुर नगर री थापणा कर राठौड़ां रै राज रौ स्थायी रूप सूं बीजारौपण कियौ। ख्यात में राव जोधै रै पछै री घटनावां खरी दीखै है। ज्यूं-ज्यूं ख्यात लेखण रौ कांम आगै बधियौ है त्यूं-त्यूं ख्यात रौ विवरण अर कळेवर सरावण जोग दीखै है। जोधपुर रा राव मालदेव घणां लूंठा सासक हुआ। उणां नीं फगत मारवाड़ रै अलेखूं परगनां माथै इधकार कायम कीनौ, बल्कि मेड़तै अर बीकानेर रै राज नै हड़फणै रै साथै आपरै राज रौ डंकौ बजायौ। इण विस्तार वादी नीति रै कारण छैकड़ जातां सेरसाह सूरी सूं हारणौं पड़ियौ। आं सैंग घटनावां माथै जठै विस्तार सूं रौसणीं पड़ै है वठै सैनिक बळ रा रांघड़ (कर्णधार) अठां रा सामंतां री भूमिका उभर'र सांमी आई है। राव चन्द्रसेंण रौ जीवण अकबर रै साथै संघर्स मांय बीतियौ जदै'कै मोटा राजा उदयसिंह साही सेवा में हाजरी भर'र राज पावण में सफलता पाई अर इणरै पछै अठां रा सासक लगौलग साही सेवा में रैया। उणां री सामरिक उपलब्धियां रै बदळै मुगल बादसावां री कांनी सूं मिळिया मनसब, सिरौपाव इत्याद खिताब, बखसींसां रौ हवालौ दियोड़ो है।

मुगल सत्ता रै साथै संघर्स अर संधि समझौतां अर सेवावां दोनूं पहलुवां रौ खुलासौ ख्यात में होयौ है। इणीं तरै मराठां रै साथै हुयै संघर्स रौ उल्लेख मिळै है। राजगद्दी नै लैय'र अलेखूं वार परस्पर झगड़ा रौ दौर भी रैया अर अठै रा नरेसां आपरी बैन-बेटियां रा संबंध मुगलां रै साथै भी किया। ख्यातकार नै अेड़ा तथ्यां नै टाळणै रौ प्रयास नीं करियौ बल्कि खुल'र लिखियौ। कंवर बखतसिंह आपरै पिता महाराजा अजीतसिंह री हत्या कर'र राज री बागडोर संभाळी, ख्यात में इणरौ हवालौ भी मिळै है।

सासन प्रबंध में राजपूतां रै अलावा ओसवाळ, पंचोली अर बिरामणां रौ भी योगदान रैयो। ख्यातकार जथा ठौड़ अेड़ै लोगां री भागीदारी नै दरसावणैं रौ जतन करियौ है, साथै ई चारणां अर बिरामणां री साहित्यिक सेवावां अर सांसण रै रूप में मिळियै गांवां रौ उल्लेख भी कियौ है। महाराजा मानसिंह रै काळ में नाथां रौ प्रभाव रैयो। अलेखूं तरै री परिस्थितियां रै कारण जिका बदळाव आया उणां रौ बखांणजोग विवरण ख्यात में दियौड़ो है। महाराजा मानसिंह रै काळ री घटनावां रौ वरणन इतरै विस्तार रै साथै करिज्यौ है'के आ अेक न्यारी ख्यात रौ सरूप लेय लियौ है। ख्यात में हरेक सासक री रांणियां, कुंवर अर कुंवरिया री जांणकारी दियौड़ी है, जिणसूं वैवाहिक संबंधां अर संतति रौ खुलासौ होवै है।

समाज सास्त्रीय अध्ययन रै वास्तै आ सामग्री सांतरी है। मारवाड़ रै इतिहास रै परिपेख में मेवाड़, जैसलमेर, कोटा, बूंदी, बीकानेर, जयपुर, इत्याद राज्यां री घटनावां रौ खुलासौ इण ख्यात में इधकौ हुयौ है, जिकौ आं राज्यां रै इतिहास लिखणै वास्तै उपयोगी है।

इण मूळ ख्यात री प्रतिलिपियां कर न्यारै-न्यारै महाराजावां (राव चंद्रसेन, महाराजा जसवंतसिंह, महाराजा अजीतसिंह, महाराजा अभयसिंह, महाराजा विजयसिंह अर महाराजा मानसिंह) री ख्यातां बणाय लीनी है, पण आ ठा रैवणौं चाईजै कै अै पूरी जोधपुर राज्य री ख्यात रो ई अंस है। अजैतांई इण ख्यात रौ संपादन प्रकासण पूरो नहीं हुयौ है केवल महाराजा अजीतसिंह तांई इणरौ प्रकासण करिज्यौ है।

8.3.4 मारवाड़ री ख्यात :

1813 ई. में लिखीजी मारवाड़ री ख्यात इतिहास रौ अेक प्रामाणिक ग्रंथ होवण रै साथै ई राजस्थानी साहित्य री

रचना है। इणमें जोधपुर रै महाराजा रामसिंह, महाराजा बखतसिंह, महाराजा विजयसिंह, महाराजा भीमसिंह अर महाराजा मानसिंह रै सुरूआती 10 बरसां री घटनावां रौ ओपतौ अर सांगोपांग वरणन है। ई ख्यात रै पैलपोत में जोधपुर रा थरपणहार राव जोधा सूं लैय'र महाराजा मानसिंह तांई रै सासकां, उणांरी राणियां अर दीवाण इत्याद राजघराणैं सूं जुड़िया मिनखां रा बणयोड़ गया भवनां, कुवां-बावड़ियां अर जळासयां रौ बखाण-जोग विवरण दिरीज्यौ है।

मारवाड़ नरेसां री जीवण घटनावां, उणां री खास उपळब्धियां, सैनिक अभियांना, दूजै राजावां रै साथै संबंधां रौ ठावकौ बरणाव होयौ है वठै ई मारवाड़ रै सामंतां अर राज रा दीवाण आद री भूमिका नै लैय'र सांतरी विगत मंडी है। इण ख्यात रा लिखारा तिलोकचंद जोसी आपरै समै री घटनावां रौ आंख्यां देख्यौ हाल लिख्यौ है।

ख्यात में दांन-पुन, तीरथ जातरावां, मिंदरां रा निरमांण, हवन, जप-जाप इत्याद बातां रौ उल्लेख भी हुयौ है। ख्यातकार री दीठ खासी व्यापक रैयी है। बो अकाळ, बिरखा और फसळां रौ उल्लेख करणौ भी नीं भूलौ है, ''जिंया वि.सं. 1822 सूं. 1835 तांई सखरी, सांगोपांग बिरखा हौवण रै कारण सुख-सांती री स्थिति रैयी। वि.सं. १८२६ में गेहूं री फसळ में रौग लागण सूं फसळ माथै खराब असर पड़ियौ अर गेहूं नेपै कम ई उतरिया''।

आ ख्यात भासा री दीठ सूं खास है। हरेक घटनां रौ जीवतौ-जागतौ वरणन इण ख्यात री विसेसता है। इणमें राजस्थानी भासा रा आंचळिक सबदां, मुहावरां, लोकोक्तियां रौ फूटरौ अंकन हौवण सूं राजस्थानी गद्य साहित्य रौ औ अेक अणमोळ ग्रंथ बण गयौ है।

8.3.5 दयालदास री ख्यात

दयालदास सिंढायच चारण सरू सूं लैय'र महाराजा रतनसिंह (1851 ई.) तांई रै बीकानेर रौ इतिहास इण ख्यात में लिखण रो जतन करियौ है। बियां आ बीकानेर राज्य री या कै राठौड़ां री ख्यात है पण दयाळदास सिंढायच री लिखी होवण रै कारण इणरौ नांव 'दयालदास री ख्यात' राखीज्यौ है। बीकानेर में ख्यात लेखण री परंपरा रा अैनाणं 17वीं सदी री सुरूआत में ई मिलै है। अनूप संस्कृत पोथीखानैं रा संग्रैहीत ग्रंथां सूं ठा पड़ै है कै बीकानेर रा राजा रायसिंह (1574-1612 ई.) रै समै में 'बीकानेर रै राठौड़ां री ख्यात सीहैजी सूं' अर 'राठौड़ां री बात सीहाजी सूं रायसिंह जी तांई' अर 'दलपत विलास' जैड़ी गद्य रचनावां रौ लेखन होयौ। पछै आगै ख्यात सैली रै आधार माथै ई महाराजा अनूपसिंह रै सासनकाळ (1669-98 ई.) में 'बीकानेर रै धणीयां री हकीकत' अर 'अनूपसिंहजी रै मुनसब नै तलब री विगत' जैड़ी अेतिहासिक रचनावां रौ लेखण हौवतौ रैयो। महाराजा गजसिंह रै समै (1787-1828 ई.) में ''बीकानेर राठौड़ां री ख्यात महाराजा सुजानसिंह सूं गजसिंह तांई'' त्यार करवाईजी, जिका उण समै विकसित होई ख्यात सैली रौ अनोखौ उदाहरण है। उण समै तांई ख्यात जेखण अेक घटना अथवा कीं सासकां री खास उपलब्धियां तांई ई सीमित रैयो।

आखै राजवंस री विगतवार इतिहास लेखण री धारा सुरू नीं ही । दयालदास इण कमी री पूरती कर ख्यात लेखन में पैली में लिखीजी आखी सामग्री रौ सांतरौ अध्ययन करता थका बीकानेर रै राठौड़ां रौ विगतवार विस्तृत इतिहास त्यार कियौ। अनूप संस्कृत पोथीखानै, बीकानेर में दो प्रतियां में आ ख्यात मिळै है। राव सीहा सूं राव जोधा तांई रौ वृतांत जूनी ख्यातां अर बातां रै आधार माथै लिख्यो गयौ है जिकौ मूळत: 'जोधपुर राज्य री ख्यात' सूं मिळतौ-जुळतौ है। सासकां री रांणियां अर कुंवर कुंवरिया रै नांवां अर घटनावां रै संवतां में कीं फरक जरूर है। ख्यात में आगै बीकानेर रा थरपणहार राव बीका रै बारै में जिको महताऊ दियो है वौ मैतवपूरण है। राव बीका रौ वरणन उणरी जलम कुंडळी सूं सुरू होवै है, पछै औ बतावण रौ जतन करिज्यौ है कै बीको किण भांत मारवाड़ छोड़'र जांगळू गयौ अर भाटियां सूं संघर्स कर उणनै बीकानेर री थरपणा करण में सफळता मिळी अर बाद में जाटां अर चौहानां सूं टक्कर लैवता थकां आपरै राज री बधोतरी करी।

इण भांत ख्यात में हरेक सासक री खास उपलळब्धियां सैनिक अभियानां रौ वरणन करता थकां केंद्रीय सत्ता रै साथै संबंध, जोधपुर अर जैसलमेर इत्याद पड़ौसी राज्यां रै साथै संघर्स आद घटनावां रौ विगतवार वरणन प्रस्तुत करता थका घटनावां री साख वास्तै समसामयिक कवियां रै रचयौड़ा वीरगीत, कवित्त, निसांणी वचनिका अर दूहा मांडया है।

ख्यात में बीकानेर रै राठौड़ां रौ ताकत दरसावणैं रै वास्तै जठै कीं घटनावां नै बधाय'र वणन करियौ गयो है वठै जस में खंडित करण वाळी घटनावां री अणदेखी करीजी है। सिलालेखां अर पुरालेखीय सामग्री रौ प्रयोग नीं करणैं सूं तिथियां में गळतियां रैयगी है पण तरै री खामियां राज्याश्रय में लिखीजी दूजी ख्यातां में भी मिळै है।

इण खांमियां रै बावजूद 'बीकानेर की ख्यात' रौ घणौं मैतव है। बीकानेर रै राठौड़ां री विगत मांडण वाळी आ अेक घणीं लूंठी ख्यात है अर इणरौ ओपतौ सांगोपांग उपयोग नीं सिरफ कर्नल पाउलेट गजैटियर ऑफ दी बीकानेर स्टेट त्यार करण में कियौ बल्कि गौरीशंकर हीराचंद ओझा रा बीकानेर रै इतिहास रौ औ आधार ग्रंथ थरपिज्यौं है। दयालदास री दूजी रचनावां में 'देश दर्पण' अर 'आर्याख्यानकल्पदुम' खास है। दयालदास खासतौर सूं राजस्थान री परंपरागत ख्याल सैली रा आखरी रचनाकार है।

8.3.6 बांकीदास री ख्यात

इण ख्यात री रचना जोधपुर महाराजा मानसिंह (1803-43 ई.) रै दरबारी कवि बांकीदास आसिया करी है ।

इणमें दूजी ख्यातां री तरै किणी राजवंस रौ विगतवार इतिहास नी लिखिज्यौ है। पण कीं खास घटनावां अर अेतिहासिक मिनखां रै जीवण पहलुवां रै बाबत कों ओपती अर उल्लेखजोग टिप्पणियां लिखिजी है। यूं इण ख्यात में जठै राठौड़, यादव (भाटी), गहलोत, कछवाह अर चौहान सासकां अर सामंता री सामरिक उपळब्धियां अर खास सासकां री रांणियां कुंवर-कुंवरियां रा नांव दियोड़ा है, वठै मराठा, सिक्ख, मुसळमान, अंगरेज, ओसवाल, बिरामण अर चारण इत्याद जातियां रा कीं खास मिनखां रै बाबत टिप्पणियां लिखिजी है। यूं देखियौ जावै तो बांकीदास रौ उद्देस्य कोई ख्यात लिखण रौ नीं हौ। उणां आपरी जांणकारी राखण सारू रूचि रै मुजब जिकी बातां किणी सूं सुंणी या कोई बात उणां नै लिखियोड़ी मिळी उणनै आपरी पोथी में लिख लीनी। इण वास्तै इण छोटी-छोटी बातां अर टिप्पणियां रौं कोई विगतवार म्यांनौ नीं हैं।

टिप्पणी रै रूप में छोटी-छोटी बातां रौ औ संग्रै ख्यात लेखण परंपरा रौ पाळण तो नीं करै पण अलेखूं जरुरी सूचनावां रौ संग्रै हौवण रै कारण विद्वानां इण ग्रंथ नै ख्यात री ओळ में समाहित कर लियो है। सैनिक अभियानां अर राजावां रै रणवास संबंधी जिकी बातां लिखिजी है वै खास तौर सूं दूजी ख्यातां सूं मिळती-जुळती है पण की घटनावां अर व्यक्ति विसेस रै बाबत अैड़ी बातां भी ख्यात में मिळी है-जिकै दूजी ठौड़ मिळणी दोरी है-जियां, हाजी खां अर महाराणा उदयसिंह रै बीच मांय जुद्ध होयौ उण समैं राव मालवदेव हाजी खां रै खातर जोड़ा मेलिया उणां रा खांपवार नांव अर घोड़ां रौ उल्लेख, बीकानेर रै महाराजा जोरावरसिंह रै साथै चूक करणै वाळां मुत्सद्दियां अर रावां रा नांव, हळदीघाटी रै जुद्ध में काम आया महाराजा रा भाईयां रा नांव इत्याद। इणरै अलावा चारण, मराठा, सिक्ख इत्याद जातियां रै बारै में अैड़ी बातां लिखियौड़ी मिळै है जिणरौ उल्लेख दूजी ठौड़ नीं मिळै है। इतिहास री भांत-भांत री सूचनावां रौ अेक अथाग भंडार हौवण रै कारण गौरीशंकर हीराचंद ओझा इणनै 'इतिहास रौ खजानौ' कैयो है।

कुल मिळाय'र देखियौ जावै तो आ ख्यात राजनीतिक इतिहास रै साथै ई कला अर साहित्य, अठां रा रीति-रिवाज सामाजिक मान्यतावां अर धारणवां आदि सांस्क्रतिक पहलुवां संबंधी कैई टूटी कड़ियां नै जोड़णै में सहायक है।

8.3.7 जैसलमेर री ख्यात :

आ ख्यात जैसलमेर रियासत रै प्रसासनिक अधिकारी अजीत मेहता कानी सूं 18वीं सदी रै बीच में लिखिजी है।

इणमें लेखक आदिनारायण सूं श्रीकृष्ण तांई वंसावळी मांड'र लाहौर, भटनेर, तन्नोट, लुद्रवै अर जैसलमेर रै रावळ बैरीसाल तांई रै सासकां रौ विवरण दियोड़ो है। हरेक सासक रै सैनिक अभियानां, भवन निरमाण रा काम इत्याद खास उपळब्धियां रौ हवालौ दैवता थका उणां री रांणियां अर कुंवर-कुंवरियां री जाणकारी दी है, पण इण ख्यात में जोधपुर राज्य री ख्यात अर दयालदास री ख्यात री तरै सासकां रा कामकाज रौ विस्तार सूं वरणन नीं होयौ है।

ख्यात रै अध्ययन सूं केंद्रीय सत्ता रै साथै संबंध, पड़ौसी राज्यां रै साथै संघर्स, जौहर, साके, सासन-प्रबंध, गढ़ कोटड़ियां अर जळासयां रौ निरमाण, गांव बसावण री कळा अर साहित्य में सासकां रौ योगदान, देवी देवतावां रै प्रति आस्था, तीरथ, जातरावां, दान-पुन इत्याद अलेखूं पखां री जांणकारी मिळै है।

भाटी सासकां री संतति सूं न केवळ भाटियां री घणकरी साखावां निकळी बल्कि जाट, अहीर, चकता-मुसळमान, रेबारी, गूजर, सुधार, नाई, माहेश्वरी, ओसवाल इत्याद जातियां बणीं, इणरौ उल्लेख भी जथा स्थान ख्यात में मिळै है।

भाटियां उत्तर री तरफ सूं आवण वाळै जमलावरां सूं लांबै समै तांई संघर्स कर आपरी संस्क्रति अर सामाजिक परंपरावां नै कियां जीवती राखी इणरै बाबत् कैई संकेत ख्यात में मिळै है। इण ख्यात रा विवरणां सूं ठा पड़ै है कै भाटी पंजाब सूं राजस्थान में आया अर उणां पच्छिमी सींव रा परदेसा में अेक लांबै समैं तांई राज कियौ हौ। अेड़ी धारणा है कै भाटियां नै गजनी, सियाळकोट, लहावार आद माथै सासन कियौ अर मारौठ, भटनेर, देरावर इत्याद नगरां की थरपणा भी करी।

ख्यात रै पैलपोत रै वरणन में सेना रा जिका आंकड़ा बधा चडा'र दिया है वै खरा नहीं है अर वैवाहिक संबंधा रा अैनांण भी विसवास करणैं जोगा नीं है, जद कै बाहरी आक्रमणां रा जिकै अैनांण दिया है उणां माथै विचार कियौ जाय सकै है। 16वीं सदी रै पाछली घटनावां इतिहास री परख माथै खरी उतरणैं रै कारण इणरौ खास मैतव रैयो है। वैवाहिक अैनांण अर घटनावां रा संवत् जैसळमेर री तवारीख सूं मिळता-जुळता है, पण कीं जांणकारियां विसेस हौवण रै कारणै इण ख्यात रौ आपरौ मैतव है। वास्तव में इण ख्यात रौ मैतव समकाळीन सामग्री री जाणकारी रै साथै मिळाय'र दैखण में है। प्रो. घनश्यामलाल देवड़ा रौ मांनणौ है कै ''इण ख्यात रै सहारै आखै उत्तर पच्छिमी भारत रै नंवै इतिहास माथै विचार कियौ जाय सकै है।''

आ ख्यात जैसळमेर अर इणरै पैली रै भाटियां रै इतिहास-अनुसंधान वास्तै सांगोपांग है।

8.3.8 गोगूंदा री ख्यात :

मेवाड़ में संस्कृत भासा रो ई खास ठरकौ रैयो इण वास्तै सरू में संस्क्रत में प्रसस्तियां लिखण री परंपरा रैंयी पछै राजस्थानी पद्य री विधावां बधायौ पायौ अर अेतिहासिक घटनावां अर किणी सासक विसेस री उपलब्धियां उजागर करणैं रै वास्तै रासौ, (राणा रासौ, खुमाण रासौ, सगत रासौ) विलास (राज विलास, भीम विलास), प्रकास (राज प्रकास, महावजस प्रकास) इत्याद ग्रंथ लिखीज्या। पण अेतिहासिक बातां घणीं कम लिखिजी। केवळ ''अेक रावळ राणा जी री बात'' ई दैखण में आई है। 18वीं सदी तांई कोई ख्यात लिखिजी है इणरौ कीं हवालौ नीं मिळै।

महाराणा संभूसिंह नै इतिहास लिखवावण नैं रै वास्तै 19वीं सदी रै आखिर में जद इतिहास कारखानैं री थापणा कर कविराज श्यामलदास नै इणरौ कांम-काज सूंपियौ तद मेवाड़ रा सैंग ठिकांणैदारां आपरै-आपरै ठिकाणां रौ इतिहास प्रस्तुत करणै रै वास्तै खास निरदेस दियौ। ठिकाणैंदारां आपरै ठिकाणां में संग्रैहीत पट्टा-परवाणां, वंसावळिया आद सामग्री रै आधार माथै ख्यातां अर तवारीखां त्यार कर इतिहास कारखानैं में प्रस्तुत करी। यूं मेवाड़ में ख्यात लिखणैं रौ सिळसिळौ 19वीं सदी रै आखिर में सुरू होयौ।

'गोगूंदा री ख्यात' मेवाड़ रै इतिहास कारखानै रै निरदेस रौ ई नतीजौ हौ। इण लूंठी ख्यात में गोगूंदै रै झाला सिरदारां (अज्जा सूं अजयसिंह दूसरै तांई) री राजनीतिक घटनावां अर उणां रै रणवास रौ विस्तार सूं वरणन मिळै है बल्कि अठां रै

पहाड़ घाटियां, नदी-नाळा, मिंदर, जळासय, स्मारक, इमारतां, बाग-बगीचां, जातियां, गोगूंदा रै जागीरदारां-कुंवरां व भंवरां रै कुरब कायदा, तळवार, बंधी अर ब्यांव री रस्मां, भाई बंध ठिकाणां, सगा-संबंधियां रौ वरणन, तीरथ जातरावां, आखेट वरणन, राजपूतां री साखावां, चाकरी, भूमि विवाद, सींव संबंधी झगड़ा, मेवाड़ रै सिरदारां री दरबार में बैठक (दिल्ली दरबार १८७७ ई.) भारत री खास ८३ रियासतां नै तोपां री सलामी, अतिथि-सत्कार, भोमियां रौ वरणन, जोधपुर रै महाराजा जसवंतराज (द्वितीय) री मिरतु रै समै मेवाड़ री हलचलां अर बीकानेर री विगत इत्याद अलेखूं घटनावां अर पहलुवां रौ वरणन हुयौ है।

गोगूंदो पैले दरजै रौ ठिकाणैं हौ। अठै रा उमरावां नै उणांरी उपलब्धियां रै मुजब समै-समै माथै अलेखूं गांव जागीर में मिळिया इणरी पुस्टि रै वास्तै ख्यातकार जागीर पट्टां री नकलां ख्यात में दरज करी है अर महाराणा री तरफ सूं मिळिया कीं परवाणां री नकलां भी ख्यात में दरज करी है। इणसूं ख्यात रौ मैतव खासौ बध गयौ है।

अजयसिंह री बेटी गुलाबकंवर रै ब्याव रै समै कोठार में सीधै (खाद्य) री सामग्री बरतण अर दूजी चीजां भेळी करीजी, जिणरी, सूची दियौड़ी है। इणसूं वस्तुवां रै माप तौल अर भाव रौ ठा पड़ै है। ब्यांव उच्छब रै वरणन सूं अठै रै रीति रिवाजां रौ खुलासौ होवै है। इणी तरै गद्दीनसीनी रै समै तळवार बंधी रौ वरणन अठां री परंपरा नै समझण खातर घणौं फूठरौ है। ठिकाणैं रै कुरब कायदां री लांबी सूची में नियमां अर महाराणा अर जागीरदारां रै बिच में सांस्क्रतिक संबंधा रौ भान होवै है।

ख्यात में हालस, झूंपी बराड़, मापाकर, चंवरी कर रै बारै जांणकारी दिरीजी है। इणसूं जठै ठिकाणां री आय स्रोत रौ ठा पड़ै है, वठै अठै बसणै वाळी जातियां, उणांरौ धंधौ, ठिकाणैं रै साथै उणां रौ संबंध इत्याद किती ई नंवी जांणकारियां करावण में आ ख्यात सहाकय है। इण भांत ख्यातकार री ऊंडी दीठ री ठा पड़ै है। वा केवळ ठिकाणैं री राजनीतिक घटनावां तांई ई सीमित नीं रैवै, बल्कि सामाजिक, धारमिक, आरथिक पहलुवां नै कलमबद्ध करतां थकां दूजै ठिकौणौं अर मेवाड़ रै इतिहास रै अलावा पड़ौसी मारवाड़ री घटनावां रौ विवरण प्रस्तुत कर ठिकाणैं रै मैतव नैं आंकै है।

ऊपर लिखियोड़ी ख्यातां रै अलावा 'कछवाहां री ख्यात' 'मूंदीयाड़ री ख्यात', 'तंवरा री ख्यात', 'खीचीयां री ख्यात', 'भाटियां री ख्यात', 'उम्मेदसिंह हाडा बूंदी री ख्यात', 'दादूपंथियां री ख्यात', 'सन्यासियां री ख्यात', कायस्थां री ख्यात, 'चारणां री ख्यात', 'हकीमां री ख्यात', 'सिंध री ख्यात' संग्रहालयां में संग्रैहीत है, जिणां रौ संपादन-प्रकासण कियौ जावणौ बाकी है।

8.4 इकाई रौ सार

1. इण भांत इण इकाई रै माध्यम सूं उण राजस्थानी अेतिहासिक साहित्य रौ परिचय करवायौ है जिणने 'ख्यात' कैयौ जावै है। औ साहित्य किणी मिनख, घटना या समै विसेस रौ दरसाव करावै है। 17वीं सदी सूं इणरौ पत्तो लागै। 'ख्यात' मध्यकाल रा गद्य री खास विधा है जिणमें इतिहास अर साहित्य दोनूं तरै रो लेखन हुयौ है।

2. राजस्थान में अलग-अलग रियासतां ही जिणा रा राजा भी न्यारा हा। आं ख्यातां रो लेखन रियासत नै सामी राख'र ख्यातकार करियौ है जिणसूं उण रियासत बाबत सगळी प्रामाणिक जाणकारी मिल जावै।

3. इण इकाई में राजस्थानी भासा में लिखी प्रमुख ख्यातां री विगत मंडी है जिणामें-नैणसी री ख्यात, उदैभाण चांपावत री ख्यात, जोधपुर राज्य री ख्यात, बाँकीदास री ख्यात, दयालदास री ख्यात, जैसलमेर री ख्यात अर गोगूंदा री ख्यात।

8.5 अभ्यास रा सवाल

छोटा सवाल

1. ख्यात किणनै कैवै? समझावो।

2. ख्यात लेखन कद सूं सरू हुयो?

3. ख्यातां रा विसय-कुण-कुण सा है ?

4. ख्यातां रा प्रमुख लेखक कुण है ? नाम लिखो।

5. सबसूं पुराणी ख्यात रो नाम लिखो।

बड़ा सवाल

1. ख्यातां रो सांस्क्रतिक अर ऐतिहासिक महत्व समझावो।

2. 'नैणसी री ख्यात' री विसेसतावां बताओ।

3. बाँकीदास री ख्यात नै 'इतिहास रो खजानों' क्यूं बतायो गयो ? समझावो।

4. 'दयालदास री ख्यात' नै ख्यात सैली रो अनोखो 'उदाहरण क्यूं कयौ जावै ? समझावो।

8.6 संदर्भ ग्रंथ

1. मुहणोत नैणसी - नैणसी री ख्यात।

2. दयालदास सिढायच - दयालदास री ख्यात।

3. बाँकीदास आसिया - बाँकीदास री ख्यात।

4. मुहणोत नैणसी - मारवाड़ रा परगना री विगत - मुहणोत नैणसी।

5. मुरारीदान - मुरारीदास री ख्यात

6. मुंदयाड़ री ख्यात

7. डॉ. शिवस्वरूप शर्मा - राजस्थानी गद्य साहित्य -उद्‌भव और विकास।

bdkb&9

jktLFkkuh lkfgR; jk e/;dky vFkok jhfrdky

bdkb jk eMk.k

9.0 उद्देस्य

9.1 प्रस्तावना : सामान्य परिचै

9.1.1 अरथ अर नामकरण

9.1.2 काल–निरणै

9.2 राजस्थानी साहित्य रो मध्यकाल

9.2.1 राजनीतिक परिवेस

9.2.2 सामाजिक सांस्कृतिक परिवेस

9.2.3 धार्मिक परिवेस

9.2.4 आर्थिक परिवेस

9.2.5 साहित्यिक परिवेस

9.3 राजस्थानी साहित्य रो मध्यकाल : प्रमुख रचनावां अर रचनाकार – सामान्य परिचै

9.4 राजस्थानी साहित्य रो मध्यकाल : अेक अध्ययन

9.4.1 प्रव्रत्तियां

9.4.2 काव्य धारावां

9.4.3 काव्य रूप

9.5 इकाई रो सार

9.6 अभ्यास सारू सवाल

9.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

9-0 mís;

- इण इकाई रो उद्देस्य विद्यार्थियां नै राजस्थानी साहित्य रै मध्यकालीन साहित्य री जाणकारी दिरावणौ है। इण जानकारी में सबसूं पैलां विद्यार्थियां नै मध्यकाल रै अरथ रो खुलासौ कर्यो गयो है।
- मध्यकाल रो नामकरण अर काल निर्धारण री जाणकारी करावणो है।
- इण काल खण्ड री राजस्थानी रचनावां रो खुलासौ करणो है।
- मध्यकालीन परिस्थितियां रै अनुरूप उण जुग री साहित्यिक प्रव्रतियां, काव्य धारावां अर काव्य विधावां री विरोळ करणो है। इण भांत इकाई में विद्यार्थी लिखी बातां सूं अवगत हुवैला–

1. राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल रै नामकरण अर काल निरणै रो ग्यांन।

2. मध्यकालीन साहित्य निर्माण रै परिवेस री ओळखांण।

3. इण काल री खास–खास रचनावां रो परिचै।

4. मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य री प्रमुख प्रव्रत्तियां काव्य धारावां अर रूपां री विगतवार जाणकारी।

9-1 iLrkouk % lkekU; ifjp

9-1-1 vjFk vj ukedj.k

विद्वानां रै मुजब 'मध्यकाल' अेक परिभाषिक सबद है, जिकौ इतिहास रै आद, मध्य अर आधुनिक काल खण्डां रै संदर्भ बरतीजियौ है। विस्व रै इतियास रो मध्यकाल सातवें–आठवें सइकै सूं सरु हुवै। भारतीय इतियास में पण मध्यजुगीण प्रव्रत्तियां हरसवरधन रै समराज रै पतन पछै इणी समै सूं सरु हुय जावै। विस्व–इतियास में औ काल सातवीं सदी सूं 17वीं सदी रै आखर लग रैयौ, पण भारत में इणरौ अस्तित्व 19वीं सदी रै आखर लग रैयौ। इण भांत भारत में औ बारैह सौ बरसां रो काल–विस्तार मध्यकाल कै मध्य जुग नांव सूं जाणीजै।

इतिहयासकारां रै मुजब इण काल खण्ड रा फेर दोय हिस्सा करीजै – पूर्व मध्यजुग अर उत्तर मध्यजुग। पूर्व मध्य युग बारवैं सइकै रै आखर लग अर उत्तर मध्य जुग 13वीं सदी सूं 19वीं सदी लग चालै। इतियास में मध्यजुग री आं कल्पना निजू (व्यक्तिगत) अर सामाजिक जीवन री सगळी प्रव्रत्तियां में ह्रास अर पुनरुत्थान, दोई तरियां प्रव्रत्तियां मिळै। ब्रजेश्वर वर्मा रै मुजब 'पूर्व मध्य जुग समस्टी दीठ सूं ह्रासोन्मुख है अर उत्तर मध्य जुग पुनरुत्थान री प्रव्रत्तियां सूं भरपूर।

इतियासकारां री अवधारणां पांण हिन्दी साहित्य रा इतियासकार 14वीं–15वीं सदी सूं 19वीं सदी लग रै कालखण्ड मध्यकाल नांव दिरायौ। हिन्दी साहित्य रा इतियास लेखक इतियास रै पूर्व मध्यकाल नैं आदिकाल कै वीर गाथा काल कैयौ। अै इतियासकार विक्रम री 15वीं सदी सूं 17वीं सदी रै काल नैं पूर्व मध्यकाल कै भगतीकाल नांव दिरायो अर वि. 1700 सूं वि. 1900 रै काल नैं उत्तर मध्यकाल कै रीतिकाल नांव दिरायौ।

राजस्थानी साहित्य रा इतियासकार ई इणी परम्परा नैं अंगैजी। सांच तौ आं है क राजस्थानी साहित्य रै इण काल में अेक सागै घणकरी प्रव्रत्तियां रो साहित्य लिखिजियौ। भगती आन्दोळण री सरुआत उणरै प्रभाव सूं ई अठै सुद्ध भगती साहित रो सिरजण कोनी हुयौ। नागदमण, वेली क्रिसण रुकमणी अर घणकरी जैन भगती रचनावां रा नायकां रा वीरत्व सूं भर्‌या वरणांव आ रचनावां रा सिरजक मांड्या है। इण भांत इण काल भगती साहित्य में ई भरपूर वीर रस रा चितराम मिळै तौ वीर रसात्मक रचनावां में उल्लेख जोग सिणगारिक वरणांव मंडीजिया है। हिन्दी साहित्य जैड़ौ रीतिकाव्य वि.सं. 1700–1900 रै काल रै राजस्थानी साहित्य में रचीजियौ ई कोनी। रीतिकाव्य परम्परा में अठै खासतौर सूं छंद ग्रंथां, नाममाळावां री इधकाई रैयी। 19वैं सइकै में कुछ कवि डिंगल गीतां रै संदर्भ में काव्य दोसां बाबत बात करी। आं रचनावां रो मुख्य विषय भगती कै वीरत्व रो बखाण है। वस्तुतः अै रचेता संस्क्रत कै हिन्दी रै कवियां री दाई आचारिज कोनी हां। वै तौ सिरफ कवि हा। अतः इण काल नैं मध्यकाल नांव देवणौ तौ सही है, पण उणरा दोय भाग पूर्व मध्यकाल (भगतीकाल) अर उत्तर मध्य–काल करणौ संदर्भगत कोनी लागै।

9-1-2 dky fuj.k

हिन्दी साहित्य रै इतिहास में आचार्य रै रामचंद्र सुक्ल रो काल विभाजन प्रायः मानीतौ है। इण वास्तै उठै मध्यकाल (पूर्व मध्यकाल अर उत्तर मध्यकाल) री समैं सीमा ई प्रायः ठावी है। पण राजस्थानी साहित्य रै इतियास में अजैलग किणी काल विभाजन रै मानता रै अभाव में विद्वान मध्यकाल री समै–सीमा न्यांरी न्यांरी निर्धारित करी है। राजस्थानी साहित्य रै इतियास लेखकां री आं समै–सीमा वि.सं. 1460 वि.सं. 1907 लग गयी है। डॉ. मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी साहित्य रै पूर्व मध्यकाल री सरुआत वि.सं. 1460 मानता हुया अन्त वि. 1700 मानै अर वि.सं. 1700 सूं वि. 1900 रै काल नैं उत्तर मध्यकाल कैवै अर्थात् डॉ. मेनारिया रै मत सूं मध्यकाल रो समै

वि.सं. 1460 सूं वि.सं. 1900 लग है। इणी तरिया तो काल निर्धारण प्रो. कल्याणसिंह सेखावत कर्‌यौ है। उणा रै मुजब मध्यकाल री समै–सीमां वि.सं. 1450 सूं वि.सं. 1850 (पूर्व मध्यकाल–भक्तिकाल–वि.सं. 1450–1650, उत्तर मध्यकाल–रीतिकाल–विसं. 1650–1850 लग)। श्री सीताराम लाल मध्यकाल रो कोई वरगीकरण नहीं करै पण समै–सीमा वि.सं. 1460 सूं वि.सं. 1900 मानै।

प्रो. नरोत्तमदास स्वामी रो काल विभाजन सरुआत में काफी मानीतौ रैयौ। उणा रै मतानुसार इणरी समै सीमा वि.सं. 1550 सूं वि.सं. 1875 है। राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल बाबत विद्वानां री दियोड़ी इण समै–सीमा रै परिपेख में मध्यकाल री सही समै–सीमा वि.सं. 1550 सूं वि.सं. 1900 ने मान सका। इण समै सीमा में मध्यकाल री सियासी उठा–पटक सूं रचीजियो साहित्य री सगली प्रव्रत्तियां रो समावेस हुय जावै। मीरां, सायाजी झूला, कुसललाभ, दुरसा आढा जैड़ा सरुआती कवियां री रचनावां इण समै में लिखीजी। इण समै में मध्यकाल रै छैकड़लै कालखण्ड रै कवियां री रचनावां ई सामिळ हुय जावै।

डॉ. जगदीस प्रसाद श्रीवास्तव मध्यकाल रो समै वि.सं. 1707 सूं वि.सं. 1907 (1650 ई.सूं 1850ई.) बतळावै।

9-2 jktLFkkuh lkfgR; jk e/;dky % ifjos'k

9-2-1 jktuhfrd ifjos'k& इण काल में म्हाणै देस में मुगलां रो राज हौ। मुगल सबसूं पैलां पानीपत में जबरदस्त जीत हासिल करी। इण रै पछै वि.सं. 1584 में मेवाड़ रै महाराण सांगा नै नेतृत्व में सगळा सासकां रो बाबर सागै लड़ीजियौ खानवा री लड़ाई री घणा ही। दुरभाग सूं महाराणा सांगा इण लड़ाई में पराजित हुयगा। इणसूं मुगलां रो सामराज औजूं बध्यौ। खानवा रै इण घमसांण रो असर आखी हिन्दू जनता माथै पड़्‌यौ। इणी प्रभाव सूं मुगती दिरावण सारू हिन्दी भगत अर संत भगती साहित्य रचियौ। वि.सं. 1615 में अकबर अजमेर, जैतारण नैं आपरै मातहत कर'र राजस्थान में मुगलकाल री सरुआत करी। आपरी दूरदरसी सियासी दीठ सूं वौ राजस्थान री इग्यारै राजपूत रियासतां सूं सादी–ब्याव रै सम्बन्धां री सरुआत करी। इणी नीति रै तहत मेवाड़ (उदयपुर) नै छोड़'र आखै राजस्थान री रियासतां अकबर री अधीनता अंगैज लीवी। मेवाड़ रा महाराणा परताप घणी अबखायां सागै आजादी री रक्षा करता रैया। फेर वि.सं. 1671 लग परताप रा सपूत अमरसिंघ जहांगीर सागै संघरस चालू राख्यौ। सहांजहां रै काल में ई औ संबन्ध मधुर कोनी बण सक्यौ। औरंगजेब अर मुराद री भेळी सेना सूं मुकाबलौ करण वास्तै जोधपुर रा महाराजा जसवंतसिंह धरमत (उज्जैन) पूग्या। उठै वि. 1715 में वानै रण खेतर छोड़ण सारू मजबूर हुवणौ पड़यौ।

राजस्थान रै राजावां री आपसी फूट रो फायदौ उठाय'र मराठां अठै आपरी सत्ता जमावण लागा। वै अठै रा राजावां सूं खिराज वसूल्यौ अर प्रजा नैं लूट्‌यौ। आखर जोधपुर, जयपुर, बीकानेर रा राजावां मिळ'र मराठावां नैं अठां सूं भगावण री योजना बणाई। जैपुर सूं 43 मील आगै गांव तूंगा में वि.सं. 1844 में राजपूतां अर सिंधियां में मुठभेड़ व्ही, जिणमें सिंधियां पराजित हुया। पण राजपूतां रा आं भेळप घणा दिनां तांईं कोनी चाल सकी। बेगी इज कच्छावावां अर राठौड़ां में फूट पड़गी।

9-2-2 lkekftd vj lkaLd`frd ifjos'k & आं सियासी विगत आखै भारत नैं असर करी पण राजस्थान माथै इण रो बेसी ई असर पड़यौ। इण प्रभाव सूं छोटी–छोटी रियासतां औजू पराधीन हुयगी। वां में असुरक्षा, अविस्वास अर मतभेद निपजण लागा। आखौ समाज जातियां में बंटीजग्यौ। मिनख रो सोसण हुवण लागौ। विलासितां रो असर देसी रियासतां माथै ई पड़्‌यौ जिणसूं लुगायां री हालात बिगड़ी। नतीजौ औ हुयौ क बाल विवाह, बहु पत्नी विवाह, दायजै री प्रथा, सती प्रथा जैड़ी कुटेकां रो बधापौ हुयौ। मिनख रो नैतिक स्तर घणौ नीचै आयगौ।

मुगलां रै असर सूं कलावां रो विकास हुयौ। रजवाड़ां में कलावन्ता, कवियां अर सिल्पकारां नैं आश्रय मिलण लागौ। वै आपरी कलावां रै पांण आश्रय दातावां सूं चौखा पुरस्कार पावण लागा। इण सूं मिनख में पलायनवादी प्रव्रत्ति ई बधी। कलावां माथै विदेसी प्रभाव लखीजण लागौ। जिणसूं म्हांणी देसी कलावां रो विकास रुकगौ।

9-2-3 /kkfeld ifjosl & राजनीतिक परिस्थितियां रै कारण अठा री प्रजा ईस्वरोन्मुखी हुयगी। वैष्णव भगती आन्दोलन राजस्थान में ई प्रभावित कर्‌यौ जिणसूं अठै सगुण–निरगुण मुजब पुस्टि मारग, निम्बारक, दादू, विस्नोई, जसनाथी, निरजनी, लालदासी, चारणदासी, रामस्नेही सम्प्रदायां रै सागै ई जैन अर नाथ सम्प्रदायां ई थरपीजियां। आंनै रियासतां रो संरक्षण ई मिळियौ। आं सम्प्रदायां रा मठाधीस घणै ठाठ–बाठ सागै रैवण लागा। आं रो समाज माथै घणौ रुतबौ हौ। समाज–सुधार में निरगुण भगती सम्प्रदायां रो खासौ महतब रैयौ।

9-2-4 vkfFkld ifjosl & राजनीतिक अथिरता अर लगोलग हुण वाळा घमसाणा सूं इण काल री आर्थिक स्थिति पण प्रभावित व्ही। सैनिक खरचां सूं राज री सारी पूंजी जुद्धा खातर खरचीजती। मुगलां अर सामन्तां री विलासिता रो प्रभाव अठा री साधारण जनता माथै ई पड़्यौ। वै ई उणां री ढाल रैवण री नकल में फिजूल खरची करण ढूक्या, जिण सूं समाज री आर्थिक स्थिति औजूं निबळी हुयगी।

मध्यकाल में मिनख रो खास व्यवसाय खेती ही। जमीदार किसान अर मजदूर रो सोसण करता हा। भरपूर फसल हुवण पै ई मजदूर नैं पूरी मजदूरी कोनी मिलही अर किसान सूं अणूथौ लगान वसूलीजतौ हौ। इण अवस्था में किसान अर मजदूर रो पेट पालणौ घाणै ई दूभर हौ। बाणियौ आं गरीबां नैं मूंघै ब्याज माथै उधार देवतौ जिणनै चुकावता चुकावता ई वौ सिधार जावतौ।

समाज रै ऊंचै वरग री आर्थिक हालात चौखी ही। आं रै आर्थिक हालात रा घणाई चित्राम, वेलि क्रिसण रुकमणी, नागदमण, हाला झाला रा कुण्डलियां, कुंवसी सांखलौ आद रचनावां में मिळै।

9-2-5 lkfgfR;d ifjosl & आं अबखायां सूं दुःखी समाज बुरी तरिया सूं टूटगो। उण रो बिस्वास फगत उण परम सत्ता परमब्रह्म माथै इज बच रैयौ हौं आं मनोवैग्यानिक सांच पण है के दौरप में मिनख ईस्वर नैं ई याद करै। अतः समाज भगती कानी ढूक्यौ अर कवि गण उण परम सत्ता जिणरौ असर वैदिक जुग सूं ई रैयौ, रै बाबत साहित्य लिखण लागौ। मध्यकाल में विकसित भगती आन्दोलण अर न्यारां–न्यारां भगती सम्प्रदाय इण प्रव्रति नैं औजू खिमता दीवी। हिन्दी री देसज भासावां में तौ ओ भगती साहित्य विपुलता सागै लिखीजियौ क हिन्दी साहित्य रा इतिहासकार मध्यकाल रै सरुआती 325 बरसां रै काल खण्ड रो नांव ई भगती काल राखियौ। इणी परम्परा में राजस्थानी साहित्य रा कुछेक इतियास लेखक ई वि.सं. 1450 सूं 1700 रै काल री पूर्व मध्यकाल कै भगती काल नांव सूं विरोळ करी।

मध्यकालीन परिवेस रै मुजब राजस्थानी साहित्य फगत भगती नैं आधार मान'र इज नीं लिखिजियौ। भगती साहित्य रै सागै इज वीर, सिणगार, प्रेम, नीति, रीति आद प्रव्रत्तियां री रचनावां पण इण काल में रचीजी। इण रो खास कारण राजस्थानी री प्रव्रति मारगी विचारधारा रैयी। अठा रो रैवासी अर कवि मध्यकालीन वातावरण सूं डरप्पौ जरूर पण वौ आपरै धीजै अर पुरुषारथ नैं सदीव कायम राखण री कोसिस करतौ रैयौ। इणी चिन्तनधारा रै पांण इण जुग में रचीजियौ साहित्य मिनख रै सरीर अर आत्मा रै अग्यांन नैं आघौ कर'र अेक अैड़ै लगौलग जीवन रो संदेस देवै जिकौ अेक कांनी सांसारिक मोह रो नास करै तो दूजी कांनी पुनरजन्म, सरीर री नस्वरता अर आत्मा री अमरता रो संदेस दिरावै। 'वसुधैव कुटुम्बकम' री भावना सूं भरपूर इण जुग रो साहित्य करम री प्रतिस्ठा करै, मरजाद अर नीति रो संदेस देवै। मध्यकालीन सन्तां री वाणियां, पद आद मिनख री बुद्धि रो विकास करता हुया जीव अर जगत रो वैवारिक ग्यांन देवण वाळौ है। सांसारिकता अर वैराग रो घणौ ई फूटरौ अर सारथक मंडाण म्हानैं मध्यकालीन जैन रचनावां में मिळै।

मुगल दरबारां री देखा–देखी में अठै ई राजा–महाराजा, सामन्त कवियां नैं आश्रय देवण लागा। चौखा पुरस्कार ई वांनैं मिळण लागा। इण भांत संरक्षण पाय'र साहित्य री श्री–वृद्धि व्ही। लक्षण ग्रंथ लिखण री ई परम्परा सरू व्ही। सैवट अबखाया सूं भरियोड़ै मध्यकाल में साहित्य सिरजण रो घणौ लूंठौ वातावरण बण्यौ। साहित्य गद्य–पद्य दोई विधावां में लिखीजियौ। विविध धारावां अर प्रव्रत्तियां सूं सम्पन्न राजस्थानी साहित्य रो मध्यकाल साहित्य री दीठ सूं स्वर्णजुग कैवावण जोग है।

9-3 jktLFkkuh lkfgR; jk e/;dky % ie[k jpukok vj jpukdkj & lkekU; ifjp

राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल में साहित्य री प्रायः सगळी ई विकसित विधावां, काव्य धारावां अर प्रव्रत्तियां री रचनावां रचीजी। आं रो विस्तृत विवेचन आगै करालां। अठै इण काल री खास–खास रचनावां–रचनाकार अर उणां में सूं कुछेक रो सामान्य परिचै ई दिरावलां। मध्यकाल री उल्लेखजोग रचनावां हैं–

दूहा राव रिणमल रा, दूहा भाटी सत्ता रा, उमा दे भटियाणी रा कवित्त, राउ चोरसेन रा रूपक, रावळ माता सळखावत रो गुण–आसानंद बारठ (वि. 1563–1660); मीरां पदावली, नरसीजी रो मायरो, राग सोरठ, राग गोविन्द, मीराबाई (वि. 1561–1610), विरुद छिहत्तरी, किरतारबावनी, राव सुरतांण रा कवित्त, श्री कुमार आजाजीनी भूचर मौरी नी गतगत, झूलणा राव श्री अमरसिंघजी रा, दूहा सोळंकी वीरमदेव रा–दुदसा आढ़ा (वि. 1592–1712), हरिरस, छोटो हरिरस, गरुड़ पुराण, गुण आगम, देवियाण, गुण–वैराठ, हाला झाला रा कुंडलिया, रास कैलास, दांणलीला, सामला रा दूहा आद–ईसरदास (वि. 1515–1675), वेलिक्रिसण रुकमणी री, दसम भागपत रा दूहा, गंगा लहरी, वसदे रावडत, दसरथ रावडत– प्रिथिराज राठौड़ (वि. 1606–); माधवानलकामकंदला चौपई, ढोला माखणी चौपई; तेजसार रास, जिनपालित जिन रक्षित संधि गाथा, अगड़दत्त रास, थंभण पार्स्वनाथ स्तवन, गोड़ी पारसनाथ स्तवन, पूजा वाहण गीत, संत्रुंजय यात्रा स्तवन, भीमसेह हंसराज चौपई, पिंगल सिरोमणि, महामाई दुरगा सातसी आद–कुसल लाभ (वि. 1595–1655), सिंहलसुत प्रियमेलक रास, चंपक सेठ चौपई, नलदमयन्ती रास, मृगावती रास, वस्तुपाल–तेजपाल रास, सीताराम चौपई, पुण्य सार चौपई, चार बुद्धि रास– समय सुंदर (वि. 1620–), वाणी– दादू दयाल (वि. 1601–1660), सबदवाणी, जंभवाणी, जंभगीता–जांभोजी (वि. 1508–1593), वाणी – बखनाजी (वि. 1640–1670), वाणी, सर्वंगी–रज्जब (वि. 1624–1746), सर्वांगयोग, स्वप्न–प्रबोध, उक्ति अनूप, सद्‌गुरु महिमा, गुरु महिमाष्टक, ज्ञान झूलण अष्टक, हरिबोल चितावनी, अडिल्ला छंद ग्रंथ, सुंदर विलास आद–सुंदरदास (वि. 1653–1748), वाणी–लालदास (वि. 1597–1705), अस्टांग योग, नासकेत, संदेह सागर, राममाला, भक्ति पदारथ, दानलीला, ब्रह्मग्यान सागर आद–चरणदास (वि. 1760–1838), दयाबोध–दया बाई (वि. 1750–75), करुणा सागर–दयालदास (वि. 1816–1885), वाणी–दरियावजी (वि. 1733–1805), सुमित्र कुमार रास, रात्रिभोज रास, सकुन्तला रास–धरम समुद्र गणि (वि. 1567–1590), मनभरता गीत, महावीर पारणा, पुरन्दर चौपई, सील बावनी, राजुल नेमिनाथ धमाल, पद्‌मावती रास, भोज प्रबन्ध आद– मालदेव, गोरा बादिल पद्‌मनी चौपई, लीलावती कथा, शीलवती कथा, जगदम्बा बावनी, शनिचर छंद–हेमरतन सूरि, पद्‌मनी चरित चौपई, मलय सुंदरी चौपई, रतनचंद मुनिचंद चौपई, गुणावली चौपई आद– लब्धोदय, श्रेणिक चौपई (वि. 1719), अमरसेन वयरसेन चौपई (वि. 1724), दशार्णभद्र चौपई (वि. 1757), सुरसुंदरी रास (वि. 1736)– उपाध्यक्ष धरमवर्धन, राव जैतसी रो छंद–बीठू सूजो (वि. 1591–1598), बसंत विलास फाग–कायस्थ केशवदास (वि. 1592), पाबूजी रा छंद, गोगाजी रा रसावला (बीठू मेहो), गुण रूपक, राव अमरसिंघ रा दूहा, विवेक वारता, गज गुण चरित– केसवदास गाडण (वि. 1610–97), नागदमण, रुकमणी हरण, अंगद पिष्टि–सांयाजी झूला (वि. 1632–1703), राम रासो, भासा दसमस्कंध–माधौदास (वि. 1610–15–1690), श्रीराम भेजन मंजरी, उपासना बावनी, अस्ययाम, अग्रसार आद–अग्रदास (वि. 1632), सगत रासो– गिरधर आसियो (वि. 1720), हरिपिंगल प्रबंध– जोगीदास, लीलावती रासौ (वि. 1728)– कुसलधीर, लीलावती रास (वि. 1733), धरमबुद्धि–पापबुद्धि रास (वि. 1763), निसांणी महाराज अजीतसिंघ री (वि. 1767), पांडव चरित चौपई (वि. 1770 आद– उपाध्याय लाभवर्धन, अणभै वाणी– संतदास (वि. 1725–1808), खुम्माण रासो–दौलत विजय (वि. 1725–60) रतन रासो, जयचंद रासो–कुंभकरण (वि. 1723), राजरूपक वीरभांण चारण (वि. 1745–92), वृंद सतसई, यमक सतसई, भाव पंचासिका, सिणगार सिक्षा, वचनिका आद वृंद (वि. 1700–1780), राणा रासो–दयाल, हम्मीर नाम माला, लखपत पिंगल, पिंगल प्रकास, जदुवंस वंसावली, देसलजी री वचनिका, भरतरी सतक, भगवत दरपण आद– हम्मीर रतनू, सूरज प्रकास, बिड़द सिणगार–करणीदान, रघुनाथ रूपक गीतां रौ–मंछाराम सेवग 'मंछ', भीमप्रकास, करणी रूपक–रामदास लालस, कवि कुळबोध–उदयराम गूंगा, रघुवर जस प्रकास, भीमविलास–किसना आढ़ा, गुण गोविन्द (वि. 1725)–कल्याणदास, सत्रुसाल रासो (वि. 1710)– डूंगर सी, नाथ

चरित, जलंधर चंद्रोदय, नाथ स्तोत्र, नाथ परद संग्रै–महाराजा मानसिंघ (वि. 1839–1900), सूरछत्तीसी, धवळ पचीसी, मावडिया मिजाज, कुकवि बत्तीसी, भुरजाळ भूसण, झमालनख–सिख, सिद्ध राव छत्तीसी, हमरोट छत्तीसी आद–बांकीदास (वि. 1828–1890) आद।

कतिपय काव्य–रचनावां/कवियां रो सामान्य परिचै–

1- ehjk inkoyh & मीरांबाई री खास काव्य–रचना उणां रा भगती पद है। राजस्थानी भगती साहित्य में मीरां री लूंठी जागां है, पण अजै लग मीरां बाई रै जीवन बाबत कोई ठावौ निरणै कोनी हुय सकौ। म्हां विविध प्रमाणं पांण औ निस्कर्स देय सकां के मीरां मेड़ता रै राठौड़ राव दूदा रै चौथै बेटै रतनसिंघ री धीवड़ी ही। वां री मां रो नांव कसूब कंपर (कुसुम कुंवर) हौ।

मीरां रो जळम मेड़ते में ई वि.सं. 1561 में हुयौ। वां रो ब्याव राव दूदा री मिरत्यू पूढै वीरमदेवजी मेवाड़ रै राणा सांगा रै बेटै भोजराज सागै वि. 1573 में कर्‌यौ। महाराणा सागा री मिरत्यु रै पछै क्रिसण भगती में रमियोड़ी विधवा मीरां विंद्राबन परी गई। किंवदतियां अर इतियासिक घटनावां रै पांण अठै भगतीमती मीरां वि. सं. 1610 में भगवान श्रीकृष्ण में समायगी। आई तिथि मीरां री मिरत्यु तिथि हुय सकै।

विद्वानां रै मुजब मीरां री आं रचनावां रो उल्लेख मिळै– गीत गोबिन्द री टीका, राग गोविन्द, सोरठ रा पद, मीरांबाई री मलार, गरबा गीत नरसीजी रो मायरो, राग विहाग, अर पद। आं रचनावां री प्रामाणिकता सिद्ध कोनी हुवै। मीरां रा फुटकर पद ग्रंथालयां में सुरक्षित है, ज्यां रा अलेखूं सग्रै प्रकासित हुय चुक्या है।

मीरांबाई रा अै पद उणां रै हिवड़ै सूं निकल्यौड़ै प्रेमोच्छवास री सहज अभिव्यक्ति है। आपरै आराध्य गिरधर गोपाल री विलक्षण रूप छटा रै प्रत उणा री आसक्ति हर पद में बोलै। क्रिसण प्रेम में मतवाळी मीरां मन माय क्रिसण मिळण री अनुभूतियां नैं अनेकू पदां में मांडी है। पण उणा रै आं पदा में विजोग ई बेसी रूप में मुखरित हुयौ है। इण विरह री अेक मोटी विसेसता आ लखावै क उणरी कोई सींव नीं है। विरह रै अलावा सान्त रस री ई व्यंजना आं पदां में मिळै। सान्त रस री इण अभिव्यक्ति में माधुर्य अर दैन्य भाव रळमिळ'र अेक हुयगा है–

बाला! मैं वैरागण हूंगी।

जिहि–जिहि भेरव मेरो साहब रीझै, सोई–सोई भेख मरूंगी

सीळ संतोस धरु घर भीतर, समता पकड़ रहूंगी

प्रेम प्रीति सूं हरि गुण गाऊं, चरणन लिपट रहूंगी।।

मीरांबाई रै पदां में घटनावां रा वरणाव घणा ओपतां मंडीजिया है। बंसी वादन, लीलावां, पनघट लीला, फाग लीला, साजन रो घरां पधारणौ, क्रिसण रै प्रत लगन री घटना आद खास घटना–प्रसंग हैं, ज्यां में जीवण री करुण दसा, पछतावां आद रा लूंठा चित्राम उकेरीजिया हैं–

''बहुत दिनन पै प्रीतम पायो, बिछुड़न को मोहि डर रे।

मीरां कह अति नेह जुडायौ मैं लियो पुखलौ वर रे।।''

मीरां रै आं पदां में भागवत भगती रो सैठौं परिचै मिळै। कठै–कठै साधु, जोगी, अवधूत सबदां रै प्रयोग सूं उणा री निरगुण अर नाथभगती बाबत पण परिचै मिळै। पण औ जोगी उणा रो प्रिय आराध्य श्री कृष्ण इज है।

भगती रै माध्यम सूं मीरां रो विद्रोही रूप ई उजागर हुयौ है। औ विद्रोह उण वगत री सामन्ती परम्परा रै बाबत है। मीरां रो औ विद्रोह, बगावत अर क्रान्ति कुटुम्ब–कबीला, समा जी कांण कायदां अर भगती री संकळाई सूं ले'र भाव अर भासा तांई जा पूगी। इण भांत मीरां वा पैली लुगाई ई जिकी नारी सुतंतरता री बात आज सूं साढ़ी पांच सै बरसां पैला ई कर दीवी ही। सैवट मीरां बाई रा अै पद कालजयी है। वां में भरपूर काव्यत्व है, भगती

री स्रोतस्विनी रो निरन्तर प्रवाह है अर है अेक सुतंतरता री हूक।

2- ek/kokuy dke dUnyk pkibZ& राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल में अनेकू कवि माधवानल काम कन्दला रै पौराणिक प्रेमाख्यान माथै घणी ई रचनावां लिखी। आं में सूं ई अेक महताऊ रचना जैन कवि कुसल–लाभ री लिख्योड़ी 'माधवानल कामकंदला चौपई' है। कवि कुसमलाभ जैसलमेर रै महारावळ हरराज रा आश्रित हा। उणां री रचनावां अर हरराज रै सासनकाल रै आधार पांण कवि रो समै वि.सं. 1580–85 सूं वि. सं. 1655 लग सिद्ध हुवै।

राज्याश्रय अर पछै उपासरावां में रैवता हुया कवि कुसललाभ छोटी–मोटी अट्ठारै पोथियां रो सिरजण कर्‌यौ– 1. माधवानल काम कंदला चौपई 2. ढोला–मारवणी चौपई 3. जिन पालित जिनरक्षित सधि गाथा 4. पारसनाथ दसभव स्तवन 5. तेजसार रास चौपई 6. अगड़दत्त रास 7. पिंगल–सिरोमणि 8. थंमण पारसनाथ स्तवन 9. भीमसेन–हंसराज चौपई 10. सत्रुंजय यात्रा स्तवन 11. श्री पूज्यवाहन गीत 12. गुणवली सुंदरी चौपई 13. गौड़ी पारसनाथ छंद 14. नवकार छंद 15. स्थूळिभद्र छत्तीसी 16. महामाई दुर्गा सातसी 17. जगदम्बा छंद अथवा भवनी छंद अर 18. कवित्त सवैया।

माधवानल कामकंदला चौपई कवि रो अेक महताऊ प्रेमाख्यान है। रचना री पुष्पिका रै मुजब कुसललाभ इण रो सिरजण वि.सं. 1616 रै फागण तेरस आदितवार नैं कर्‌यौ। माधवानल काम कंदला री कथा सार रूप में इण भांत कैयी जा सकै–

इन्दर रै सराप सूं राजनिरत की जयन्ती मिरत्युलोक में सिला रूप में जळमी। अठै उण रो ब्याव अलौकिक रूप सूं जळम्योड़ै बारै संकटहास पुरोहित रै बारै बरस रै बेटै माधव सागै हुयौ। सराप री पूरित पूठै वा पाछी इन्दर रै दरबार में पूगी। माधव पण उठै उणरी कांचळी में भंवरौ बण'र रैवण लागौ। भेद खुलण पै इन्दर रै सराप सूं जयन्ती मिरत्यु लोक में राजवेस्पा कामा रै घरै जळमैं। उणरौ नांव कामकंदला राखीजियौ।

विरही माधव री वीणा रा सुर अर उण रै मोवणौ उणियारै सूं पुस्पावती नगरी री लुगाया नैं काम पीडित हुयगी। माधव रै इण व्यवहार री सिकायत सूं माधव कामसेन री नगरी कामावती आयगो। अठै इन्दर मोहोत्सव रै औसर माथै उण नैं तैड़ीजियौ। सभा में माधव अर कंदला अेक दूजै नै औळखग्या। कंदला रै कुच माथै बैठ्यौड़ै भंवरै नैं न्यास पवन सूं उड़ावन री कला माथै रीझ'र माधव कामसेन रै इनाम नैं उण माथै न्यौछावर कर दिराया। राजा आपरौ अपमान मान'र उणनै सभा वारै काढ़'र देस निकालौ दिरायौ।

अेक रात काम कंदला सागौ रैय'र माधव उज्जैनी पूगौ। उठै वौ महाकाल मिन्दर में अेक विरह गाथा लिखी, जिण नैं बांचर'र विक्रमादित्य घणौ दुखी हुयौ। अन्न–जळ तजण री प्रतिग्या नैं सुण'र भोग विलासिनी वेस्या माधव नै लावण रो बीड़ौ उठायौ। महाकाल मिंदर में माधव माथै भोगविलासिनी रै पग पड़ता ई माधव उण रैं पग नैं आधौ कर'र पीन पयोधरा नैं उणरी छाती माथै रखण रो निवेदन कर्‌यौ।

भोगविलासिनी वेस्या री माधव बाबत जाणकारी लेय'र विक्रमादित्य सेना सागै कामसेन नगरी पूगौ। छद्मवेस में वौ दोया रै प्रेम री परीक्षा लीवी। माधव अर कंदला आपरै प्रेमी री हित्या रा समाचार सुण'र प्राण तज दिया। दो हत्यावां सूं दुःखी हुयौ विक्रमादित्य आतमघात करण सारू ढूकियौ तद इज वैताल उण नैं रोकियौ। आखी घटना री जाणकारी लेयर वौ पाताल लोक सूं अमरित जळ लायौ अर दोन्यू प्रेमियां नैं सरजीवित कर्‌यौ। विक्रमादित्य रै परोपकार सूं राजी हुय'र कामसेन कामकंदला नैं माधव नैं दिरायी। विक्रमादित्य रै परोपकार सूं राजी हुय'र कामसेन कामकंदला नैं माधव नैं दिरायी। विक्रमादित्य दोया सागै उज्जैन पूग्यौ।

थोड़ा'क दिन राजा विक्रमादित्य सागै रैय'र माधव आपरै मायतां कनै पुस्पावती नगरी गयौ। माधव रै सागै इतौ बड़ौ लवाजमौं देख'र उठा रो राजा घबरायौ। माधव नैं औळख'र सगळा नगरवासी उणरो स्वागत कर्‌यौ। आपरै मावीतां अर च्यार पुत्रां सागै सुखमय जीवण जीवतां मुगती पाई।

काव्यत्व री दीठ सूं आ रचना घणी मरमीळी अर प्रौढ़ है। सिणगार रस रो फूटरौ वरणाव इणरै महतव नैं

बधावै। विरहणी नायिका री मानसिंक औस्थां रा सूखम चित्राम घणाई मनोवैग्यानिक हर हिरदै स्परसी बण पड़या है। भासा सरल, सुबोध अर लोक प्रचलित राजस्थानी है। उण वगत रा प्रचलित लोक विस्वास अर सांस्क्रतिक वातावरण री इणमें भरपूर जाणकारी मिळै।

3- lcn ok.kh ¼tHkok.kh½ & जांभोजी रो जळम वि.सं. 1508 री भादवै बदि 8, सोमकर नैं नागोर परगना रै पीपासर गांव में हुयौ। अै जाति सूं पंवार रजपूत हा। अणा रै पिताजी रो नांव लोहटजी अर मां रो नांव हंसा देवी हौ। मायतां री मौत पछै वे बैरागी बण'र समराथल (नोखा–बीकानेर कनै) में सतसंग करण लागा अर अठै ई वै वि.सं. 1542 री कातिक बदि आठम नैं कळस थरप'र विस्नोई री सरुआत करी।

बिस्नोई सम्प्रदाय री थरपणा सूं जाम्भोजी री मिरत्यु परजात (वि.सं. 1593) उणा रै वचनां रो संग्रै 'सबद वाणी' है। वेद रो अरथ ग्यान है अर वौ सबद परक है। अतः सबद रो अरथ पण ग्यान है। जाम्भोजी गुरु है अर गुरु रो मान ब्रह्म समान हुवै। इण वास्तै गुरु जाम्भोजी री वाणी – 'सबद वाणी' नैं विस्नोई सम्प्रदाय वेद वाणी रूप में अंगैजै। अल्लूजी कविया अर गोकलजी इणनैं पांचवौ वेद मानै। वाणी (सबदवाणी) रो निरमाण– काल जाम्भोजी रै सात वैं साल (वि. 1515) सूं सरू हुय'र उणा रै बैकुण्ठवास काल (वि. 1593) लग है।

इण लांबी अवधि में जांभोजी अलेखूं सबद कैया हुवैला, पण अजै लग वांरा 123 सबद अर कुछेक मंतर इज मिळ सक्या है। जाम्भोजी अै सबद समै–समै अलेखूं लोगां रै साथै उणां री संकावां रै समाधान वास्तै, जिग्यासावां नैं सान्त करण सारू प्रस्नोत्तर रूप में, प्रतिबोध रूप में, चेतावणी रूप में कैया।

जाम्भोजी री 'सबदवाणी' पूरी तरिया सूं छन्दोबद्ध कोनी। अनेकू पद्यांस जठै तुकां मिळै, उठै मात्रावां री घट–बढ लखावै। 'सबदवाणी' रो मूल उद्देस्य करम–सीळता, आतमग्यान अर लोकमंगल है। वा मिनख नैं जड़ता, कुसंस्कार, अग्यान अर भरम सूं अळगौ कर'र उण नैं ठावी दिसा दिखावण री चेस्टा है। अै सबद आतम सरूप रो बोध करवाय'र विस्वकल्याण कांनी प्रेरित करण वाळा है। इणमें विक्रम रै 16वैं सइकै रै मरु प्रदेस री लोक भासा सुरक्षित है।

4- jko tSrlh jk Nn & राव जैतसी रो छंद कै छंद राव जैतसी रो वीठू सूजा री रचना है। डॉ. अेल. पी. टैसीटरी रै मुजब इण रो रचना काल वि.सं. 1591–98 रै बिचै है। कवि बीठो सूजो इणमें बाबर रै दूजै बेटै कामरान अर बीकानेर नरेस राव जैतसी रै जुद्ध रो वरणांव मांड्यौ है। कामरान पंजाब अर काबुल रो हाकम हौ अर इण जुद्ध में बौ हारग्यौ हौ। राव जैतसी अर कामरान रै इण जुद्ध रै बाबत मुसलमान इतियासकार मूनधारी है, पण कवि बीठू सूजौ आपरी इण रचना में इण जुद्ध रो विगतवार वरणावं कर्यौ है। इण वास्तै इण रचना रो अेतियासिक महतब है।

रचना रो नावकरण नायक राव जैतसी रै नांव माथै है। 401 छंदां में रचीजी इण काव्य रचना में पाघड़ी छंद 385, गाहा 11, दूहा 4 अर कवित्त 1 है। भासा सुद्ध डिंगल है। मूल रस वीर है। रचना रा वरणाव घणाई सजीव अर ओजस्वी है। रचना रो मूल लक्ष्य अेतियासिक सांच रो उद्घाटन करता हुया आपरै आश्रयदाता री विरुदगान है। रचना में कीर्ति सुव्यवस्थित सासन, आत्म सम्मान, वंसाभिमान, उमादव, निडरता, रजपूती आन आद रा घणाई स्वाभाविक चित्राम असर करै।

5- gfjjl & प्रस्तुत रचना रा रचेता 'ईसरा–परमेसरा' रै विरुद सूं सुसोभित बारठ ईसरदास है। आपरै जळम जोधपुर राज रै भाद्रेस गांव में वि. 1595 में हुयौ अर मिरत्यु वि.सं. 1675 में। जीवन रै 80 बरसां में बारहठजी 18 काव्य रचनावां रो सिरजण कर्यौं आं में सूं 'हाला–झाला रा कुण्डलिया' रै अलावां सगळी रचनावां सगुण भगती सूं जुड़यौड़ी है।

अठारै ग्रंथा में हरिरस आपरी खास आध्यात्मिक रचना है जिकी काव्य विधा री दीठ सूं मुक्तक काव्य है। 361 छंदा में रचीजी इण भगती रचना नै संपादक आचार्य बदरी प्रसाद साकरिया तीन काण्डां–कर्म कांड, उपासना कांड अर ज्ञान कांड सीर्सकां में बांट दीवी है। आं काण्डां में ई संपादकजी छंदा नैं भगती–दरसण मुजब

उपखण्डां में सुनियोजित करिया है। औ विभाजन पाठकां नैं घणी सौरम दिरायी है।

रचना रै छैकड़लै नव छंदा में हरिरस री मेहमा रो बखाण करीजियौ है तो पैलड़ै तीन छंद मंगळाचरण रा ई ज्यां में सरस्वती, गणेस अर गुरुवंदना करीजी है। इण भांत रचना रै सीर्सक रै अरथ रो ई अठै सागौ खुलासौ हुय जावै– (अ) हरि री भगती अर (आ) हरि भगती रो आनन्द। अतः हरिरस रो मूल विसै संसार रै सार मात्र हरि री भगती है। उण सूं ई भगत आप रै पाप–करमां सूं मुगत हुय सकै।

हरिरस में कुल पांच छंदां– दूहा, गाथा, मोती दाम, द्विअक्षरी अर छप्पय रो प्रयोग मिळै। अनुप्रास, वयण सगाई, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, द्रिस्टान्त अलंकारां रा प्रयोग पण भावानुरूप हुयौ है। इणरी भासा माधुर्यगुण सूं भरपूर मझकालीन राजस्थानी है।

6- xkjk&ckfny pfjr pkib & जैन कवि हेमरतन सूरि री रचना 'गोराबादिल चरि चौपई' अकबर काल री अेक महताऊ रचना है। कवि हेमरतन इण रो सिरजण सादड़ी में वि.सं. 1645 री सावण सुदि पांचम नैं करी।

619 दूहा–चौपई, सलोक गाहा, कवित्त, कुंडलीड छंदां में रचीजी इण रचना में कवि इतियास प्रसिद्ध चितौड़ री राणी पदमणी–रतनसेन नैं अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा बंदी बणाय'र गोरा–बादिल री योजना सूं उणारी मुगती अर जोहर री कथा कैईजी है।

कवि हेमरतन इणरी रचना महाराणा प्रताप रा बिस्वासी राजभगत मंत्री भामासाह रै भाई ताराचंद री प्रेरणा सूं करी। इण रै सिरजण काल में अकबर सूं महाराणा प्रताप हल्दी घाटी रै रिणखेत में जूझ रैया हा। इण वास्तै इण रचना रो लूंठौ अेतियासिक महतब है। कवि रै मुजब इण रचना रो खास उद्देस्य वीर चरितां अर उणां री सांमीभगती रो बखाण करणौ है। इण उद्देस्य पांण ई मुनि जिन विजय इण री समीक्षा रास्ट्रीय संदरभां में करी है।

हेमरतन विरचित गोरा बादिल चरित री बणगत जैन सैली री है, पण उणरौ प्रधान रस वीर है। काव्य रूप री दीठ सूं इण नैं म्हां अेक वीर रसात्मक खण्ड काव्य कैय सकां। इण री भासा मध्यकालीन राजस्थानी है, जिणमें मेवाड़ अंचल री बोली री इधकाई लखीजै। पोता ने, आपड़ीजै, थिपु, वापरीजै, वीनवई, तपास, रामति आद। अठै सबदालंकारां री बजाय अरथालंकारां रो प्रयोग बेसी रूप में मिळै। इण भांत मध्यकालीन साहित्य में इणरी लूंठी ओळखांण है।

7- cfyfØl.k #def.k jh & राठौड़ प्रिथिराज री रचना 'वेलि क्रिसण रुकमणी' री मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में अेक खास जागा है। देस–विदेस रा विद्वान इणरी हिरदै सूं सरावण करी है। डॉ. अेल. पी. टैसीटरी इणनैं डिंगल रै समरिद्ध साहित भण्डार रो जगमगावतौ रतन मानै तौ डॉ. मोतीलाल मेनारिया भाव अर भासा री दीठ सूं मौलिक रचना मानता थका उणरौ वरणाव करै।

राठौड़ प्रिथिराज बीकानेर नरेस राव कल्याणमल रा बेटा अर राव जैतसी रा पोतरा हा। आं रो जळम वि. सं. 1606 में हुयौं अै सिरै कवि, उद्भट्ट वीर हुवण सागै ई लूंठा भगवत भगत ई हा। उणां री भगती रै लूंठै पण रो वरणांव नाभादास आपरी 'भगतमाल' में ई कर्‌यौ है।

प्रिथिराज राठौड़ सम्राट अकबर रा किरपा पात्र रैया। बादसाह वांनैं गागरोन गढ़ रो किलौ दिरायौ जिका उणां रै इधकार में घणां ई दिनां तक रैयौ। कवि आपरै जीवन काल में पांच रचनावां वेलि क्रिसण रुकमणी री, दसम भागवत रा दूहा, गंगालहरी, बसदे रावउत, दसरथ रावउत रो सिरजण कर्‌यौ ज्यामें वेलि क्रिसण रुकमणी री महताऊ ठौड़ है। वेलि रै छैकड़लै दूहलै मुजब इण रो रचनाकाल वि. 1637 है। डॉ. मोतीलाल मेनारिया मुजब आ तिथि वेलि रै सरुआत री है। इणरौ समाप्ति काल वि.सं. 1644 वैसाख सुदि तीज, सोमवार है।

वेलि डिंगल साहित्य रै चावै वेलियो गीत में लिखिजी। 305 वेलियों छंदां में लिखीजी आ रचना खण्ड

काव्य वरग में आवै। इणमें श्री क्रिसण रुकमणी रै ब्याव री कथा कैयीजी है। कथा रो मूल आधार श्रीमद्भागवत रै दसमै स्कंध री कथा है। कवि खुद इणनै सिणगार रचना मानैं, पण आ रचना भगती–सिणगार अर वीर रस री त्रिवेणी है। भागवत री मिठास सागै सिणगार रस री विविध दसावां रा मरमीळा चित्राम इण में मिळै है। प्रसंग मुजब करुण, वीभत्स रसां रा ई ओपता वरणांव अठै उकेरीजिया है। प्रक्रति रो इत्तै सूखम वरणाव हुयौ है, के आ रचना कदै ई बारहमासा काव्य रो अनुमान करावण लागै। सादृस्य मूलक अलंकार अर वैणसगाई अलंकार इण री निजू ओळखांण थरपै।

8- gEehj uke ekyk & इणरा रचेता कच्छ–भुज रा राजा महाराजा कुमार लखपतजी रा आश्रित कवि हम्मीर रतनू हा। आं री बीजी लखपत पिंगल, गुण पिंगल प्रकास, जोतिस जुड़ाव, ब्रह्माण्ड–पुराण, भागवत दर्पण आद बाईस रचनावां है। हम्मीर नाम माला लक्षण–परम्परा में लिखिजण वाळै कोस परक साहित्य री उल्लेख जोग रचना है। इणरी रचना कवि हम्मीर रतनूं वि.सं. 1776 में करी। इण रो दूजौ नांव 'हरिजस नाममाला' पण है। आखी रचना वेलियौ गीत में रचीजी है। इण में च्यार प्रकरण अर 311 छंदां में विविध राजस्थानी नामां (संग्यावां) रा अनेकू पर्याय सबदां रे सागै ई वरणिक मात्रिक छंदां, गाहा अर डिंगल गीतां री जातियां रो विस्तृत विवेचन करीजियौ है। सबदां रै परयाय गिणावण रै पूठै कवि कलात्मक तरिकै सूं हरि महिमा गाई है।

9- /koG iPphlh & कविराजा बांकीदास रचित नीतिकाव्य में इण रो लूंठौ महतब है। कवि बांकीदास इणरी रचना चैत बिद नम, वि.सं. 1883 नैं करी। रचना रै नांव मुजब इण में 25 छंद (दूहा) हुवणा चाइजै, पण इणमें कुछ 34 छंद है। आं दूहा में कवि धोळै बळद रा गुण गान करिया है। कवि धवळ नैं प्रतीक रूप में अंगैजियौ है। वौ सदगुणां अर सदगुणलंक्रत रो प्रतीक है। इण भांत विसै री दीठ सूं बांकीदास री आ मौलिक कल्पना है।

कवि रचना रै पैलड़ै दोय दूहा में भगवान सिव रै वाहन धवळ री वंदना करता हुया परोख रूप सूं गणेसजी री स्तुति करी है। इण रै पूठै सबसूं बेसी दूहां में धवळ रै महतब री चरचा है। वो सिव रो वाहन है, कामधेनु रो वंसज है अर खेती सारू जरूरी है। इणरै पछै धवल रै गुणां रो वरणांव करण वाळा दूहा है। धवळ रो अेक मोटो गुण है क वौ मोटा कांधा सूं गाड़ी नै कादै सूं भर्‌यौड़ै खाडै सूं ई सहज रूप में बारै काढ़ देवै। लारलै दूहां में धवळ री सरावणा री इच्छावां अर उणरै विविध सुभाव बाबत बातां रो वरणांव करीजियौ है।

इण भांत अै दूहा कवि री मौलिक कल्पना है, जिका में पसु मनोविग्यान रो सांतरौ वरणाव करीजियौ है। काव्य रूप री दीठ सूं आ अेक मुक्तक रचना है। रचना सिक्षाप्रद है।

9-4 jktLFkkuh lkfgR; jk e/;dky % vkd v/;;u

9-4-1 iowfÙk;k

9-4-1-1 ohj dk0; & मुगलां रै असर सूं राजस्थान में सामन्ती वातारण औजू बध्यौ। चारण–भाट अर बीजी गायक जातियां रो राज्याश्रय औजूं बध्यौ। नतीजौ औ हुयौ क आं कवियां द्वारा राजावां री प्रसंसां मं काव्य सिरजण री गति बधी। विरोधी राजावां री खुल'र निंदा लिखीजी। इण भांत राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल में प्रसंसात्मक (सर) अर निंदात्मक (विसर) काव्य इधकाई में रचीजियौ। डॉ. जगदीस प्रसाद श्रीवास्तव सर–विसर काव्य अर वीर काव्य रो न्यारै–न्यारै रूपा में अध्ययन प्रस्तुत कर्‌यौ, पण दोणां में समान रचनावां रा ई दाखलां पेस कर्‌या। वस्तुत वीर काव्य री विसै वस्तु में ई वीर री निदां अर स्तुति समाहित हुवै। अठै आं दोयां नैं मध्यकालीन राजस्थानी काव्य री अेक ई प्रव्रति मान'र अध्ययन कर रैया हा। मध्यकालीन उल्लेखजोग वीर रसात्मक रचनावां है– राव जैतसी रो छंद (वीठू–सूजा), हाला–झाला रा कुंडलिया (ईसरदास), राउरतनरी वेल (कल्याण दास मेहडू), देईदास जेतावत री वेल (अखौ भाणोत), चांदाजी री वेल (वीठू मेहा), गुण रूपक, राव अमरसिंघ रा दूहा (केसवदास), गुणभास चित्र (हेम), रामप्रकास (किसोरसिंघ), सगतसिंघ रासो (गिरधर आसिया), सूरज प्रकास विरुद सिणगार (करणीदान कविया), रतनरासो (कुंभकरण सांदू), वचनिका राठौड़ रतनसिंघजी री (खिड़िया जग्गा), राज रूपक (वीरमांण रतनू), विरुद छिहतरी (दुरसा आढ़ा), सत्रुसाल रासो (डूंगरसी), खुम्माण

रासो (दलपत विजय), भीम प्रकास (रामदान लालस), सुपह छत्तीसी, भुरजान मूसण, सिद्ध राव छत्तीसी, मान जसो मंडण, डिंगल गीत (बांकीदास), भीम विलास (किसना आढ़ा), रतनसी खीवावत री वेल (दूदो विसराल) आद।

मध्यकालीन राजस्थानी वीर काव्य प्रबन्ध अर मुक्तक दोई काव्य रूपां में मिळै। वीर प्रबन्ध काव्य खासतौर सूं निम्नलिखित रूपां में लिखिजिया–सूरज रासो, प्रकास, विलास, रूपक, वचनिका, वेल, छंद आद। वीर मुक्तक काव्य ई केई नावां सूं रचीजिया, ज्यान– कुंडलिया, नीसांणी, झूलणा, गीत, कवित्त, दूहा, छत्तीसी, छिहतरी आद।

वीर रसात्मक प्रबन्ध काव्य रचनावां री सरुआत मंगळाचरण सूं हुवै। इणरै उपरांठ खास देवी देवतावां नैं सुमरण करतां रचना रै महत्त्व नैं थरपीजै। इण रै पछै राज वंसावली रो बखाण करता हुया स्रिस्टी रचेता बरमाजी सूं लेय'र ग्रंथा नायक रै सासकां रा नांव गिणाइजै। नायक रा लड़िजियां घमसाणां, उणरी वीरता, आतंक, भुजबळ, कढकबळ आद रो विगतवार खुलासौ अर नायक री फतैह कै गुमैजी मिरत्यु सागै रचना री संपूर्ति हुवै।

जुद्ध संदरभां में लोक बिस्वासां अर जुद्ध वरणावां मुजब खास रूढ़िया रो बरणावं माध्यकालीन राजस्थानी वीरकाव्य री महताऊ विसेसता है। वीर काव्य अेतियासिक चरितां माथै रचीजिया है। आं रा रचेता कवि संभावनावां माथै बेसी बळ दिरावै। इण वास्तै रचनावां रै कथानक नैं गति अर घुमाव देवण सारू आं नैं बरतीजिया। हाला–झाला रा कुंडलिया, वचनिका राठौड़ रतनसिंह री, सूरज प्रकास आद रचनावां में आं लोक विस्वास, कथानक रूढ़ियां अर अलौकिक घटनावां रा अलेखूं चित्राम जोया जा सकै।

राजस्थानी वीर काव्य में नारी रै वीर अर प्रेरणादायी रूप रो मंडाण मिळै। मां, बहन, जोड़ायत, भौजाई, सासू, देराणी, जैठाणी सगळा ई रूपां में वा वीर जुद्ध नायक नैं आपरै कर्त्तव्यबोध, देस रक्षा खतर प्रेरित करती दीसै। वीर भावां रै दरसाव सारु आं रचनावां में खास प्रतीकां बरतीजिया हैं। अै प्रतीक सिंध, सूर, हाथळ, हाथी, नाग अर भाखर है। उदाहरण सारू माला सांदू री अे औलियां पेस हैं–

जोगण खप्पर मांडीय पळ रत अघाई,

नाला गोळा पूरीया की सोर सजाई।

सोर पलीता गड़ड़ीया हथनाळ हवाई,

धड़ पड़सादै परबतां किर गैण गजाई।

सिर चढीतौ सीसोदियौ सोहियौ सेलारां,

आझूझै अत्रांवली वणीयौ तिणवारां।

मधकाली वीर काव्य में बरतीजिया खास छंद दूहा–सोरठा, कवित्त, कुंडलिया, गाहा, पाधड़ी, साटक, तोटक, नाराच, नीसांणी, भुजंग प्रयात, रसावळा, झूलण, मोतीदाम, डिंगल गीत (वेलियो, सावझड़ौ, अेक अखरौ, अेकम वदणै) आद। अलंकारां में खासतौर सूं वैण सगाईं, अनुप्रास, उपमा, रूपक, अतिसयोक्ति, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, संदेह, विरोधाभास, भ्रांतिमान, द्रिस्टान्त आद बरतीजिया है।

9-4-1-2 Hkxrh dkO; & राजनीतिक उठापटक रै कारण इण वगत रो राजस्थानी ईस्वर भगती कांनी ढूक्यौ। मानखै री इण प्रव्रति नैं उण वगत विगसित भगती आन्दोळण ई बधापौ दिरायौ। राजा–महाराजां आं भगती सम्प्रदायां रै आचारियां नैं संरक्षण दिरायौ। जिण सूं आं री गद्दीया अठै थरपीजी। आं मठां–मिन्दरा रा मठाधीस, सेवक आपरै सम्प्रदाय मुजब भगती रचनावां लिखण लागा। आं में सूं वैस्णव भगती (सगुण अर निरगुण), जैन भगती, सूफी संत काव्य, नाथ भगती मुजब रचनावां खासतौर सूं लिखीजी। मध्यकालीन राजस्थानी रा उल्लेखजोग भगत, संत, जैन जाति, सूफी अर नाथ कवि हैं–

HkDr dfo & मीरां बाई (मीरां पदावली), अग्रदास (श्री राम भजन मंजरी, पदावली आद), नाभादास (भगतमाल), ईसरदास (हरिरस, बाललीला, देवीपाण, रास कैलास आद), सायाजी झूला (नाग–दमण, रुकमणी

हरण), राठौड़ प्रिथिराज (वेलिक्रिसण रुकमणी री, दसम भागवत रा दूहा, गंगा लहरी आद), माधोदास (राम रासो, भासा दसमस्कंध), नरहरिदास (अवतारचरित), सुंदर कुंवरि (नेह निधि, राम रहस्य आद), महाराजा अजीतसिंघ (गज उद्धार), सोढ़ी नाथी (भगवत भावचंद्रायण), म. मानसिंघ (कृष्ण विलास), मंसाराम मंछ (रघुनाथ रूपक गीतां रौ), किसना आढा (रघुवर जस प्रकास), गवरी बाई (फुटकल पद) आद।

lrdfo & दादू (दादू वाणी), रज्जवजी (वाणि, सर्वंगी), गरीबदास (अनभेवाणी), संतदास (वाणी), सुंदरदास (सुंदर विलास, साखी), बाजींदजी (गुण–नीसांणी), जांभोजी (सबद वाणी), चरणदास (भगती सागर), दयाबाईं (दयाबोध, विनय मालिका), सहजोबाई (वाणी), रामचरणदास (वाणी), हरिरामदास (नीसांणी, सखिया), दरियावजी (वाणी), हरिदास (भक्त विरदावली), लालदास (वाणी), मावजी (वाणी) आद।

tSu Hkxr dfo & विनय समुद्र (मिग्रावती चौपई, सील रास, नल दमयंती रास, इलापुत्र रास आद), हीरकळस, (सोळोस्वप्न सजमाय, सम्यकत्व, कौमुदी आद), हेमरतन सूरि (अभयकुमार चौपई, सीलवती कथा, लीलावती कथा आद), कुसललाभ (श्री स्तंभन पारसनाथ स्तवन, गौड़ी पारस नाथ स्तवन, सत्रुंजय यात्रा स्तवन, श्री पूज्य वाहणगीत, जिनपालित जिन रक्षित संधि गाथा, नवकार छंद, जगदम्बा छंद आद), समय सुन्दर (गौतम पृच्छा, सत्रुंजय रास, सीताराम चौपई आद), लब्धोदय (मलय सुंदरी कथा, रिसभ देव स्तवन आद), जिन हर्ष (जिन प्रतिभा हुंडी रास, समेत सिरबर यात्रा स्तवन आद), धरम वर्धन (श्रोणिक चौपई, सैद्धान्तिक विचार स्तवन), लाभवर्धन (लीलावती रास, पाण्डव चरित चौपई आद), अमर विजय (पारसनाथ स्तवन, चरित चौपई आद), अमर विजय (पारसनाथ स्तवन, पूजा बत्तीसी), रायचन्दर (रिसम चरित), जयमल्ल (जय वाणी आद)।

lQh dfo & सेख मोइनुद्दीन चिस्ती, सेख हमीदउद्दीन मौलाना, रजीउद्दीन हसन सगानी आद।

ukFk dfo & म. मानसिंघ (नाथ चरित, जलंधर चरित, सिद्ध गंगा आद), बांकीदास (आयस देवनाथ जी रा दूहा–कवित्त), उदयराम गूंगा (नाथ स्तुति), पीरचंद भण्डारी (अवधूत महिमाष्टक, नाथ स्तुति आद), उत्तमचंद भण्डारी (नाथ चंद्रिका), संतोकीराम (जलंधर नाथ रूपक), सेक्क बग्गी राम (जलंधरजस भूसण), सिवदास (सिधराज सतसई), देवनाथ (जलंधर स्तुति) आद।

मध्यकालीन राजस्थानी भगत अर संतां री रचनावां सूं खुलासौ हुवै क अै प्रबन्ध अर मुक्तक दोई काव्य रूपां में लिखिजी। संत वाणियां जटै सुद्ध मुक्तक काव्य विधा री रचनावां हैं, उठै ई जैन अर जैनेत्तर भगत कवियां री रचनावां प्रबन्ध अर मुक्तक दोई रूपा में मिळै। अै रचनावां वेलि, प्रकास, विलास, फागु, गीत, चरित, रासो, पद, स्तवन, चौढ़ालियौ, ढाल, बाइसमासो, छंद आद सीर्सका सूं लिखीजी है, ज्यान – वेलि क्रिसण रुकमणी री, राम रासो, अवतार चरित, रघुनाथ रूपक गीतां रो नाथ चरित, श्री पूज्य पाहण गीत, स्थूलिभद्र फाग, इलापुत्र रास, थंमण पारस नाथ स्तवन, नवकार छंद आद।

राजस्थानी मध्यकालीन भगती मुजब रचनावां में भगती तत्त्व री ई प्रधानता है, फेर ई प्रसंग मुजब इणा रा नायक चाहै वै राम, क्रिसण, जैन रिसि कै बीजा चरित नायक हुवै– वै वीरोचित सभाव रो परिचै दिरावै। इण रो खास कारण है कवि री राजपूत संस्क्रति (राजस्थानी संस्क्रति)। इणी सांस्क्रतिक प्रभाव पांण वेलि रो नायक क्रिसण पुरुसारथ सागै सिसुपाल सूं जुद्ध करै। नागदमण रो नायक क्रिसण टाबर हुवता ई काली नाग सागै घमसाणा मांडै। इत्तौ ई नीं जैन रचनावां में ई उणां रा नायक प्रसंग मुजब जुद्ध कारण में कोई अबखाई मेहसूस कोनी करै। आं प्रमाणां पांण आं में सान्त रस री प्रधानता हुवता ई वीर, रौद्र, भयानक रसा रा सांतरा मंडाण मिळै।

मध्यकालीन राजस्थानी भगती काव्य रो अभिव्यक्ति पख घणौ सबळ है। आपरै ईस्ट रै प्रति भावाभिव्यक्ति सारु अै कवि भावानुरूप भासा बरती। गेयता उणां री खासियत है। आपरी भगती नैं औजू प्रभावूं बनावण वास्तै साद्रस्य मूलक अलंकारां रो प्रयोग कर्‌यौ। पद, चौपई, दूहा–सोरठा, वेलियो, सावझड़ो, कवित्त–छप्पय आद छंदा में आपरी रचनावां नैं बांध–र उणा री मरमीली गेयता नैं बधापौ दिरायौ।

9-4-1-3 fl.kxkj dk0; & रागात्मक प्रव्रति मिनख रो सास्वत गुण है। इणी भावना पांण अजै लग

विभिन्न भासावां में सिणगारिक काव्य रचनावां लगौलग रो सिरजण हुवतौ रैयौ है। सामन्ती वातावरण अर राजनीतिक अराजकता रै कारण अठा रो कवि सदीव जुद्ध री बात ई सोचतौ हौ, पण मझकाल में डिंगल सैली रै सागै ई पिंगल सैली में ई मोकळौ साहित रो सिरजण हुयौ। पिंगल सैली री मिठास पांण उण में सिणगारिक रचनावां ई रचीजण लागी। पण लोक काव्य धारा में सवतंत्र सिणगारिक रचनावां री बोहोळता रैयी। सागै ई मध्यकालीन जैन साहित्य रै चरित काव्य में पण जैन सैली रै अनुरूप सिणगार रस रो प्रभावू वरणांव मिळैं। आं रचनावां रै असर सूं ई मध्यकालीन राजस्थानी वीर काव्य में प्रसंग मुजब सांतरा वरणांव मंडीजण लागा। ईसवर रै प्रति रागानुरक्ति रै कारण भगती–रचनावां में ई सिणगार रा फूटरा अर ओपता विवरण मिळै। कैवण रो मतळब औ क मध्यकालीन राजस्थानी काव्य में सुतंतर सिणगार री प्रव्रति लोक प्रेमाख्यानां में निरुपित व्ही है। फेर ई इण काल री उल्लेखजोग सिणगारिक रचनावां हैं– माधवानल कामकंदला चौपई, ढोला माखणी चौपाई, स्थूलिभद्र छत्तीसी (कुसललाभ), वेलि क्रिसण रुकमणी रो (राठौड़ प्रिथीराज)। मीराँ पदावली, जैन रचनावां में सिणगार रा उनमुक्त रूप जोया जा सकै। जैन कवि हेमरतन सूरि रै मुजब गोरा बादिल चरित चौपई अेक वीर रस प्रधान रचना है। पण इण रै छंद 110 सूं 124 तक उन्मुकत सिणगार रा दरसाव करावै। अेक उदाहरण पेस है–

बादल महि जिम पदमिणी, गलि तंबोल गिलंति।

निरमल तनि तंबोल ते, देह माझे दीसंति।।

चंदन तरवरि जिम जडी, वीठह नागर वेलि।

तिम ते कामिणि कंतसुं, विलगि रहइ गुणगेलि।।

मध्यकाल में रचीजी सुद्ध सिणगारिक लोक रचनावां हैं– जलाल बूबना, नागजी नागवंती, रतनराणा, बाघोभारमली, मूमल बगड़ावत गाथा, रतना हम्मीर, जलाल–गाहणी री वात आद। प्रिय रै विजोग में व्याकुल नायिका री बेबसी, आसंका अर अभिलासा रो मरमीळौ चित्राम जलाल गाहणी री वात सूं प्रस्तुत है–

आखर पिय रै नाव कै लिखे कलेजे मांहि।

डरती पांणी न पिड, मत ने धोऊइ जाई।।

मध्यकालीन राजस्थानी सिणगारिक काव्य में प्रेम तत्व री बजाय वासना रा चित्राम बेसी रूप सूं मंडिया है, पण आं वरणावां में कठैई कवि आपरी मरजाद नै तोड़ी नी है। वेलि क्रिसण रुकमणी रो लाज भाव सूं भर्‌यौड़ौ अै ओळियां जोवां –

आगलि पित मात रमंति आंगणि,

काम विराम छिपाड़ण काज।

लाजवंती अंगि ओह लाज विधि,

लाज करंति आपई लाज ।।18।।

इण काल में रचित सिणगारिक रचनावां पण प्रबन्ध अर मुक्तक दोई रूपां में लिखीजी। वेलि, रास, रासो, प्रकास, प्रबन्ध, चरित आद नांव सूं रचीजी रचनावां प्रबन्ध हैं, जद क दूहा, छंद, गीत, सोरठा, नीसांणी नावं सूं रचीजी रचनावां मुक्तक काव्य रचनावां है। आं में गेयता री प्रधानता है।

9-4-1-4 uhfr dkO; & वैदिक काल सूं सरू व्ही नीति काव्य री प्रव्रत्ति मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में कींकर सान्त रैय सकती ही? आलोच काल में राजस्थानी नीति काव्य जैन साहित्य, वीर अर भगती काव्य में प्रसंग मुजब रचीजियौ। आं रचनावां में घणी ई जगा नीति मुजब छंद अर प्रसंग जोया जा सकै। आं रचनावां रै अलावा ई सुतंतर रूप सूं नीति–काव्य रो सिरजण हुयौ। मध्यकालीन राजस्थानी नीति काव्य मुक्तक रूप में कुंडलिया, दूहा–सोरठा, छप्पय, चौपई छंदां में रचीजियौ। इण काल री खास–खास नीति परक रचनावां हैं– ईलै

चावड़ै रा दूहा (लाखणसी), किसनिया रा दूहा (किसनदास), दादुवे रा सोरठा (रासाभाई), सोरठा (जसराज), राजिया रा सोरठा (किरपाराम खिडिया), नीति मंजरी, धवळ पचीसी (बांकीदास), संबोध अस्टोत्तरी (नारायण), सिच्छासार (नाथूराम), मोतिया रा सोरठा, (रायसिंघ सांदू), ओठिया रा सोरठा, भैरवाबनी (म. बलवंतसिंघ राठौड़) आद।

वेलि क्रिसण रुकमणी री, अगड़दत्त रास, माधवानल कामकन्दला चौपई, ढोला मारवणी चौपई, (कुसललाभ), गोराबादिल चरित चौपई (हेमरतन), आद रचनावां में ई जथा प्रसंग नीति–मुजब प्रसंग उकेरीजिया है।

9-4-2 dkO; /kkjkok

9-4-2-1 lxq.k ¼Hkxrh ekjxh½ dkO; /kkjk & मध्यकाल में राजस्थानी भगती काव्य री प्रव्रति घणी व्यापक रैयी। इण काल में राजस्थानी समाज में वैस्णव भगती री सगुण काव्यधारा क्रिसण, राम सक्ति री उपासना रूप में प्रचलित ही। राम अर क्रिसण परयाय रूप मानीजता हा। इण वास्तै ई राम भगती मुजब रचनावां में क्रिसण रो वरणांव अर क्रिसणी भगती में राम सम्बोधण रा घणाई उल्लेख मिलै। सायाजी झूला, ईसरदास, मीरांबाई, प्रिथिराज राठौड़, म. अजीतसिंह नाथी सोढ़ी, वृंद, म. मानसिंघ, बांकीदास आद सगुण भगती री क्रिसण काव्य धारा रा महताऊ कवि है। नेमिनाथ राजुलमती रै रूप में जैन कवि ई क्रिसण भगती री रचनावां रची।

सगुण काव्य धारा में राम भगती मुजब साहित्य ई इधकाई सागै रचीजियौ। जोगीदास (हरिपिंगल) माधोदास दधिवाड़िया (राम रासो), प्रिथिराज राठौड़ (दसरथ रावउत), मंसाराम मंछ (रघुनाथ रूपक गीतां रौ), किसना आढ़ा (रघुवरजस प्रकास), रघुनाथ (रुध रास) आद। आं कवियां रै अलावा जैन कवि कुसललाभ (पिंगल सिरोमणि), धरम विजय (रामचंद्राख्यान), समयसुन्दर (सीताराम चौपई) ई रामकाव्य री श्री बधोतरी करी।

मध्यकाल री सगुण भगती काव्य में सक्ति उपासना रो ई लूंठौ महतब रैयौ है। राजस्थान री चारण जात में आवड़जी, करणीजी, तेमड़ाजी आद आठ लोक दवियां व्ही हैं ज्यांरी सेवा–पूजा चारणां रै सागै ई रजपूतां में ई प्रचलित रैयी। आं देवियां री चिरजावां (स्तुतियां) राजस्थानी भगती काव्य री अनुपम देन है। इण दीठ सूं ईसरदास (देवियाण), पीरदान (गुण हिंगलाज रासो), म. अजीत सिंघ (दुरगा पाठ भासा), किरपाराम (चाळ कनेची माता), रामदान (करणी रुपक) आद कवियां री रचनावां महताऊ है।

जैन भगती मूलतः सगुण भगती ई है। वै आपरै तीर्थंकरां री पटराणियां री स्तुति देवी (सक्ति) रूप में ई करी है। आं में सूं खासतौर सूं तेईसवां तीर्थंकर पारसनाथ री पटराणी पद्मावली बाबत घणी ई स्तुतियां लिखिजी। इण रै अलावा वैष्णव सक्ति (देवी) री ई स्तुति अै जैन कवि मांडी है। आं में सूं उल्लेखजोग रचनावां हैं– सारदा छंद (विजय कुसल), विधि प्रभा (जिन प्रभ सूरि), रोहिणेय रास (विनयसमुद्र), महामण्ई दुरगा सातसी, जगदंबा छंक कै भवानी छंद (कुसललाभ), अंबिका कथा (वादिचंद्र), माताजी री वचनिका (जयचंद्र), पद्मावती छंद (हेम), भगवती छंद (संघ विजय) कालिका जी रा दूहा (लखराज), चौथ माताजी रो छंद (कान्ह) आद।

9-4-2-2 fujxq.k ¼lrekjxh½ dkO; /kkjk & मध्यकाल में विकसित भगती सम्प्रदायां री दाईं राजस्थान में ई लोक देई–देवतावां रै प्रभाव सूं निरगुण भगती सम्प्रदायां रो विकास हुयौ। राजा–महाराजावां रै संरक्षण सूं आं सम्प्रदायां नैं औजूं द्रिढ़ता मिळी। आथूणै राजस्थान में जठै बिस्नोई, जसनाथी, रामस्नेही, अलखिया, नाथ, सूफी सम्प्रदायां रो असर रैयौ, उठै इस पूरबी–उत्तरी राजस्थान में दादू, लालदायी, चरणदासी, सम्प्रदाय अर उणां मुजब साहित्य रो विगसाव हुयौ।

आं सम्प्रदायां सूं जुड़्यौडा सन्त कवियां माथै नाथ अर कबीर री भगती पद्धति रो प्रभाव लखीजै। जसनाथी सम्प्रदाय नैं जै म्हां नाथ–पंथ रो परयाय ई कैवा तो अणूथी बात कोनी होसी। इणी भांत दादूपंथ कबीर पंथ रो पूरौ असर लखावै। राजस्थानी संतवाणी में रामदेवजी, मल्लीनाथजी, रूपादे, धारू मेघवाल जैड़ा लोक संता री री मौखिक वाणियां रो लूंठौ जोगदान रैयौ। आं सगळा सूं प्रभावित हुय'र अै संत कवि आपरी इस्ट री भगती रा गुणगान साखियां, पदां, रमेनिया, अरिल्ल (अडिल्ल), छंद, छप्पय, हंसाळ, हरजस, चौपाई, दूहा, कवित्त आद

बंधा (छंदां) में करिया। साखियां में अै 'अंग' लिखिया, ज्यांन– जीव रो अंग, सुमिरन रो अंग, विरह रो अंग आद।

आं संतां री रचनावां में मध्यकालीन समाज री विसंगतियां रो सांगोपांग खुलासौ हुयौ है। जातपांत, ऊंचनीच रो विरोध, धार्मिक करमकांडां, बाह्याउभ्यरां, अन्धबिस्वासां री भर्तसना करीजी है। संत दरियाजी माला फेरन अर तिलक लगावण नैं अफण्ड मानता हुया कैवै –

कंठी माला काठ की, तिलक गार का होय।

जन दरिया निज नांव बिन, पार न पहुंचे कोय।।

9-4-2-3 pfjr dk0; /kkjk & राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल में रासो अर नाम सूं चरित काव्य लिखण री ई लूंठी परम्परा लखीजै। वीर रसात्म अेतियासिक रचनावां इण काल में रासो काव्य धारा रूप में विकसित हुई अर जैन कवि आपरै मानीतै रिसी, गुरु, तीर्थंकर अथवा सलाकां पुरखां रै बाबत ज्यां चरित रचनावां रो सिरजण कर्यौ वे रास कहीजी। अै रचनावां भगती री दीठ सूं सिरै हैं। कुछ उल्लेखजोग जैन अर जैनेत्तर चरित काव्य रचनावां है–

जैन तर चरित काव– सगतसिंघ रासो (गिरधर आसियौ), खुमाण रासो (दलपति विज), हाला झाला रा कुंडलिया (ईसरदास), रतन रासो (कुंभकरण) आद।

जैन चरित काव्य – अगड़दत्त रास, तेजसार रास (कुसललाभ), गोराबादिल चरित (हेमरतन सूरि), मयण रेहा रास (मति सेखर), गौतम पृच्छा रास, सत्रुंजय रास (समय–सुन्दर), सम्यकत्व कौमुदी रास (हीरकलस), जिन प्रतिमा हुंडी रास (जिन हरस), श्रेणिक चौपई रास (धरम वरधन) आद।

चरित काव्य धारा खास तौर सूं प्रबन्ध रूप में ई रचीजी। आं रचनावां में उण वगत रा सामाजिक, सांस्क्रतिक अर अेतियासिक घटनावां रा सांतरा चितरांम मिलै।

9-4-2-4 ykd dk0; /kkjk & लोक काव्य रै माध्यम सूं ई सिस्ट साहित्य विगसाव करै। हिन्दी–साहित्य में इणी काव्यधारा सूं सूफी अर सूफीत्तर कवि कथावां नैं लेय'र लूंठी प्रेमाख्यान रचनावां रो सिरजण कर्यौ। राजस्थान तौ प्रेमकथावां री जळम भोम है। अतः अठै लोकाश्रित कथावां नैं अंगैज'र प्रेमाख्यानां रो सिरजण सहज अर सुभाविक है। अठै प्रेमाख्यान सूं मतळब प्रेम प्रसंगा नैं लेय'र लोक प्रसिद्ध नायक–नायिका री कथा माथै सिरजित रचना सूं है।

मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में प्रेमाख्यानक काव्य–रचनावां री लूंठी परम्परा रैयी इण काल में लोक प्रचलित, जैन अर जैनेत्तर कविया द्वारा रचित घणा ई उल्लेखजोग प्रेमाख्यान जोया जा सकै, ज्यान – माधवानल काम कंदला प्रबंध (कायस्थ कवि गणपति), माधवानल काम कंदला चौपई, ढोला मारवणी चौपई (कुसललाभ), स्थूलिभद्र कोसा प्रेम विलास (जसवंत सूरि), कुतुब सतक, नलदमवंती रास (महीराज), वेलि क्रिसण रुकमणी री (प्रिथिराज), सिंघलसुत चौपई (समय–सुन्दर), लीलावती रास (हेमरतन), मदन सतद (दाम), चंद्रलेहा चौपई (मति कुसल), बीजा–सोरठ, लाखा–फुलाणी, जेठवा–ऊजळी, निहाल दे सुलतान रा पवाड़ा आद।

अै प्रेमाख्यान लोक कथावां, पौराणिक आख्यानां माथै आधारित हैं। जैन अर जैनेत्तर कवि पण अै प्रेमाख्यान लिख्या। रूप विधा री दीठ सूं अै प्रेमाख्यानक रचनावां प्रबन्धात्मक हैं। आं काव्य रचनावां रै नायक–नायिकावां रो प्रेम साव चिस्च्छल कपटहीण अर साचौ हुवै। इण वास्तै ई विरहावस्था में वे अेक–दूजै सारू मरण नैं त्यार हुयै जावै। उण वगत कोई जोगी के सिव पारवती आय'र उणा री जान बचावै। इण भांत प्रेमारचानक रचनावां में कथानक रूढ़ियां रो भरपूर प्रयोग मिळै। अलौकिक पात्र–विद्याधर–विघाधरियां, कांतरी, सिकोतरियां जैन प्रेमाख्यानां रा खास पात्र हुवै।

9-4-2-5 jhfr foopd dk0; /kkjk & सामन्ती वातावरण रै पांण मध्यकाल में साहित्य अर कलावां नैं संरक्षण मिळयौ। संस्क्रत री लक्षण ग्रंथ परम्परा री दाई प्राक्रत –अपभ्रंस में ई लक्षण ग्रंथ कै रीति विवेचक

रचनावां लिखिजण लागी। प्राक्रत पैंगलम आद ग्रंथ इण रा प्रमाण है। इणी परम्परा में मध्यकाल में रीति विवेचक काव्य रचनावां री सरुआत व्ही। पण अठै आ परम्परा संस्क्रत, ब्रज कै हिन्दी री दाई पाण्डित्य परदरसण सारु कोनी ही। अठै तौ आ अेक अनायास घटना ही, जिकी उण वगत री सामन्ती परम्परा रो परिणाम हौ। इण काव्य धारा री उल्लेख जो रचनावां है– नागराज पिंगळ (मोहन), अनूप रसाल (अनूपसिंघ), पिंगल सिरोमणि (कुसल लाभ), हरिपिंगल प्रबंध (जोगीदास), रसरूप (रूपजी), भाव पंचासिका (कविवृंद), रूपदीप पिंगल (जयकिसन भोजक), हम्मीर नाम माला (हम्मीर रतनू), अलंकार रत्नाकर (दलपत बसीधर), लखपत पिंगल (हम्मीर रतनू), अलंकार आसय (उत्तमचंद भण्डारी), रघुनाथ रूपक गीतां रो (मंसाराम मंछ), छंद विभूसण सटीक (उदयचंद भण्डारी), रणपिंगल (सं. दीवान रणछोड़), पांडव जस चंद्रिका (सरूपदास), रघुवर जस प्रकास (किसना आढ़ा), साहित्यसार (उदयचंद भंडारी), कवि मत्त मंडण (बांकीदास), कवि कुळबोध (उदयराम गूंगा), डिंगलकोस (मुरारीदान) आद।

मध्यकालीन रीति विवेचक काव्य री विसैवस्तु, छंद, डिंगल गीत, अलंकार अर नामामालावां, काव्यदोस विवेचन रैया। आं में सबसूं ज्यादा रचनावां छंद विवेचक लिखीजी। इण विसै वस्तु रै विवेचन सारु आं रा रचेता सिव–पारवती अर रामकथा नैं आधार बणायौं आं रीति विवेचक काव्य रचनावां सूं खुलासौ हुवै क राजस्थानी रीति विवेचक भलै ई संस्क्रत लक्षण ग्रंथां रै रचेतावां ज्यांन आचारिय नी हा, पण वां नैं काव्यत्व री सबळ ओळखांण ही।

9-4-3 dk0; :i & मध्यकालीन राजस्थानी काव्य री दो रूपां रैयी – प्रबन्ध अर मुक्तक। प्रबन्ध काव्य रूप में महाकाव्य अर खण्डकाव्य दोई रूपां रो सिरजण हुयौ। अै रचनावां वीर, भगती, सिणगार सूं सम्बन्धित हैं। प्रेमाख्यान काव्य प्रायः महाकाव्य वरग री रचनावा है। इण भांत जैन अर जैनेत्तर दोई वरग रा कवि प्रबन्ध काव्य अर जैनेत्तर दोई वरग रा कवि प्रबन्ध काव्य रचनावां रो सिरजण कर्‌यौ मध्यकालीन राजस्थानी काव्य री कुछेक उल्लेखजोग प्रबन्ध रचनावां हैं– महाकाव्य – गुण रूपक (केसवदास), माधवानल – कामकंदला चौपई, अगड़दत्त रास, भीमसेन हंसराज चौपई (कुसललाभ), रामरासो (माधोदास दधिवाड़िया), राणा रासो (दयाल दास), सगत रासो (गिरधर आसिया), खुम्माण रासो (दलतप विजय), जयचंद रासो (कुंभकरण), राजरूपक (वीरभांण), सूरज प्रकास (करणीदान), भीम विलास (किसना आढ़ा) लीलावती रास (लाभवर्धन), रतनपाल–रतनावती रास (मोहन विजय)।

9-4-3-1 [k.M dk0; & नागदमण (सायाजी झूला), हाला–झूला री कुंडलिया (ईसरदास), वेलिक्रिसण रुकमणी री (प्रिथिराज राठौड़), गोरा बादिल चरित चौपई (हेमरतन सूरि), स्थूलिभद्र छत्तीसी, जिन पालित जिन रक्षित संधि गाथा (कुसललाभ), नेमिनाथरास (पुण्य रतन), नरसी मेहता रो मायरो (रतनो खाती), राव जैतसी रो छंद (वीठो सूजा), महादेव पारवती री वेल (किसना आढ़ा), नाथ चरित (म. मानसिंघ) आद।

9-4-3-2 eDrd dk0; & राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल रै मुक्तक काव्य री इधकाई रैयी। अै रचनावां सिणगार, भगती, वीरता, नीति आद सूं सम्बन्धित है। ढाल, गीत, हीयाळी, कळस, सिलोका, स्तवन रूपां में जैन कवि ई मोकली मुक्तक काव्य रचनावां रो सिरजण कर्‌यौ। मध्यकाल री महताऊ मुक्तक काव्य रचनावां हैं–

मीरां पदावली, पंच सहेली रा दूहा (छीहल), श्री पूज्य वाहण गीत (कुसललाभ), हरिरस (ईसरदास), दादूवाणी, अणभै वाणी (संतदास), नीति मंजरी, धवल पचीसी, कुकवि बत्तीसी (बांकीदास), नाथ पदावली (म. मानसिंघ), राजिया रा दूहा (किरपाराम) आद।

9-5 bdkbZ jk lkj

सैवट मध्यकाल अेक परिभासिक सबद है। राजस्थानी साहित्य रै संदर्भ में वि.सं. 1550 सूं 1900 लग इणरौ समै मान्यौ जा सकै। कुछ की विद्वान इण काल खण्ड रा दोय हिस्सा – पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) अर उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) कर'र इण रो अध्ययन कर्‌यौं। इण काल में ई राजनीतिक अराजकता रैयी, जिणसूं मिनख

सान्ती सारू ईस्वर भगती कांनी ढूक्यौ। देस में प्रचलित भगती आन्दोलन ई इण में सैयोग कर्‌यौ। मुगलां रै असर सूं सामाजिक अराजकता नैं ई बधापौ मिळयौ पण साहित्य अर कलावां नैं संरक्षण मिळण सूं विविध प्रव्रतियां वाळै साहित्य रो सिरजण हुयौं साहित्यिक विकास री दीठ सूं इण काल नैं 'सोने रो जुग' कैयौ जा सकै। वीर सिणगार, भगती, नीति, मुजब साहित्य री सांवठी परम्परा इण जुग में विकसित व्ही। सगुण, निरगुण, जैन भगती मुजब रचनावां, रीति विवेचक काव्य धारांवा में साहित्य रचीजियौ।

9-6 vH;kl lk: loky

1. मध्यकाल रै अरथ रो खुलासौ करता हुया राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल रो समै निरधारित करौ।
2. राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल रै नांव करण माथै आपरा विचार प्रस्तुत करता हुया इण काल री काव्य धारावां रो परिचै दिरावौ।
3. मध्यकालीन राजस्थानी काव्य रै खास–खास रचनावां रो उल्लेख करता हुया 'वेलि क्रिसण रुकमणी' रो परिचै दिरावौ।
4. मध्यकालीन राजस्थानी काव्य री प्रमुख प्रव्रतियां रो विरोळ करौ।
5. मध्यकालीन राजस्थानी काव्य सिरजण री हालात नैं समझावौ।
6. मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य री जैन काव्यधारा (चरित काव्य परम्परा) री विसेसतावां बतळावौ।
7. मध्यकालीन राजस्थानी री काव्य विधावां रो परिचै दिरावता उणा री अेक–अेक रचना माथै टीप लिखौ।
8. मध्यकालीन राजस्थानी रै सन्त काव्य री विसेसतावां नैं समझावौ।
9. प्रेमाख्यान रै अरथ रो खुलासौ करता हुया मध्यकालीन राजस्थानी प्रेमाख्यानां री विसेसतावां रो खुलासौ करौ।

9-7 lanHk&xzFkk jh ikuMh

1. सं. धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी–साहित्य कोश, भाग 1
2. सं. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी–साहित्य का इतिहास
3. डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया – राजस्थानी साहित्य का इतिहास
4. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य
5. प्रो. कल्याणसिंह शेखावत –राजस्थानी भाषा एवं साहित्य
6. सौभाग्यसिंह शेखावत– राजस्थानी साहित्य संपदा
7. सं. डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा आद– साहित्यानुशीलन – त्रेमासिक शोध पत्रिका (अप्रेल–जुलाई 1977)–प्रका. हिन्दी–विभाग, रोहतक विश्वविद्यालय, रोहतक
8. सं. नारायणसिंह भाटी – परम्परा (राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल विशेषांक)
9. सं. डॉ. मनोहर शर्मा – जागती जोत (समीक्षा–अंक), भाग 3, अंक 3, अक्टू.–दिस. 1975
10. डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव – डिंगल साहित्य (पद्य)

bdkbl 10

jktLFkkuh lkfgR; jk vk/kfud dky

bdkbl jk eMk.k

10.1. उद्देस्य

10.2. प्रस्तावना

10.3. जुग रो दरसाव

10.3.1 राजनैतिक

10.3.2 सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक

10.4. काव्य – आधुनिक काल रो पद्य साहित्य

10.4.1 प्रमुख प्रवृतियां

10.4.2 काव्यधारावां

10.4.3 प्रमुख रचनावा अर रचनाकार

10.5 गद्य – आधुनिक काल रो गद्य साहित्य

10.5.1 गद्य विधावां

10.5.2 सैलियां

10.5.3 प्रमुख रचनावां अर रचनाकार

10.6 इकाई सार

10.7 अभ्यास रा सवाल

10.8 संदर्भ ग्रंथ

10-1 mnnL;

इण इकाई लेखन रो उद्देस्य है–

- आधुनिक राजस्थानी भासा साहित्य री जाणकारी करावणी।
- विद्यार्थियां नै आधुनिक काल री समय सीमा अर नामकरण रो परिचय देवणौ।
- आधुनिक काल खण्ड रा वातावरण बावत बतावणो।
- आधुनिक जुग री काव्य धारावां, काव्य सैलियां अर गद्य री विधावां री जाणकारी करावणौ।
- इण समै रा प्रमुख रचनाकार अर रचनावां री विगत मांडणी।

10-2 iLrkouk

प्रस्तावना में ई. सन 1850 सूं सरू हुया राजस्थानी साहित्य रा आधुनिक काल री मूळ चेतना

बावत विचार करणो है। साहित्य सिरजण जुग सापेक्ष हुया करै। इण खातर आधुनिक काल री जन चेतना अर उणसूं आया बदळाव नै समझणो जरूरी है। इण बदळाव रो असर अठां रा समाज, राजनीति धरम अर सांस्कृतिक सोच लग पूगै। बो कुणसो भाव या विचार हो जिणसूं ओ बदळाव आयौ– इणनै समझणो जरूरी है। आजादी री चेतना अर उण खातर हुया जन आंदोलन सन् 1850 सूं 1947 तक चालती रिया। गुलामी सूं खराब कोई चीज कोनी अर आजादी सूं आछी कोई बात कोनी। इणरै साथै देसभगती, स्वाभिमान अर गौरव रा भाव जुड़यौड़ा है जको आधुनिक राजस्थानी साहित्य री विसय सामग्री बणी।

सन् 1947 रै पछै अजै लग 62 बरस बीतग्या। आं बरसां भी घटी घटनावां राजस्थानी साहित्य में सबद रूप लियौ। इणां री निरख अर परख इण इकाई की कथावस्तु बणी है। इण सगळा साहित्य सूं ही राजस्थानी भासा अर साहित्य रा आधुनिक काल रो नामकरण हुयौ है!

10-3 tx jk njlko

डॉ. कल्याणसिंह शेखावत ठीक ही लिख्यौ है–

''राजस्थानी भाषा और उसके प्राचीन, विविध तथा विशाल साहित्य भंडार के अध्ययन का जो आधार विभिन्न विद्वानों ने प्रस्तुत किया है, उसकी अन्तिम कड़ी आधुनिक राजस्थानी साहित्य है। इस आधुनिक युग का चिंतन प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की मूल चेतना से जुड़ा हुआ है। राजस्थानी साहित्य के इतिहास लेखकों ने इस युग का नामकरण 'आधुनिक युग' करते समय इस तथ्य को अवश्य दृष्टि में रखा है कि वर्तमान पुरातन से किस रूप में भिन्न है। अतीत के वे कौन से तत्व हैं, जो आधुनिक युग की सीमा रेखा को पार नहीं कर सकते। युंगीन चेतना ही इसका मूलाधार हो सकता है। सन् 1850 से इस आधुनिक युग का शुभारम्भ माना जाता है, जो अद्यावधि विद्यमान है। सन् 1850 से लेकर 1875 तक का समय भारतीय इतिहास का वह संधिकाल है, जहां राष्ट्रीय भावों का उदय होता है और साम्राज्यवादियों के विरूद्ध नवबोध का भव जागृत होता है।

इसी तरह साहित्य के क्षेत्र में नये भावबोध और नवीन विधाओं एवं शिल्पगत नूतन प्रयोग प्रारम्भ होते हैं। राजस्थानी भाषा एवं नवीन शक्ति और स्फूर्ति लेकर नये–नये प्रयोगों के साथ, इस युग में, प्रगट होती है। यदि प्राचीन और आधुनिक की तुलना करें तो लगेगा कि देशी रियासतों में बंटे हुए राजस्थानी के वातावरण लिखा गया प्राचीन साहित्य या जहां राष्ट्रीय स्तर पर उदय होने वाली भाव चेतना का यहां के रचनाकारों और उनकी रचनाओं पर पड़ने लगा था।

आधुनिक युग की सबसे बड़ी विशेषता यह मानी जाती है कि इसमें गद्य का सर्वाधिक विकास और नई गद्य विधाओं का जन्म, इसी युग में हुआ। पाश्चात्य जगत के सम्पर्क से वैचारिक परिवर्तन ही नहीं हुआ बल्कि साहित्य लेखन के स्तर पर भी नयापन, इस युग की रचनाओं में स्पष्ट दिखने लगा।''

इण भांत आधुनिक जुग रा दरसाव नै सार रूप में समझयौ जा सकै है पण विस्तार सूं उण जुग रा वातावरण नै राजनीति, समाज, धरम, संस्कृति अर पढाई–लिखाई री वां दिनां री विगत नै सामी राख'र ही समझ्यौ जा सके है।

10-3-1 jktufrd okrkoj.k &

सन् 1850 सूं 1947 लग सगळो भारत अंग्रेजां रो गुलाम हो। राजस्थान में भी 22 रजवाड़ा हा जठै राजसाही अर सामंती व्यवस्था ही। रियासतां रा राजा–महाराजा कैवण नै तो खुद री रियासत रा मालिक हा पण असली सत्ता अंग्रेजां रै हाथ में ही। रियासत रा राजकाज में न जनता री बीधी भागीदारी ही अर न हीं प्रभाव हो। अंग्रेज सत्ता मद में पागल हा वे अन्याय, अर जुल्म करता

पण डर रै कारण कोई विरोध नहीं करतो।

सन् 1850 में भारतीय सेना में आजादी री अलख जागी, जिणनै अंग्रेज 'म्यूयूंटिनी' (छोटो सो विद्रोह) रो नाम दियौ, पण बा स्वतंत्रता संग्राम री पैली चिणगारी ही जिणसूं सन् 1947 में अंग्रेजां नै भारत छोडणो पड़ियौ। इणरी बानगी देखीजै–

''राजनैतिक घटना चक्र की दृष्टि से देशभक्त क्रान्तिकारियों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर जो प्रयत्न किये उन्हें हिंसक आंदोलन का नाम दिया गया, जहां गोली का जवाब गोली से तथा शक्ति के विरूद्ध संघर्ष का संकल्प था। जो परम्परा दिल्ली के अन्तिम बादशाह बहादुरशाह जफर, तात्या टोपे, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई जैसे क्रान्तिकारियों ने प्रारम्भ की उसी को आदर्श मानकर चंद्रशेखर 'आजाद', रामप्रसाद 'बिस्मिल', भगतसिंह, जोरावर सिंह, केसरीसिंह बारहठ जैसे क्रान्ति कारी राष्ट्रभक्तों ने उसे आगे बढ़ाया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने तो कहा था। 'आप मुझे खून दीजिए, मैं आपको आजादी दूंगा।' इन क्रांतिकारी देशभक्तों का समय सन् 1920 तक माना जाता है क्योंकि सन् 1921 में भारतीय राजनीति में अहिंसा, असहयोग, सत्याग्रह, आमरण अनशन के जन्मदाता मोहनदास कर्मचद गांधी राजनीति में सक्रिय हो चुके थे और उन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध अपने संघर्ष को अहिंसा के अमोघ अस्त्र से प्रारम्भ किया। गांधी सत्य और अहिंसा तथा नैतिकता से अंग्रेजों का मानस बदलकर भारत को स्वतंत्र कराना चाहते थे। वे कहते थे– ''हम पवित्र साधना से स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे इसे खून से अपवित्र नहीं होने देंगे।''

इण भांत आधुनिक काल रो एक चरण सन् 1947 नै पूरो हुयौ अर देस नै आजादी मिली। राजस्थानी साहित्यकार खुद री कलम सूं देस भगती अर आजादी रा भावां भरिया साहित्य री सिरजणा करी जिणरी बानगी देखीजै।

vk;k bxjst eyd j Åij] vkgl yh/kk [kp mjkA
/kf.k;k eju nh/kh] /kjrh] /kf.k;k mHkk] xb /kjkA –बाँकीदास आसिया

bGk u n.kh vki.kh] gkyfj;k gyjk;A
ir fl[kko iky.k] ej.k c<kb ek;AA – सूरजमल मीसण

ldfj; lkekj jk] xkGh gnk ckyA
feUrt lkpk eydjk] fjiok myVh jhrAA – संकरदान सामोर

ix ix HkE;k igkM] /kjk NkM jk[;k /kjeA
egkjk.kk j eokM] fgjn cfl;k fgn jAA & केसरीसिंह बारहठ

10-2 t|x jk nj lko ¼nt k lu 1947 l vt rkb½

15 अगस्त 1947 नै भारत आजाद हूयग्यौ। राजकाज जनता रा प्रतिनिधि संभाळ लियौ। सब जागां हरख उमाव, भाईचारै अर भावी भारत रा उजळा सपना हा। राजतंत्र री जागां जनतंत्र आयौ। भारत सर्व प्रभु सता सम्पन्न देस बण्यौ। आजाद भारत रो संविधान बण्यौ अर लागू हुयौ। नागरिक रा मोलिक अधिकार अर कर्तव्य तय हुया। स्वतंत्र भारत रो राष्ट्रपति प्रधानमंत्री, मंत्रिमंडळ, संसद अर विधान सभावां रै साथै विधान परिसदां बणी। संविधान रै मुजब सन् 1952 में पेलो आम चुणाव हुयौ। भारत री विदेस नीति बणी, पंचसील रा नारा लाग्या। जात पांत, धरम, लिंग, रंग अर भौगोलिक खेतर रो भेद मिट्ण लाग्यौ। समानता सद्‌भाव, मैत्री रा भाव अर विचार चिंतन रा आधार बण्या।

jktLFkkuh lkfgR; & आजादी रो पेलो पड़ाव सन् 1947 सूं 1962 लग रो है। दूजी भारतीय भासावां री तरै राजस्थानी में भी इण रूपाळै भारत रा गीत गाईजिया, गाथावां लिखीजी, नाटकां रा रचाव हुया। काव्य री जागां गद्य रो विकसाव इधको हुयौ। पद्य अर गद्य री नुंवी विधावां रो जलम हुयौ। भाव री जागां विचार प्रधान सिरजण हूवण लाग्यौ। भाव, भासा अर सैली रा नया तेवर साफ

झलकण लाग्या। गद्य में उपन्यास, कहाणी, निबंध, नाटक, एकांकी, रिपोर्ताज, डायरी, रूपक, संस्मरण, जैड़ी विधावां में घणो सिरजण हुयौ।

आधुनिक राजस्थानी काव्य, महाकाव्य खण्ड काव्य, प्रबंध काव्य, चम्पू काव्य री पुराणी लीक छोड़ बंधन मुगत काव्य रा राजमारग नै अपणावण लाग्यौ। छंद अर अलंकार रा बंधन ढीला पड़ण लाग्या। छंद बिना अर अलंकार री उळझाड़ सूं परै नई कविता रो उदय हुयौ। फैर 'अकविता', गकवितां अर समकालीन कविता दोर आयौ।

अर छायावाद प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, हालावाद, प्रकृतिवाद घणो लारै छूटग्या।

jktLFkkuh jk izeq[k jpukdkj %

इण तरै सन् 1947 सूं लैय'र 1962 ताई देस में सुख–अमन अर चैन रियौ। 'पंचशील' रो आधार सामी राख पड़ोसी देसां सूं मैत्रीभाव रा सम्बंध बण्या। हिंदी चीनी भाई भाई रा नारा खूब लाग्या पण 1962 में चीन ही आपणै देस पर हमलो कर भारत रै पीठ में छरो घाल दियौ। मैत्रीभाव, दुसमणी में बदहग्या। भारत रै पैला प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू नै घणो सदमो लाग्यौ अर इण कारण ही उणां रो सुरगवास हुयौ। हजारूं सैनिक अर अधिकारी एक र फैर मायड़ भोम खातर अमोला प्राण अरपण कीना। अमन, चैन अर भाई चारा रा सुर बदलगया अर जुद्ध रो वातावरण चारूं कानी देखण लाग्यौ। चीनी हमला रै पछै पड़ोसी पाकिस्तान दो हमला करिया। आं हालात रै कारण राजस्थानी साहित्य भी रणभेरी बजाई अर उणरी विसय वस्तु भाव अर भासा बदळी। इणरै पछै आंतकवाद री विनास लीला भारत देखी अर अजै झेलै है।

आं सब राजनैतिक घटनावां रै घटण सूं राजस्थानी साहित्य में सिरजण रो रूप बदळग्यौ। एक फैर देस रक्षा रो भाव साहित्यकारां में जाग्यौ। वीरता, देस भगती अर संस्कृति गौरव री गाथावां रचिजण लागी।

izeq[k lkfgR;dkj & इण जुग रा प्रमुख रचनाकारां में कवि राव मोहनसिंह, हींगळाजदान कविया, उदयराज उज्वल, नाथूदान 'महियारिया', गणेसलाल व्यास, चंद्रसिंह, कन्हैयालाल सेठिया, रेवतदान चारण, सत्यप्रकाश जोसी, नारायणसिंह भाटी, मेघराज मुकुल, कांह महर्षि, रघुराज सिंह हाडा, गजानन वर्मा, लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, अन्नाराम सुदामा, श्रीमाल नथमल जोशी, बैजनाथ पंवार, करणीदान बारहठ, डॉ. मनोहर शर्मा, उदयवीर शर्मा, अमरचंद नाहटा, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, नृसिंह राजपुरोहित, मूलचद गणेश, ब्रजनारायण पुरोहित, बुद्धि प्रकाश पारीक, कलयाणसिंह राजावत, डॉ. गोरधनसिंह शेखावत, सौभाग्यसिंह शेखावत, डॉ. कल्याणसिंह शेखावत, श्री कृष्ण गोपाल, रावत सारस्वत, प्रेमजी प्रेम, शिवराज छंगाणी, ब्रजनारायण पुरोहित, गणपतिचंद्र भंडारी, दीनदयाल ओझा, रामनाथ व्यास 'परिकर' नागराज शर्मा आदि अनेक।

rhtk iMko & 1972 सूं अजैताई रो है जद देस में लोकतंत्र मजबूत हुयौ, उधोगधंधा लाग्या, रोजगार रा ओसर सामी आया। इण जुग तक राजनीति री दीठ सूं भारत अेक ताकत मानीजण लाग्यौ।

इण जुग में 'नकस्लवाद' अर 'आतंकवाद' समस्या बण आगै बढण लागा। नारी संताप, बेजगारी, अकाळ अर संस्कृति पर हमला विकास में बाधक वणण लागा।

इण जुग में महिला अर युवा रचनाकारां रो साहित्य नई सोच, सैली, विसयवस्तु अर रचना कौसळ रै साथै लिखीजण लगायौ। नई पीढी मायड़भोम नै लेखन रो जरियौ बणा'र महताऊ पोथ्यां रची।

10-3-2 इणमें सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक अर साहित्यिक वातावरण में जूनो चितन, बंधन अर लीक नै छोड बदळाव निगै आवै। जात–पांत रा बंधन ढीला पड़िया, ब्याव–सादी रा तौर–तरीका में बदळाव आयौ। सजातीय ब्याव री जागां अन्तरजात ब्याव घणा हूवणा लागा। पड़दा री रीत खतम सी हूवण लागी। मोसर बंद हूयग्या। सती प्रथा रही कोनी। नारी चेतना जागी। पढ़ाई लिखाई रो वातावरण

बण्यौ। नारी सिक्षा बढ़ी।

धर्म रा अंधविस्वास, पाखण्ड, नर अर पसुबलि कानूनी अपराध बणग्या। धर्म आस्था रो मान बढण लाग्यौ। धर्म सेवा आम जन तक पूगी। धर्म री संकळाई कम हुई पण धार्मिक कट्टरता विनास रो कारण बणी।

सांस्कृतिक वैभव जन–जन री थाती बण्यौ। संस्कृति रा उदार तत्व मानवी जीवन रा आधार बणण लाग्या हालांकै संस्कृति रो भूंडौ दरसाव भी हूवण लागो। मेळां–खेळां, तीज–त्यूंहारां पर्वा कानी लोक रो झुकाव बढयौ। राजस्थानी कला अर कलाकार परदेसां तक धूम मचाई।

इण जुग रो आर्थिक वातावरण सुधर्‌यौ। नया कळकारखाना लाग्या। देस में उत्पादन अर रोजगार बढयौ। नीतिगत कारणां सूं अमीर ज्यादा अमीर बणग्या अर गरीब ओर गरीब। गरीब अर अमीर रै बीच री खाई इत्ती विसाळ अर गहरी हूयगी कै अेकानी झुग्गी–झोपड़यां पसरी तो दूजै कानी अमीर रा बंगला अर उधोग अरबां–खरबां तक जाय पूग्यौ।

सिक्षा अर साहित्य री दीठ सूं ओ जुग विकसाव रो है। सिक्षा आम आदमी तक पूगी, विसयां रो विस्तार हुयौ। तकनीकि सिक्षा कानी रूझान बढयौ। घणाई विश्वविद्यालय सरकारी अर नीजी दोनूं जागां खुल्या। प्रतियोगी सिक्षा समै री मांग बणगी। राजस्थानी साहित्यकार खुद री कलम री ताकत सूं भात–भांत रो पण महताऊ साहित्य सिरजण करण लागा।

10-4-1 vk/kfud dky jk jktLFkkuh lkfgR;

सन् 1850 सूं अजै तांई राजस्थानी भासा में मोकळो साहित्य लिखीज्यौ। गद्य अर पद्य री न्यारी न्यारी विधावां, काव्य धारावां अर लेखन सैलियां रो विस्तार हुयौ। जुग री प्रमुख प्रवृतियां रो असर लेय'र नीचै लिखी काव्य धारावां रो उदय राजस्थानी भासा रा काव्य में हुयौ।

10-4-2 iÑfr dk0;

2. प्रेमप्रधान काव्य
3. प्रगतिसील काव्य
4. छायावादी काव्य
5. नई कविता–अतुकांत, अकविता, ग कविता अर समकालीन कविता।

iÑfr dk0; & राजस्थानी री प्रकृति नै आधार बणा'र जको काव्य लिखीज्यौ वो प्रकृति काव्य रै रूप में जगचावो हुयौ। राजस्थान मरुधरा बाजै। अठै बिरखा कम व्है जिणसूं खेती इकसाखी ज्यादा व्है अर आयै बरस काळ पड़ै। गरमी घणी पड़ै। लूआं सूं झुळसियोड़ी मानवी मेह री उडीक राखै। पाणी कम हूवण रै कारण उणरो महत्व घणो है। दिन तपै पण रातां ठंडी व्है। छ रितुवां अठै दरसाव देवै।

राजस्थानी भासा रा घणा कवेसर राजस्थान री प्रकृति नै आधार बणा'र घणो अर सारथक काव्य रच्यौ है जिणमें चंद्रसिंह री दो पोध्यां 'लू' अर 'बादळी' घणो नाम कमायौ। चंद्रसिंह जी अठां री प्रकृति रा जरारथ भरिया पण मोवणा चितराम खुद री कविता में रच्या है। एक बानगी देखीजै।

vkB ikj vMhdrk]
ohrs fnu T;ks ekl
njl.k n; vc ckn.Gh
er ej/kj u rklA

fNud: lijt fuj[kh;k
fc[kjh cknfG;k
fpyd.k eg vc ykfx;k
/kjk fdj.k fefy;kA

चंद्रसिंह री आं काव्य–ओळयां में प्रकृति काव्य रै साथ छायावादी काव्य रा दरसाव भी रच्या–पच्या है। चंदसिंह रै अलावा डॉ. नारायणसिंह भाटी, सत्यप्रकाश जोसी, कन्हैयालाल सेठिया, रघुराजसिंह हाडा, गजानन वर्षा, कल्याणसिंह राजावत, भी राजस्थानी प्रकृति काव्य रच्यौ है।

प्रेमप्रधान अर छायावादी कविता रा विसय एकसा ही रिया है। हेत प्रीत री कविता कठेई छंदां–अलंकार रै पाण जग चावी हुई तो कठेई प्रतीकां रै पाण पसरी। कन्हैयालाल सेठिया, नारायणसिंह भाटी, सत्यप्रकाश जोशी, किशोर कल्पना कांत, लक्ष्मणसिंह 'रसवंत', कल्याणसिंह राजावत इण भांत री कविता नै पनपाई। नीति काव्य ई कविता रो सिरगारगार कर्‌यौ। प्रगतिसील कविता गणेसलाल व्यास 'उस्ताद', रेवतदान चारण, कहैयालाल सेठिया री कवितावां सूं समृद्ध हुई। गणेसलाल व्यास उस्ताद री 'बंदा मैणत री जै बोल, जुग पसवाड़ो लीनो, लाल धजा री आण फिरै, धोरां री धरती जाग, साथण दिया जगा दे, परण्या डरे मती, खाता बोहरा सूसं मत घाल, जागौ जागौ रे कमतरिया, राज बदळग्यो म्हांनै कांई, अहिंसा बोल अहिंसाबोल, जाग रणबंका सिपाई आदि कविता अर रेवतदान चारण री 'दूजो महाभारत' लोकराज, बगावत, काळ, इकलाब री आंधी, लिछमी, उछाळौ, हालरियौ, बीघोड़ी, पग मंडणा इतिहास रा, रोयां रूजगार मिळै कोनी, कन्हैयालाल सेठिया री कुण जमीन रो धणी, अघोरी काळ। जैड़ी कवितावां प्रगतिसील चिंतन रो आधार लियौड़ी है।

आधुनिक राजस्थानी भासा री नई कविता छंद अर अलंकारां रा बंधन तोड़ मुगत काव्य धारा नै जनम दियौ। जयारथ रो रंग अर बदलाव रो सुर नई कविता री पिछाण बणी।

ubZ dfork jk dh mnkgj.k&

**/kucG tn tu jk lq[k pxy] rn vk Hkke vxkjk mxG
tu Hkkoh jh Hkqtx Hkjoh] jxr fio ekFkk Hk[k ekxA
j ekfV;kjA lHkG c/k vkx] vkx j ekVh tho.k vkxA** –जनकवि गणेसलाल व्यास

**v/kkj ?kkj vk/kh ipM
vk /kqvk/kkj /ko /ko djrh
vko g mj e vkx fy;k] x< dkVk cxyk u <grhA** –रेवतदान चारण

**dq.k tehu jk /k.kh \
gkM ekl pke xkG
[kr e iLo lhp]
y yoV B.M eg
l lo nkr ehp]
QkM pkd dj dj] tkr.kh*j cko.kh]
ok tehu jk /k.kh* ^d vk tehu jk /k.kh *** –कन्हैयालाल सेठिया

ie[k dfo vj m.kkjh jpukok&

vk/kfud jktLFkkuh Hkkl k jk ie[k dfo vj m.kkjh jpukok uhp ektc g&

कविवर–बांकीदास आसिया – रचनावां सूर छतीसी, धवल पच्चीसी, गंगालहरी

सूरजमल मीसण – वीरसतसई, वंशभस्कर, रामरंजाट, बलवद विलास आदि।

रामनाथ कविया – दौपदी विनय।

संकरदान सामोर – सगती सुजस, भागीरथी, महिमा, बखत रो बायरो, देसदरपण, साकेत सतक।

हींगळाजदान – मृगया मृगेद्र, मेहाई महिमा, दुर्गा बहतरी, बणियोरासो आदि।

केसरीसिंह बारहठ – चेतावणी रा चूंगट्या।

महाराज चतरसिंह – परमारथ विचार, योगसूत्र की वारता, गंगाजळी टीका, चतुर चिंतामणि।

गणेशलाल व्यास उस्ताद – बेकसों की आवाज।

उदयराज उज्वल – धूड़सार, मारवाड़ रा वीर, मातृभासा दोहावली। गांधीजी रा दूहा, विज्ञान रा दूहा, भानिया रा दूहा, स्वराज सतक, श्रम सतक आदि।

नाथूदान महियारिया – वीर सतसई, गांधी सतक, चंडी सतक, चूंडा सतक, झालामान 'सतक'

डॉ. नारायणसिंह भाटी – सांझ, परमवीर, दुर्गादास, कळप, मीराँ, जीवणधन आद।

डॉ. मनोहर शर्मा – गजमोती, रसधारा।

कहैयालाल सेठिया – मिमझर, लीलटांस, मायड़ रो हेलो आद।

सत्यप्रकाश जोशी – राधा, दीवा कांपै क्यूं ? बोल भारमली, लस्कर ना थमै, गांगेय आद।

किशोर कल्पनाकांत – कूंपळ, फूल।

मेघराज मुकुल – सेनाणी, सेनाणी री जागी जोत।

चंद्रसिंह – लू, बादळी, बालसाद आद।

रेवतदान चारण – चेत मानखा, नेहरू जी नै ओळमो, धरती रा गीत, उछाळौ।

विश्वनाथ 'विमलेश' – सतपकवानी, रामकथा (महकाव्य) कुचरणी।

बुद्धिप्रकाश पारीक – चूंटक्या, तिस्सा, कळदार।

रामनाथ व्यास 'परिकर' – मनवार, गीत सहकार।

गिरधारीसिंह पड़िहार – मानखो।

सुमेरसिंह शेखावत – मेघमाळ, आ नींद कद उडैला।

कल्याणसिंह राजावत – रामतिया तोड़, परभाती।

गजानन वर्मा – सोनो निपजै रेत में, बारामासा

लक्ष्मणसिंह रसवंत – रसाळ, मिमझर।

उदयवीर शर्मा – पिरथीराज, सुरजां।

रामेश्वर दयाल श्रीमाळी – हाडी राणी, बावनो हिमाळौ।

कमर मेवाड़ी – जय बंगलादेस।

डॉ. गोरधनसिंह शेखावत – किरकर, पनजीमारू।

तेजसिंह जोधा – ओळूं री ओळयां।

सीताराम महर्षि – रिमझोळ, प्रीत पीड री पाळ।

मोहन आलोक – डांखळां।

करणीदान बारहठ – झिंडियो, 'झरझर' कथा।

नंदभारद्वाज – अंधार पख।

वेदव्यास – कीड़ोनगरो

यूं तो आधुनिक राजस्थानी भासा रा सैकड़ूं कवि अर वां री रचनावां छपी है जिणामें मणिमधुकर, अर्जुनदेव चारण, डॉ. शान्ति भारद्वाज, अम्बिकादत्त, अतुल 'कनक', मुकुट मणिराज, गिरधारीलाल 'मालव', रसिद अहमद 'पहाड़ी', दुर्गादानसिंह 'गौड़', ओम नागर 'अश्क', बद्रीलाल 'दिव्य', गोरस प्रचंड, सी. एल. सांखला, जितेन्द्र निर्मोही, शिवचरण सैन, सन्नू मेवाती।

आद रा नाम गिणावणजोग है। महिला रचनाकारां में– डॉ. लीलामोदी, गीता 'जहाजपुर', कृष्णा कुमारी, कमला 'कमलेश', प्रेमलता जैन, डॉ. उषाकंवर राठौड, शारदा कृष्ण, पुष्पलता कश्यप, माधुरी मधु, सुबदा कछवाह, विजय लक्ष्मी देथा, कविता मेहता, कविता किरण, सुमन बिस्सा, प्रकाश अमरावत, तारा लक्ष्मण गहलोत, सावित्री डागा आदि प्रसिद्ध है।

10-5 vk/kfud jktLFkkuh x| lkfgR;

fol|lrkok & राजस्थानी भासा रो आधुनिक जुग गद्य प्रधान मानीजै! इण काल खण्ड में एकानी गद्य री नुवै विधावां नै लेखन रो आधार बणायौ गयौ तो दूजै कानी नई गद्य सिल्प अर सैलियां रो बिगसाव हुयौ। गद्य लेखन री जूनी समृद्ध परम्परा सूं ओ नयो गद्य सम्पन्न तो हुयौ है पण आज री गद्य विधावां री परिभासा, तत्व अर लेखन सैली न्यारी है जिणांमें नाटक, एकांकी, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, रेखाचितराम, रिपोरताज, डायरी, रूपक, आद खास है। आधुनिक राजस्थानी गद्य लेखन में भाव अर विचार दोनुवां रो प्रभाव है पण विचार प्रधान लेखन घणो गम्भीर है। इणमें विविधता, चिंतन अर जुग सापेक्ष ईधको है! इण गद्य लेखन में न्यारी–न्यारी विचार धारावां रो साहित्य है ज्यूं प्रगतिसील लेखन साम्यवादी विचार धारा सूं प्रभावित है, थोड़ा रचनाकार पूंजीवादी, सामन्तवादी, कुछ धार्मिक, सांस्कृतिक सोच राखै। उणारी रचनावां में वांरी विचारधारा अर सोच निगै आवै।

vkt j x| y[ku jh fol|lrkok &

10-5-1 ई आधुनिक गद्य सिरजण में भासा रा न्यारा न्यारा रूप अर प्रयोग है। 'वचनिका' अर दवावैत सैली अर जथारथ राजस्थानी गद्य विधावां नै सिणगार दियौ है! गद्य गीतां रा प्रयोग हुया है। विग्यान रो असर, मनुज री मानसिकता, उणरो आचरण, उणरा आस्था, विस्वास, रीत–रिवाज, राजस्थानी भासा रा, उपन्यास, कहाणी, नाटक–एकांकी, जैड़ी विधावां में घणै असरदार ढंग सूं सबद रूप लियौ है! डायरी, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा मानवी अर उणरा समाज, परिवार अर आखै परिवेस नै पाठकां सामी राखै। नारी समस्यावां, उणरी मनगत, अबखाया, उणरो बदलतो रूप, काम अर चरित आज गद्य लेखन में आखरां ढळयौ है।

10-5-2 आज रो राजस्थानी गद्य विचारात्मक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक, व्यक्ति परक अर व्याख्यात्मक सैलियां परक कयौ जावै। उपन्यास कहाणी, नाटक अर एकांकियां रा पात्र आज रा है। वांरी संवेदना इण जुग री है। निबंधां रा विसय विविध अर विसाळ है। भासासैली टकसाळी अर मानकरूप लियौड़ी है। गंभीर सूं गम्भीर विसय नै प्रभावी भासा में सबद रूप देवण री खिमता राजस्थानी गद्यकारां में है।

3. सगळा आधुनिक राजस्थानी साहित्य पर महात्मा गांधी अर उणांरा सिद्धांतां रो असर साफ निगै आवै। गांधीवादी चिंतन, आंदोलन अर काम करण रो तरीको आज रै लेखन रो आधार बण्यौ है।

4. ई जुग में परयावरण, चेतना अर रंग, जाति, धरम रै खिलाफ उठी आवाज नै आधुनिक राजस्थानी साहित्यकार वाणी दीनी अर साम्प्रदायक सदभाव, भाईचारे अर मानवतावादी दीठ रो विकसाव खुद री कलम सूं करियो! आखी दुनियां में जठै कठैई हिंसा, अन्याव, भेदभाव, साम्राज्यवाद, पूंजीवाद रा दुरगण पनपण लागा– राजस्थानी कलमकार उणरो पुरजोर विरोध करियौ। अठांताई कै जठै भारत में जन री उपेक्षा हुई राजस्थानी रचनाकार खुद राजनेतावां नै भी माफ नहीं करिया।

10.5.3 आधुनिक राजस्थानी रा प्रमुख गद्यकार अर उणारी प्रमुख रचनावां री विगत की इण भांत है।

ie[k miU;kldkj & अन्नाराम सुदामा, श्रीलाल नथमल जोशी, यादवेद शर्मा 'चंद्र', सत्येन जोशी, छत्रपतिसिंह, दीनदयाल कुंदन, रामदत साकृत्य, पारस अरोड़ा, किशोर कल्पनाकांत आद प्रमुख है।

ie[k miU;kl & मैकती कामा मुळकती धरती, आंधी अर आस्था मैवे रा रूंख, आभै पटकी, धोरां रो धोरी, एक बीनणीदोय बींद, कवळपूजा, तिरसकूं आदि अनेक।

ie[k dgk.kdkj & मुरलीधर व्यास, डॉ. नृसिंह राजपुरोहित, अन्नाराम सुदामा, करणीदान बारहठ, बैजनाथ पंवार, मूळचंद 'प्राणेश', भंवरलाल सुथार, सांवर दईया, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, प्रेमजी प्रेम, मनोहरसिंह राठौड़, रामनिरंजन 'ढिमाऊ', शचीन्द्र उपाध्याय, नानूराम संस्कर्ता, विजयदान देथा, श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत, दामोदर प्रसाद शर्मा, डॉ. मनोहर शर्मा, उदयवीर शर्मा आद।

ie[k dgkf.k;k vj ikF;k & बरसगांठ, अमर चूनड़ी, रातवासो, मऊ चाली माळवै, आंधै न आंख्या, लाडेसर, ओळखाण, नैणा खूंटयौ नीर, उकळता आंतरा–सीळा सांस, परण्योड़ी कुंवारी, तगादो, असवाड़ै–पसवाड़ै, धरती कद ताई घूमै ली, अलेखूं हिटलर, मांझल रात, मूमल, कै रे चकवा बात, गिर ऊंचा ऊंचा गढां, आदमी रो सींग, मंत्री री बेटी, बेमाता रा आंक, जसोदा, संळवटां, लालबती, ओ घर म्हारो कोनी, रामचंद्र की कथा, सांवर का बोल, रोसनी रा जीव, सांढ, डाळ सूं छुट्या पंछी, कन्यादान, सोनल भींग, करड़ी आंच, दसदोख, घरकी गाय, ग्योही, प्रेतात्मा री प्रीत आद मोकळी।

ie[k ukVdkdkj & सूर्यकरण पारीक, श्रीनाथ मोदी, गिरधारी लाल व्यास, आज्ञाचंद भण्डारी, भरत व्यास, यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' सत्येन जोशी, निर्मोही व्यास, अर्जुनदेव चारण, मदनमोहन परिहार डॉ. मदनमोहन माथुर आद अनेक।

ie[k ukVd & बोळावण, गोमाजाट, प्रणवीर प्रताप, जयपुर की ज्योणार, पन्नाधाय, ढोला–मरवण, रंगीलो मारवाड़, तास रो घर, मुगतीवंधण, दो नाटक आज रा, अंधारो आद।

ie[k fuc/kdkj & डॉ. मनोहर शर्मा, डॉ. कल्याणसिंह शेखावत, सौभाग्यसिंह शेखावत, नंद भारद्वाज, पुरसोतम आसोपा, जहूर खां मेहर, अर्जुन सिंह शेखावत, डॉ. शक्तिदान कविया, अगरचंद नाहटा, अन्नाराम सुदामा, अमरनाथ कश्यप, रामनाथ व्यास परिकर, डॉ. ब्रजमोहन जावळिया।

ie[k fuc/k vj ikF;k & राजस्थानी निबंध संग्रह, रोहिड़ा रा फूल, राजस्थानी निबंध, मणिमाळ, रसकळस, दौर अर दायरो, राजस्थानी संस्कृति रा चितराम, मुळकता मिनख मोवणी धरती, दूर दिसावर आळ जंजाळ। इणी तरह दूजी गद्य विधावां रा रचनाकारां में मोहनलाल पुरोहित, भंवरलाल नाहटा, नेमनारायण जोशी, शिवराज छंगाणी, वेद व्यास, डॉ. सत्यनारायण शर्मा, डॉ. नरेन्द्र भानावत, श्रीलाल मिश्र, दीनदयाल ओझा, गोविंदलाल माथुर, डॉ. उषाकंवर राठौड़, डॉ. प्रकाश अमरावत, श्री नागराज शर्मा आद अनेक।

10-6 bdkbZ lkj

1. इण इकाई में आधुनिक राजस्थानी साहित्य री जाणकारी दी गई हैं।

2. आधुनिक जुग रो समें सन् 1850 सूं आज तकरो है। ईं इकाई में इण जुग रा राजनैतिक, सामाजिक,

आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक अर सिक्षा रा वातावरण नै दरसायौ गयौ है।

3. आधुनिक काल रा राजस्थानी काव्य अर गद्य री विगत इण इकाई में मंडी है। आधुनिक गद्य विधावां, सैलियां प्रमुख रचनाकार अर रचनावां री जाणकारी इण इकाई में आखरां ढळी है।

10-7 vH;kl jk loky

1. आधुनिक राजस्थानी साहित्य नै प्रभावित करणवाळा तत्व कुणसा है – उदाहरणा सूं समझावो।
2. आधुनिक राजस्थानी काव्य री प्रमुख काव्य धारावां री जाणकारी करावो।
3. प्रमुख प्रगतिसील कवियां रो परिचय देवो।
4. सत्यप्रकाश जोशी री काव्य रचनावां री जाणकारी करावो।
5. आधुनिक राजस्थानी गद्य विधावां कुणसी हैं? समझावो।

10-8 lanHkZ iqLrd

1. नरोतमदास स्वामी– राजस्थानी साहित्य : एक परिचय
2. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य
3. डॉ. कल्याणसिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा एवं काव्य
4. डॉ. पुरूषोतम आसोपा – राजस्थानी साहित्य री नुंवी कविता
5. डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास – स्वातंत्र्योतर राजस्थानी काव्य
6. डॉ. श्याम शर्मा – राजस्थानी कविता – एक विश्लेषण
7. नृसिंह राजपुरोहित – स्वतंत्रता संग्राम रो राजस्थानी काव्य

bdkb&11

vkt jh jkt LFkkuh dfork

bdkb jk eMk.k

11.0 उद्देस्य

11.1 पूँठभौम

11.2 काल विभाजन

11.3 जुग को दरसाव

11.4 आधुनिक राजस्थानी कविता रा सांतरा पख

11.4.1 विसय री दीठ सूं

11.4.1.1 परंपरा को जस

11.4.1.2 प्रकृति को चितराम

11.4.1.3 दर्शन अर अध्यात्म

11.4.1.4 देसप्रेम

11.4.1.5 कौमीएकता

11.4.1.6 मायड़ भासा को जस

11.4.1.7 आमजन की अबखायां

11.4.1.8 नीति की बात

11.4.1.9 लोकजीवण

11.4.2 विधा की दीठ सूं

छंदबद्ध कविता

11.4.2.1 गीत

11.4.2.2 नवगीत

11.4.2.3 ग़ज़ल

11.4.2.4 मुक्तक काव्य

11.4.2.5 प्रबंध काव्य

11.4.2.6 बालकविता

11.4.3 छंदमुगत कविता

11.4.4 उळथो

11.5 आज री कविता की निरख–परख

11.5.1 रस की दीठ सूं

11.5.2 अलंकार की दीठ सूं

11.5.3 भासा की दीठ सूं

11.6 इकाई सार

11.7 व्याख्या

11.8 अभ्यास रा सवाल

11.9 संदर्भ ग्रंथ

11-0 míL;

- राजस्थानी भासा में कविता सिरजण की एक सबळी रीत र्‌ही छै।
- जगत् की दूजी भासावाँ की नांई राजस्थानी में भी साहित्य सिरजण की सरूवात पद्य सूँ ही मानी जावै छै– सायद ई लेखे कै लय अर तुक का मंडाण मन में बत्ता रूचै छै।
- राजस्थानी भासा को जूनो साहित्य ऊँ बगत का कवियाँ की साधना अर चेतना की साख भरै छै।
- राजस्थानी भासा का जूना साहित्य पै सगळी दुनिया में घणों काम होयो छै।
- भगती सिणगार, ओज का गुण ई बखाणबा अर नीति सिखाबा वाळी ओळियाँ आज भी जनजन की जुबान पे छै। पॅण राजस्थान की आधुनिक कही जाबा वाळी कविता भी बगत की लय की लैरां कदमताल करती सामी आवै छै।
- आज की राजस्थानी कविता को पसराव प्रकृति सूँ ले'र मिनखाजूण की अबखायां तांई छै।
- ई इकाई में आधुनिक राजस्थानी कविता के ओळावै समाज, बगत अर मिनख का आपसी नाता नै भी जाण सकंगा।

11-1 i¡BHkk\e

राजस्थानी में कविता मांडबा की रीत घणी जूनी छै। राजस्थानी भासा को विकसाव अपभ्रंस भासा सूँ होयो छै। डॉ. नारायण सिंह भाटी के मुजब – ''राजस्थानी रा कवि संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंस सूँ चालती आई रीत नै अपणाई।'' विक्रम संवत् 835 में जैनमुनि उद्योतन सूरि 'कुवलय माळा' नांव को ग्रंथ रच्यो। ईं में वाँ 18 भासावां साथै मरूभासा नांव सूँ राजस्थानी को भी उल्लेख कर्‌यो। इण सूं या बात सुभट लखावै कै नेवां सईका में भी राजस्थानी को भासागत सरूप अर दरजो छो, पॅण दसवां सईका का छठी दसाब्दी तांई ई को लिखित रूप निगै न्हं आवै। राजस्थानी भासा का आदिकाल को बत्तो साहित्य मौखिक रूप में ही र्‌यो। पछै चारणां अर जैन विद्वानां लिखित साहित्य री रीत थरपी। ऊँ इगत की खास रचनावां में खुम्माण रासो, बीसलदेव रासो, ढोला–मारू रा दूहा, जैठवै रा सोरठा, आभल–खींवजी रा दूहा अर हंसाउली'' को नावं लियो जा सकै छै।

विगतसर, सिरजण की या रीत लगौलग सबळी होगी। राजस्थानी भासा का कवियां भगति सगपॅण, सिणगार, जुझारपॅणा अर नीति सूं संबंधित घणकरी महताऊ रचनावां माण्डी। मध्यकाल में रचीगी कविता का सुर तो राजस्थानी कविता का जस की ओळखाण ही बणग्या। माटी अर मिनखपण की मरजाद पे जान देबा की सीख देवा वाळी ऊँ बगत की कविया पर कोय भी भासा गुमेज कर सकै छै। एक समीक्षक मुजब – ''मध्यकाल में सूरां, सापुरुषां अर सतियां री इण वीर–वसुंधरा वास्तै अलेखूं कवियां आपरी लेखनी रै बळवीर, सिणगार, नीति अर भगति रो साहित्य रच्यो अर संत संप्रदाय धरम री जड़ हरी करी। इण रै साथै ई लोक साहित्य आपरी सगळी विधावां साथै पांगर्‌यो अर हरियल रूंख ज्यूं फळ्‌यो–फूल्यो। भासाई दीठ सूं राजस्थानी भासा ई आपरै बालपॅणै रै संगी साथियां नै छिटकाय जोबन मतवाळी, राती–माती निजर आवण लागी।''

'धर कूचां, धर मजलां' राजस्थानी कविता अस्यां आधुनिक काल तांई पूगी।

11-2 dky foHkktu

इतिहास की नांई साहित्य में भी आधुनिक काल की सरूवात मध्यकाल का पूरण होतां ही मानी जावै छै। इतिहास घटनावां को बखाण करै छै। कोय एक घटना असी हो सकै छै, जे सगळा कालखण्ड की तस्वीर बदल द्ये, पॅण साहित्य में प्रवृत्तियाँ को विकसाव चांणचक न्हॅ होवै। हाँ, बगत को बायरो साहित्य की धारा पे भी आपणां पसराव का पड़बिम्ब उकेरे छै। राजस्थानी का आधुनिक काल की सरुवात संवत् 1900 सूं मानी ज्यावै छै। यो बो बगत छो, जद देस में सुतंरता को चेत अपणी ताब दिखा र्‌यो छो अर अलूखूं जुझारां के सागै कवियां की कलम भी परदेसी राज की सांकळ ईं तोड़ फैंकबा को प्रण धार्‌यां छी। संकरदान सामोर, सूर्यमल्ल मीसण कृपाराम कविया, बावजी चतरसिंह, उदयराज ऊजळ, केसरी सिंह बारहठ, ऊमरदान लाळस जस्या अणगिनत कवि अपणां सबदां सूं लोगां में ताब फूंक र्‌ैया छा।

संकरदान सामौर ''दे धरती जिन दुसमणां, जीवत घर आ ज्याय/दिन खोटो उण देस रो, समझ मरै सरमाय'' जसी ओळियां मांड 'र हुंकार भरी तो सूर्यमल्ल मीसण दकाळ दी –

''इळा न देणी आपणी।

हालिरिये, हुलराय ।

पूत सिखावै पालणै,

मरण बड़ाई माय ।।

सुतंरता बेई जूझबा को चेत जगाता थकां राजस्थानी का आगीवण रचनाकारां मानबी जूण का सगळा चितराम उकेर्‌या। एक आड़ी ऊमरदान लाळस ''जटा कनफटा जोगटा, खाखी परधन खावणा/मुरधर में क्रोड़ा मिनख करसा हेक कमावणा'' जसी कवितावां माण्ड 'र धरम का नांव पे पाखण्ड करबा वाळां का छोलड़ा छील्या, तो दूजी आड़ी केसरी सिंह बारहठ' कठण जमायो कौल, बांधै नर हीमत बिना/वीरां हंदो बोल, पातल सागै पेखियो' जस्या सोरठा रा रच 'र स्वाभिमान जगायो।

विक्रम संवत् 1900 के पाछै राजस्थानी कविता का मंडाण का मंडाण में एक नुओ चेत जागतो लखावै छै। पॅण संवत् 1900 सूँ आज तांई अरावळ का डूंगरां ईं छू 'र नरो बायरो खंड़ग्यो। ईं बगत तांई आतां आतां जिनगाणी एक नुआ सांचा में ढळी–रळी सी दीखै छै। देस ईं सुतंरता का रथ पें बिराजमान कराबा का संकळप सूं सरू होयो बगावत सुतंरता पाया पाछै हरख्यो तो सरी, पॅण लारला बरसां में या कसक भी काळज्या पे धमीड़ा देती दीखै छै कै सुराज का नांव पे संजोया गया सगळा सुपनां में मनचीतो रंग न्हं भर्‌यो जा सक्यो। ईं दीठ सूं आजादी सूं पैली की अर आजादी के पाछै की राजस्थानी कवितावां कथ्य, सिल्प अर भाव की गरज सूं दो न्यारी–न्यारी भौम पे ऊबी दीखै छै। आधुनिक को अरथ होवै छै, बो जे आज का बगत को होवै के ईं बगत का विकसाव की भूमिक्या पे खड़ो होवै। डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा के मुजब – ''आधुनिक सबद नै आमतौर सूं बगत रै बदलाव आळी दसा सूं जोड़नै देख्यो जाया करै। ... साहित्य मांय नूंवोड़ा बोध अर चिंतन री नूंवी दसावा अर जीवन 'दर्शन' री नूंवोडी स्थितियां नै ध्यान में राखनै आधुनिक सबद री व्याख्या करी जाया करै। इण दीठ सूं देखता थकां साहित्य मांय अंगेजण आळा आधुनिक बोध री पैलड़ी अर जरूरी सर्त आ हुया करै के उण मांय स्वचेतना री कितरीक मात्रा मौजूद है। आ स्वचेतना विज्ञान, तकनीक अर औद्योगिकरण रै असर सूं उपज्योड़ी नूंवोड़ी जीवन दीठ अर मिनखां रै सोच रा नूंवा रूपां माथै आधारित रैया करै।''

आधुनिक राजस्थानी कविता नांव की ईं इकाई में आजादी पछै की राजस्थानी कविता की चर्चा करांगां।

भूमिका– 15 अगस्त 1947 नै भारत ईं अंगरेजी राज का बंधन सूँ मुगति मिली तो देसवासियाँ की आँख्यां में नरा सुपनां छा। यो बो बगत छो जद बरसां की लड़ाई अर नरा जुझारां का बलिदान के पॅण देस का आभै

में सुतंरता को सूरज चमक्यो छो। लोकतंत्र की थरपना अर सुराज की आस ईं नुओ बळ मिल्यो।'' कितना सीस कट्या आपां रा, जद दीख्यो यो रूप/यो लायो रे खुसियाँ आजादी रो रूंख'' (प्रेमलता जैन) जस्या गीत मांड्या गया। बगतसर, यां सुपनां का डीळ पे काळ अपणा दस्तखत कर्या अर कवितावां पे सुपनां बदरंग होबा को दुख भी पसर्यो। जनकवि उस्ताद (गणेस लाल व्यास 'उस्ताद) की या कविता तो जस्यां कंठ–कंठ में रमगी –

''नेता बोलै राज आपणौ अंगरेजां सूँ लार छूटगी/

साधक धौखै निमो–नारायण, दुख–दाळव सूँ नाड़ टूटगी/

बाण्यां रै पौबारां पड़गी, पौरायत री आँख फूटगी/

गोबरिया बांभी रै घर सूँ, भर्या पेट री याद रूठगी/

साधक जीमै दूध–मलाई/

गोबर कूकै म्हांनै कांई/

इण दिस सुख री पड़ी न झांई/

राज बदलग्यो म्हांनै कांई।।

आजादी सूँ पैली राजस्थानी की कविता देस का मान अर माटी की मरजाद पे जान देबा बेई जुद्ध आह्वान करै छी पॅण आजादी के पाछै की कविता जिनगाणी नै नुआ अरथ देबा की खेंचळ में भी जुटगी। पैली राजस्थानी कविता की परंपरा में जुद्ध में जान लुटाबा की सीख देबो गरब अर गुमान को विसै छो–

मरदां मरणौ हक्क है, ऊबरसी गल्लांह।

सापुरसां रा जीवण, थोड़ा ही भल्लाह।

भला थोड़ जीवियां, नाम राखै भवां।

खैल ऊभा रवै, भागलां सिर खवां।

कळ चड़ै जोय चंद जसनामौ करै।

मदर सांचा जिकै, आय अवसर मरै।

(बारहठ ईसरदास)

आजादी के पाछै राजस्थानी कविता जुद्ध का विकराळ सरूप ने मांछता थकां सांति अर हेत की थरपना पे जोर देबा लागी –

''मन रा मीत कान्हो रे

जग में जे मंडग्यो घमसाण तौ

भाई पर भाई करसी वार

आपस में लड़सी, मरसी मानखौ

चुड़ला फोड़ैला काळा ओढ़

अमर सुहागण थारी गोपियां

कांमणियां बिकसी बीच बजार

कुंण तो उघड़ी बैनां नै ढांकसी

पिरथी पुरखां सूँ होसी हीण

टाबर कहासी बिण बाप रा

कुण करसी धीवड़ियां रो ब्याव

कुण तो कडुंबौ वां रो पाळसी

अणगिण मावड़ियां देसी हाय

मुड़ जा, फौजां नै पाछी मौड़लै।''

(सत्यप्रकाश जोशी)

अर्जुन देव चारण के मुजब – ''परंपरागत राजस्थानी कविता में मरणौ हक मानीजतौ हौ पण अबै कविता 'जीवण' नै हक मानण री बात करण लागगी। कविता रै खेतर परगट होवतौ औ एक मोटो बदलाव है।... ध्यान देवण री बात आ है कै आजादी मिळयां राजस्थानी कविता रौ जकौ उणियारो परगट होवै, वो सपनां रै तूटण रौ उणियारो है, पॅण आजादी री लड़ाई रै समचै जकी कविता आपां रै साम्हीं आवै, वा सपना देखती कविता है। मुळक री खुसहाळी रो सपनौ देखती कविता, अनीति अर अन्याव रै खातमै रो सपनो देखती कविता।''

चारण आगै माण्डै छै – ''राजस्थानी कविता रौ औ बदळियोड़ो उणियारो केई कारणां सूं आपरै जाणकारां नै हरखित करण वाळी हो। आपरी पंपरागत छवि सूं न्यारी इणरी ताब ही। इणमै रचना रौ पसराव देखण नै मिळै। नुंवी जमीन अरजित करती आ कविता नुंवी छवियां रचै। खास बात आ है कै जकी जमीन वा अरजित करती दीखै, वा आपरै रचाव में आपरी जड़ां सूं नी टळै।.. अै कवि वां तरेड़ां नै साफ–साफ देख रैया है जकी इण सूं पैली रा कवियां री निजरां सूं बचियोड़ी रैई ही। ('साख भरै सबद' पोथी की भूमिका)

1-4 vk/kfud jktLFkkuh dfork jk lkrjk i[k

आजादी के पछै की राजस्थनी कविता नै जाणबा सूं पैली यो जाणबो जरूरी छै कै आधुनिक राजस्थानी कविता ईं मुकाम तांई पूगबा सूं पैली कस्या कस्या मारग तय कर्या। अर्जुन देव चारण के मुजब – ''आ जातरा बीसवैं सइकै रै आधेटै आप रै जिण सरूप नै धारण करियां ऊभी ही, वो सरूप अैड़ा मोबी सपूतां रै पांण ई आपरी चिळक बतावण में सक्षम होयो हो। ... जिण भांत आजादी रो आंदोलन लगौलग उतार चढ़ाव झेलतौ आगे बधि ायो, उणी भांत तत्कालीन परिस्थिति में आधुनिक राजस्थानी कविता ई हौळे–हौळे आगे बधती दीखै। मध्यकालीन राजस्थानी भासा नै आपरै बदळियोड़ै खोळियै जका कवियां ओळखाण रो काम करियौ, वां में रामनाथ कविया, किरपाराम खिड़िया अर सूर्यमल्ल मीसण रौ लूंठो योगदान है। आ भासा आं कवियां री लेखणी सूं रळक जन–जन रै कंठ री सोभा बणगी।... इणी काव्य परंपरा नै संकरदान सामौर, ऊमरदान लालस अर केसरीसिंह बारहठ जैड़ा कवियां रौ साथ मिलियौ।... जयनाराण व्यास, विजयसिंह 'पथिक' माणिक्य लाल वर्मा, हीरालाल शास्त्री, भैरूंलाल काळा बादळ, गोरीलाल गुप्त, धीरजमल बच्छावत जैड़ा आजादी री लड़ाई रा सगळा सिपाई इण लड़ाई में रैयत तांई आपरी बात पुगावण सारू कविता नै एक माध्यम रै रूप बरतै।''

आभै पे सुतंरता को सूरज उग्यो तो देस में नुओ उछाह जाग्यो। परदेसी राज की सांकळ का बंध कट जाबा को हरख छो अर सुराज ईं थरपबा की हूँस छी। या हरख अर या हूंस ऊँ बगत का कवियां का सिरजण में भी लखाई। जयनारायण व्यास को गीत छै–

''वोट नांख ले पंच चुणीजै, म्हारी करै आवाज

पंचां मांय सूं बणै मिनिस्टर, रखै न्याव री लाज,

म्हानै अैसो दीजो राज ।

आजादी मिली तो एक नुओ उछाह जाग्यो। उछाह का ईं उच्छब सूं राजस्थानी को कवि अछूतो कस्या

र्है सकै छो? पॅण ऊ या बात भी समझै छो कै सुराज की थिरपना कोय आसान काम कोय न्हॅ। मनुज देपावत को गीत राजस्थानी भासा का ऊँ दौर का कवियां की दीठ की साख भरै छै–

''उठ खोल उणींदी आंखड़ल्यां, नैणां री मीठी नींद तोड़,

रे रात नहीं अब दिन ऊग्यो, सुपनां रो झूठो मोह छोड़,

थारी आंख्यां में नाच रैया, जंजाळ सुहाणी रातां रा,

तूं कोट बणावै उण, जूनोड़ै जुग री बातां रा,

पॅण बीत गयो गया बीत, अब उण री कूड़ी आस त्याग,

छाती पर पैणा पड्या नाग, रे धोरां आळा देस जाग।।

पॅण, बत्तो बगत न्हॅ बीत्यो छो के आपणा राज में हरख अर हेत का खजाना मिलबा की आस धुंधळागी। आजादी की लड़ाई की हरावळ पांत का जुझार रया कवेसर माणिक्यलाल वर्मा भी मांड्यो –

''जंगळ भीतर घाल झूंपड़ी, जोगी बण कर क्यूं जागै,

फाट्ये काल्यो डाल पीठ पर, तापै क्यूं धूणी आगै,

हा–हा–हू–हू करै, मदद पर कोई न थारै आवै है,

थारा मूंडा आगै थारी मैणत लूट्यां जावै है,

सूंडा, सूर, सियाळ सूंसल्या, कोई नीं मानै थारी काण।

उठावै दुख अतरौ क्यूं करसाण?''

जमना प्रसाद ठाडा 'राही' ''भाया म्हांकै तो पांती आई गरीबी, आजादी की भेंट'' जस्या गीत रच्या तो रघुराज सिंह हाड़ा ''सुनो रे मरद आजादी घणां दन बाद में आई'' टेक सूं आखी पोथी ही माण्ड दी जीं में समाज की विसंगतियां पे लोठी मार करी गी छै।

आजादी के पछै की राजस्थानी कविता की विकास जातरा में एक बात साफ–साफ देखी जा सकै छै। सरूवाती कवितावां में जठी सुख का सुपनां, आजादी मिलबा को हरख, सुतंरता को चेत, आपणा गौरवसाली इतिहास को जसगान झळकै छै, बाद की कवितावां रैयत की अबखायां अर सुख का सुपनां टूटबा को दरद समेटै छै। जिनगाणी का दूजा चितराम भी राजस्थानी भासा की ई दौर की कविता में सांवठा ढब सूं आया छै। राजस्थान की धरती रंग–रंगीली छै। आथूणी दिसा में मरूभौम को पसराव छै तो लंकाऊ आड़ी लहराता खेत छै। पाणी के बेई अबखाया झेलतो धोरां को मनख आपणीं जूण के तांई पाणीदार माण्ड का सुरां सूँ सजावै छै। जीवट को यो मंडाण राजस्थानी कविता में भी म्हैसूस कर्यो जा सकै छै। राजस्थानी की आधुनिक कविता का सांतरा पख औ मंड्या मुजब जाण्या जा सकै छै –

1-4-1 fo l ; dh nhB l| &

राजस्थानी भासा की आधुनिक कविता को सिरजण की दीठ सूँ दूजी कासी भी भासा का समकालीन सिरजण के सागै रखयो जा सकै छै। फेरूँ भी हर भासा को आपणो एक संस्कार होवे छै अर संस्कारां में रच्या पगल्या कुछैक विसय सिरजण का चेत पे लगौलग असार डाले छै। राजस्थानी की जीं कविता के तांई म्हैं आध ुनिक व्है'र ओळखां छां, वा कविता बीसवां सईका का सातवां दसाब्द तांई आपणां परपरागत विसय के ओळे–दोळे ही परकम्मा करती दीखै छै, पॅण लारला बरसां में राजस्थानी कवियां कविता की नुई जमीन तोड़ी छै, पॅण लारला बरसां में राजस्थानी कवियां का खास प्रतिपाद्य विसय आगै मंड्या मुजब मान्या जा सकै छै –

1-4-1-1 ijijk dk tl &

राजस्थान को इतिहास घणकरी रोमांचकारी घटनावां की साख भरै छै। इतिहास का ये पल–छिन सुणबा हाळां नै अबार भी रोमांचित कर दे छै। आपणी परंपरा, आपणा इतिहास को जसगान राजस्थानी कविता की मोकळी ओळखाण छै। कन्हैया लाल सेठिया को यो गीत तो जाणै राजस्थान को गौरव–गीत ही बणग्यो–

''आ तो सुरगां नै सरमावै

इण पर देव रमण नै आवै

इण रो जस नर–नारी गावै

धरती धोरां री।''

कानदान कल्पित को यो गीत भी घणों नामचीन होयो –

खेत, करम, नितनेम, धरम री पोथी है,

साथी है हळ, बैल, पसुधन गोती है,

फटी–पुराणी पाग, ऊँची सी धोती है,

कामगरा, किरसाण, जागती जोती है,

जीवै मैणत पाण, मानवी देख जठै।

मुरधर म्हारो देस, झोरड़ो गाँव जठै।

मोहम्मद सद्दीक भी मांड्यो –

जीवै जलमभौम रै खातर, प्राण होमतां जेज कठै,

बलिदानी वीरां सूँ सीखो, सीस दैवणो बात सटै,

सदियाँ जिण पर लेख लिखै, उण नै परणाम करो।

लुळ–लुळ करो सलाम, देस री माटी नै परणाम करो।।

घणकरा कवियां इतिहास की नाळी नाळी घटनावां नै आधार

बणा'र कवितावां अर प्रबंध काव्य मांड्या अर मोटो जस कमायो।

मेघराज मुकुल सलूम्बर की 'हाडी रानी' का अपणो सीस काट लेबा का प्रसंग पे 'सैनाणी' कविता माण्डी। सगळा देस में ईं कविता नै लोठी सरावणा मिली। कन्हैया लाल सेठिया की 'पातळ अर पीथळ' कविता भी घणीं प्रसिद्ध होई। कविसम्मेलनां में घणां कवियां अस्या प्रसंगां पे गीत अर कविता सुणा'र जस बटोर्‌यो। बगतसर, इतिहास नै नुईं दीठ सूं देखबा को जतन भी होयो। ज्यां का बलिदानां नै ख्यातं में सोनां का आंखर सूँ मांड्यो गयो, वां का मन की काळम्या की कल्पना कर 'र कवियां कवितावां में वां पात्रां नै जींवतो कर्‌यो अर महताऊ सवाल पूछ्‌या। प्रेमजी 'प्रेम' का एक गीत में पन्नाधाय को बेटो चंदन माँ सूँ सवाल करै छै – ''म्हूँ राजा को कुँवर न्हॅ होयो, जीं सूँ मरणो पड़ग्यो/म्हारी माँ ने ममता की कुरबानी करनो पड़ ग्यो?'' अर्जुन देव चारण इतिहास का अस्या ही एक प्रसंग पे कविता मांछता थकां क्है छै –

बेटियां है तो घर है

घर है तो भरोसौ है

भरोसौ है तो प्रीत है

प्रीत है तो जूण है

जूण है तो सांस है

सांस है तो आस है

अर

इणी आस रै बूतै

आप हौ/

नीं होवती बेटियां

तौ

आप सैंग

एक जैड़ा होय जावता

पछै

की कर बचती आ दुनिया....

...म्हारी सांसा

आप माथै

उधार है बाबोसा!

1-4-1-2 i—fr dk fprjke

हिन्दी साहित्य का इतिहास में जीं जुग नै 'छायावादी युग'' का नांव सूं बखाण्यो जावै छै, ऊँ बगत का चेत मुजब बिम्ब/पड़बिम्ब राजस्थानी कविता में भी लखावै छै। दुनिया भर की भासावां में प्रकृति मूल विसय का अवलंबन का रूप में सामै आवै छै, पॅण राजस्थानी कविता में प्रकृति काव्य की एक सांवठी परंपरा छै। चंद्रसिंह 'बिरकाळी' की 'लू' अर 'बादळी' कवितावां, नारायण सिंह भाटी की 'सांझ' प्रकृति काव्य को सांतरो उदाहरण छै। नानूराम संस्कर्ता 'कळायण, गजानन वर्मा 'सोनो निपजे रेत में' रेवतदान चारण 'बिरखा बीनणी' जसी कवितावां प्रकृति नै आलम्बन बणातां थकां ही मांडी। चंद्रसिंह 'बिरकाळी' का 'लू' कविता कथ्य की दीठ सूँ ही न्हं 'शिल्प' की दीठ सूँ भी राजस्थानी कवियां की साधना की साख भरै छै बानगी देखीजै –

चूण लेण रै चाव में, चिड़िया खोलै चांच।

भीतर सारो भूंजवै, लूआं अकरी आंच।।

दो आतुर मन मिलण नै, आमां सामां आय।

भेट्यां पहला धकधकै, लूआं जीव जळाय।।

नारायण सिंह भाटी की 'सांझ' को सरूप भी घणों सोवणो छै –

पंखिया परदेसी अजकाय, आगमै असमांनी असमांन,

उडै कोई आथूणी गुलाल, आई सांझ, घरां मिजमान।।

लुकाती दिवळो अंबर ओट, निरखबा आई ओ संसार,

धड़कती छाती धीमी चाल, मुळकता नैणां सुरमो सार।।

थूं आई थेट धरा आगूंच, पळकती राखड़ियां भर थाळ,

रात री ऐ नैनकड़ी बैन, उडे है कूं–कूं थाळ–संभाळ।।

कथ्य के विकसाव बेई भी आधुनिक राजस्थानी कवियां प्रकृति को लियो छै। नंद भारद्वाज की उल्लेख जोग छै – ''थूं पसरती कंवळी माटी/तालर में पांघरती/काची दूब रै उणियार/रूंखां री लीली ओप/थूं आभै री पुड़तां में तिरती बादळी। कांठळ में काटकती–खिंवती बीज/धोरां अर चरणोयां माथै/धारौळां ओसरतौ ठाड़ौ नीर/थूं नेह सूं भरियोड़ी नाड़ी/बावड़ी/थूं विगतां अर गीतां री आधी बात/वो आधो हेलै सूं पेलै आवणौ।''

भगवती लाल व्यास भी खुद की एक कविता में प्रकृति ईं बिम्ब बणा'र बगत का बौवार पे ओळमो दियो छै–

केसूला रौ एक फूल

रेत पे फैंक ने

लोग नाल रिया है वाट

के मौसम

अब बदळै, अब बदळै

अर वे एक फूल रै

रंग सूं खेल सकै फाग।

1-4-1-3 ^n'k u* vj ^v/;kRe*

राजस्थानी भासा का जूनां ग्रंथां की पाण्डुलिपियां अर पड़तां बतावै छै के संतां अर महात्मान् राजस्थानी में घणकरी पोथ्यां की रचना करी। लोकजीवण में धार्मिक आस्थावां अर मानतावां को अपणौ महता अर मुकाम होवै छै। धार्मिक आस्थावां के सागै ही सईकान् सूं चालती आ रही रिजक अर रीत रचनाकारां पे रंग दिखायो छै। जगत का साधारण सा दीखता विसय भी एक सध्या होया रचनाकार की रचना में ठाम पा'र महताऊ हो जावै छै। साधारण दीखती बातां में ही 'दर्शन' की ऊण्डी बात करबा को यो प्रभाव हिन्दी में छायावाद का बदता असर सूं भी बद्योछै। सीता राम महर्षि को यो गीत देखो –

दरपण में निरखै चेरै नै निरख निरख फूलै

रूप रंग नै थिर राखण रा जतन कर्या जावै,

मन हरखावण चीजां भेळी करतो रै भोळो

अन्छ्यावां रो सोनळ आंचळ रो भर्यां जावै,

अणजोरी में सूळां रै गेलै निज चरण धरै

सदा फूल री सेजां पग कुण धरण अठै पायो।

लाख जतन कर हारी सांसा–सगळो जो लगा

काया घट में सुख रो जळ कद भरण सदा पायो।।

1-4-1-4 nl ie

देस के तांई सुतंरता एक लाम्बी लड़ाई के पाछै मिली। वैवस्था में विसंगतियां भलाँ ही आमजन की अबखायां बदा दी होवै, पॅण राजस्थानी भासा को आधुनिक कवि सुतंरता की कीमत समझै छै अर हर हाल में देस की एकता बणाई राखबा को हामी छै। घणकरा कवियां देसप्रेम की अलख जगाती ओळियां माण्डी अर

'जननी जनमभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की पुरातन मानता पे पतियारो दरसायो–

धव आया घावां बहै, पीवां रकम अतोल।

संग बलियां ही चूकसी, पग मंडणा रो मोल।

सुत मरियो हित देस रे, हरख्यौ बंधु समाज।

माँ नह हरखी जनम दे, जितरी हरखी आज।।

(नाथूसिंह महियारिया)

1-4-1-5 dkeh, drk

राजस्थानी भासा का कवियां राष्ट्रीय एकता का गीत भी गुंजाया छै अर जद–जद दरकार होई ऐकता को मंत्र समाज में फूंक्यौ छै। आजादी के बाद एक जुद्ध में जद भरत जीत्यो तो रणबांकुरां का स्वागत बेई प्रेमजी 'प्रेम' एक गीत मांड्यो छो –

गोपालो जीत्यो मंदिर में छेड़ो ऊँची तान रे,

जीत्यो बंतासिंह, गुरु का गाओ सब गुणगार रे,

अल्लानूरो जीत्यो, ऊँची खींचो आज अजान रे,

पीटर जीत्यो, सुणो पादरी! द्यो दूणो सम्मान रे,

गीता अर कुरान, गुरुवाणी पे फूल चढ़ाओ रे।

जीत्यो वीर जवान, टीको काडो रोळी लाओ रे।।

1-4-1-6 ek;M Hkk"kk dk tl

राजस्थानी भासा का रचनाकारां अर हेताळुआं राजस्थानी भासा की ओळखाण बणाई राखबा बेई एक लाम्बी लड़ाई लड़ी छै। ईं लड़ाई वाँ का मन में आपणी भासा के बेई हेत अर गुमेज को भाव कूट कूट के भर दियो। ईं दौर में राजस्थानी भासा को जस गावती जतनी रचनावां माण्डी गी छै, स्यात् पाछला कस्या भी दौर में न्हॅ मांडी गी। कन्हैया लाल सेठिया को यो दूहो राजस्थानी का मान को प्रतीक ही बणग्यो–

मायड़ भासा बोलतां, जिणनै आवै लाज।

अस्या कपूतां सूं दुखी, सगळो देस समाज।।

1-4-1-7 vkstu dh vc[kk;k

आधुनिक राजस्थानी कविता जूनी कविता की नांई राजमहलां का संरक्षण में न्हॅ पनपी। राज ईं मुजरो बजाबो ऊँ का संस्कारां में कोय न्हॅ। आधुनिक राजस्थानी कवि नै तो जद भी मौको मिल्यो, ऊँ आमजन की अबखायां के तांई आंखर मांडया छै–

अड़दा रोटलना माते

दार खावा वारा

वदी गया हैं

घोर में,

गाम में,

देस में।

कोई नती जाणतू

रोटलो क्यं थकी आवैं!

कोई नती जाणतू

दार जावा वारा आ थकी आवैं!!

...जमारौ तनै खाए

याद राक

जमारो डायल नो है

नै तू रोटलो।

(शैलेन्द्र उपाध्याय)

यां अबखायां नै बखाणबा बेई कवि लोक सूं ही प्रतीक भी चुणै छै –

धिक्कार छै ईं कठफोड़ी जूण नै

सारी उमर

ठक्–ठक् करतां ही खड़ जावै

पॅण

तोल ही न्हॅ पड़ै

आवाज ठूंठ में सूं आ र्‌ही छै

के चूंच में सूं।

(अंबिका दत्त)

1-4-1-8 uhfr dh ckr

राजस्थानी साहित्य में नीति काव्य की एक लाम्बी रीत र्‌ही छै। ईं दौर को कवि भी अपणी कविता में नीति की बात करै छै अर मिनखपॅणा ईं कायम राखबा को संदेसो द्‌ये छै–

म्हारा भाई – मत करो

रेत रा कणां रो सगति परीक्षण

जद रेत

आपणां पगां पे आवै है,

प्रचंड आंधी बण'र

बिफर जावै है,

तो घणीं जबर चोट करे है

घणो जबर विस्फोट करे है।

(रमेश मयंक)

कवि अंधियारां सूं लड़बा बेई नूंते छै

समंदर में प्यास लिख

रेत में हुलास लिख

अंधारी अमावस आवण सूं पैली

आदमी में उजास लिख।

(आईदान सिंह भाटी)

1-4-1-9 ykd thok

लोक सूँ जुड़ी सगळी बातां आधुनिक राजस्थानी कविता में देखी जा सकै छै। अठै एक मोट्यार बायर गुटर गूं करता कबूतरां को जोड़ो देखबा लागै छै तो ऊँ की माँ उम्र का ऐनाण समझ ज्यावै छै (गुटर गूँ बोल्यो कबूतरां को जोड़ो/म्हूँ निरखण लागी कबूतरां को जोड़ो/अतनी सी बात माँ ने बाबुल सूं जा क्ही/बाबुल ने हाथ पीळा करबा की सोची – रघुराज सिंह हाडा) तो मोट्यार नणद पे चढ़ती उम्र का रंग देख'र भौजाई अपणा सायब सूँ क्है छै के महाजन सूँ करजो लेणो पड़ै तो भी नणद बाई को बयाव तो मँडवा द्यो (दे दो म्हारा घणां कमाऊ, जतनो ब्याज महाजन माँगे/मच्छी पड़ी रेत के तीर/माँगे डूबां डूबां नी/होठ पे अंगळी धर धर नरख्यो मदगाळ्यो मोर्यो'' – दुर्गादान सिंह गौड़)

दरअसल, लोकभासा की कविता में लोक सूँ जुड्या प्रसंग आपूंआप आ जावै छै। भरत व्यास दिवाळी पे कविता माँडी – ''पुन्न बडेरां रा आछा, बरकत है उण री रीतां में/त्यूंहार बणाया इसा इसा, गाया जावै जो गीतां में/काळी काया उजळी करणै, आई है फैरूँ दीवाळी/सब बैर भुला पिछलो गूँथो, हिवड़ै सूँ हिवड़ै री जाळी।'' गणेश लाल व्यास 'उस्ताद' तो असी दिवाळी मनाबा को आह्वान कर्यो छै जे च्यारूँ मेर उजाळो कर दे– ''साथन दिया जगा दे/दीवाळी सिणगार सयांणी, जुग रौ पंथ उजादे।''

लोक का पतियारा के ओळावे भी कवि जूण की अबखायां उकेरे छै। गोरधन सिंह शेखावत की एक कविता छै– ''अब नीं करै पन जी/जीणै री बात/वो डाकौत ने तेल घाल'र/माँ–बाप रे कपट रा/ताळा खोळै/भैरूंजी रै भोपां सूँ बतळा'र/जिया जूण रौ दुखड़ो पूछै।'' लोक में बड़ पूजण री रीत नै याद करै छै सुमन बिस्सा की ये ओळियां–

वौ देख, पग रोप'र ऊभौ

काळ नै झपेटा देंवतौ वो जूनौ बड़लौ

लुगायां उण रै सूत लपेटै

आरती उतारै, डंडौत करै

सुखरी जूण रो ऐनाण है यो बड़लो

जूण री अणंत जातरा रो साखी।''

राजस्थानी भासा का आधुनिक कविता अपणा बगत का मंडाण भी चोखी दांई बांचे छै। करज का बोझ सूं दब्या करसाण जद आत्महत्या पे मजबूर हो तो राजस्थानी को कवि कस्यां छानो–मूनो र्है सकै छो? श्याम महर्षि कविता माँडी–

आतम हत्या कर लीनी

पेमो मेघवाळ

क्यूँ के उण रो खेत

हुयग्यो हो लीलाम

लारलै बरस।

1-4-2 fo/kk dh nhB l

Nnc} dfork

हालाँकि आधुनिक सिरजण में छंदमुक्त कविता कविताई की मोकळी ओळखाण बणचुकी छै, फेरूँ भी राजस्थानी भासा में छंदबद्व कवितावां को सिरजबो लगौलग जारी छै। राजस्थानी भासा की एक जूनी खैणावत के मुजब दूहो छंदान् को राजा छो। राजस्थानी भासा की आधुनिक कविता में दूहा तो लगौलग मांड्या ही जा र्‌या छै, दूजा परंपरागत छंद भी कवि मांड र्‌या छै।

1-4-2-1 xhr

राजस्थानी भासा में सैं सूँ बत्ती बापरबा जाबा हाळी विधा छै– गीत। वस्यां राजस्थानी छंदशास्त्र में गीत भी एक छंद को नांव छै, पॅण अठी गीत सूं अरथ ऊँ ही रिजक सूं छै, जे हिन्दी में छै। राजस्थानी का रचनाकार अपणां गीतां में परंपरागत ध्वनियां नै भी गुंजावै छै अर नुआ स्वरां नै भी सिरजै छै। चूंकि लय अर सुर लोक का मन पे आज भी बत्तो असर करै छै, ईं लेखे राजस्थानी का गीतकार लोक में घणां चावा–ठावा होया। राजस्थानी गीतां का विसय सिणगार, बणज, जूण की अबखायां, देसप्रेम सूं ले'र जीवन का सगळा पख समेटै छै।

सांझ री मांग में रोज हिंगळू घुलै
आज मनस्या न मन री भुळायां भुळै
च्यानणी चांद रै संग चौसर रमै/
रात रोवै दुहागण सितारां जड़ी।
आप मिलबा न आया घरां दो घड़ी।।

(गजानन वर्मा)

एक और उदाहरण बांचो –

मरूधर में आ बात बड़ी है, कदै न झुकती पाग
सिणगारी पनिहारण में ही जोबन सागै आग
मर्‌यां पछै भी मायम रहतो सत में मिल्यो सुहाग
जगां जगां मिंदर अर मस्जिद, सौगुण जाग्या भाग।
पाणी मिसरी माळ, बाळू रा धोरा में
निपजै पन्ना–लाल, बाळू रा धोरा में
मिनखो धरम रूखाळ बाळू रा धोरा में
ऐ कुण कर्‌यो कमाल बाळू रा धोरा में।।

(तारादत्त निर्विरोध)

1-4-2-2 uoxhr

गीत की जातरा घणां मुकाम तय करता थकां आज की रकाण तांई पूगी छै। ई जातरा में नरा मोड़ आया। बिम्ब अर प्रतीकां सूं बात क्हैबा को सलीको भी बदल्यो। हिन्दी में नवगीत मांडबा की जे परंपरा विकसित होई, ऊँ को असर राजस्थानी में कस्याँ न्हॅ आतो –

मून धार ल्यो

नद्दी ने भी

भाव बिराना होग्या/

लाम्बी सोढ़

ओढ़ के सगळा

गीत मेढ़ पे सोग्या/

गरियाळा में

दमन्या दमन्या

आया तीज थुवार/

मेंहदी बण 'र

कशी हथैळी

पे माँडा मनवार।।

(अतुल कनक)

एक और सांतरो दरसाव छै –

बस्ता कुर्सी टांगिया

अणभणिया डोफाड़

कुर्सी ऊपर चाशनी

जा जा कुतरा हाड

कुर कुर करी नै लातै मारै/

कुर्सी रोज आंगुठा भारै।।

(डॉ. ज्योतिपुंज)

1-4-2-3 XkTky

ग़ज़ल माँडबा की रिजक राजस्थानी में हिन्दी सूँ आई अर हिन्दी में उर्दू सूँ। परंपरागत तौर पे गजल के तांई हेली अर पिव के बीच बात को तरीको क्है'र बखाण्यो जावै छै, पॅण आज का जुग तांई आतां ग़ज़ल घणां मुकाम तय कर्‌या छै। वा अपना बखत अर आम मिनख की बात करबा लागी छै। राजस्थानी में गजल माँडबा की परंपरा घणीं जूनी कोय न्हॅ। बीसवाँ सइका का आठवां दसक में राजस्थानी कवियां गजलाँ माँडणी सरू करी अर देखतां ही देखतां गजल को रंग अस्या परवान चढ्यो के गजल आज का दौर का राजस्थानी कवियाँ की सैं सूँ चावी विधा बणगी। आधुनिक राजस्थानी गजल जूण का सगळा ऐनाण ओळियां में समेटे छै। कुछ उदाहरण देखो –

''नदी का किनारे घर राखां हां

तो भी कदै फिकर राखां हां।।''

(लाल दास राकेश)

आर छे, न पार छै।

नाव छै 'र धार छै।।

सांस एक फूँकणी

धूंकणी अधार छै।।

(शांतिभारद्वाज)

नीं अपणै कद रौ बिस्वास

अर नापण चाल्या आकास ।।

हाथां गिणती री सांसां

पॅण बरसां जीवण री आस।।

(कविता किरण)

1-4-2-4 eDrd dk0;

दोहा, सोरठा भुजंग प्रयात छंद, कवित्त, छप्पय, मनहरण, कुण्डली, हाईकू, सवैया, जस्या छंदां में आधुनिक राजस्थानी कवि लगौलग माँड र्‌यो छै। दूहा नै छंदां को राजा क्है'र बखाण्यो जावै छै, कुण्डलिया छंद व्यंग्यकारां नै सैं सूँ बत्तो रूचै छै। वीर रस में अपणी बात क्हैबा हाळा छप्पय अर भुजंज प्रयात छंद बापरबो पसंद करता दीखै छै। कतिपय उदाहरण महताऊ छै –

ngk & अपणायत री गूजरी, हेत परोसै थाळ।

आँख्यां इमरत धारत है, बाताँ घी री नाळ।।

अन्तस में दोनूँ पळै, हेत अर विश्वास।

एक बिगाड़ै जूण नैं, एक सुधारै सांस।।

(भगवतीप्रसाद चौधरी)

Hkktx i;kr &

जुड्‌या जंग मीरं उमीरं अपारं

चल्या होय भेळा सहन्साह लारं।

गरज्जं घणां दुंदुभि ढोल तासा

उडंती चली गर्द छाई अकासा।।

जणा राव जोधा भर्‌याँ मन्न रीसाँ

पड्‌या टूटकै जंग में बीजळी–सा।

रणंभौम माँई लडंता–भिडंता।

बढ्‌या दुस्मणां रो सफायो करंता।।

(ताऊ शेखावाटी)

lkjBk

आभो म्हारी अंगरखी, तावड़ियो है पाग,

हवा अंगोछो हाथ, रेत पगरखी हूणिया।
मंदिर मसजिद खोजती, दीवी उमर गंवाय
हिये बिराजे आप, खोल किंवाड़ा हूणिया।।

(हरीश भादाणी)

d|.Mfy;k

लोग लगावै बापड़ा, कि भूवां रा बाग
पाणी कोनी पूरसल, ऊपर बरसै आग
ऊपर बरसै आग, कैंवे अब क्यूं कर पाळां
नहरां देगी दगो, पड्या है सूखा खाळा,
म्हारी मानो बिण पाणी रो, बाग लगावो
मरू रा साथी खेत खेत खेजड़ा बधावो।।

(मोहन आलोक)

gkb|d|

तूं खा तिवाळा
बै खासी तर माल
भाग्य विधाता ।

(केसरीकांत शर्मा 'केसरी')

{kf.kdkok

मायतां रा फूल घालण
गियो परो हरिद्वार/
न्हांवती बगत गंगा में डूब्यो
हुयग्यो बेड़ो पार।।

(रामजीलाल घोड़ेला)

1-4-2-5 i|c/k dk0;

आधुनिक राजस्थानी की प्रबंध काव्य परंपरा पे डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा की या टीप महताऊ छै – ''कविता री प्रबंधात्मक सरूप री पिछाण आप री कथात्मकता अर चरित्रां री विविधता रै कारण हुया करै। इणी'ज खातर प्रबंध काव्य हमेस मुक्तक काव्य या गीतिकाव्य परंपरा सूं आपरी जुदा ओळखाण राखै। प्रबंध काव्य री लोकोत्तर चेतना अर आखै जीवन तांई फैल्योड़ो उण रो प्रतिपाद्य इणां नै मुक्तक काव्यां सूं पूरी तरां जुदा कर देवै क्यूंके इणां री प्रबंधात्मकता हरमेस कवि रो साध्य हुया करै। राजस्थानी साहित्य री सरूआत ही 'रासो' काव्यां री अटूट चरितमूलक प्रबंध काव्यां सूं हुयी ही पॅण मध्यकाल में इण परंपरा रो निभाव नीं कर्‌यो जा सक्यो। इण वास्ते आधुनिक काळ रा कवियां नै नुवैं सिरै सूं प्रयास सरू करणा पड्यो। इणां री घणखरी प्ररेणा रा स्त्रोत हिन्दी में रचीज्योड़ा आधुनिक काव्य प्रबंध हा। (जागती जोत, दिसंबर 2006)

रामेश्वर दयाल श्रीमाली को 'हाडी रानी', नारायण सिंह भाटी को 'दुर्गादास' ए 'मीराँ' अर 'परमवीर',

मुकनसिंह को 'सीसदान' रघुराज सिंह हाडा को 'हरदौळ' ताऊ शेखावाटी को 'मीरां'– राणा जी संवाद 'अर हम्मीर', प्रेमजीप्रेम को 'सूरज', गौरीशंकर कमलेश को 'हाड़ा को न्याव' राजस्थानी की जूनी काव्य परंपरा मुजब वीरां अर जुझारां की वीरता नै केन्द्र में रखाण 'र मांड्या गया ग्रंथ छै। महावीर प्रसाद जोशी कृष्ण चरित नै आधार बणा'र 'विंद्रावन', 'मथरा', 'द्वारिका', 'धरमक्षेत्र', 'अंतरधान' जस्या ग्रंथा सिरज्या तो राम चरित्त सूं जुड्या कथानक पे श्रीमंत कुमार व्यास 'रामदूत' अर विश्वनाथ विमलेश 'रामकथा' की रचना करी। सत्यप्रकाश जोशी आधुनिक राजस्थानी प्रबंध काव्य नै नुओ संस्कार दियो। डॉ. आसोपा माण्डे छै – ''(सत्यप्रकाश जोशी रा) प्रबंध काव्य 'राधा' मांय राधा री प्रेमानुभूमि नै नूंवो कोण दियो है अर जुद्व री विकराळता रा नुवा संदर्भ उकेर्या है। 'बोल भारमली' लोकगीतां री मिठास अर मांसल प्रेम री निजूणी पिछाण रो सांतरो काव्य है। गिरधारी सिंह पड़िहार रो 'मानखो' भी परंपरित जुद्वचिंतन री राजस्थानी मानता सूं पसवाड़ो फोरनै जुद्व री विकराळता नै समाज रो अहित करण आळा भाव नैं प्रकट करै।''

1-4-2-6 cky dfork

राजस्थानी भासा में बाल साहित्य का सिरजण की परंपरा घणी लोंठी कोय न्हॅ पॅण सत्यदेव संवितेन्द्र अर कृष्णा कुमारी जस्या नरा रचनाकार लगौलग बाल साहित्य माँड र्या छै। टाबरां का मन पे लय अर तुक बत्तो असर करै छै, ईं लेखे ज्यादातर बालकवितावां तुकांत ही होवे छै। हिन्दी की बालकवितावां की नांई यां कविता का विसय में भी दोहराव देख्यो जा सकै छै, पॅण महताऊ बात या छै के राजस्थानी का आधुनिक रचनाकार अपणा सिरजण सूं ईं खेतर में भी बत्तो काम कर र्या छै।

1-4-3 Nnexr dfork

हिन्दी में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला सूं नुई कविता की सरूवात मानी जावै छै। या नुई कविता छंदां का बंधन सूं मुगत छी अर ई कविता ने जूण का अस्या रंग भी अपणा चितराम में अंगेज्या, ज्यां पे अकार तांई कवि की दीठ न्हॅ पड़ी छी, या जे अबार तांई कविता के बेई वर्जित फळ की नांई छा। राजस्थानी भासा में लोठो सिरजण गीत परंपरा में होयो। पॅण सन् 1971 आतां आतां रचनाकारां को एक वर्ग छंदमुगत कवितावां मांडबा लाग्यो अर देखतां ही देखतां छंदमुगत कवितावां राजस्थानी भासा का सिरजण की मूळ धारा बणगी। आज राजस्थानी की छंदमुगत कविता आपणी खास ओळखाण रखाणै छै।

छंद मुगत कविता छायावादी सुर भी रखाणै छै अर सगळी मिनखजाति की बात भी करै छै। विसय की दीठ सूँ ईं कविता को पसराव 'व्यष्टि सूं समष्टि' तांई छै। कुछ उदाहरण ईं बात की साख भरै छै–

(1) ओ कुण सो सहर
जठै मिरत्यु
चोखा फुटरा रमतियां
जैड़ी इणगी–उणगी लटकै?''

(यादवेन्द्र शर्मा चंद्र)

(2) खसमांखांणी तोप नै इचरज व्है
जद उणनै छाह पड़ै
कै उणरै दांत छोड़ बत्तीसी ई कोनी
इण नवा इलम रै पांण
वा आपरै बोखै मूंडै सूं मुळकै।

(चंद्रप्रकाश देवल)

(3) बूढै बैसाख

अर बाळणजोगै जेठ री बाथां में

बळी–तपी

हरी हूंवण री हूंस दाब्यां

सूती धरती

अंग अंग भींजै

का रींझै

मुळकै–गावै

जद करी करै सावण।

(सांवर दइया)

1-4-4 mGFkk

आधुनिक राजस्थानी कविता में दूजी भासावां की महताऊ पोथ्यां अर जूना शास्त्रां को उळथो करबा को काम भी लगौलग चाल र्‌यो छै। ईं सूँ सैं सूँ बत्तो लाभ यो छै के राजस्थानी भासा का पाठकां के तांई दूजी भासावां का महताऊ अर अरथवान सिरजण भी बाँचबा बेई मिल र्‌या छै। कालिदास का जगचावा संस्कृत ग्रंथ 'रघुवंश' का उळथा की एक बानगी देखा–

जणबाणी पोळ चिणी कुण की, सुविग्य पैलड़े कवियां नै

डोरो सो मेरी गति जाणूं, बज बिंधी उण मणियां में।।

(उळथो–महावीर जोशी)

1-5 vkt jh dfork dh fuj[k&ij[k

1-5-1 jl dh nhB l¡ &

भारत का साहित्य सास्त्रां में साहित्य का नौ मूळ रस मान्या छै, जीं सूँ सिरजणहार नाळा नाळा भावबोध ा अभिव्यक्त करै छै। ये नौ रस छै– सिणगार, वीर, भगति, वात्सल्य, वीभत्स, हास्य, जुगुप्सू, करूण अर रौद्र रस। बगतसर जुगुप्सू (जे में घिन जगा द्‌ये) अर वीभत्स रस कविता में कम होता जा र्‌या छै, रौद्र रस का दरसाव भी ज्यादातर प्रबंधकाव्यां में जुद्व का वर्णन में ही देखबा बेई मिलै छै। जद जद देस की सीमा पे संकट आयो अर म्हांकी फौजां नै जुद्व लड़णो पड्‌यो, राजस्थानी भासा का आधुनिक कवियां वीर अर ओज रस की कवितावां मांड राष्ट्रप्रेम की ज्योत जगाई छै। सिणगार तो रसराज छै ही अर आज भी राजस्थानी भासा का गीतां में वियोग अर संयोग सिणगार की प्रमुखता छै। राजस्थानी कवियां को हास्य व्यंग्य कवि सम्मेलनां में घणों चाव सूँ सुण्यो जावै छै। कुण पतियारो धरेगो ईं बात पे के राजस्थानी भासा में 'रामकथा' जसी रचना सिरजबा हाळा विश्वनाथ 'विमलेश' दूर दूर तांई कविसम्मेलनां में हास्यकवि का रूप में न्यूंता जावै छा?

राजस्थानी भासा की आधुनिक कविता में रस की बरखा का कुछ दरसाव देख्या जा सकै छै –

flxkj jl &

बूंद पड़ी जे ताळ में, धूजण लागी देह।

थां बिन बिलखै अेकली, आकळ–बाकळ नेह।।

मूमळ जैड़ी नार ने, कितरो रयौ गुमेज।
जद देखूं म्हूं चांद ने, टोसा देवै सेज।।

(मदनमोहन परिहार)

ohj jl

बेताळ बतूळो नाचै है, जिण रै आगै संदेस लियां
राती नै काळी पीळी आ, कुण जांणै कितरा भख लिया
वै संख बजै सरणाआं रा, कोई गीत मरण रा गावै है
डंकै री चोट करै भीतां, बायरियो ढोल बजावै है,
विकराळ भवानी रमै झूम, धरती सूं अंबर तक चढ़ती।
अंधार घोर आंधी प्रचंड, आ धुंवाधोर धव–धव करती।।

(रेवतदान चारण)

okRlY; jl

मुळक मुळक ए मुळक मुळक, अरी लाड़ली मुळक मुळक
तू मुळकै तू ईं आंगण में मोती ढुळज्या रळक रळक।।

(प्रेमलता जैन)

gkL;&O;X;

घास्यो कह दुत्कारतो, कोनी करतो काम
देख इलेक्शन बोल र्यो ''आ रे घासीराम''
जीप में बैठ भायला
पुगा द्यूं ठैठ भायला।।

(संपत सरल)

लाडू गोविन्द दैव कै, लाडू गोपी नाथ,
लाडू का परसाद नै, पसर्या रैवे हाथ,
पसर्या रैवै हाथ, पवनसुत ने भी भावै,
लाडू सामै मेल, जैन महावीर रिझावै,
पारबती झल्लाय, पूत छै जात बिगाडू,
गास्यो ले न गणेस, थाळ में जै न हो लाडू।।

(बिहारीशरण पारीक)

Hkxrhjl

चायो हरि नै धोखे देणों
कैड़ो हूँ म्हूँ हीणो।

ऊपर सूं मरणै की कैतो,
मांय चावतो जीणो।।
रे हरि, जैड़ो भी हूँ थारो
सेवक सबसूं फोरो।
आत्मलीन करणो है थां ने
जीव निकाळो सोरो।

(श्रीमंत कुमार व्यास)

jkn jl

जणा ज्यां हथेळी धर्यां राजपूतं
चल्या जंग मांई महाकाळ दूतं
धरा डोलणै लागगी अंब काप्यो।
दळं साह में घोर आतंक मांच्यो।।
जणा राव जोधा भर्या मन्न रीसां
पड्या टूटकै जंग में बीजळी सा,
रण भौम मांई लडंता 'भिडंता,
बढ्या दुस्मणां रो सफायो करंता।।

(ताऊ शेखावाटी)

d:.k jl

''मन रा मीत कान्हा रे
जग में जे मंडग्यो घमसाण
तौ
भाई पर भाई करसी वार
आपस में लड़सी, मरसी मानखौ
चुड़ला फोड़ैला काळा ओढ़
अमर सुहागण थारी गोपियां
कांमणियां बिकसी बीच बजार
कुणं तो उघड़ी बैना नै ढांकसी
पिरथी पुरखां सूँ होसी हीण
टाबर कहासी बिण बाप रा
कुण करसी धीवड़ियां रो ब्याव
कुण तो कडुंबौ वां रो पाळसी

अणगिण मावड़ियां देसी हाय

मुड़ जा, फौजां नै पाछी मौड़लै।''

1-5-2 vyadkj dh nhB l &

''राजस्थानी छंद शास्त्र' का अलंकार हिन्दी का छंद 'शास्त्र' सूं थोड़ा नाळा छै, पॅण आधुनिक राजस्थानी कविता को अलंकारां की आड़ी बत्तो ध्यान कोय न्हॅ। ईं को एक बड़ो कारण यो भी छै के ईं दौर की कविता भासा के साथ तांई चमत्कार सगति पैदा करबा बेई इस्तेमाल करबा पे भरोसो न्हॅ करै। आज का दौर का कवि के बेई भासा एक अलंकार कोय न्हॅ, हथियार छै, जीं की मदद सूं ऊ जूण की अबखायां सूं लड़बा अर लड़बा की सीख देबा में विस्वास करै छै। राजस्थानी को परंपरागत अर खास मान्या जाबा हाळो वयणसगाई अलंकार ईं लेखे ही आधुनिक कविता में बत्तो न्हॅ दीखे। 'अनुप्रास, श्लेष, यमक' जस्या अलंकार भी मध्यकाल अर प्राचीनकाल की कविता की तुलना में कम बापर्‌या होया लागै छै। हाँ, नुई कविता उपमा अलंकार को भरपूर प्रयोग कर्‌यो छै–

1. ''घर की दैहळ पै
   सूरज ईं ऊभौ देख'र
   अेकसमचै
   ताण ली बाफण्यां
   रात भर सूत कातती
   डोकरी नैं...।''

(ओमनागर)

2. मई सागर नै होम ना सोपाड़ मंय
   वकेरायला ळें
   कारा–कारा / गोर गट्‌ट लोड़िया पाणा
   अेम लागे है
   जाणे
   जिन्दगी नू जहर गरातक रोकी नैं
   जगे जगे
   विराजमान थईग्या है
   नाना नाना सिवलिंग।।

(उपेन्द्र अणु)

3. लावतो म्हैं
   कीरत रा कूंकू – पगल्या
   धोखै रा समदर – झाग
   सैमुण्डै किसमत रौ रूसणो,
   पीड़ री चिरलाटी कै किल्लौळ,

देंवती वा सबनै छाती आसरो।

थारी छाती जी' सा

म्हारी तिजोरी होवती–

जिण रै बारै,

कुतर कर दीन्यो म्हारो बालपणो,

ऊमर रा ऊंदरा।

(मालचंद तिवाड़ी)

अनुप्रास अलंकार को सांतरो रूप ताऊ शेखावाटी का हम्मीर महाकाव्य में, पढ़बा बेई मिलै छै –

ही केसरिया काया किसोर

काची कूंपळ सी कोमलड़ी।

कुंजन कुंजन करती किलोळ

फिरती कूंकती कोयलड़ी।।

1-5-3 Hkkl k dh nhB l! &

राजस्थानी भासा नैं भांत भतीळा रंग ईं की बोलियाँ दिया छै। नाळी नाळी बोलियाँ को फूटरोपॅण तो ई भासा की खासियत छै ही, कविता का मुकाम पे भासा का नाळा नाळा संस्कार भी आधुनिक राजस्थानी कविता में दीखै छै। एक आड़ी वा भासा छै, जिंनै राजस्थानी को 'वीर रस काव्य' संस्कार में मिल्यो छै तो दूजी आड़ी वा भासा भी छै, जीं पे बगत को असर देख्यो जा सकै छै। या भासा बगतसर नमळी छै, ठेठ को ठाठ रखाणता सतां भी या भासा अंग्रेजी अर हिन्दी के सागै दूजी भासावां का आम बोलचाल का सबद बापरबा सूं गुरेज न्हॅ करै। आधुनिक राजस्थानी कविता की भासा का ये दोन्यूँ नाळा संस्कार याँ उदाहरणां में बाँच सकां छां –

सज्जो अेक संघट्ठण पंथ पलटठण, राज उलट्ठण आज बढ़ो

मन में मिनखापण नैन सुरापण, खांधै खांपण मेल कढ़ो।

तपै अंबर भांण धरा किरसांण, पसीनै रै पांण ज पाकत खेती।

पण मूंछां रै तांण कियां करड़ांण बिना घमसांण कोई लाटले खेती

(रेवतदान चारण)

माँ

स्ट्रेप्टोमाइसिन रा इंजेक्शन

अेकानी मैल दे माँ, अर भरोसो राख

के म्हूँ अब सिगरेट नीं पीवूंला।

(तेजसिंह जोधा)

आधुनिक राजस्थानी कविता को एक सांतरो पख यो भी छै के कवियां आपणी बात में बत्तो असर पैदा करबा की दीठ सूँ खैणावतां अर मुहावरां को सांतरो प्रयोग कर्‌यो छै–

मैं ज्यां के तांई जुपूं, मनै बै खुदी फोड़बो चावै छै

म्हारै माळै भाटा बगा'र, बै ओठा मन में स्यावै छै

जीते न कुम्हार कुम्हारी ने अर कान धणी का जा एंठै

या एक कहावत छै जीं ने बै सांची कर'र दिखावै छै,

थें टपटेला खाता फिरस्यो, होता सांतर भी खुला नैण।

मैं छूं बजार की लालटैण।।

(बुद्धिप्रकाश पारीक)

लोक भासा का कवियां लोक में प्रचलित ध्वनियान् को भी अपणी बात में बत्तो असर पैदा करबा बेई सांवठो प्रयोग कर्‌यो छै–

झूठ कथां तो ठौल धरौ भाई, सांच कथां तौ साख भरौ भाई

अब इण घर री रीत सुणो भाई, लोकतंत्र रो गीत सुणो भाई

छोड़ो सगळी ताक–झांक

धिन् ताक धिना धिन ताक् ताक्

झिणझिण झपाक्, झिणझिण झपाक।।

(श्याम सुंदर भारती)

1-6 bdkbZ lkj

आजादी के बाद की राजस्थानी भासा कविता का गुण अर सुभाव में एक नुओ विकसाव आयो छै। पारंपरिक छंदान् अर अलंकारा को बापरबो भलाँ ही कम होयो पॅण नुआ विसय अर नुई भासा कविता का आभै मांही राजस्थानी कविता नै एक नुई उड़ान दी छै। आज को राजस्थानी कवि आतंकवाद, भ्रष्टाचार, भूख, महंगाई, जुद्व के खिलाफ खम ठोक'र ऊब्यो छै। ऊँ का चेत अर चिंतन में आपणी संस्कृति, आपणा इतिहास अर आपणा संस्कारां बेई गुमेज छै।

सैं सूं महताऊ बात या छै के राजस्थानी भासा को आज को कवि कविता नै मन बहलावण का चीज न्हॅ समझै। ऊ जाणै छै के सबद की सगति कम न्हॅ होवै अर ईं लेखे वो अपणी सगती के तांई सोच समझ'र बापरबो चाह्वै छै। नीरज दइया की ईं कविता ईं चेत की साख भरै छै – ''रामजी!/माफ करजो म्हनै/कविता म्हारै सारू/अैड़ी–वैड़ी बात नीं है।/क्यूं के म्हैं/कसमसीजतो–कसमसीजतो सीझ परो/फगत लिखूँ की ओळयां/अर मुगति पाऊं/उमर री पीड़ सूं/अर उण पीड़ पाछलै/सुख नै/जद जद भोगूं/लोग कैवे–/लिखी है कविता।''

आधुनिक राजस्थानी कविता का ईं दौर में कवि के तांई अपणी सबद सगति के सागै कविता की तागत को भी अहसास छै। ईं लेखे ही तो मदनगोपाल लढ़ा माण्डै छै–कविता/नीं कराय सकै बिरखा/कविता/नीं उगाय सकै सूरज/कविता/नीं धपाय सकै पेट/पॅण कविता/जरूर बता सकै मारग/पाणी लावणै रो/रात टिपाणै रो/भूख मिटावण रौ।''

आज की राजस्थानी कविता आपणीं सगळी जागत सूं मिनखपॅणा के तांई ईं का सगळा फूटरापण समेत बँचाबा की खेंचळ में छै अर या ही बात आधुनिक राजस्थानी कविता के तांई एक खास ओळखाण द्‌ये छै।

1-7 vH;kl jk loky

1. आधुनिक राजस्थानी कविता को काळखण्ड तय करता थकां कांई कांई बात ध्यान राखणी चाहिज?
2. आधुनिक राजस्थानी कविता का खास खास विसय कांई छै?

3. राजस्थानी भासा की आधुनिक कविता भासा के तांई अलंकार न्हॅ, हथियार मानै छै।' कांई आप ईं बात सूं सहमत छो?

4. राजस्थानी भासा को आधुनिक कवि परंपरा सूं भी जुड़ाव राखै छै। कस्यां?

5. आधुनिक राजस्थानी कविता की भासा पे एक टीप लिखो।

6. व्यंग्य आधुनिक कविता को सैं सूं चावो–ठावो सुर छै। कस्याँ?

7. ''राजस्थानी कविता में जुद्व रो दरसाव'' विसय पर एक टीप माण्डो।

8. आधुनिक राजस्थानी कविता में लोकजीवण की झांकी कसी दीखै छै?

9. 'गीत आज भी राजस्थानी कविता की सैं सूं चावी विधा छै। क्यूं? समझावो।

10. राजस्थानी भासा की नुई कविता पे टीप मांडो।

11. मेघराज मुकुल की चावी रचना 'सैनाणी' पे नृत्य नाटिका तैयार करो।

12. जूनी राजस्थानी कविता जुद्व को आह्वान करै छी, पॅण आधुनिक राजस्थानी कविता जुद्व की विकराळता भासा नै दरसावै छै। दोन्यूं तरह की कवितावां एकठी करो।

13. राजस्थानी भासा की नाळी नाळी बोलियां में एकरूपता का तत्व खोजो।

1-8 I nHk xFk

1. डॉ. नारायण सिंह भाटी – 'सांझ', 'दुर्गादास', 'मीराँ', 'परमवीर'।
2. सत्यप्रकाश जोशी – राधा, बोल भारमली।
3. कन्हैयालाल सेठिया – पातळ अर पीथळ।
4. मेघराज 'मुकुल' – सेनाणी।
5. रेवतदान चारण – इन्कलाब री आंधी, 'लिछमी'।
6. रामेश्वरदयाल श्रीमाळी – हाडीराणी।
7. रघुराजसिंह हाडा – हरदौळ।
8. मुकनसिंह – सीसदान।
9. प्रेम जी प्रेम – सूरज।
10. गोरीशंकर विमलेश – हाडां को न्याव।
11. नाथूदान मेहारिया – 'वीर सतसई'।
12. चन्द्रसिंह – लू अर बादळी।
13. गजानन – सोनो निषजे खेत में।
14. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य।
15. डॉ. कल्याणसिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा एवं साहित्य।

bdkb&12

jktLFkkuh Hkkl k jk efgyk y[ku

bdkb jk eMk.k

12.1 उद्देस्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 राजस्थानी साहित्य में महिला लेखन री परम्परा अर विकास

12.4 राजस्थानी साहित्य रो आदिकालीन तथा मध्यकालीन महिला लेखन

12.4.1 प्रमुख रचनावां

12.4.2 प्रमुख रचनाकार

12.5 आधुनिक राजस्थानी साहित्य रो महिला लेखन सामान्य जाणकारी

12.6 आधुनिक काल री प्रमुख महिला रचनाकार एवं रचनावां

12.7 राजस्थानी महिला लेखन री निरख–परख

12.8 प्रमुख महिला लेखन रा उदाहरण

12.9 इकाई सार

12.10 अभ्यास सारू सवाल

12.11 सन्दर्भ ग्रंथ

12-1 mnnL;

- ई इकाई में राजस्थानी भासा में अजै लग हुया महिला लेखन री विगत मांडी गई है जिणरै मुजब राजस्थानी भासा रा आदिकाल सूं ही राजस्थानी महिला लेखन सरू होयग्यो हो।
- राजस्थानी साहित्य रा आदिकाल में मौखिक रूप सूं काव्य रूप में लिख्यो महिला साहित्य मिळै–पण हाथलिखी पोथ्या में काव्य रूप में ईधको साहित्य नहीं मिळै।
- राजस्थानी साहित्य रा मध्यकाल में भगती अर संत साहित्य रै साथै ही नीति, वीरता अर लोक साहित्य भी मोकळो मिळै।
- राजस्थानी साहित्य रा आदिकाल सूं लैय'र अजै तांई हुया महिला लेखन नै सामी राखणो ही इण इकाई रो ध्येय है।

12-2 iLrkouk

राजस्थान में आदि काल में न्यारी–न्यारी रियासतां ही अर उणारै नीचे जागीरदारी व्यवस्था ही। समाज चार वर्णां में बंटयोड़ो हो जिणरो आधार कर्म (कामकाज) हो। जिण तरै जूना भारत में ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य अर शुद्र चार वर्ण हा। उणी तरह राजस्थान में भी काम रै आधार सूं सामाजिक व्यवस्था बणयोड़ी ही। समाज धर्म अर जाति रै आधार सूं बणयोड़ो हो। जन समाज में सद्भाव अर मेलमिलाप हो। जद दुस्मण हमलो करतो तद् बे सब एकजुट होर युद्ध करता अर देस नै बचावण में लाग जांवता। समाज 'पुरुष' प्रधान हो। नर और नारी परिवार अर समाज रा आधार हा। नारी रो समाज में सम्मान हो उण नै राज अर समाज में भी आदर हो। अेड़ा

भी उदाहरण मिलै जद अठां री नारी मां, बहन, अर जोड़ायत रै रूप में आपरो धरम निभायो अर रियासत और जागीर रो राजकाज रो काम भी करियौ। जुद्ध में दुसमी सूं झगड़ो भी मोल लियो अर खुद रा अमोला प्राण अरपण करिया। इण तरै वीरता, भगती, प्रेम, नीति देस, भगती, संस्कृति गौरव, आन–मान अर उजळा पखां सूं भरियोड़ो वातावरण आदि काल अर मध्य काल में बणियोड़ो हो।

समाज में पैली पड़दा प्रथा नहीं ही मध्यकाल में सरू होई। बाल विवाह, सती–प्रथा, बहु विवाह प्रथा, अणमेल ब्याव जैडी कुरीतां ही अर कठई–कठई नारी नै इण दबाव अर तनाव में जीवणो पड़तो। राजकाज रे साथै–बा समाज सेवा अर साहित्य लेखन भी करिया करती जिणमें उण जुग रो दरसाव सामी आयौ है। गद्य अर पद्य दोनूं ही विधावां में महिला साहित्य लेखन री जाणकारी मिळे। जूनो साहित्य मौखिक परम्परा रो ज्यादा है अर लोक साहित्य री न्यारी–न्यारी विधावां में लिखीज्यौ है, जिणा में बातां, लोक कथावां, लोक गाथावां, लोक नाट्य अर लोक गीत ईधका का मिळै।

12-3 jktLFkkuh lkfgR; e efgyk y[ku jh ijEijk vj fodkl

राजस्थानी साहित्य रा आदिकाल रो महिला लेखन, वीरता, भगती, नीति अर श्रृंगार सूं भरियोड़ो है पण तादाद में कम है। राजस्थानी साहित्य रो आदिकाल विक्रम री 9वीं सदी सूं सरू व्है अर 15वीं सदी ताईं गिणीजै। इण समै में संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंस भासावां रो घणो असर हो। राजस्थानी भासा रो जलम अपभ्रंश सूं हुयौ इण कारण उणरी सबदावली, विधावां अर काव्य अर गद्य री सैलियां रो असर भी साफ निगै आवै। राजस्थानी भासा रो जूनो महिला लेखन धार्मिक, वीरता, देसभगती, नीति, सिणगार रा भावां भरयौड़ो मिळै। इण पुराणा महिला लेखन री मौखिक परम्परा विक्रम री बारहवीं–तेरहवीं सदी लग चालती रैयी–इणरै पछै ही हाथलिखी पोथ्यां रै रूप में ओ साहित्य निगै आवण लागो।

भारतीय इतिहास मायं वैदिक काल सूं महिला लेखन री परम्परा रैयी है। सरु में नारी रौ लेखन वेद मंत्र अर रिचावां रै रूप में भारतीय संस्कृति रै इतिहास मांय निगै आवै। महिला लेखन रौ पैलो रूप ऋग्वेद रै 'प्रथम मंडल रै छब्बीसवां 'सूक्त' रै सातवें 'श्लोक' में देख्यौ जाय सकै, जिकौ कै रोमशा ब्रह्मवादिनी रौ रच्योड़ौ है। इणरै अलावा, उणी मंडल रौ 179, 'सूक्त' रा दो श्लोक 'लोपामुद्रा' नांव री महिला रौ लिख्यौडौ है। इणरै पछै ऋग्वेद रै दूजै मंडल में ई कैयी ग्यानी महिलावां री रिचावां मिळै, जिणमें श्रद्धा, कामायिनी, यमी, वैवस्विती, पोलोमी अर सचि रौ नांव सिरै गिणीजै।

उण बगत नारी नै सम्मान रौ दरजौ मिळ्योड़ौ हो। समै रै साथै नारी सगती कमजोर हुंवण लागी। 'आर्य' अर 'अनार्य' रै आपसी झगड़ां सूं जाति रा बंधण कठोर हुया अर महिलावां रै माथै आंकस में ई बधापौ हुयौ। डॉ. सावित्री सिन्हा रै मुजब– ''मैत्रायणी संहिता में उनका उल्लेख जुआ तथा मदिरा के साथ हुआ है। तैत्तिरीय संहिता में एक वाक्य में स्त्री एक बुरे शुद्र से भी नीची है। ऐतरेय ब्राह्मण में भी यह आशा प्रकट की गई है कि स्त्री अपने पति को उत्तर न दे।''

इणरौ मतलब ओ नीं हो कै उण बगत नारी रौ दरजौ अेकदम घट ग्यौ हो। ब्राह्मण ग्रंथां रै मांय महिलावां नै मांन–सनमान दैवण रा अेलांण ई मिळै। 'तत्वग्यांन' री चरचा में बे नर रै, सागै सरीखा रूप सूं भाग लैवती। 'ऐतरेय ब्राह्मण अर 'कोषीतकी ब्राह्मण' में अैड़ी कैई महिलावा रा नांव मिळै। नारी रै तप अर तेज रो रुपाळौ रूप उण काल रै ग्रंथां मांय सावळ निगै आवै। द्रौपदी, दमयन्ती, कुंती अर सावित्री जैड़ी महिलावां समाज मांय नारी सगती री पिछांण बणीं। शास्त्रां में ई महिलावां नै घणौ ऊंचौ दरजो मिळयोड़ौ हो।

वैदिक अर उत्तरवैदिक काल रै मांय विदूषी महिलावां री मूल प्रवृत्ति धार्मिक साहित्य रो सिरजण करण री ही। इण खातर उण जुग रौ महिला लेखन जप, तप, यज्ञ अर साधनापरक रैयौ है। धार्मिक मान्यतावां जीव, जगत अर ब्रह्म रै रूप रो बखाण करण में महिला लेखिकावां री घणी रुचि रैयी है। सदाचार री पालणा, आचरण री पवितरता अर नैतिक जीवन रै उत्थान खातर जिकौ साहित्य लिख्यौ गयौ उणरै मांय नारी मन री भावनावां उभर'र

साम्ही आई है। याज्ञवल्क्य रिसी री दोन्यू जोड़ायत मैत्रेयी अर काव्यायनी जैड़ी ग्यानी महिलावां रौ स्मृति ग्रंथां रै सिरजण में महताऊ योगदान रैयौ है। बे याज्ञवल्क्य रिसी रै सागै जिकौ संवाद करै उणरै मांय ईश्वर रौ गुणगान अर आचार–विचार री मान्यतावां रा दरसण हुवै। राजनैतिक दीठ सूं ई मौर्य, गुप्त अर हर्षवर्द्धन रै समै ई कैई ग्यांनी महिलावां रौ नाटक, ज्योतिसी, गणित अर गीतिकाव्य जैड़ा खेतर में सरावणजोग योगदान रैयौ है। लीलावती जैड़ा गणित रा ग्रंथ ई महिला रचनाकार री देन है। इणरै अलावा महिला लेखन में नारी रा कर्त्तव्य, उणारा दायित्व अर अधिकारां माथै ई चरचा करीजी है। बौद्ध साहित्य रै मांय भिक्खुणियां रा वैराग रा गीत मिळै। थेरीगाथा रै नांव सूं छप्योड़ी रचनावां में अम्बपाली रा रच्यौड़ा श्लोक उणनै सिरै कवयित्री साबित करै। इणी तरै जैन साहित्य रै मांय महिला रचनाकार रा नांव जैनसूत्र रै सागै जुडयौड़ा मिळै। जैन महिला रचनाकार भगवान महावीर री स्तुति अर जैनागम में लैय'र कीं छुटपुट विचार राख्या है। पुराणै समै री रचनावां में मूळ रूप सूं जीवन रै ऊचां आदरसां री थापणा व्ही है। उण जुग रै साहित में धरम अर आध्यात्मिकता रौ पूरौ प्रभाव देखण नै मिळै। दसवीं सताब्दीं अर जैनकाल रै पछै हिन्दी साहित्य रौ आदिकाल सरु हुवै। इणरै आगे समै री दीठ सूं महिला लेखन नै मध्यकाल में राख'र उणरौ लेखो कर्‌यौ जा सकै।

राजस्थानी भासा रै इण साहित्य माथै जुग रौ असर सदा रैयौ है। समै अर उणरा हालात नै आधार बणा'र ही साहित्य रौ सिरजण हुयौ है। साहित्यकार जिण जुग में रेवै, उणरा हालात नै नजदीक सूं देखै अर भोगै। इण कारण उणरी अनुभूति लेखन रौ आधार लैय'र आखरां ढळै। किणी भी भासा रै साहित्य री निरख–परख करती वेळा उण जुग री प्रवृतियां नै आधार बणायौ जावै। राजस्थानी साहित्य रा इतिहास लेखन में प्रवृत्ति अर काव्य धारा नै ई आधार घणा'र आखै साहित्य रौ काल विभाजन हुयौ है।

4. राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल में वीरगाथावां सूं भरयोड़ौ साहित्य रचिज्यौ, जिणमें वीरता रौ भाव प्रधान हो अर उणारै साथै भगती अर सिणगार री रचनावां ई रचीजी। राजस्थानी भासा रै इण लेखन में अठांरी महिलावां रौ महताऊ योगदान रैयौ है। वीर काव्य परम्परा में देसभगती, संस्कृति गौरव, आन, मान अर मरजाद जैड़ा ऊजळा पखां नै दीठ में राख'र महिला लेखिका बां भी खुदरी कलम सूं अमोला साहित्य रौ सिरजण करयौ है। राजस्थानी साहित्य रै इतिहास सूं ओ सत साम्ही आवै कै आदिकाल सूं ई अठांरी महिला लेखिकावां साहित्य लेखन रौ काम करती रैयी हैं।

मध्यकाल तक आतां–आतां महिला लेखिकावां री आ तादाद बंधती गयी। उणांरौ भांत–भांत रा विसयां, भाव अर सैली नै लैय'र लिख्योड़ौ घणौ साहित्य तौ छप'र साम्हीं आयौ है पण अणपार साहित्य अजै लग अण छप्यौ है। मध्यकाल में भगती री प्रवृति रै कारण महिला रचनाकार ज्यादातर भगती काव्य री सिरजणा करी। शैव वैष्णव अर शाक्त भगती रा सगुण अर निरगुण दोन्यूं ही रूपां नै आधार बणा'र महिलावां राजस्थानी साहित्य रच्यौ है, जिणमें घणखरौ साहित्य काव्य में रच्योड़ौ है। भगती रै सागै महिला लेखिका वां वीरता, नीति अर सिणगार सूं भरयै–पूरै साहित्य री सिरजणा भी करी है। इणरै अलावा उणांरी रचनावां में प्रेम रै संजोग–विजोग रा मरमीला दरसाव ई मंडयौड़ा निगै आवै।

राजस्थानी साहित्य रा आदिकाल सूं महिला लेखन रा अेलांण मिळै। पुराणै समै रै साहित्य री निरख–परख कर्‌या पूठै महिला लेखन रौ रुपाळौ रूप उभ'र साम्हीं आयौ है। पुराणै समै में गुरुकुल आश्रमां मांय रिसि–मुनियां सागै ग्यांनी महिलावां ई हुयी है, जिणांरै तप, साधना अर ग्यानं सूं मोकळा धरम ग्रंथां रौ सिरजण ई हुयौ है। राजस्थानी महिला लेखन री परम्परा अर रूप नै समझण खातर समै री दीठ सूं महिला लेखन नै तीन भाग में बांट'र इण इकाई नै पूरी करी जा सकै–

1. पुराणै जुग रो महिला लेखन
2. मध्य जुग रो महिला लेखन
3. आज रो महिला लेखन

12-4 jktLFkkuh lkfgR; jk vkfndky vj e/;dky jk efgyk y[ku

12-4-1 i`e[k fol;

मध्य जुग में समाज रूढियां अर पुराणी परम्परावां सूं काठौ जकड़िजियोड़ौ हौ। राजपूतकाल अर मुगलकाल में जुद्ध रै जोर सूं अेक कांनी वीरता रौ भाव जाग्यौ तौ दूजी कांनी धरम अर संस्कृति री रिछया खातर धारमिक भावना पनपी। ओ ईज कारण है कै इण काल में धारमिक काव्य ग्रंथां रौ घणौ सिरजण हुयौ है। पडदा प्रथा, सती प्रथा अर अेक सूं घणी लुगायां राखण री कुरीत रै बावजूद ई कैई अेड़ी राणियां अर साधरण महिलावां धरम, अध्यात्म अर नैतिक शिक्षा नै लैय'र ग्रंथां रौ सिरजण कर्‌यौ है। उण समै नारी शिक्षा री दीठ सूं घणी पिछड़यौड़ी ही पण ऊंचै वरग अर जनानी ड्योढ़ी में नारी री भणाई–गुणाई कांनी पूरौ ध्यान दिरीजतौ। नारी रै दूजै, वरग माथै संतां री वाणी रौ असर रैयौ। ''पौराणिक आख्यान' अर धरम ही चरचावां नै सुण'र महिलावां में भगती रस री धारा उमड़ी। विक्रम री 15वीं सताब्दी रै पछै अर 17वीं सताब्दी तांई रौ समै राजस्थानी साहित्य रौ भगतीकाल कथीजै। इण समै शैव, वैष्णव अर शाक्त भगती रा सगुणी अर निरगुणी रूप लेखन रा आधार बण्या।

lxq.k Hkxrh /kkjk

मध्यकाल री राजस्थानी भासा में भगती री दोन्यूं धारावां–सगुणधारा अर निरगुणधारा में मोकळौ लेखन महिलावां कर्‌यौ है। वैष्णव भगती में राम अर किसण रै अवतारां सूं भर्‌यौ घणखरौ काव्य महिलावां रौ रचयौड़ो निगै आवै। जठै 'माधोदास दधवाड़िया' रामभगती री अलख जगाई वठै नारी वरग री प्रतापकुंवरी, बाघेली रणछोड़कुंवरी, रत्नकुंवरी अर चंद्रकलाबाई आद उण रामभगती नै आगै बढावण रौ काम करियौ। इण पंगत में तुलछराय, बीरां, मधुरअली अर प्रेमसखी आद रा नांव भी गिणावणजोग है। रामकाव्य मांय समाज अर परिवार रै आदरसां रौ मंडाण निगै आवै। प्रतापकुंवरी आपरै पति रै सुरग सिधरयां पछै राममंदिर रौ सिरजण करावै अर राम री महिमा में की पद रच'र खुदरी भगती नै दरसावै। प्रताप कुंवरी री रच्यौड़ी 'पत्रिका' तुलसीदास री 'विनयपत्रिका' सूं मेळ खावै। उणमें ई कागद लिखण री सैली सूं भगती अर विसवास रै आसरै मनोविकारां सूं अळघा रैवण री सीख दिरीजी है–

जरा नाम या जगत मै, निपट निस्जल इक नार।
सो पिण आई इण समय, समेट लियो परिवार।।

आळस पुन आयौ अठै, बुरौ नींद को बींद।
जंग करण जोरावरी, तिको करत ताकीद।।

ओ रासो रचियौ अठै, बात बनी इक वार।
अरज लिखी तातै इसी, होज्यौ हरि हुसियार।।

आं महिला रचनाकारां रै सिरजण माथै कबीर, रैदास, दादूदयाल जैड़ा संतां अर नरहरिदास, तुलसीदास जैड़ा भगतां रौ असर पड़्यौ। इणारै आदरसां नै अपणा'र कैई महिला रचनाकार राम भगती रा पद रच्या तो कई महिलावां क्रिसणजी री लीलावां रौ गान कर्‌यौ। खास करनै क्रिसण री लीला नारी मन नै घणो मोहित कर्‌यौ। डॉ. सावित्री सिन्हा रै मुजब ''कृष्ण काव्य के माधुर्य और वात्सल्य ने उन्हें प्रचूर मात्रा में ये वस्तुएं दी और नारी हृदय की भावनाएं कृष्ण काव्य के क्षेत्र में ही पूर्ण रूप से प्रस्फुटित हुई। ब्रजभाषा का माधुर्य गीति तत्व, वात्सलय, मधुर भावना नारी हृदय के निकट थी, इसलिए स्वाभाविक था कि उसकी अनुभूतियां भी इन्हीं के सहारे प्रस्फुटित होती।''

fØlu Hkxrh /kkjk

कृष्ण काव्यधारा री रचनाकारां में मीराँबाई रौ नांव सिरै गिणीजै। मीराँबाई खुद रै कुटुम्ब रै मोह नै छोड़'र

आपरी वाणी सूं भगती री जोत जगाई। धणीं रै सुरग सिधारयां पछै 'गिरधर गोपाल' नै भव–भव रौ भरतार मान'र उणांरै प्रीत रंग में संजोग–विजोग रा सैकडूं पद रच्या। मीराँरै पदां में एकनिष्ठ भगती भावना अर लोकमंगळ री छिब देखण नै मिळै। मीराँबाई री साधना में मधुरा भगती रौ भाव झळकै। इण जुग में अकेली मीराँरी वाणी में क्रिसण काव्य री सगली विसेसतावां निगै आवै। मीराँबाई री भासा राजस्थानी ही जिणरौ लोकरूप आज ई मेडता अंचळ रै आस–पास बोल्यौ जावै। राजस्थान मांय महिलावां में क्रिसण भगती जगावण रौ श्रेय मीराँबाई नै ई है। श्री दीनदयाल ओझा रै मुजब ''मीरां का आराध्य के प्रति अटल विश्वास हजारों महारानियों का प्रेरणास्रोत बना। अनेक ने मीरां की तरह ही सर्वार्पण करके कृष्ण भक्ति में लीन होने का निश्चय कर लिया। फलस्वरूप कितनी ही कवयित्रियों ने कृष्ण की विविध लीलाओं का सुमधुर गान किया।'' मध्यकाल में अैड़ी क्रिसण भगत महिलावां में सोढ़ी नाथी, रसिक बिहारी, बणीठणी, सूरजकंवर, जाडेची, प्रतापबाला आद रा नांव ई गिणावण जोग है। इणांरी रचनावां में ई प्रेम अर भगती री सांतरी देखण नै मिळै। कैई भगत महिलावां रै काव्य में मोर मुकुट बंसीवाळा वास्तै एकनिष्ठा रौ भाव व्यंजित हुयौ है। जाडेची प्रतापबाला क्रिसण रै रूप माथै मोहित हुय'र केवै –

चत्रभुज स्याम लागे छै, म्हानै प्यारो है।

मोर मुकुट पीतांबर सोवे, कांनां कुंडळवारो है।

गल मोतियन की माल विराजे, भाजे नंद दुलारो है।

जागसुता कहै जनम जनम को, जीवन प्राण म्हारो है।

क्रिसण रै विराट स्वरूप सूं उणारौ माधूर्य रूप महिलावां रै मन नै भायो। कृष्ण भगत कवयित्रियां क्रिसण री मथुरा, द्वारिका अर ब्रज री लीलावां रौ ईधको बखाण कर्‌यौ है अर उणमें माधुर्य भाव झळकै। इणा कवयित्रियां रै काव्य में संजोग अर विजोग रा मरमीला दरसाव मिलै। विष्णुप्रसाद कुंवरी किण तरै क्रिसण–प्रेम में व्याकुल हुवता थकां उणानै ओळमो देवै–

''निरमोही कैसो जियो तरसावै।

पहले झलक दिखाय अब क्यों बेग न आवै।

कद सूं तड़फत मैं री सजनी वांनै दरद न आवै।

विष्णुकुंवरि दिल में आकर ऐसी पीर मिटावै।।

fl.kxkj lkfgR;&

मध्यजुग में कवयित्रियां रै काव्य में सिणगार रस री धारा बराबर खळकती रैयी है पण कठैई–कठैई वात्सल्य अर करुण रस री धारा ई बैवती निगै आवै।

इण भगत महिलावां रै रचनावां भांय राजस्थानी संस्कृति री रूपाळै रूप रा दरसण ई हुवै। मध्यकाल री कृष्ण भगत कवयित्रियां कृष्णकाव्य रै सिरजण में अमोली भागीदारी निभाई है।

इण काल में संत सम्प्रदाय रौ असर ई निरगुण भगत महिलावां माथै निगै आवै। सहजोबाई, दयाबाई आंबाबाई, स्वरूपाबाई, राणाबाई अर् मुक्ताबाई जैड़ी रचनाकार निरगुण ब्रहम रा सैंकडूं पद अर दूहा रच्या। इणांरी रचनावां में जग री नस्वरता अर माया मोह नै छोड़ण रै साथै मुगती खातर भगती मारग कांनी बढण रौ हैलो दियोड़ौ है। रसिक प्रवीण अर प्रवीणराय जैड़ी भगत रचनाकार नै समाज में मान–सनमांन नीं मिळियौ पण अै 'लौकिक' प्रेम रै सागर में डूबनै संजोग–विजोग रा प्रेम सिणगार रा पद रच्या। मध्यकाल री महिला रचनाकारां माथै समाज रा घणा बंधण हा पण फेरूं ई उणांरी भगती भरी वाणी रौ सुर मोळो नीं पडयौ। इण पंगत में गिरिराज कुंवरी, जुगलदेवी, प्रिया, रघुवंसकुमारी, रामप्रिया, रत्नकुंवरीबाई, चन्द्रकलाबाई, राजराणीदेवी, सरस्वती देवी, दीपकुवरी, रमादेवी, उमा, पार्वती जैड़ी ख्यातनांव रचनाकार उभरनै साम्हीं आयीं। इणांरी रचनावां में भगती अर नीति रौ पुट मिळै। कीं रचनाकार सती–महिमा, पति वरत रौ धरम अर तीज–त्यूंहार जैड़ा विसयां नै लैय'र

साहित्य री सिरजण करी है। उणारी रचनावां में देसप्रेम अर कुदरत रा मनमोवणा चितराम ई निगै आवै।

राजस्थानी महिलावां जठै भगती री दोन्यूं धारावां सगुण अर निरगुण में साहित्य रौ सिरजण कर्‌यौ वठै राजस्थानी साहित्य री हेमांणी नै भी भगती रस री रचनावां सूं सराबोर करी। इणरै टाळ डिंगळ काव्यधारा री महिला रचनांकार अर जैन धारा री साध्वियां आपरी कलम सूं राजस्थानी साहित्य रा भंडार में वढ़ोतरी करी है। डिंगल कवयित्रियां सूं साहित्य भी अछूतौ नीं रैयौ। अठै भी रीति अर सिणगार रा फूटकर अर ग्रंथ रूप में मोकळौ साहित्य लिख्यौड़ौ मिलै। पद्य में पत्र साहित्य रै रूप में सिणगार रा संजोग अर विजोग रा भावां भर्‌या लेखन री बानगी न्यारी निरवाळी है। सिणगार रस री कवयित्री राणी चावड़ी जी रै पद (ख्याल) में ई प्रेम रस रौ उमड़तौ झरनौ बैवतो निगै आवै जिणमें बे महाराजा मानसिंहजी नै रूठयां पछै मनावण वास्तै उणां कन्नै भेज्यो हो–

बेगानी पद्यारो म्हारा आलीजा हो

छोटी सी नाजक धण रा पीव

ओ सावणियो उमंग रयो छे

हरीजी ने ओडण दिखणी चीर

इण औसर मिलणो कद होसी

लाडीजी रो थां पर जीव

छोटी सी नाजक धण रा पीव।।

IkfgR; jh foI!Irkok&

मध्यजुग री महिला रचनाकारां री वाणी में कठैई दिखावौ नीं हौ अर उणांरी भासा सीधी–सादी लोकभासा राजस्थानी ही, जिणसूं लोगां नै समझण में कीं दोराई नीं व्ही। लोकवाणी रै मिठास रै कारणै ई इणांरी रचनावां जन–जन रै कंठां उतरगी। ब्रजभासा री रचनावां में कठैई–कठैई संस्कृत री तत्सम सबदावली निगै आवै पण लोकसंस्कृति सूं जुड़योड़ी सबदावली उण बगत रै जीवण री जाणकारी करावै। भगती काल री महिलावां प्रबन्ध अर मुक्तक दोन्यूं रूपां में साहित्य रौ सिरजण करयौ है पण गीतां री रमझोळ उणांरी रचनावां में सांतरी है।

foI; Ikexh&

इण तरै मध्यजुग में महिलावां रौ लिख्योड़ौ साहित्य वीरता, भगती, सिणगार अर नीति सूं भरयौ पूरो रैयौ है। इण साहित्य में काव्य री प्रधानता ही। उण बगत सगुण काव्यधारा में राम अर क्रिसण काव्य धारा रौ जोर हौ। भगती साहित्य रै टाळ प्रेमकथावां रै रूप में प्रेमाख्यान ई घणा लिखीज्या जिकौ राजस्थानी लोक साहित्य रै रूप में जगचावौ हुयौ। महिलावां रौ रच्याडौ नीतिपरक सहित्य ई मोकळो है पण आंण सगळा सूं भगती साहित्य सवायौ कहयौ जा सकै।

इण दीढ सूं झीमा चारणी, पदमा सांदू, राणी चांपादे, काकरेची बिरजूबाई अर सांखली रौ नांव हरावळ में आवै। इणांरी रचनावां में वीर रस रै साथै शांत अर सिणगार रस री धारा ई खळकती निगै आवै। पदमा चारणी, बिरजूबाई अर महादानबाई जैड़ी रचनाकारां री रचनावां अर रगत सूं सराबोर वीरां रै कबन्ध रौ वरणाव अर खाविंद रै सागै सती हूवती नारी रौ दरसाव भी मिलै। बिरजूबाई री डिंगळ रचना रौ अेक उदाहरण देखीजै जिणमें वीर रस रौ सातरौ चितराम मांडयोडौ है।

घणी दाहणे सरीरे सेर बामे धणी।

राड़ हरवळ अणी मल चढ़े रीस।।

सांग कुसलां तणे कलेजे सेर रे,

सेर री खाग कुसला तणे सीस।1

ज्वाळामुखी छूटी लोयणा जटी,

आछंटी बहुं बल ओप आथे

कीये बरछी थटी बेग गोपाळ हर

मदा हर आछटी तेग माथै ।।2।।

fMxG dk0; /kkjk&

मध्यकाल में डिंगळ कवयित्रियां चारणी काव्य परम्परा रै अनुसार वीररस सूं सराबोर काव्य रौ सिरजण कर्‌यौ है। राजनैतिक उथल–पुथल रै इण युग में चारण कवयित्रियां ओजस्वी वाणी में गीतां रो सिरजण कर'र देसभगत वीरां रै उजळ चरित रो ओपतो वरणाव कर्‌यौ है। राजस्थानी साहित्य में डिंगळ कवयित्रियां रै अलावा जैन साधिकावां हरखूबाई, हुलासीजी जड़ावजी भूरसुन्दरी, स्वरूपाबाई, विवेकसिद्धी अर विद्यासिद्धि रा नांव जगचावां है। अै जैन साध्वियां आपरी वाणी सूं मिनख नै ग्यांन री सीख दैय'र समाज में जनजागरण रौ काम कर्‌यौ है। इणरै अलावा जिण गरू रै सरण में रैवती उणांरै जसगान में कैई गीतां रा सिरजण करनै राजस्थानी साहित्य में महताऊ योगदान दियौ है।

मध्यकाल रै पछै उत्तरकाल में हिन्दी साहित्य री रीति परम्परा रौ जिकौ असर साहित्य में आयौ उणमें भी महिलावां रो महताऊ योगदान है।

12-5 vkt jk jktLFkkuh efgyk y[ku vj ie[k jpukdkj

राजस्थानी महिला लेखन री परम्परा जुगां–जूनीं है। आदिकाल सूं लैय'र मध्यकाल तांई ग्यानवांन महिलावां साहित्य रौ सिरजण करयौ है पण आज रौ महिला लेखन जूंनी साहित्य परम्परा री लीक सूं हट'र रच्योड़ौ साहित्य है। इण जुग में भाव री ठौड़ विचार नै प्रधानता मिळी अर भासा रौ लेखन आम आदमी सूं जुड़्यौ। राजा–राणी री जागां करसा अर मजदूर री जिनगाणि अर समस्यावां नै लैय'र लेखन रौ दोर सरू हुयौ। भाव अर भासा रै साथै–साथै लेखन री सैली अर सोच बदळग्या। इण जुग में जिका राजनैतिक, सामाजिक अर आरथिक बदळाव आया, उणरौ असर राजस्थानी महिला लेखन माथै ई पड्‌यौ। इण जुग में काव्य री ठौड़ गद्य रौ लेखन प्रभावी हुयौ। गद्य री नुंवी विधावां रौ जलम हुयौ। जूनी बातां री ठौड़ कहाणी, उपन्यास, अेकांकी संस्मरण अर निबन्ध जैड़ी विधावा में लेखन सरू हुयौ। महिला रचनाकार उपन्यास सूं बेसी कहाणियां लिखी है अर साथै ई संस्मरण, उपन्यास अर निबन्ध जैड़ी विधावां में भी घणो लेखन करयौ है।

आज रो राजस्थानी महिला लेखन दो तरे रौ है। अेक काव्य प्रधान अर दूजौ गद्य प्रधान। बीसवैं सइकै रै चौथे–पांचवे दसक तांई रजवाड़ां में कीं राजकुमारियां अर राणी –महाराणियां री भगती, नीति अर उपदेसपरक रचनावां मिलै। इणांमें जामसुता जाडेची, प्रतापबाला, विष्णुप्रसाद, कुंवरी, रणछोड़ कुंवरी, रत्नकुंवरी बाई अर राणी रामप्रियाजी रौ नांव उल्लेख जोग है। बीसवैं सइकै रै जुग रै वातावरण रो महिला लेखन माथै घणो असर पड्‌यौ देस री आजादी पछै जनतान्त्रिक मूल्यां रौ चित्रण लेखन रौ मूळ विसय रैयो है। औद्योगिक विकास, साम्यवाद, आधुनिक वैज्ञानिक दीठ अर पश्चिमी जन–जीवन रै जुड़ाव सूं समाज रै ढांचा में बदळाव आयौ। शिक्षा रै नुंवै तरीकै अर परम्परागत जीवन में बदळाव रौ पाधरौ असर साहित्यकार माथै पड्‌यौ उणांरै लेखन में नुंवी सोच, मानवतावादी दीठ, मानवीय संबंध रौ लेखो– जोखो मोटे पैमाने माथै हुयौ है। खास कर'र जीवन री भागमभाग, महंगाई, बेरोजगारी, राजनैतिक अर प्रसासनिक भ्रस्टाचार, नारी उत्पीड़न, मानखा रै सुवारथ अर खुदगरजी जैड़ी भावना रौ असर ई महिला लेखन में देख्यौ जा सकै। इण जुग रै बदळते हालात, सामाजिक जागरण अर राजनैतिक आंदोलनां सूं महिलावां रौ ध्यान सामाजिक विसमतावां अर कुरीतां कानीं गयौ। आधुनिकता री चेतना

रौ असर महिला लेखन में साफ निगै आवै।

आज रै महिला में खास कर'र तीन भांत री रचनावां निगै आवै। पैली तो खुदरा समाज अर परिवार रा दायरा में जिकी समस्यावां महिलावां रै साम्ही आई उणांनै बे खुदरा सिरजण रा आधार बणायौ। इणरै कारण समाजू बदळाव अर कुरीतां नै छोडण रा समाज सुधार री चेतना रा बिम्ब इण जुग री महिला लेखन में देखण नै मिळै। जांत–पांत, परदा प्रथा, बाळपणे रा ब्याव, सती प्रथा, दायजा रौ लेण–देण, बहू विवाह जैड़ी घर–परिवार री समस्यावां महिला लेखन सूं इधकी उजागर व्ही है। इण तरै रो ओ लेखन कल्पना री जागां जथारथ रौ आधार लियौड़ौ है। उणारै लेखन में महिला री पीड़ बिखर्‌योड़ी लखावै। आज रै महिला रचनाकार री रचनावां में समाजू सूं जुड़योड़ी सगळी समस्यावां अर नारी माथै हुवण वाळा जुल्मां नै दरसावण री सांतरी कोसीस मिळै। इणरै टाळ इण लेखन में जन जागरण रो हेलौ अर नारी नै सगतीमान बणावण रौ सार्थक प्रयास ई निगै आवै।

12-6 ie[k efgyk jpukdkj

डॉ. तारालक्ष्मण आपरा संस्मरण संस्मरण साहित्य सूं इणी तरै री समाज री नैनी मोटी समस्यावां नै साम्ही राख'र समाज री हकीकत नै उजागर करी है अर मिनख नै दुरजण लोगां सूं सावधान रैवण री प्रेरणा दिवी है। पुष्पलता कश्यप, कुसुम मेघवाल, सुखदा कछवाह, चांदकौर जोशी, आनंदकौर व्यास, जेबा रशीद, माधुरी मधु अर प्रकाश अमरावत जैड़ी कथाकारां री रचनावां में ई मध्यम वरग रै संघर्ष, नारी उत्पीड़ण, पुरुष वरग री लम्पटता, उणांरी संकालू आदत अर समाज री कैई कुरीतियां अर पुरातन पंथी विचारां रौ आछौ खुलासौ हुयौ है। अे कहाणिया आज रै बगत सूं बतलावण करती जथारथ नै उजागर करै अर मानखां में जनजागरण रौ भाव जगावै। आज रै महिला लेखन में नारी जीवन री अबखायां अर उणरै संघर्ष रौ लेखो भी करिजियौ है अर सागै ई नारी सगती सूं परिचै भी करायौ है। ज्यूं, डॉ. चांदकौर जोशी रै कहाणी संग्रै 'सांचौ सुपनौ' री 'पछतावौ' कहाणी में नारी री आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान नै दरसावता नारी वास्तै कहयौ गयौ है– ''वा नारी है पण हारी नीं, आपरै हिम्मत रै पांण ऊभी दुवैला। अब वा अेक लता नीं रैयी है, जिणनै पेड़ रै सहारे री जरूरत हुवै। अबै आपरौ जीवण ठोस धरातल माथै जीवण री सगती उणनै मिळगी।''

दूजी तरै रै लेखन में जनतान्त्रिक मूल्यां नारी सुबंतरता, समानता आद सूं संबंधित रचनावां देखण में आयी। महिलावां नै बराबर रौ दरजौ देवण अर उणरै साथै हूवण वाळा सोसण अर हीनता रै खिलाफ आवाज उठावण रौ भाव लैय'र लिख्योड़ौ महिला लेखन गद्य अर पद्य री भांत–भांत री विधावां सूं उजागर हुयौ। राजस्थानी महिला लेखिकावां घर री चौखट सूं निकळ'र महिलावां नै 'प्रगतिशील' जीवण कांनी खैंचळ करती लेखन करै। अबै नारी अबला नीं आ बात महिला लेखन सूं थापण री कोसिस करीजी है। कीं कहाणियां अर उपन्यासां रै मांय पुरुस वरग री ज्यादती अर सोसित नारी री विवसता नै ई उजागर कर'र समाज रै साम्हीं अेक कड़वो सांच राखिज्यौ है। पुष्पलता कथ्यप री 'बंद अंधारी' गळी' में अेड़े ई सांच नै दरसायौ गयौ है, जिणमें पुरूस वरग री लम्पटता अर विलासिता रै कारणै नारी हींण दसा रै सागै मिनख री सोच अर विवसता प्रकट व्हीं है।

आज रा महिला लेखन रौ खासौ जोर नारी री 'अस्मिता' री पिछाण माथै है। आज री महिला लेखिका सोच में बदलाव लावण खातर सिरजणा कर रैयी है। जे बे सांच नै उजागर करै वठै जरूर सोच में बदळाव लावण रो हेलो निगै आवै। आज वा पढ़ लिख'र हरेक खेतर में पुरुस सूं मुकाबलौ कर सकै इण खातर आज रै महिला लेखिकावां री लेखनी साक्षरता अर भणाई रै विकास माथै ई चालती लखावै। दर्शना उत्सुक रौ एकांकी संग्रै 'आपणी बात' रै अेकांकी' 'अेक पंथ दो काज' में 'प्रौढ शिक्षा' रौ फायदौ बतायौ गयौ है। इणी तरै' आंख्यां खुलगी' एकांकी शिक्षा री महत्ता नै उजागर करै। इण तरै आज रै महिला लेखन रौ विसय नारी खिमतावां नै उजागर कर'र उणनै हर तरै सूं सक्षम बणावण रौ कहयौ जा सकै।

12-7 lkfgR; jh fuj[k&ij[k

तीजी भांत रौ लेखन नारी में सदाचरण, देसभगती, पर्यावरण अर संस्कृति प्रेम साथै महामानवी बणण रौ

भाव जगावण रौ हेलो लैय'र साम्हीं आयौ। नारी नै 'नारायणी' बणावण रौ संकळप लैय'र ई महिलावां घणकरी रचनावां रची है। तेजी सूं बधतौ 'पाश्चात्य प्रभाव' रौ विरोध लेखन सूं कर्‌यौ गयौ। इण ढाळै नारी घर सूं निकळ'र आखी मानवता सूं जुड़ी अर भाव री ठौड़ विचार प्रधानता महिला लेखन सरू हुयौ। अेड़े विचार प्रधान लेखन में सहरी जीवन री विसंगतिया, मिनख रै सुवारथ अर अलगाव रै सागै गांव अर सहरां मांय पिछड़ी बस्ती अर दलित लोगां री समस्यावां नै महिलावां पाठकां साम्ही राखण री कोसिस करी जी है। सुमन बिस्सा 'सूरज रो संदेशो' काव्य पोथी में विचार प्रधान कवितावां रो सिरजण कर'र मानखै री मनगत, उणरी अबखाईयां अर सहरी जीवन री विसंगतियां नै आछी तरै सूं उजागर करी है।

12-8 i|e|[k jpukok jh mnkgj.k

'नुंवे मारग री जात्रा' कवितां में हकीगत बयान करती कवयित्री कैवै—

अठै चारुंमेर, अंधारौ घणौ है।
डरियौड़ा है मिनख, नीं देवै कोई
अेक दूजै री साख, नीं करै बंतळ
कींकर जोवां भायला, म्हांरौ वो मारग
जकौ पार कर'र, पूग सकां
म्हांरै छेलै ठिकाणै। जठै सूं ई
सरू हुया करै, नुंवे मारग री जातरा

आज रै महिला लेखन में देस जुगबोध ई आखरा ढळ्यो है। परयावरण री रिछया, बढ़ती जनसंख्यां री रोकथाम, साम्प्रदायिक सद्‌भाव अर देस री अेकता जैड़ा विसयां माथै भी महिलावां लेखन करयौ है। डोरथी विमला री निबंध पोथी, आपण पंखे में पर्यावरण—संरक्षण अर बन सुरक्षा खातर जन चेतना जगावण रौ काम कर्‌यौ है। तारालक्ष्मण री काव्य पोथी 'कैक्टस मांय तुलसी' में ई कवितावां पर्यावरण रौ अलख जगावण रौ काम करै। इणरै अलावा आज रै महिला लेखन में राजस्थान री गुमेजजोग संस्कृति रा चितराम ई सोवणा अर मनमोहॅवणा रूप में मांढयौड़ा निगै आवै। श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंड़ावत जी रै साहित्य नै तो लोकसंस्कृति रौ प्रतिबिम्ब ई कैयौ जा सकै है, जिणमें अठांरी परम्परावां, रीति— रिवाज, खान—पान, रहन—सहन, राजस्थान रा मेळा—खेळा, तीज त्यूंहार, व्रत, प्रकृति, जीव—जिनावर आद री झांकी ई देखण नै मिलै।

'मांझल रात' 'अमोलक बातां, 'के रे चकवा बात', अर 'गिर ऊंचा—ऊंचा गढ़ां' जैड़ी कहाणी संग्रै रै अलावा उणारौ राजस्थानी लोकगीतां रौ संग्रै ई संस्कृति नै दरसावै। इणी तरै कमला कमलेश री पोथी 'वां दनां की बातां' में ई जागां जागां जूनी परम्परावां अर लोकसंस्कृति री छिब समायोड़ी निगै आवै।

आज रै राजस्थानी महिला लेखन रै परम्परा रै लेखे जोखे सूं आ बात साफ व्हे कै महिलावां रै लेखन रौ दौर अर दायरौ परिवार अर समाज तांई सिकुड्‌योड़ौ है। इण लेखन में आखै जगत री नारी री मानसिकता रौ फैलाव कम ईज हुयौ है। राष्टीय चेतना, देसभगती अर मानवीय मूल्यां नै लैय'र कहाणियां कम लिखीजी है। इणी तरै आज विग्यान जिण तेजी सूं बढ रैयो है उणरौ असर लैय'र आज रौ राजस्थानी महिला लेखन कम लिखिज्यौ है। संसार में जुद्ध अर आंतकवाद रै कारण आखी मानवता संताप नै झेल रैयी है, उणरी वेदना री तस्वीर ई आज रै महिला लेखन में कोनीं दिखै। श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चुण्ड़ावत री रच्योडी कहाणियां में फैलाव अर ऊंचाई है अर वांरौ लेखन राजस्थान रै सीमाड़ै सूं बारै निकळ'र मानवीय हरख अर पीड़ नै दरसांवै। आज रै राजस्थानी महिला लेखन नै घणौ तरासणौ है फेरूं ई जिण महिला लेखिकावां रौ लेखन साहित्य जगत रै साम्ही उजागर हुयौ है, उणसूं मायड़ भासा राजस्थानी रौ विकास ई हुयौ है। श्रीमती सावित्री व्यास, लीला मोदी, राजलक्ष्मी 'साधना', मनोरमा सक्सेना 'मनु', सुमन राठौड, सविता 'किरण' री रचनावां सूं राजस्थानी काव्य में

बढोत्तरी व्ही है अर आधुनिक जुगबोध, समसामयिक समस्यावां अर नारी मन री कोमल भावनावां नै वाणी मिळी है। इणरै टाळ शिक्षा जगत अर सरकारी नौकरियां सूं जुड़योड़ी अर गृहस्थी री जिम्मेदारी निभावण वाळी महिला रचनाकार ई है जिणांरै गीत, संस्मरण, कहाणी, निबन्ध कवितावां अर आलेख आद रचनावां सू राजस्थानी साहित्य री हेमांणी में श्रीवृद्धि व्हीं है।

12-9 bdkbZ lkj&

1. ईं इकाई में राजस्थानी भासा री प्रमुख रचनाकार महिलावां रै सिरजण री विगत मंडी है। राजस्थानी भासा–साहित्य रा आदिकाल सूं लेखन री जकी परम्परा सरू हुई–बा अजै लग वेगवती है अर गद्य पद्य री न्यारी–न्यारी विधावां अर सैलियां में ओ लेखन अजैताईं मोकळो हुयौ है। वीरता, भगती, नीति, रीति, सिणगार रो भांत–भांत रो अमोलो साहित्य अजै लग सामी आ चुक्यौ है।
2. ईं इकाई में राजस्थानी साहित्य रा आदिकाल, मध्यकाल अर आधुनिक काल री प्रमुख लेखिकावां अर कवयित्रियां रा सिरजण री ओळखाण अर निरख–परख हुई है।
3. इणरै साथै ही भगतां अर संतां अर संतां री वाणी री साररूप में विगत भी मांडी गई है।
4. जूना अर आज रा महिला लेखन री भासा सैली, सबदावली, जुग चेतना, जुग रा वातावरण अर सामाजिक चेतना री दीठ सूं भी पिछाण करी गई है।

12-10 vH;kl jk loky &

1. राजस्थानी भासा रा महिला लेखन रा उद्‌भव अर विकास नै समझावो।
2. नीचै लिखी महिला रचनाकारां री जाणकारी करावो–
   (क) मीरॉबाई
   (ख) प्रताप कंवरी
   (ग) राणी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत
   (घ) समान बाई
3. राजस्थानी भासा रा भगती साहित्य नै महिलावां रो कांई योगदान है?
4. राजस्थानी– भासा रा महिला संत सहित्य री जाणकारी करावो।
5. राजस्थानी भासा रा महिला लेखन री विसेसतावां–सोदाहरण समझावो।

12-11 lanHkZ xzaFk

1. डॉ. उषा कंवर राठौड़ – बीसवीं सदी का राजस्थानी महिला लेखन।
2. डॉ. सावित्री सिन्हा – मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियां।
3. डॉ. उषा कंवर राठौड़ – मध्यकालीन कवयित्रिया की काव्य साधना।
4. डॉ. मुंशीराम शर्मा – भक्ति का उदय।
5. डॉ. मदन कुमार जानी – राजस्थान एवं गुजरात के मध्यकालीन संत एवं भक्त कवि।
6. डॉ. पेमाराम – मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन।
7. मुंशी देवी प्रसाद – महिला मृदुवाणी।

bdkb & 13

jktLFkkuh Hkklk jk ykd lkfgR; & ifjHkklk

bdkb jh foxr

13.0 उद्देस्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 लोकसाहित्य री भूमिका

13.2.1 'लोक' सबद रौ अरथ अर परिभासा

13.2.2 लोकसाहित्य री विसेसतावां

13.2.3 लोकसाहित्य री विसेसतावां

13.2.4 लोकसाहित्य री लोकवारता

13.2.5 लोकसाहित्य अर अभिजात्य साहित्य

13.2.6 लोकसाहित्य रौ–दूजा शास्त्राा सूं सम्बन्ध

13.2.7 लोकसाहित्य रौ वरगीकरण

13.2.8 लोकसाहित्य रौ संकलन अर बाधक तत्व

13.2.9 राजस्थानी लोकसाहित्य रौ सिरजण करण्यां

13.3 इकाई रौ सार

13.4 अभ्यास रा सवाल

13.5 संदर्भ ग्रंथ सूची

13-0 míL;

इण इकाई रौ मूळ उद्देस्य राजस्थानी रै लोकसाहित्य नै उजोगर करणौ है। औ साहित्य जन–जन रौ साहित्य है। राजस्थानी रै छात्र–छात्रावां ने इण इकाई सूं आपरी लोक–संस्कृति री जाणकारी मिळसी अर उणांरौ ग्यांनवर्धन व्हैसी, आजरा द्वौर में नूंवी पीढ़ी आपरी संस्कृति नै भूल री है। इण इकाई रै भण्यां पछै उणांनै निम्न बिन्दुवां री जाणकारी मिळसी –

- लोकसाहित्य किणनै कैवै उणरी जाणकारी मिळसी
- लोकसाहित्य अर लोक संस्कृति कांई है?
- लोकवारता अर साहित्य
- लोकसाहित्य अर अभिजाव्य साहित्य कांई है?
- लोकसाहित्य रौ दूजा शास्त्रां सूं सम्बन्ध किण भांत है,
- लोकसाहित्य री कुण–कुणसी विधावा है?

13-1 iLrkouk

साहित्य समाज रौ दरपण व्हीयां करै है। समाज रा न्यांरा–न्यारा चित्रण साहित्य में देखण मिळै है। लोकसाहित्य अैड़ो साहित्य है जिणमें आपरी संस्कृति अर समाज रौ सुरूप देख्यौ जा सकै है। लोक री वास्तविक संस्कृति उणारै कंठस्थ साहित्य में देखी जा सकै है। मानखै री संस्कृति रा चितराम लोकसाहित्य में देखण मिळै है।

लोकसाहित्य लोकमानस अर लोक मान्यतावां नै आपरै कलेवर में संजोग–समेट्यां अेक सजग प्रहरी री भोमिका निभा रैयो हैं लोकसाहित्य पीढ़ी मौखिक परम्परावां सूं आगै बधतौ रैयो है। लोकसाहित्य में भूत, परतमान अर भविस्य तीनूं ई सामिल हैं इण इकाई में अैड़े सरल नै सुबोध साहित्य रो बध्ययन कर्यो जा रैयो है।

13-2 ykdlkfgR; jh Hkwfedk

इण सृस्टि री रचना अर मानखै री उत्पति सूं लैय'र अजै नीं जाणै कितरा जुग बीतग्या पापाण सूं लैय'र आधुनिक जुग तांई नीं जाणै कितरा उतार चढ़ाव आया, कोई लेखौ नीं, मिनखपणां रै पग मंडणा री लांबी यात्रा पीढ़ियां तांई पग–पांवड़ा भरती रैयी अर समै वदलतौ रैयो, इणरै साथै मिनख आपरी भावनावां नै प्रकट करतो रैयो, जिणसूं साहित्य रौ सिरजण व्हीयों, मिनख दूजै नै भलाई नीं जाणै पण आपरै लोक–साहित्य नै छोखी तरै ओळखै है। भाव सम्प्रेषण रा न्यांरा–न्यारा रूपा में लोकसाहित्य रौ घणौ चांवौ स्थान रैयो है। लोकसाहित्य लोकसंस्कृति रौ अेक महताऊ अंग रैयो है। लोकसाहित्य लोकसंस्कृति रौ दरपण भी कैयो जावै है। आपानै लोक री आस्था नै जाणणो है तो लोकसाहित्य रौ अध्ययन करणौ चाहिजै।

किणी देस रौ लोकसाहित्य उणरी सांस्कृतिक धरोहर मान्यो जावै है। इणमें देस री संस्कृति सुरक्षित राखी जा सकै है।

लोकसाहित्य में मानखै रै हिवड़ै रा सांचा चितराम चित्रित कर्या जावै है। जीवण रौ कोई अंग इणसूं अछूतो नीं है। इण साहित्य रौ रचियेता कोई व्यक्ति विसेस नीं व्है'र आखौ जन है। औ साहित्य छंद अर अलंकारां री चमक दमक सूं दूर है। औ साहित्य सरल अर आमबोलचाल री सरस भासा में है।

ग्यांत–अग्यांत जन कवियां नै आपरी सरल, सरस वाणी में आपरै जीवण रै जीवन्त अनुभवां नै इणमें ढ़ाळ'र नै जन–साधारण रै खातर अनमोल धराहर रूपी खजानौ राख्यों है। बदळते बखत रै साथै लोकसाहित्य जैड़ी जग चांवी विद्या भी आपरी भौमिक बदळी है, आपरी महत्ता दरसायी है। लोकसाहित्य में भांत भतीलो है। औ साहित्य लोकगीत, लोककथा, लोक नाट्य, लोक कैवतां नै पहेलियां रै रूप में देखण मिळै है।

लोकसाहित्य नै समझा सारू पैला आपानै 'लोक' सबद री व्याख्यां समझणी पड़सी, लोक साहित्य रै अभाव में लोकसाहित्य रौ ग्यांन सर्वथा अधूरौ है।

13-2-1 ^ykd* lcn jk vjFk ifjHkkk lk

भारत में आर्य–भासावां रौ आदि रूप आपानै संस्कृत भासा में मिळै है, 'लोक' सबद भी आपानै संस्कृत में शुद्ध तत्सम रूप में मिळै है। उत्पति रै आधार माथै 'लोक' रौ शाब्दिक अरथ 'देखण वाळौ' होवे है। इण निस्पति रै मुजब वौ सगळै जन–समुदाय, जको देखण रै काम नै सम्पन्त्र करै है, 'लोक' फैहलावै है। औ 'लोक' सबद घणौ जूंनौ है जिणरौ प्रयोग वदिक काल सूं लगातार रूप सूं व्हैतो रैयो है। 'लोक' अपणै आप में पूर्ण है। इण सबद न्यांरा–न्यांरा अरथ निकळै है, ज्यां में लोक–भुवन, जगत मानखौ आद आवै है। इंगरेजी भासा में 'लोक' सबद रै खातर फोक (Folk) है। औ फोक एग्लां सेक्सन सबद 'फोक' सूं बण्यो है। जिणनै जर्मनी में वीक (Wok) थी कैवै है। पण जै विस्तृत अरथ ग्रहण कर्यों जावै तो किणी सुसंस्कृत रास्ट्र (देस) रै सगळा लोग इणीज नाम सूं जाण्या जावै है।

हिन्दी साहित्य कोस में 'लोक' सबद री अवधारणां इण तरै बतायी गयी–''लोक मानव समाज रौ वौ वरग है जको अभिजाव्य संस्कार शास्त्रीयता अर पांडित्य री चेतना अर पांडित्य रै अहंकार सूं शून्य है अर जको परम्परा रै प्रवाह में जीवित रैवै है। अैड़ै लोक री अभिव्यक्ति में जकां तत्व मिळै है, वै लोकतत्व कैहलावै है।''

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल लिखै है कै–''लोक आपारै जीवण रौ महासमन्दर है, जिणमें भूत, भविस्य, वरतमान सगळां कुछैई संचित रैवै है, लोक रास्ट्र रौ अमर सुरूप है, लोक अरजित ग्यांन, सगळै अध्ययन में सगळै शास्त्रां रो पर्यावसान है। अर्वाचीन मानव खातर लोक सर्वोच्च प्रजापति है,''

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी नै परिस्कृत नै संस्कृत लोगां रै प्रभाव सूं दूर अकृत्रिम जीवण रै अभ्यस्त लोगां नै ई लोक री संग्या दी है, वै लिखै है– ''लाक'सबद रौ अरथ 'ज्ञान–पद' या 'ग्राम्य' नीं है ब्लकै नगरां अर गांवा में कैल्योड़ी वां समूची जनता है जिणरै व्यावहारिक ग्यांन रौ आधार पोथियां नीं है। अै लोग नगर में परिस्कृत, रूचि सम्पन्न अर सुसंस्कृत समझयां जावण वाळां लोगां री अपेक्षा घणौ सरल अर अकृत्रिमजीवन रै अभ्यस्त व्है है अर परिस्कृत रूचि वाळां लोगां री समूची विळासिता अर सुकुमारता नै जीवित राखण खातर जकी वी वस्तुतां जरूरी होवै है उणांनै पेदा करै है।''

इण सूं स्पस्ट है कै इण भू–भाग माथै रैहण वाळां वौ जन–समुदाय जको सुसंस्कृत अर सुसभ्य्य प्रभावां सूं बारै रैप'र आपरी जूनी सभ्यता नै प्रवाहमान करतां व्हीयां जीवण निर्वाह करै है, बौ 'लोक' कैहलावै है। आ लोगां रो जको साहित्य है, बो लोक साहित्य कैयो जावै है।

आधुनिक साहित्य री नूंवी प्रवृतियां में 'लोक' रौ प्रयोग गीत, वारता, कथा, संगीत, साहित्य आद सूं मुळ व्है'र साधारण जन–समाज, जिणसें पैला सूं थैकी परम्परावां, भावनावा, विश्वास अर आदर्स सुरक्षित है अर जिणमें भासा अर साहित्य सामग्री ही नीं ब्लकै कैई विसयां में अनपढ़ पण ठोस रतन छिप्यां है रै अरथ में होवै है। स्पस्टतः 'लोक' सबद आपारी व्यापक नै प्राचीन परम्परावां री सुरक्षित निधि नै अर्वाचीन संस्कृति रै विकास रौ प्रतीक है।

13-2-2 ykd lkfgR; ifjHkkIk

जन साधारण मांय बै लोग समूह सामिल मान्या जावै है जकां विसिस्ट वरग सूं न्यांरा होवै है, इणरौ जकौ मौखिक साहित्य रैयो उणनै लोकसाहित्य कैवै है। उणारै ग्यांन रौ आधार विग्यांन नीं होवै ब्लकै पुराणी चांवी परम्परावां अर पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त ग्यांन होवै है। समाज में व्याप्त विश्वास, भावनावां, आदर्स ही इणांरी जीवणधारा रौ निर्धारण करै है। इण वास्तै बनावट सूं दूर हिये री निश्चल सरल धारा में अवगाहन कर अै सरलता रो रसपान करै है। लोकसाहित्य रै मांय अंचल रा चांवा जादू–टोना, तंतर–मंतर, भूत–प्रेत, डोरा–तावीज, सगुन–अपसगुन, देवी–देवता, रैहण–सैहण, खान–पान, रीति–रिवाज, छंद कथावां, गीत–संगीत, लोकनाट्य आद जन–साधारण री संस्कृति रै सुरूप रौ निर्धारण होवै है। इणनै लोक संस्कृति कैवै है, इण वास्तै लोक साहित्य, लोक संस्कृसति रौ प्रतिबिम्ब होवै है। लोक साहित्य री जान–पिछाण खातर भांत–भांत विद्वानां रा मत इण भांत है:–

Mk- gtkjh ilkn f}onh रै मुजब जकी चीजां लोक चित में सीधी पैदा व्है जनसाधारण नै आन्दोलित करै वै ही लोक साहित्य नाम सूं पुकारी जावै है। ''लोक चित सूं मतलब जकी परम्परा प्रतीत विवेचापरक शास्त्रां अर टिप्पणीयां सूं अपरिचित हो,

Mk- /khjUn ojek रै मुजब अैड़ी मौलिक अभिव्यक्ति जकी लोक री जुग–जुगीन वाळी साधना में सामिल रैवतां व्हीयां अर जिणमें लोक मानस प्रतिबिम्बित रैवै है, लाक साहित्य है। वा मौखिक अभिव्यक्ति है अर सामान्य जन–समूह उणनै आपरी मानै है।''

Mk- lfufr dekj pVthj etc ''परम्परागत जीवण जान्ता री पद्वति जिण सामाजिक आचार–विचार, व्याख्या में लोकरंजन, समूह रै स्वामित्व रौ सुरूप, स्थूकता आद रो निर्देस नीं है।

Mk- d'..kno mik/;k; j e|tc ''सभ्यता रै प्रभाव सूं दूर रैवण वाळी सहज व्यवस्था में जकी अनपढ़ मानखौ वरतमान है उणरी आशा–निराशा, हरख–विषाद, जीवण–मरण, सुख–दुख री अभिव्यंजना जिण साहित्य में मिळै है, उणनै लोक साहित्य कैवै है।''

Mk- lR;Un j e|tc पांडित्य प्रदर्सण सूं दूर, अहकार सूं शून्य, जन साधारण री सहज अभिव्यक्ति नै लोक साहितय कैवै है।'' इण तरै लोक साहित्य मानखैरी आदिम अर प्रकृट भावाभिव्यक्ति रौ महताऊ साहित्य है। इणरी सैळी अनलंकृत अर गतिशील होवै है। औ हमेसा समै मुजब नै परिवेस सापेख सम्पन्न साहित्य है, लोक साहित्य में मानखै रै हिये रै सांचै चितराम उजोगर होवै है। इण साहित्य में सैं तरै रै विचारां रौ सांगोपाग वरणाव मिळै है। जीवण रौ कोई अंग इणसूं अछूतौ नीं है।

13-2-3 ykd lkfgR; jh foljrkok

उपरोक्त वरणा अर परिभासावां रै आधार मांथै लोकसाहित्य री भांत–भांत विसेसतावां नै प्रवृतियां रौ खुळासौ व्है, जको इण भांत है–

1. इणरा रचियेता अग्यांत नै अनाम होवै है।
2. मौखिक परम्परा सूं पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होवै है।
3. औ साहित्य जन–जन रौ साहित्य है।
4. छंद–अलंकार री चमक दमक सूं दूर है।
5. औ साहित्य आमवोचाल री सरस भासा में है।
6. औ लोकसंस्कृति रौ दरपण है।
7. गेय रूप में मिळै है।
8. औ लोगां रै मनोरंजन खातर लिख्यो गयो है।
9. इणमें लोक री जुग–जुगीन वाणी–साधना सामिल होवै है।
10. औ साहित्य जंगळी जातियां अर ग्रामीण परिवेस वाळौ है।
11. औ इतिहास अर मनोविग्यांन रै अध्ययन खातर घणौ महताऊ है।
12. लोक साहित्य रौ ललित–शिस्ट साहित्य माथै गैरो प्रभाव है।
13. सबद, प्रयोग, कहाण्यां, लोककथा, धरमगाथा, गीत, कहावतें, जादू–टोना आद री अभिव्यक्ति या सैळी री दीठ सूं सिमरध भण्डार है।
14. लोकसाहित्य री आ हरैक विद्या में लोक चेतना स्पस्ट है।
15. समाज लोकाचार रौ सजीव मूल्यांकन अर्थात् लोकसाहित्य है।
16. औ सामान्य जन रौ हंसणौ–रोवणौ रौ संगीत है।
17. स्वाभाविकता, सरसता अर सरलता इणरौ वैशिस्ट्य है।
18. औ अेक लोक प्रयोगशाला है।
19. इणमें सौन्दर्य भावना, नीति तत्व, ग्यांन अर भासा रौ समन्वय छिप्योड़ौ है।
20. औ प्राचीन साहित्य व्हैतां थकां अर्वाचीन है।

21. औ परिवर्तनशील अर समूह स्वीकृत साहित्य है।

22. औ लोकेच्छा, लोक प्रवृति अर लोक सुपनौ रौ त्रिकोण है।

23. लोगां रौ रैहण–सैहण, खानपान, आचार–विचार अर लेण–देण रौ मौखिक साहित्य है।

24. सामुदायिकता अर आंचलिकतां री नींव है।

25. लोक साहित्य में गेय, प्रेय श्रेय, श्रव्य साहित्य है।

26. लोक साहित्य में विसेसतः वळा अर श्रोता ही रैवै है।

27. लोक साहित्य गद्य–पद्य मिश्रित चम्पू काव्य है।

28. औ स्वच्छंद साहित्य है।

29. औ साहित्य सभ्यता री सीमा सूं वारै है।

30. लोक साहित्य अेक संक्षिप्त कळा है, जिणमें गीत, निरव्य, वाद्य, अभिनय आद रौ उपयोग कर्‌यो जावै है।

31. इणमें प्रयोजनशीलता है। जकी अनुभवां रै आधार माथै कस्‌योड़ी है।

32. औ बहुरंगी, बहुढ़ंगी, वहुसैळी, बहुजन–वहुहित साहित्य है।

33. संसार रा गूढ़ तथ्य इण साहित्य में साकार रूप धारण करै है।

34. इणमें भूत, भविस्य अर वरतमान सैं कुछ सामिल है।

13-2-4 ykd okjrk vj ykd lkfgR;

लोक वारता सूं सुसभ्य अर असभ्य मानखै री परम्परा–विधानां रौ बोध होवै है। औ विसय लोक–विश्वासां री ठोस भिति माथै टिक्योड़ौ है। जठै री लोरी री मीठी तान नै सुणनै टाबर सौ जावतो हो, रातीजागौ री कथावां सूं मन घणौ आंबदमयी व्है जावतो, गांव राभला करसां जदै आपरी थोम माथै हल चला'र तेजी गीत गावतां हा, खाती अर लुहार आपरै करम में प्रवृत होण सूं पैला धूप–ठोड़ नै किणी रूंखड़ा में भूत–प्रेत रै रैवणा री कल्पना सूं डरप जावतो हो, भाट्‌अै री मूरत में जदै देवत्व आरोपित कर उण तरफ मुड़ जावतो हो, जठै पोथी ग्यांन दूजी पीढ़ी में हस्तान्तरित कर्‌यो जावतो हो, जठै वेद'वारता रै दरसण हाोवै हैं लोक वारता लोक रौ रत्नाकर है, जिणमें लोक रे कैई रतन सामिल है। सोफिया–वर्न नै लोक वारताां री फैल्योड़ी विसाल परिधि री ओर इंगित कर्‌यो है, जिणरौ अविकल अनुवाद लोक साहित्य रा मघन विद्वान डॉ. सत्येन्द्र नै इण तरै कैयो हैः–

''औ अेक जातिबोध सबद री भांत चांवौ व्है गयो है, जिणरै मांय पिछड़ी जातियां में या अणबण्यां (अनपढ़) अवशिस्ट विश्वास, रीति–रिवाज, कहाण्यां, गीत नै कैवता आवै हैं प्रकृति रै चेतन नै जड़ जगत रै सम्बन्ध में, भूत–प्रेतां री दुनिया अर उणरै साथै मानखै रै सम्बन्धां रै विसय में, जादू, टोना, सम्मोहन, वसीकरण, तानीज, भाग्य, सगुन, रोग अर निरव्यु रै सम्बन्ध में आदिम नै अंधविश्वास इणरै छैत्र में आवै है। इणरै साथै ब्याव, उत्तराधिकार, टावरपण नै प्रौढ़ जीवण रै रीति–रिवाज अर अनुस्ठान इणमें आवै है अर धरम गाथावां, अवदान, लोक–कहाण्यां, साके, गीत, जनश्रुतियां, पहेलियां नै लोरियां भी इणरै विस्य है। संक्षेप में, लोक री मानसिक सम्पन्त्रता रै मांय जकी भी वस्तुवां आ सकै है। वै सैंग इणरै छैत्र में है, लोक–वारतां वस्तुतः आदिम मानखै री मनोवैग्यांनिक आभिव्यक्ति है, वा चाहै दरसण, धरम, विग्यांन अर औषध रे छैत्र में व्हीं हो, चाहै सामाजिक संगठन नै अनुस्ठानां में या विसेसतः इतिहास, काव्य अर साहित्य रै अपेक्षाकृत बौद्धिक प्रदेस में।''

मानखे रे मानस ने खास स्थान प्रदान करतां व्हीयां समाज नै स्थूळ रूप सूं क्षेय भागा में बाट्‌यो गयो हैः

उच्च वरग अर निम्न वरग, लोकवारता में निम्न वरग में परिलक्षित होण वाळी संस्कृति, परम्परागत विसय, जनश्रुतियां, आचार–विचार, गीत, कथावां कैवतां, रै खातर 'लोकायन' सबद रो प्रयोग कर्‌यो है।, वै इण बाबत कैयो है– ''पितृ–परम्परागत जीवण जान्ता रीपद्धति जिण सामाजिक अनुस्ठाना, विश्वास–विचारां नै वाङ्‌मय सूं आपरै लौकिक प्रकास नै प्राप्त करै है, उणनै इंगरेजी में ''फोकलोर'' कैवै है। इण सबद रो भारतीय प्रति–सबद म्हांनै लोकायन औ वणा लियो है।''

लोकवारता री जीवन्त सगती अर छैत्र–विस्तार रै सम्बन्ध में अभिव्यक्त डॉ. वासुदेव–शरण अग्रवाल रै विचार देखण जोग है–''लोक वारता अेक जीवित शास्त्र है, लोक रौ जितौ जीवण है ऊतौ हिज लोक वारता रो विस्तार है। लोक में बसण वाळा जन, जन सूं भोम अर भौतिक जीवण नै तीजै सथान में उण जन री संस्कृति–आ तीना छैत्रां में लोक रै आखे ग्यांन रो अन्तर भाव होवै है अर लोक–वारता रो सम्बन्ध भी उणांरै साथै है।''

इण तरै लोकवारता रै अध्ययन सूं आपानै संस्कृति रै अरथा नै रूपा री जाणकारी मिळै है। लोक–वारता मांनखै री संस्कृत–बोधक वौ शास्त्र है जको चेतन या अचेतन भाव सूं विश्वासां नै रीति–रिवाजां में सामिल है अर जिणरी सामूहिक अभिव्यक्ति भांत–भांत कळावां नै उद्योगां में करी गयी है। लोकवारता रौ छैत्र मोयौ है। लोक–वारतां री अनमोल निधि परम्परित मौखिक अभिव्यक्ति है, अतः लोक नै आपरी सगळी अनमोल सम्पदा नै पद्यबद्ध कर देणौ ई उचित समझयौ, परिणाम सुरूप लाक–वारता रा बौत सगळा विसय लोक–साहित्य रै छैत्र में सारिल व्है गया, टांबरा रा जेल लोकवारता रे छैत्राधिकार में है पण खेल रै साथै उच्चरित पद्यात्मक पक्तियां (ओकिया) लोक साहित्य री निजी सम्पति है।

लोकसाहित्य लोक–वारतां री अनमोल निधियां रौ रक्षक है। लोक वारता जिण लोक नै ईती महता देवै हैं उणी समग्र लोक नै लोक साहित्य अेक ई रंगमंच पर ल्यां दियो है। इण तरै लोक–वारता अर लोक साहित्य अेक ई हिज चीज है। दोनूं में अपरां संस्कृति रा दरसाव होवै।

13-2-5 ykd lkfgR; vj vfHkktkP; lkfgR;&

साहित्य रा दोय भाग है–लोक साहित्य अर शिस्ट (अभिजाव्य) साहित्य, दोनूं साहित्य रौ काम तो अेक हिज हैं पण अभिजात्य साहित्य तो सुसंस्कृत (पढ़या लिख्यां) मानखां री अभिव्यक्तियां रौ माध्यम है अर लोक साहित्य असंस्कृत (अणभण्यां) या आदिम कैया जाण वाळा मानव–वरग री पौती है।

अभिजाच्य साहित्य प्रयत्न साध्य है तो लोक साहित्य स्वतः प्रसूत, अभिजात्य साहितय मानस मंथन सूं प्राप्त मणि अर लोक साहित्य सहज रतन है। अभिजात्य में छंद–अलंकार, रस मिळै तो लोक साहित्य में इणारौ अभाव है। इणरी भासा सहज अर सुबोध है।

अभिजाच्य साहित्य री भासा कठिनउ है। इणमें वरगित गैरा भावां री व्याख्या करणौ हरैक री बस री बात नीं हैं इणरै साहित्य रौ सौन्दर्य केवल ग्यांनी लागां रै आंणद ही रौ आधार व्है सकै है। जदै कै लोक साहितय आखै लोक रौ साथी है। अभिजात्य–साहित्य रौ रस कूप मीठै जळ रै समान है जिणनै प्राप्त करण खातर घणै जतन करणौ पड़ै है पण हलोक साहित्य रा उपासक कम मिहै है, पण लोक साहित्य रा श्रद्धालु पाठक घणां है।

अभिजाव्य साहित्य पुराणै समै में किणी आश्रयदाता रै अधीन (राजा–महाराजा) रै साहित्यकार कवि लिखतो हो, उण रो स्वारथ उणमें व्हैतो हो, साहित्य लम्बै समै तांई नी चालै है, जदै के लोकसाहित्य अैड़ो नीं है। जथारथ रो चित्रण ही लोक साहित्य रौ परम उद्‌देस्य है। लोक साहित्य में इतिहास री घटनावां, वारतावां, गीतां री भळकियां देखी जा सकै है।

परिमाण री दीठ सूं भी अभिजाव्य–साहित्य सूं लारै रै जावै है, अभिजाव्य–साहित्य में जठै अेक विसय नै लैय'र दोय–च्यार कवितावां, कहाण्यां ने उपन्यास देखण मिळै है पण लोक साहित्य में उणी विसय सूं सम्बन्धित हजारो गीत, कथावां, कैवता आद मिळै हैं अठै आपा कै सका कै लोकसाहित्य अभिजाव्य–साहित्य सूं बढ़'र ही है।

इणरै अळावा लोक साहित्य कैई बातां अभिजाव्य साहित्य सूं प्राप्त करै है अर अभिजाव्य साहित्य कैई नातां लोक साहित्य सूं प्राप्त करै है।

इण तरै दोनूं में भेद व्हैतां थकां भी अेक तरै रौ पारस्परिक सम्बन्ध भी देखण मिळै है।

13-2-5 ykd lkfgR; jk nwtk 'kkL=k ls lEcU/k

लोक साहित्य संस्कृति रौ अेक साकार रूप है। आदिकाल में मानखै जदै पैला–पैल प्राकृतिक रहस्य सूं मिळ्या व्हैलां तो नदी रौ कळकळ वैवणौ, कोयल री कूं–कूं, पपीहां री पीहूं–पीहूं, भंवरा रौ भन्न–भन्न सुण अर फूळां री सौरभ अर उणरै हिये में भाव किण भांत उठ्यां व्हैलां हा, जका लोगीत रै रूप मिळै है। लोक साहित्य रौ सम्बन्ध दूजा शास्त्रां सूं घणौ घनिस्ठ (नैड़ै) रैयो है। जिणमें नृ– विग्यांन, समाजशास्त्र, इतिहास, मनोविग्यांन, दरसण शास्त्र आद विसयां रौ असर लोकसाहित्य में देखण मिळै है।

ykdlkfgR; vj u`& foX;ku

नृ– विग्यांन रै मांय मानखै शारीरिक गठन रौ अध्ययन होवै है। मानखै रौ रंग, रूप, गुण रौ चित्रण व्है। इण विसय रा दोय भाग है– शारीरिक नृ विग्यांन अर सांस्कृतिक नृ विग्यांन,

शारीरिक नृ– विग्यांन रै मांय आदिम समाज सूं लैय'र आज तांई रै मानखै रै चमड़ी, रक्त, वाळां रौ वरणाव मिळै है।

सांस्कृतिक नृ –विग्यांन रै मांय आदिम समाज सूं लैय'र आज तांई रै मानखै रै रीति–रिवाज, भूत, प्रेता रौ रहस्य, धारमिक विश्वासां री परम्परा रौ लेखौ–जोखौ मिळै है।

ykdlkfgR; vj lekt'kkL=& समाजशास्त्र में खासतौर सूं समाज रौ चित्रण व्है है। इणमें परिवार, विधि–विद्यान, रैहण–सैहण, समाज री रूढ़ियां रौ बरणाव कर्‌यो जावे है। मानखौ सामाजिक प्राणी हैं सामज शास्त्र समाज री बुराईयां रौ चित्रण करनै मानखै नै छोखै मारग माथै चालण खातर प्रेरित भी करै है। इणीज तरै लोक साहित्य में भी समाज रा रीति–रिवाज, खानपान, रैहण–सैहण, बुराईयां रो चित्रण लोकगीतां रै रूप में मिळै है।

ykdlkfgR; vj eukfoX;ku

मानखै रै मन रौ विस्तार सूं विश्लेषण मनोविग्यांन में कर्‌यो जावै हैं मनोविग्यांन में मिनख रै वैयक्ति मानस रै साथै सामूहिक मानस रौ भी विश्लेषण भी कर्‌यो जावै है। मानखै रे वैयक्तिक मानस, असामान्य मानस नै सामूहिक मानखै रै अध्ययन खातर भी लोक साहित्य सूं घणी मात्रावां में सामग्री मिळै। क्यूकै लोकसाहित्य में भी तो वैयक्तिक या सामूहिक मानस री अभिव्यक्ति होवै है, फ्रायड, युंग जैड़ा चांवा मनोविग्यांनवेतावां रै द्वारा आपरै मनोविग्यां अध्ययन अर सिद्धान्त–थरपण खातर लोक साहित्य री सामग्री रौ आधार इंगज्यौ है।

ykdlkfgR; vj njl.k'kkL=&

दरसण शास्त्र में परमात्मा, जीव–जगत, धरम आद रै बारे में जाणकरी मिळे है। महाभरत, सतपथ ब्रह्मण, अतरंग आद दरसण रा घणां लूंठा ग्रन्थ मानीजै पण इणांमें लोक साहित्य री लोक कथावां रौ मैळ नीजर आवै है। पालि भासा में भगवान बुद्ध रै जीवण–चरित्र नै लैय'र घणखरी कथावां लिखीजी है, जकी जातक कथावां रै नाम सूं चांवी है। अै भी दरसण री ऊँची–ऊँ बातां है पण लोक साहित्य रौ रूप है। 'सत्यसती सलोवणां' री गाथा प्राकृत भासा में है पण इणमें भी लोक साहित्य रौ मोये खजानो हैं इणीज भांत हितोपदेस अर पंचतंत्र आद भी लोक साहित्य री सुंदर रचनावां हैं जिणामें नीति– चतुरता, व्यहार–कुशलतां रौ सांगोपाग ग्यांन भरिज्योड़ौ है।

लोककथावां में देवी–देवतावां, भगवत–भगती, जीवण अर अध्यात्मिकता रो अेक आंधौ मैळ है। इण तरै कैयो जा सकै है कै लोक साहित्य अर दरसण शास्त्र रै बीच में अटूट सम्बन्ध है।

ykd lkfgR; vj bfrgkl &

इतिहास में बिव्योड़ै युग री घटनावां रौ चित्रण व्है है। न्यारै न्यारै समै रै सामाजिक, सांस्कृतिक, धारमिक, अैतिहासिक घटनावां रौ लूंठौ बरणाव इतिहास में मिळै है। राजस्थान रौ इतिहास घणौ निराळौ रैयो है। अठै कैई वीर पुरूस, संत, भगत व्हीयां है, जिणरा काज अजै भी याद कर्यां जावै हैं वे इतिहास री पोथ्यां में मिळै है तो उणांरै जीवण री घटनावां, कथावां अर गाथावां रै रूप में लोक साहित्य में देखी जा सकै है, पाबूजी री गाथा में त्याग री भावना रौ अद्भृत मैळ है। निहालदे सुलतान, नागजी नागवती जैड़ी कैई प्रेम कथावां है तो दूजी कांनी राजा भोज, राजा विक्रम अर कोठीधज सेठी जैड़ी कैई नीति कथावां है,

नगड़ावत गाथा में जीवण–मिरत्यु रै बीच बैवती नदी रै तेज बहाव में उणरी सच्चाई रौ घणी बारीकी सूं वरणाव कर्योड़ौ हैं जदै पुराणै इतिहास री बात करा तो समै रौ सांचौ चित्रण मिलणौ मुसकल है। पण इतिहास उणरी पुस्टि जरूरी करै है, क्यूकै रामदेवजी, तेजाजी, गोगाजी रा मैळा–छाल भी भरीजै, लोक साहित्य असल में लोक वीरता रौ महताऊ चित्रण कर्यो गयो है।

इण तरै इतिहास री घटनावां री पुनरावृति आपानै लोकसाहित्य में भी मिळै है। इतिहास लोकसाहित्य सूं अळगों नीं व्है सकैं है। जीवण रौ सांच अर उणरौ इतिहास रौ सांचौ रिमाण लोक साहित्य में मिळै है।

ykd lkfgR; vj Hkk"kk foX;ku &

भासा विग्यांन, भासा रै सवद, पद, ध्वनि, वाक्य, अरथ रौ अध्ययन करै है। आ सैंगा अंगा रौ अैतिहासिक विकास भासा विग्यांन रै अध्ययन में सामिल है। अरथ ध्वनि, सबद रूप रै उत्कर्स, अपकर्स या विकार आद रै अध्ययन में भासा विग्यांन नै लोकसाहित्य सूं घूणी सामग्री प्राप्त होवै है। लोकसाहित्य में प्रयुक्त लोक वोली रौ

रूप भासा विग्यांन रै अध्ययन खातर सामग्री प्रस्तुत करै है। भासा री प्राचीन कड़ियां नै जाणण खातर लोक बोलियां सूं सामग्री प्राप्त व्है सकै है।

भासा विग्यांन रै अध्ययन सूं लोक साहित्य में प्रयुक्त कैई सबदां अर उणांरै अरथां रौ परिचै प्राप्त कर्यो जा सकै है। इण खातर स्पस्ट है कै लोकसाहित्य अर भासा विग्यांन रौ गैरो सम्बन्ध है। भासा विग्यांन री दीठ सूं लोकसाहित्य रौ महताऊ स्थान है। लोकसाहित्य भासाविग्यांन रै खातर अनमोल विधि है। भांत–भांत लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, मुहावरां– कहावतां अर पहेलियां में व्याप्त सबदां री निरूपक्ति रौ पतो लगावण पर भासा विग्यांन सम्बन्धी कैई गुथियां सुलझायी जा सकै है।

जर्मनी नै भासा विग्यांन री जळमभोग मानयो जावै है, भासा विग्यांन रै अध्येता (विद्वाान) मैक्समूलर, ब्रेल, कुहन, फॉक्स आद नै सबसूं पैला ग्राम साहित्य–लोकसाहित्य खातर उपयुक्त साधन सामग्री भैळी करनै अध्ययन करनै दोनूं रो महत्व बतायो हो।

ykdlkfgR; vj /kje 'kkL=

किणी भी मिनख रै अध्याव्म श्रद्धा, रा आचार–विचार रौ व्यवस्थापन यानि धरमशाला, धरमशास्त्र घणौ जूनौ है। धरम रा मूळा धार लोक विश्वास है, अर लोकश्विासां रौ अेक मौये भण्डार लोकसाहित्य में सुरक्षित रैवै है। इण खातर धरमगाथा, पुराणगाथा आद नै जाणण खातर लोकसाहित्य रै अध्ययन सूं सहायता मिळ सकै है। लोकसाहित्य री कैई गुंथियाँ पुराणगाथा या धरमगाथा आद रै अध्ययन सूं सुलझायी जा सकै है। प्रस्तुत यप में लोक साहित्य अर धरमशास्त्र अेक दूजा सूं सम्बद्ध है। किणी जाति रै धारमिक जीवण रौ पतो भी लोक साहित्य सूं लागै है। प्राचीन काल में लोकतत्व रा सम्बन्ध धरमशास्त्र सूं ही हा, लोकसाहित्य रै अध्ययन सूं धरम रौ प्रारम्भ, प्रचार, धारमिक आन्दोलन या दैनिक पूजा–अर्चना आद री विसेस जाणकारी प्राप्त होवै है।

इण तरै लोकसाहित्य रौ धरमशास्त्र सूं घणौ निकट सम्बन्ध है। धरमिक कथावां भी लोक साहित्य रै मांय आवै है।

13-2-7 ykd lkfgR; jk ojxhdj.k&

साहित्य समाज रौ दरपण होवै है तो लोकसाहित्य भी देहाती समाज रौ प्रतिबिम्ब मान्यो जा सकै है। लोकसाहित्य री मौखिक वांरता सूं अेक तरै सूं पुराण बण गयौ है। लोक साहित्य उण जन–साधारण रौ प्रतिबिम्ब है जको सुसभ्य नै संस्कृति सूं दूर दैय'र आपरो स्वाभाविक जीवण व्यतीत करै है। राजस्थानी लोक साहित्य भांत–भतीकौ है। औ साहित्य भांत–भांत रूपा में मिळै है। जिणमें लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, लोक कहावतां अर पहेलियां,

लोकसाहित्य रा भांत–भांत विद्वान नै इणांरौ वरगीकरण न्यारै न्यारै तरीका सूं कर्‌यौ हैः

डॉ. कृण्णदेव उपाध्याय नै ''लोकसाहित्य की भूमिका'' में प्रस्तुत साहित्य रौ स्थूल रूप सूं वरगीकरण इण गत कर्‌यो हैः– लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य प्रकीर्ण–साहित्य,

मोटे तौर माथै राजस्थानी लोकसाहित्य नै छः भागां में नाट्‌यों जा सकै हैः–

ykd lfgR;

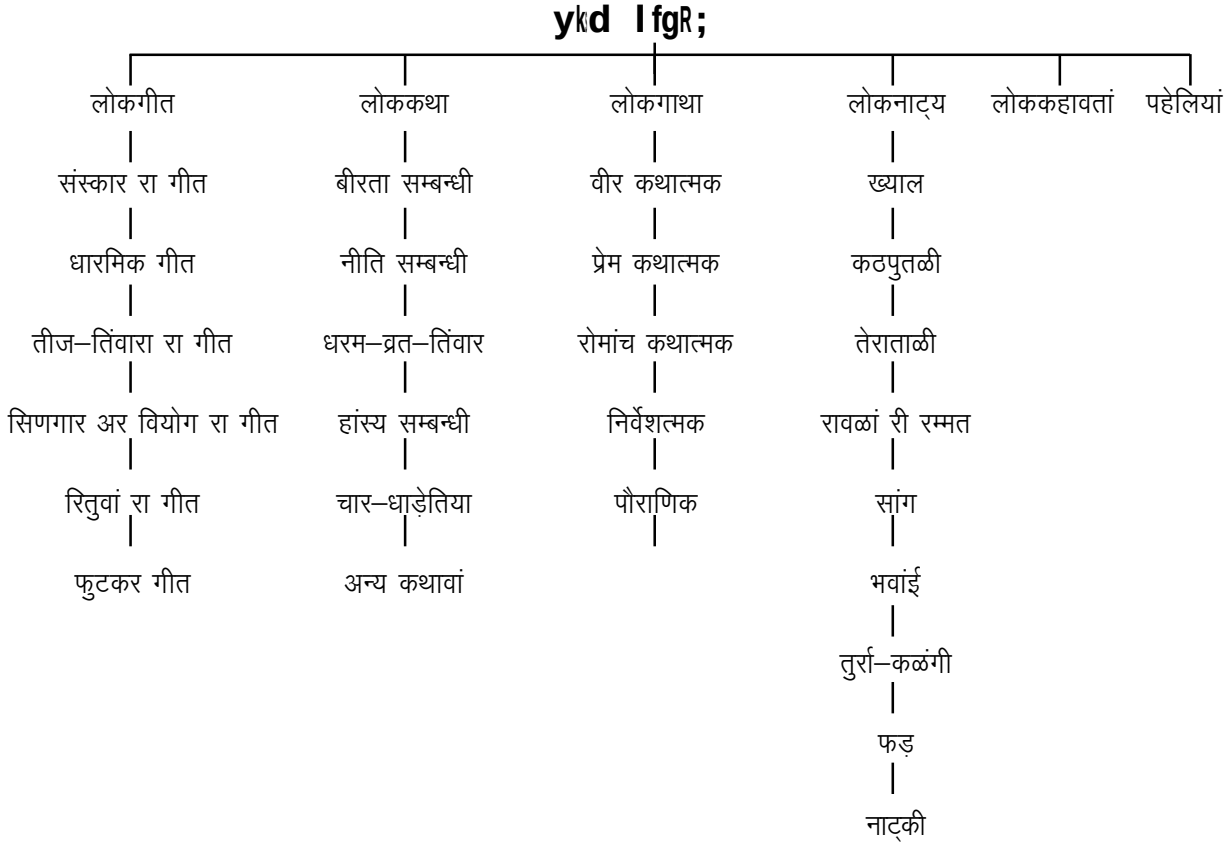

- लोकगीत
  - संस्कार रा गीत
  - धारमिक गीत
  - तीज–तिंवारा रा गीत
  - सिणगार अर वियोग रा गीत
  - रितुवां रा गीत
  - फुटकर गीत
- लोककथा
  - बीरता सम्बन्धी
  - नीति सम्बन्धी
  - धरम–व्रत–तिंवार
  - हांस्य सम्बन्धी
  - चार–धाड़ेतिया
  - अन्य कथावां
- लोकगाथा
  - वीर कथात्मक
  - प्रेम कथात्मक
  - रोमांच कथात्मक
  - निर्वेशत्मक
  - पौराणिक
- लोकनाट्य
  - ख्याल
  - कठपुतळी
  - तेराताळी
  - रावळां री रम्मत
  - सांग
  - भवांई
  - तुर्रा–कळंगी
  - फड़
  - नाट्‌की
- लोककहावतां
- पहेलियां

13-2-8 ykd lkfgR; jk ladyu vj ck/kd rRo

किणी रास्ट्रभासा सूं पूरी तरै परिचित होण खातर लोकसाहित्य रौ अध्ययन घणौ जरूरी है। उत्तम साहित्य रौ लोक साहित्य सूं गैरो सम्बन्ध है। डॉ. भागीरथ मिश्र रै मुजब किणी भी जाति रै लोकगीत, लोक गाथा, लोककथा उणरी संस्कृति री धरोहर है। वैदिक काल सूं लैय'र इक्कीसवीं सदी तांई रै लोकगीतां में आपारी जाति

अर समाज रौ सुभाव स्पस्ट है। आ बां संस्कृति है जिणरौ शिक्षा सूं कोई सम्बन्ध नीं है। लोकसाहित्य बौ अथाह सागर है जिणमें गोता लगाण पर चाहे जिता भी ग्यांनरतन प्राप्त कर्‌यां जा सकै है।

अैड़ै प्रयोजनसीळ लोकसाहित्य रौ संकलन करणौ घणौ जरूरी है। इणनै भैळो करती दाण मारग में कैई रोड़ा आवै है। लोकसाहित्य रौ रूप मूळतः मौखिक रैयो है। मौखिक अर जवानी अभिव्यक्तियां अस्थायी व्है सकै

है। उणरे चिर स्थायी महत्व नै ध्यान में राखतां व्हीयां औ जरूरी व्है जावै है कै उणरौ संग्रै–संकनल कर्‌यो जावौ संकलन रौ महत्व कैई दीठ सूं महताऊ है। लोककला अर साहित्य रै अध्येतावां खातर इणसूं उपयुक्त सामग्री मिळै है। प्रस्तुत सामग्री संकलन रो उद्‌देस्य लोकसाहित्य लोकमानस री अभिव्यक्ति, जदे कै लोकमानस रौ सम्बन्ध लोक परम्परावां सूं जुड्‌.यों होवै है। आपरी मिनच्य री विकाससील अवस्था रै कारण परिवर्तन री प्रक्रिया लोक साहित्य में रोज री बात व्हीं है।

lduyu jh i)fr;k& संकलन रौ कारज घणौ जाटिल अर दुखदायी है। इण खातर साहित्य री दूजी विधावां री तुलना में साहित्य में नौत कम काम सम्पन्त्र व्हीयों है। वियां तो लोकसाहित्य संकलन री भांत–भांत पद्धतियां है पण इणमें चांवी, उत्तम ने ललित पद्धति है– सबद रूप संकलन। लोक साहित्य री भांत–भांत विधावां री सबद रूप संकलन प्राथमिक नै मूळभूत रूप है। समूह जदै लोकसाहित्य नै मौखिक रूप सूं प्रस्तुत करै है, तदै उणनै सबदरूप या लिपिबद्ध कर्‌यो जावै है। औ ई हिज साब्दिक रूप है। लोगीत, लोकगाथा, लोककथा, कहावतें, पहेलियां, संकलन री सुरूवाती अवस्था में औ ई हिज प्रामाणिक संकलन पद्धति कार्यरत ही, संकलन री पद्धतियां में सुधार नै विकास तदै व्हीयो जदै ध्वनिमुद्रण कळा रै न्यांरा–न्यांरा साधन मिळ्‌यां हा,

आजकल टेपरिकोर्डर सूं लोक साहित्य रौ संकलन करणौ बौत आसान व्है गयो है। इणी तरै जदै लोक आपरी तेज गति में लोकगीत आद सुणावै है तदै स्टेनोग्राफर पद्धति सूं भी लोकसाहित्य रो संकलन कर्‌यो जावै हैं इण खातर आजकल लोकसाहित्य विग्यांन री सहायता सूं भेळौ कर्‌यो जा सकै है। इण तरै री पद्धति में सबद री ध्वनि उच्चारण री विसेसता रै साथै ई साथै लोकसाहित्य सुरक्षित व्है जवै है। 21वीं सदी मांय तो दूरदसण रै सहयोग सूं लोक साहित्य री भांत–भांत विधावां आपरै सांमी दिखायी देवै है।

lduy e ck/kd rRo– लोकसाहित्य रे संकलन में बौत सी कठिनाईयां रौ सामनो करणौ पड़ै है। अै कठिनाईयां री संकलन रा बाधक तत्व है। इणमें संकलन कर्ता री वेसभूसा, लोकगीत खातर माहौल, ग्रामीण परिवेस आद लोकसाहित्य संकलन खातर पैदा होण वाळी कैई असुविधाबां है। लोकसाहित्य रौ अध्ययन छैत्र बौत ई पेंचीदा नै जटिल है। इणरौ प्रपंच बौत वरणात्मक है, इण खातर इणरै संकलन में कुछ व्यवधान खड्‌.यां व्है जावै हैं लोक साहित्य में लाकगीत, कथा, गाथा, निरव्य, नाट्‌य, पहेलियां, रीति–रिवाज आद कैई रूप सामिल है। अेकक अध्येता नै अेकक छैत्र रौ चयन कर्‌यौ पड़े हैं इण तरै कैई कठिनाईयां है, जकी निम्न हैः–

सामुदायिक अध्ययन पद्धति रौ अभाव,

संकलनकर्ता रै कनै विग्यांनिक दीठ री कमी,

लोकगीत, लोकनित्य, लोकनाट्‌य आद में संमिश्रता,

प्रस्तुतिकरण रै समै देहाती लोगां री धोख घड़ी,

ग्रामीण छैत्रा री गंदगी,

संकलन री साधना में खानपान री कठिनाईयां

संकलनकर्ता रौ कलाकारां री रूचि अर मूड पर निर्भर रैवणौ।

घणै समै गंवाण रे पदै एकवाद बात पकड़ में आणौ।

व्यस्त जीवण में सबर सूं काम लेणौ नै आणौ।

लोकसाहित्य कथन करतां समै ग्रामीण जन रै लय, ताल, अरोह–अवरोह नै समझणौ नै पकड़णौ घणौ मुसकल है।

गांव–गांव भटकणौ, डेरा डालणौ आद सूं भी घणी आरथिक क्षति नीजर आवै।

ग्रामीण लोग दिभर काम करै है अर सिंझयां नै थककर चूर व्है जावै है तदै उणांसूं लोकसाहित्य प्राप्त करणौ टेढ़ी खीर होवै है।

लोकसाहित्य रौ घणखरौ अंस लुगाईयां रै जीवण सूं संबद्ध है। इण खातर स्वाभाविक है के पुरूस अध्येता री उपस्थिति में नारी कलाकारां में संकोच रौभाव पैछा व्है जावै है।

13-2-9 jktLFkkuh ykd lkfgR; jk fljt.k dj.;k&

आजादी रै पछै राजस्थानी लोकसाहित्य रौ संकलन बौत व्हीयों है अर पछै देस रै कोई विश्वविद्यालयां में लोकसाहित्य माथै घणौ अनुसंधान व्हीयों है। राजस्थानी लोकसाहित्य रौ संकलन करनै इणांनै लिखित रूप दियो गयो है। लोकसाहित्य री भांत–भांत विधावां माथै राजस्थानी अध्येता (विद्वानां) लोगां नै कैई तरै विधावां नै लिखित रूप में पस्तुत करनै छोखौ काम कर्यों है। राजस्थानी रा चांवा अध्येतावां रौ शोध इण मुजब हैः–

राजस्थानी कहावतें	–	एक अध्ययन (कन्हैयालाल सहल) 1958
राजस्थानी लोकगीत	–	(सूर्यकरण पारीक)
राजस्थानी लोकगीत	–	(लक्ष्मीकुमारी चूढ़ावत)
राजस्थान के लोकगीत	–	(डॉ. रामकरण सिंह)
चौबोली	–	(कन्हैयालाल सहज)
राजस्थानी लोक गाथाएं	–	(डॉ. कृण्ण कुमार शर्मा) 1964

राजस्थानी लोकगाथाएं औ निहालदे सुलतान(डॉ. कृण्ण बिहारी सहल 1969)

शेखावाटी लोकसाहित्य	–	(महावीर प्रसाद मिश्रा) 1973
राजस्थानी लोकगीतों में नारी भावना	–	(डॉ. पुण्पलता शर्मा) 1974

इण तरै देसभर में लोकसाहित्य रै अध्ययन अर संकलन खातर भारतीय अर पाश्चात्य अध्येतावां ने घणौ सराहनीय काम कर्यो है।

13-3 bdkbZ jk lkj

इण इकाई रै भण्यां पछै लोकसाहित्य में लोक री महता, अरथ अर लोकसाहित्य रौ समन्वय देस्यो जा सकै है। लोकसाहित्य जन–जन रौ साहित्य है। औ मौखिक परम्परा सूं पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होवै है। इणांमें आपरो खानपान, रीति–रिवाज, रैहण–सैहण री जाणकारी मिळै हैं लोकवारता लोकसाहित्य रौ ही भाग है। लोकसाहित्य ग्रामीण अंचल रौ है जदै कै अभिजात्य साहित्य पढ़यां लिख्यां रो साहित्य हैं लोकसाहित्य घणौ विसाळ है। इणमें सगळां विसयां (शास्त्रा) रौ भैकप मिळै है। भासा विग्यांन, धरमशास्त्र, इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविग्यांन, दरसणशास्त्र, नृ–विग्यांन आद विसयां रौ प्रभाव लोकसाहित्य में मिळै है। आधुनिक दौर में लोकसाहित्य रौ संकलन कर्यो जा रैयो है। आजकल तो संकलन रा न्यांरा न्यांरा जंतर मिळ रैया है। लोकसाहित्य आपरी संस्कृति री पिंछण है।

13-4 vH;kl jk loky

नीचै लिख्यां सवालां रौ पडू.तर दिरावौ–

1. राजस्थानी लोकसाहित्य रौ सामान्य परिचै, परिभासावां देवतां थकां इणरी प्रवृतियां नै उजोगार करौ।
2. लोकसाहित्य अर अभिजात्य साहित्य में कांई सम्बन्ध है? किणी दोय शास्त्रां सूं इणरौ अंतर स्पस्ट करो।
3. लोकसाहित्य रौ दूजा शास्त्रा सूं कांई सम्बन्ध है? किणी दोय शास्त्रां सूं इणरौ अंतर स्पस्ट करो,
4. लोकसाहित्य रौ वरगीकरण नै दरसावतां थकां इणरै संकलन री बधावां नै स्पस्ट करावौ।
5. लोकसाहित्य अर लोकवारता री महता नै दरसावौ।

13-5 lnHk xFk lph

1. कृण्णदेव उपाध्याय– लोकसाहित्य की भूमिका।
2. श्याम परमार – लोकधर्मी नाट्य परम्परा।
3. कन्हैयालाल सहल – राजस्थानी कहावतें– एक अध्ययन।
4. डॉ. सोहनदान चारण/डॉ. वंदना अरोड़ा –लोकसाहित्य स्वरूप और सिद्धान्त ।

bdkbl & 14

jktLFkkuh Hkklk jk ykd lkfgR; & ie[k fo/kkok

bdkbl jk eMk.k

14.0 उद्देस्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 राजस्थानी लोकगीत – अेक निरख अेक परख

14.3 राजस्थानी लोककथा – अेक निरख अेक परख

14.4 राजस्थानी लोकगाथा – अेक निरख अेक परख

14.5 राजस्थानी लोकनाट्य – अेक निरख अेक परख

14.6 राजस्थानी कहावतां अर लोकोक्तियां – अेक निरख अेक परख

14.7 राजस्थानी पहेलियां – अेक निरख अेक परख

14.8 इकाई रौ सार

14.9 अभ्यास रा सवाल

14.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची

14-0 mnnnL;

इण इकाई रौ मूळ उद्देस्य राजस्थानी लोक साहित्य री भांत–भांत विधावां सूं छात्र–छात्रावां नै इणांरी जाणकारी सूं अवगत कराणौ है। इणांमें आपरी लोक–संस्कृति रा दरसाव होवै है। आपरा विस्वास, रीति–रिवाज, गीत, कथावां, गाथावां कैवतां सूं राजस्थानी री संस्कृति उजोगर व्है है। इण इकाई रै अध्ययन सूं आपानै निम्न बिन्दुवां री जाणकारी मिळसी–

- राजस्थानी लोकगीतां री जाणकारी।
- राजस्थानी री भांत–भांत लोककथावां री जाणकारी।
- राजस्थानी लोकगाथावां री जाणकारी।
- राजस्थानी लोकनाट्यां री जाणकारी।
- राजस्थानी कहावतां अर पहेलियां री जाणकारी।

14-1 iLrkouk

लोक साहित्य में लोक जीवण प्रतिबिम्बित होवै है। लोक जीवण री सृस्टि रूप में अभिव्यक्ति लोक साहित्य में ही मिळै है। औ साहित्य प्रायः मौखिक होवै है। लोक साहित्य किणी व्यक्ति विसेस द्वारा निर्मित नीं होवै है अर नीं किणी व्यक्ति विसेस री निधि होवै है। इणरी अभिव्यक्ति सामूहिक होवै है। लोक साहित्य रौ छैत्र घणौ विसाल है। मिनख रै जळम सूं लैय'र उणरी मिरत्यु पर्यन्त तांई रौ लेखौ–जोखौ इण साहित्य में मिळै है। लोक साहित्य जन कल्याण रै भाव नै प्रस्तुत करै है। औ साहित्य लोगां नै किणी तरै री शिसा देवण वाळौ चम्पू काव्य है। जको लोगां रै अधिकारां अर कर्तव्यां नै भी अभिव्यक्त करै है। जै साहित्य समाज रौ दरपण है तो लोक साहित्य भी देहाती समाज रौ प्रतिबिम्ब मान्यौ जा सकै है। औ साहित्य भांत–भांत तरै रै रूपा में मिळै है, ज्यां– लोकगीत, लोककथा, लोक गाथा, लोक नाट्य, लोक–कैवतां नै पहेलियां रै रूप में मिळै है। इण इकाई में अै सगळी विधावां रौ सांगोपाग बरणाव मिळै है।

14-2 jktLFkkuh yksdxhr & vad fuj[k vad ij[k

लोकगीतां री दीठ सूं राजस्थान घणौ सिमरध रैयो है। अठै भांत–भांत अवसरां माथै गाया जावण वाळां गीतां री संख्या अणगिणत है। इणमें सबद रै साथै संगीत रौ अनूंठौ मैळ होवै है। सबद अर सुर इणनै जीवण रस देवै है।

सामाजिक अर सांस्कृतिक दीठ सूं लोकगीत बौत महताऊ है। देस री आत्मा रा दरसण इणमें होवै है। लोकगीतां में किणी अेक मन री अभिव्यक्ति नीं व्है'र सामूहिक अभिव्यक्ति होवै है। आपरी भासा में अर आपरी भावना भावना में गाणौ ई लोकगीत कैहलावै है। जीवण रौ सुख–दुख, राग, द्वैष, पीड़ा इणीज में व्यक्त होवै है।

लोकगीता रौ इतिहास ऊतौ ईज पुराणौ है, जिती कै पुराणी मानखै री संस्कृति है। लोक संस्कृति री एकरूपता लोकगीतां में ई देखण मिळै है। लोकगीत आदि मानखै रौ उच्छब भर्‌यो संगीत है।

लोकगीत जीवण री हरैक अवस्था यानि गरभावस्था सूं लैय'र मिरत्यु तांई हर तरै सूं प्रेरणा ग्रहण'र काल मुजब भावनावां नै अभिव्यक्त करै है। लोकगीतां में आरोह–अवरोह, गेयता, संगीतबद्धता भी होवै है। इणांमें निराळौपण व्हैतां थकां हमेसा नूतनता देखी जा सकै है।

राजस्थानी लोकगीत भी भांत–भांत तरै रा होवै है। जिणामें संस्कारां रा गीत, धारमिक विस्वासां रा गीत, रितुवां रा गीत, सिणगार अर वियोग रा गीत, मैणत–मजूरी रा गीत, पसु–पंखैरू रा गीत, अर अन्य फुटकर गीत आद रूपा में मिळै है। संस्कारां रा गीतां में मिनख रै जळम सूं लैय'र मिरत्यु तांई रौ लेखो–जोखौ मिळै है। जळम रा गीतां में हूंस, प्रसव, पीळौ, घेवर, घूघरी, दाई, अजवायण, सूंठ–गूंद, पीपरामूळ, जच्चा–राणी जळवा, झडूला आद कैई तरै रा गीत गाया जावै है। प्रसव वेदना री सूचना देवण में संकोचसीळ पत्नी री व्याकुलता बढ़ जावै है। बां लज्जावंस संकेता सूं पति नै वस्तु स्थिति रौ निर्देस देवै है, अैड़ी मारमिक अवस्था रौ गीत है, प्रसव गीत–

''नान्ही सी नार, नारेळी सो पेट

पीड़ चालै उतावळी जी,

पीड़ चालै औ धण लुळ लुळ जांय

करै भंवर सूं विनती जी।''

टांबर व्हीयां पछै जच्चौ गीत भी गायो जावै है। इणरी कुछैई ओळियां इण तरै है–

''हौलर जायां नै हुई छै बधाई

थे म्हारो वंस बधायौ रै अलबेली जच्चा।।''

संस्कारां रा गीता में ब्या'व रा गीतां री छट्टा घणी निराळी है। ब्या'व रा गीत भी भांत–भांत तरै रा होवै है। ब्याव रा मांगलिक लोकगीतां में विनायक, हळदी, घोड़ी, बन्ना–बन्नी, मैंदी, सेबरा, कांमण, जळौ, ओळू, चंवरी, फेरा, वायरौ, बधावौ, तोरण, हथळैवा आद गीत घणा चांवा है।

ब्याव संस्कार री सुरूवात 'विनायक' गीत सूं होवै है। इण गीत री अेक ओळी निम्न है –

''चाला हो गजानन जोसीडां रे चाला,

लगन्यां लिखाई बैगा आवां हो गजानन,

म्हारां विड़द विनायक।''

ब्याव रै अवसर माथै प्रेम री प्रतीक मैंदी रा। गीत गाया जावै है। हरैक लुगाई आपरै हाथां में मैंदी रचा'कर आपरै हिये रै हैत अर उल्लास रै भावां नै प्रकट करै है। ज्यां –

''मैंदी वाही वाही वालूडां री रेत,

प्रेम रस मैंदी राचणी।''

मिरत्यु संस्कार रै हरजसा में बूढ़ा–बढ़ेरा रै मरणै पर हिंडोळौ गीत गायो जावै है। जिणरी कुछैई ओळियां इण भांत है –

''कठै सूं आई बडेरा थानै पालकी,

कठै सूं आया रे बीमांण।''

राजस्थानी लोकगीतां में तीज–तिंवार, व्रत, उपवास, रितुवां अर देवी–देवतावां रा गीत नै हरजसां री भी घणी मानता है। फागुण में होळी, चैत्र में गणगौर, सावण में तीज रा गीत गाया जावै है। गणगौर परब पर कुंवारी नै सुहागन स्त्रीयां गोरी री पूजा करै है। इण समै गणगौर रै गीत गाया जावै है –

''खेलण दो गणगौर भंवर म्हानै खेलण दो गणगौर,

ओ जी म्हारी सखियां जोवै वाट

भंवर म्हानै खेलण दो गणगौर।''

राजस्थानी लोकगीतां में सिणगार रस रा गीत भी घणां महताऊ रैया है। इणांमें संयोग–वियोग सिणगार रै लोकगीत भी आवै है। प्रियतम रै खातर विरह में तड़फण वाळी नववधू री तड़फण, वाळी नववधू री तड़फण, विधवा री कसक नै कन्या रौ हास्य भी देखण मिळै है। ज्यां–

''छप्पर पुराणां रै पिया पड़ गया रे,

तिड़कण लाग्यां बौदा बांस।''

राजस्थान में पसु–पखैरूवां रै माध्यम सूं संदेस भेजण री लाम्बी परम्परा रैयी है। कांग, कुरजा, सगुण चिड़ी, तोता, मोर, हिरण आद रै माध्यम सूं विरही मान री मूळ संवेदना नै प्रकट होण रौ अवसर मिळै है। इण गीतां री कुछैई ओळियां इण भांत है –

''उड़ उड़ रे म्हारा काळा रे कांगळा' (कांग)

''कुरजां ऐ म्हारा भंवर मिला दे रे'' (कुरजां)

''कांगळियां गैरो गैरो बोल नीं रे'' (कागळियो)

''मोरियां आछौ बौळियौ रै ढ़ळती रात में'' (मोरिया)

इण तरै कैयो जा सकै कै विसय अर भांत–भांत आधार माथै राजस्थानी लोकगीतां री संख्या अणगिणत है अर इणामें अठै री संस्कृति नै परम्परा रौ मोहक चितराम हिये माथै अमिट छाप–डाळण वाळी है।

14-3 jktLFkkuh ykd dFkk & vad fuj[k vad ij[k

राजस्थान लोक कथावां रौ भण्डार मान्यौ जावै है। इणरै कण–कण में कथावां समायी व्हीं है। राजस्थानी आपरी बातां अर ख्यातां खातर घणौ चांवौ है। लोक कथावां में कैवण सुणण री अेक न्यारी ही सैळी है। मिनख नै आपरौ बखत गुजारण खातर कोई ने उपदेस देवण सारू वात सुणायी व्हैला? अर बात बरणाव री आ परम्परा सीखी व्हैलां। लोककथावां री परम्परा रौ मूळ स्रोत विद्वानां नै वेदां में देख्यौ है। डॉ. सत्येन्द्र नै धरम गाथावां में लोककथा रौ प्राचीन मूळ रूप मान्यौ है। मानखौ जळम रै साथै लोककथावां नै ल्यौ है। लोगां में कांणी कैवण री पुराणी परम्परा री है। आपरी अनुभूतियां नै मानखौ कथा रै रूप में ही अभिव्यक्ति दी है। लोककथा में जीवण रै सुख–दुख, रीति–रिवाज, आस्थावां, विस्वास, परम्परावां अभिव्यक्त होवै है।

राजस्थान में कैयी जावण वाळी बातां (कथा) में वीर कथात्मक कथावां, नीति सम्बन्धी कथावां, धरम व्रत सम्बन्धी कथावां, प्रेम सम्बन्धी कथावां, हास्य प्रदान कथावां, देवी–देवतावां सूं सम्बन्धी कथावां, स्त्री चातुर्यता री कथावां, चोर धाड़ेतियां री कथावां आद मिळै है। लोककथा रौ विकास 15वीं सदी रै बाळावबोध अर वचनिकावां में कथावां गूंथीजी है। 16वीं सदी में भैरू सुंदर रौ बाळावबोध, हँसावही आद ग्रन्थां में कथावां रौ उल्लेख मिळै

है। 'रतना हमीर' अर 'पन्ना वीरमदे री वात' राजस्थानी कथा साहित्य री पैळी प्रकासित कथावां है पछै 'पलक दरियाव' छपी ही।

लोककथावां रै संग्रै रौ काम अठै रा विद्वानां नै कैई बरसां तांई री मैणत रै साथै कर्‌यो है, जिणमें सूर्यकरण पारीक, नरोतमदास स्वामी, कन्हैयालाल सहल, विजयदान देथा, अगरचंद नाहटा, मुरलीधर व्यास, मनोहर सरमा, नानूराम संस्कर्ता आद रा नाम चांवा रैया है।

विजयदान देथा री ''वातां री फुलवारी'' रै कैई अंक छपकर लोककथावां रौ संरक्षण रौ जोरदार काम कर्‌यो है।

ओ लोककथावां रौ कैवण रौ तरीकौ न्यांरौ है। कथा रै विचाळै दूहा रौ प्रयोग कर्‌यो जावतो हो। बात सुरू करण रै पैळा बात बिड़दावै अर सुणणै–सुणानै रौ माहौल बणायो जावतो हो, इणनै 'छोगौ' कैयो जावतो हो–

''बात सांची भली, पोथी बांची भली।

देह सांजी भली, बहूं लांजी भली।''

इण तरै बात रै छोगै दैय'र ''रामजी भला दिन दे रे'' रै साथै बात री सुरूवात व्हैती ही। बात रै बीच में चुटकला अर गप्पा जोड़ अर बात खतम व्हैती तो सुणण वाळा नै धन्यवाद रूप में आसीस देवता हा।

वीरता सम्बन्धी कथावां में अठै रा सूरवीरां री कथावां आवै है। जिणमें पाबूजी री वात, महाराणा प्रताप री वात, अमरसिंह राठौड़ री वात, दुरगादास री वात, पन्नाधाय री वात, हम्मीर री वात, राव रणमल्ल री वात आद है। इणांमें वीर पुरुसां री वीरता रौ सांचौ चितराम मिळै है।

प्रेम सम्बन्धी कथावां में प्रेम रै मरम नै दरसायो गयो है। प्रेम मिनख री शास्वत अभिव्यक्ति है। राजस्थानी प्रेम प्रधान कथावां में प्रेम री मोहक अभिव्यक्ति हिये माथै गैरो असर डालण वाळी है। इणामें ढोला मारू री बात, मूमळ–महिन्दर री वात, निहालदे सुजतान, उमादे साँखली री वात, जलाल–बूबना, आभलदे–खींवजी री वात, जेठवा अजळी री वात, बीझा–सोरठा, उमादे भटियाणी री वात आद खास है। नीति सम्बन्धी कथावां में लोक जीवण सूं सम्बन्धित अणगिणीत कथावां मिळै है। मनोरंजन रै साथै समाज रौ उत्थान नै जीवण स्तर नै ऊँचौ करण में अै बातां घणी महताऊ है। ज्यां–पाप पुण्य री वात, अक्ल री वात, अक्ल बड़ी कै भैंस, महात्मा अर वेस्या आद खास है।

हांस्य प्रधान सम्बन्धी कथावां में हँसी–मजाक रै साथै समाज री कुरुतियां–रूढ़ियां माथै संकेत कर्‌यो जावै है। नैतिकता सूं हीन जीवण बिना चक्का री गाड़ी रै ज्यां अकारत होवै है। ज्यां–पोपाबाई री बात, फोफाणदे री बात आद खास है। धरम–व्रत अर तीज तिंवार सम्बन्धी कथावां में धरम–भगती सूं सम्बन्धित बातां देखी जा सकै है। राजस्थान री संस्कृति माथै धरम–दरसण रौ अमिट प्रभाव देख्यो जा सकै है। इण तरै री कथावां में शिव–पारबती रै ब्याव री बात, रुकमणी हरण री बात, लिछमी री बात, विनायक री बात, होळी–दियाळी री बात, गणगौर री बात खास है।

चोर धाड़तियां री कथावां में अठै रा चोर–धाड़ेतियां रो जीवण घटनावां रौ बरणाव मिळै है। अै लोग अमीर लोगां नै लूटता हां, अर गरीबां में पैसईयां बाटता हां, ज्यां खीवौ–बीझौ री बात, डूंगरजी–जुहारजी री बात, लालजी–पेमजी री बात आद खास है।

इण तरै राजस्थान लोककथावां सूं सम्पन्न प्रदेस रैयो है। इणांमें कथानक रूढ़ियां, लोक विस्वासां रै साथै संयोग तत्वां री प्रधानता देखण में मिळै है। बातां री भासा घणी सरस नै सुबोध है। अै बातां (कथा) मनोरंजन रै साथै लोक समाज रौ मारग दरसण करै है। लोककथा री कथन पद्धति में कथा–कथन करण वाळा री मनोवृतियां, संस्कृति, आचार–विचार, आस्था, धारमिक मान्यतावां भी आपरौ महत्व राखै है।

लोक गाथा यानी बरनावत्मक कथावस्तु युक्त होवै है। औ इंगरेजी रै फोक बैलेड पर्यायवाची सबद रै रूप में कर्‌यो गयो है। इणमें किणी अेक व्यक्ति रै जीवण रौ सांगोपग बरणाव होवै छै जको कथा वस्तु प्रधान रैवै है। औ आकार अर प्रकार में मुक्तक गीतां सूं मोटौ होवै है। कथावस्तु रै कारण औ सामान्य गीतां में सूं घणौ सरस, सजीव, रोचक अर सशक्त होवै है। लोककथा कैयी नै सुणाई जावै जदै कै लोकगाथा नै किणी वाध्ययंतर रै साथै गायनै सुणायी जावै है।

राजस्थानी लोक जीवण में वीर, सिणगार अर करुण रस री बोळी (घणी) गाथावां देखी जा सकै है। इणांमें सबद योजना अर अलंकारित भासा–सैली, लोकोक्तियां नै मुहावरा रौ सटिक प्रयोग प्रकृति रा सुहावणां सबद चितराम, नखारीख अर सिणगार रा मौलिक चितर असरदार नै हिये रा तारां नै झक झोड़ण वाळा है। इणांमें प्राचीन परम्परावां रै अनुस्ठानां रौ बरणाव अक्सर प्राप्त होवै है। इणांरै खातर अेक विसेस वातावरण अर अनुस्ठानिक तत्व री जरूरत होवै है। अै लोकगाथावां जातीय, प्रादेसिक, संस्कृति रौ निराळौ चितराम प्रस्तुत करती है। वचन पालणा, गायां री रिच्छा, स्त्री री रिच्छा, शरण में आयोड़ां री रिच्छा, दानसीलता अर जुद्धा में अनूंठे सौर्य रौ प्रदर्सणआद रौ बरणाव राजस्थानी लोक गाथावां में घणी बारीकी नै खूबसूरती रै साथै संजोयौ गयो है। इणांनै पवाड़ा भी कैयो जावै है।

राजस्थानी लोकगाथावां भी आकार परकार री दीठ सूं भांत भतीली है। लघु लोकगाथावां रै साथै अठै छः छः मईनां में खतम होवण वाळी लाम्बी लोकगाथावां भी घणी चांवी है। बगड़ावत लोकगाथा अैड़ी लाम्बी गाथा है। राजस्थानी लोकगाथा रौ वरगीकरण 7

वीर कथात्मक लोकगाथा

प्रेम कथात्मक लोकगाथा

रोमांच कथात्मक लोकगाथा

निर्वेद कथात्मक लोकगाथा

पौराणिक लोकगाथावां

वीर कथातमक लोक गाथावां – वीर कथात्मक लोकगाथावां रे वरग में वै लोकगाथावां आवै है, जिणामें वीरता रै भावां रौ दरसाव होवै है। राजस्थान वीर–भोम है। वीरत्व अठै कण–कण में व्याप्त है। आ गाथावां राजस्थान रा सूरवीर नायकां रै पराक्रम रौ चित्रण व्हीयों है। इणमें तेजाजी अर पाबूजी नै शरणागत अर गऊ रिच्छा खातर, गोगाजी नै भी गऊ, देस अर धरम री रिच्छा करी, बगड़ावतां नै वचन–रिच्छार्थ, गलालोंग नै वचन–पालन नै प्रतिशोध लेवण खातर विसर्जित कर्‌यो। सुल्तान अेक अद्वितीय वीर हो उणनै 52 साके कर्‌या, डूंगजी–जुवार जी रै पराक्रम सूं इंगरेजी सता भी हिल उठी ही। इण तरै री लोकगाथावां में पाबूजी, गोगाजी, तेजाजी, देवनारायण बगड़ावत, डूंगजी–जुवारजी, विहालदे सुल्तान आद री लोकगाथावां घणी चांवी है।

प्रेम कथात्मक लोकगाथा – प्रेम कथात्मक लोकगाथावां रै माध्यम सूं प्रेम अर सिणगार रस री मोहक छट्टा रा दरसाव मिळै है। इणांमें प्रेम रै साथै वीरता अर भगती सम्बन्धी रसा री छट्टा भी देखी जा सकै है। प्रेम गाथावां में प्रेमी अर प्रेमिका रै मिलण में कैई तरै री बांधावा आवै, पाण सांच रै कारण अन्ततः ''सत्यमेवजयते'' रै भारतीय आदर्स री पालणा देखी जा सकै हैं ढ़ोला मारू बीझा–मूमळ महिन्दर, सैणी बीजानंद, जेठवा ऊजळी, निहालदे सुलतान, जलाल–बूबना, नागजी–नागवंती आद लोक गाथावां खास है।

निर्वेद कथात्मक लोक गाथावां – इण वरग में गोपीचन्द भरथरी री लोकगाथा घणी चांवी है। राजस्थानी लोकगाथा साहित्य घणौ अथाह सागर है। जिणमें भांत–भांत रंगा री भावोमियां है। संस्कृति रै अनमोल मुक्ता है अर वीर चरित्र रूपी रतन है। पौराणिक लोक गाथा – राजस्थान में पुराणां अर महाभारत री कथावां सूं सम्बन्धित लोक गाथावां भी गायी जावै है। इण लोक गाथावां में लोक मानसीय तत्व मिळै है। लोक जिण आदर्सो

री कामना करै है उणांरी झळक इण लोक गाथावां में मिळै है। इण रा उदाहरणां में काळा गोरा रो भारत, रामदला री पड़, कृष्णदला री पड़, भीमो–भारत, सैत गैंडो ब्यावलौ, द्रुपदा अवतार, अहमदो आद खास है। इण तरै लोकगाथावां वास्तव में कथागीत है, इणांमें जकी कथावां होवै है वै लोक जीवण सूं सम्बद्ध होवै है। इणांमें सामाजिक, व्यक्तिगत, जातिगत अर आंचलिक विसेसतावां रौ बाहुल्य घणौ मिळै है।

14-5 jktLFkkuh ykd ukV;k & vad fuj[k vad ij[k

मिनख री सभ्यता अर संस्कृति रै साथै लोकनाट्यां रौ गैरो हुड़ाव रैयो है। इण विद्या में अनुकरण या नकल करण री प्रवृत्ति पायी जावै है। लोकनाट्यां नै आधुनिक नाटकां रौ बीज रूप कैयो जा सकै है। राजस्थानी लोकजीवण में भांत–भांत तरै सांग करनै किणी व्यक्ति व्यवस्था रै गुण–दोसां नै उजोगर करण रै उद्देस्य सूं लोक नाट्यां रौ जळम व्हीयों है। गांवा में अजै भी लोकनाट्यां नै देखण खातर स्त्री–पुरुस नै टांबरा री भीड़ उमड़ती देखी जा सकै है।

लोकनाट्य लोक अर नाट्य रौ संयुक्त रूप है। लोक सबद रै द्वारा जको जन समूह आपरै सांमी आवै है अर उणरी कृति जदै नाट्य रूप में कथोपकथन रै माध्यम सूं किणी कथावस्तु नै उपस्थित करै है। उणनै लोकनाट्य कैवै है। इण विद्या में अभिनय, संगीत अर रंगमंच आद तत्वां रौ योगदान रैवै है।

लोकनाट्य री भासा सीधी सरल अर आमबोलचाल री होण रै कारण ही अनपढ़ लोग इणमें रात भर रस ले सकै है। लोकनाट्य आखै भारत में न्यांरा–न्यांरा नाम सू चांवा है। ज्यां उत्तर–भारत में औ रामलीला, रासलीला, नौटंकी रै रूप में चांवा है तो औ ई हिज लोकनाट्य मालवा में ''माच'' रै रूप में चांवौ है। राजस्थान में इणनै 'ख्याल' कैयो जावे है तो गुजरात में 'भवाई' सूं सम्बोधन कर्‌यो जावै है। बंगाल में लोकनाट्य 'जात्रा' रै रूप में मिळै है। दिक्खण भारत में तेलगू, तमिल अर कन्नड़ भासा–भासी छैत्र में 'यक्षगान' रै रूप में लोकनाट्य रौ चलन है।

राजस्थान रै चांवा लोकनाट्यां में खेळ, निरव्य, रामलीला, कठपुतळी, नौटंकी, रम्मत, सांग, झामतड़ौ, तमासा, ख्याल, तुर्रा–कलंगी, भवाई, तैरह ताळी, कच्छी घोड़ी, गवरी आद खास है।

राजस्थान रा चांवा लोकनाट्यां रौ परिचै इण भांत है –

(1) तुर्रा–कलंगी – औ नाट्य ख्याळ रौ अेक भाग है। लगैटगै 300 बरसां पैला तुरनगिरी अर शाह अली नाम रा दोय मुसळमान मिळनै तुर्रा–कलंगी अखाड़े री थरपणां करी ही। तुरनगिरि गुसाई अर शाह अली मुसळमान हा पण शिव रा भगत हा, अेक भगवा नै दूजै हर्‌यां कपड़ा धारण करता हा। सुरू सुरू में दोनूं पखां रा लोग किणी अेक ठौड़ माथै बैठनै शास्त्रत करतां जिणमें किणी अेक पख री जीत नै दूजै पख री हार व्हैती ही। अेक बार दोनूं पख हारजीत रै फैसले माथै अड़ग्यां नै आप–आपरै परक नै विजेता मानण री जिद्ध करण लाग्यां, झगडो जदै घणौ बढ़ग्यों तदै निर्णय खातर वै बादसां रै दरबार में गया, बादसां भी दोनूं पखा री ढ़पळियां राग–सुणीयां रै पछै इणांरी री चातुरी कळाकारी रा करतब देखनै दंग रै गया, बै भी हारजीत रौ निर्णय नीं कर सक्या। दोनूं कलाकारां नै आप–आपरै कळा रौ अनूंठौ कलाकार घोषित करनै बादसां उणांनै सम्मान री खातर तुर्रा नै कलंगी भेंट करी, तदै इण नाट्य नै तुर्रा–कलंगी कैयो जावण लाग्यौ। तुर्रा–कलंगी शिव अर सगती रा प्रतीक मान्या जाण लाग्यां। अजै भी मेवाड़ रै चितौड़ रै कनै इणांरौ प्रचलन है।

(2) कठपुतली– राजस्थानी कठपुतली रौ आपरौ अनूंठौ इतिहास है। कांठ री बण्योड़ी पुतळियां नै हलाय'र नै डोरां री सहायता सूं संचालित करै कपड़ां अर रूंई सूं कठपुतली रा हाथ बणाया जावै अर पगां री ठौड़ लम्बो झांवौ पहरायौ जावै है। झांवा री कोर–किनारी अर जरी–बूटी सूं घणौ आकर्सक बणायो जावै है।

कठपुतळी रौ खेळ देखण खातर किाणी न्यारै मंच री जरूरत नीं होवै, इण खेळ नै गलियां, चौराहा, चबूतरा, देवरां माथै खेल्‌यो जा सकै है। कठपुतली रा खेलां में अमरसिंह राठौड़, विक्रमादिव्य री सिंघासण बतीसी अर अैतिहासिक घटनावां नै कुरुतियां रौ बखांण इणांरै माध्यम सूं कर्‌यो जावै है।

¼3½ **rjg rkGh &** राजस्थान में कामड़ जात तैरह ताळी रै खातर घणी चांवी है। बैठक रै रूप में कामड़ लुगाई तैरह मंजीरा री सहायता सूं तैरह तरै रा नाच भाव दिखावै है। सरीर रा सगळां अंगा री सहायता सूं तैरह तरै रा नाच भाव दिखावै है। सरीर रा सगळां अंगा री सहायता सूं कामड़ स्त्री पग फैलानै, बैठने, उठनै, चक्कर लगाय'र नै सरीर नै सिमट नै भांत–भांत तरै री पेंचीदी मुद्रावां रै माध्यम सूं इण कळा रौ प्रदर्सण करै। कामड़ स्त्री आपरै मुंडे में तलवार भी पकड़ नै राखै है। कामड़ स्त्री सिर, भुजा, कंधा, कमर, पांव (पग) माथै तैरह मजीरा बांधै है। फैर बैठ'र आपरै हाथां में दोय मंजीरा लियां उणरौ वादन करै हे। पुरुस ढ़ोल, मंजीरा अर तंबूरा माथै रामदेवजी री आरती गावै है। कामड़ स्त्री इण निरव्य में अनाज पीसणां सूं लैय'र आटौ लगावणौ, रोटी बणाणौ, परोसण जैड़ी दरजन भर क्रियावां री आंगिक अभिव्यक्ति करै है।

¼4½ **xojh &** वादन, संवाद, प्रस्तुतिकरण अर लोक–संस्कृति रै प्रतीकां में मेवाड़ री गवरी निराळी है। इणमें कैई तरै री निरव्य नाटिकावां होवै है जकी पौराणिक कथावां, लोक गाथावां अर लोक जीवण री भांत–भांत झांकिया माथै आधारित होवै है। गवरी रौ खास पात्र 'बूढ़िया' भस्मासुर रौ जप होवै है अर दूजां पात्रां में 'राया' होवै है जकौ स्त्री बैस में पारबती अर विस्णु रो प्रतीक होवै है। गवरी में पुरुस पात्र होवै है। गवरी सवा मईनां तांई खैल्यो जावै है। औ नाट्य खासतौर सूं आसुरी संगतियां माथै दैविक सगतियां री विजै नै दरसावण वाळौ निरव्य है। जिणमें नौ रसां रौ मिश्रण है। गीत, वारता अर झामटड़ौ रै गेय संवादा रै साथै थाळी अर मांदल री लय माथै इणरौ मंचन होवै है। राखी रै दूजै दिन सूं लैय'र आखै श्राद्धपख तांई इणरौ गांव–गांव निरतन होवै है।

¼5½ **jEer &** होळी रै अवसर माथै बीकानेर अर जैसळमेर कांनी प्रदर्सित ख्यालां नै रम्मत कैयो जावै है। बीकानेर री रम्मतां में वारता संवाद री प्रधानता रैवै। इण सैळी री रम्मतां में गोपीचन्द भरतियां री भगत प्रहलाद, लैला–मंझनूं, हरीशचन्द्र ध्रुव चरित्र, अमरसिंह राठौड़ री रम्मतां घणी जांवी है।

जैसळमेर री रम्मतां में मूमळ महिन्दर रौ खेळ, भगत पूरणमल, भरथरी–पिंगळा रा खेळ घणां चांवा रैया है।

¼6½ **QM &** तीस फुट लम्बे नै पांच चौड़ै कपड़ां रै चितरात्मक परदा नै फड़ कैयो जावै है। किणी कपड़ै रै परदै रै मांथै वीर पुरुसां री वीरता नै उणारै जीवण री भांत–भांत लीलावा रौ दरसाव करनै भोपा–भौपी उण वीर पुरुस री गौरव गाथा नाच–गायनै लोगां नै सुणायौ जावै है। भोपा रावण हत्थो बजावै है अर भोपण अेक चित्र रै आगै नाच गायनै दरसकां रौ मन बहलावै है। राजस्थानी री चांवी फड़ा (पड़) में पाबूजी री फड़, गोगाजी री फड़, बगड़ावतां री फड़ आद।

¼7½ **jkoGk jh jEer &** राजस्थान में रावळ जात रा लोक भी आपरै सांग रूपां–राम्मतां रै खातर घणां चांवा है। अै लोग चारणां रा याचक होवै है। अै आपरै जजमानां रै खातर रम्मत मांडै है। रम्मत में सबसूं पैला देवी री स्तुति रै रूप में माता रौ सांग लायो जावै है। इण खातर इण रम्मत नै माताजी जी रम्मत भी कैयो जावै है। आ रम्मतां में पुरुस ही भाग लेवै है। रावळां री रम्मत रा सांग में चाचा–नोहरा, सेठ सेठाणी, मियां–बीवी, जोगी–जोगण, बीकाजी रा सांग घणां चावां रैया है।

¼8½ **HkokbZ &** राजस्थान में भवाई नाट्य आपरै ढंग रौ अनूंठौ नाट्य है। इणमें पात्र व्यंग्यवक्ता व्है है। तात्काकि सवाल–जवाब अर सामायिक समस्यावां माथै चोट करणौ इणांरौ खास काम है। इण निरव्य री खास विसेसतां निरव्य अदायगी, शारीरिक क्रियावां रै निराळै चमत्कार अर लयकारी रौ बरणाव मिळै है। इण निरव्य में सिर माथै 7–8 मटका राख'र निरव्य करणौ, जमीन माथै पड्यों रूमाल मुंडे सूं उठाणौ, गिलासां माथै नाचणौ, थाळी रै किनारे पर निरव्य करणौ, तेज तलवार पर निरव्य करणौ, कांच रै टुकडां माथै निरव्य करणो आद इणरी विसेसता है। इणमें कथानक गौण व्है जावै है पण गायन, हास्य अर निरव्य घणौ छा जावै है।

(9) ख्याल – ख्याल आखै राजस्थान में आपरी छैत्रीय रंगत रै खातर घणी चांवी रैयी है। इणमें कैई वीरां री काण्यां इण तरै सूं सामिल है कैवै वीर रस प्रधान व्हैतां थकां भी दूजा रसां नै व्यक्त करण में लारै नीं है। जदै इणांनै व्यावसायिक होण रौ अवसर मिल्यो तो विसय अर रंगत री विसेसतां इणांनै राजस्थान सूं बारे भी

चांवो व्हैण रौ अवसर दियो है। इणामें खास रूप सूं किणी आदर्स चरित्र रौ जीवण चित्रित रैवै है। राजस्थान रै न्यारै न्यारै छैत्रा में कैई तरै री ख्यालां रौ प्रचलन है। जिणामें कुचामणी ख्याल, चिड़ावी ख्याल, अलीबक्षी ख्याल, मेवाड़ी ख्याल, तुर्रा–कलंगी ख्याल आद खास है।

¼10½ xj & आदिवासी छैत्रा में होळी रै अवसर माथै गैर निरव्य रौ चलन घणौ उल्लासमय अर स्फूर्तिदायक रूप में होवै है। गोल घेरे में होवण रै कारण इणरौ नाम घेर पड़्यो हो। जको आग चाल'र गैर कैयो जावण लाग्यों हो। गैर मारवाड़ सूं लैय'र मेवाड़ अर वागड़ तांइ चांवौ है। मेवाड़ अर बाड़मेर छैत्र में पुरुस लकड़ी री छड़िया लैय'र गोल घेरे में निरव्य करै है। गैर करण वाळा 'गेरिये' कैहलावै है। ढ़ोल, बाँकियौ अर थाळी वादक वृत रै विचाळै मैं रैवै। वीर–रौद्र रस प्रधान औ निरव्य आखी रात चालै है। रूण्डेढ़ा, वाना, खरसाण, बांसड़ा आद गांवा में भी गैर निरव्य होवै है।

इण तरै लोकनाट्य में सहज भाव व्है है, जको मानखै रै जीवण सूं जुड़यौ थको है। लोकनाट्य री रचना, कथावस्तु लोकरूचि रै अनुकूल होवै है। वाद्ययंतरा में नगाड़ा जैड़ा वाधां री धुन दरसकां में अेक नूंवी चेतना रौ संचार करै है। लोकनाट्य जनता में मनोरंजन रै साधन री तुलना में कितौ चांवौ है। अर्थात् लोक संगीत पात्रां री मुद्रावां, लोक धुनां री स्वर लहरी, लोक बोली आद सैंग मिला'र दरसक अर पाठकां नै आकर्सित करै है।

14-6 jktLFkkuh ykd dgkorka vj ykdkfä;k

''लोकोक्ति'' सबद संस्कृत रौ रूप ही कहावत है। लोकोक्ति लोक री विसिस्ट उक्तियां है। लोक साहित्य रौ अध्ययन विसय मानतां व्हीयां लोकोक्ति नै कहावता रै रूप में स्वीकार कर्‌यो जावै है। लोकोक्ति या कहावत जन साधारण में चांवी उण लोक चांवी उक्ति या कथन रौ नाम है। जकी सारगरभित होण रै साथै छोटी अर प्रभावी भी होवै है। किणी नै उपदेस देणै अर भूल री ओर ध्यान दिलाणौ, किणी माथै ढाल'र कुछ कैहणौ, उपालम्भ देणौ, व्यंग्य करणौ, आपरै कथन नै प्रमाणि करण खातर कर्‌यो जावै है। आ तीखै बाण री तरै चोट करण वाळी उक्ति होवै है। लोकोक्तियां रौ प्रयोग घणखरां बूढ़ा–बढ़ेरा करै है। कहावतां अेक तरै सूं अनुभवां रौ खजानौ है। ग्रामीण जीवण में कहावतां रौ बौत प्रयोग होवै है। लोकोक्तियां ग्यांन सागर है। लोकोक्तियां रै माध्यम सूं देस री जनता री विचारधारा, ग्यांन संस्कृति रौ पतो सहज लाग जावै है।

मानखै नै जदै थोड़ा सा सबदां में किणी बात रौ मरम बताणौ व्है तो किणी कहावत रौ उपयोग कर्‌यो जावै है। आ थोड़ा सबदां रा वाक्य या पद गैरा अनुभव रै आधार माथै आधारित होवै है। कहावत रौ मतलब कैयी गयी बात होवै है। सगळी तरै रौ व्यावहारिक ग्यांन कहावतां में सुरक्षित मिळै है। कहावतां जन साधारण खातर उपदेसां रौ काम करै है।

राजस्थानी भासा में ''कहावत'' रै खातर कैवत, कुहावट, कुहावत आद सबदां रौ प्रयोग कर्‌यो जावै है। कहावतां रौ जनक कोई व्यक्ति विसेस नीं व्है'र अेक समूह विसेस है। अै गागर में सागर वाळी उक्ति नै चरितार्थ करै है।

कहावतां री परिभासावां –

- बाईबिल ग्रन्था रै मुजब– ''ग्यांनी लोगां री उक्तियां नै कहावतां कैयो जा सकै है।''
- ट्रेच रै मुजब – ''लोकोक्तियां अर कहावतां अैड़ा कथन है, जिणांरा निर्माता अनाम नै अग्यांत है।
- अरस्तु रै सबदां में – ''लोकोक्तियां साक्षी रौ रूप धारण कर्‌यां रैवै है।''
- हावेल रै मुजब – ''जनता री वाणी है।''
- फीस्ते रै मुजब –''व्यावहारिक जीवण रै मारग–दरसण रा वचन है।''
- रिजले रै मुजब – ''भौतिकवाद रौ बीजगणित।''
- 'डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल रै मुजब– ''मानवीय ग्यांन रै छोखै अर चुभतां व्हीयां सूत्र कैयो है।''

इण तरै आ सगळां विद्वाना रा मत सूं स्पस्ट व्है जावै है कै कहावतां रौ निर्माता अग्यांत है। अै किणी चीज री साखी है। आमजन री वाणी है। कहावतां पीढ़ी दर पीढ़ी चालती रैवै है।

कहावतां रौ वरगीकरण – कहावतां आपारै जीवण रै हरैक पखसूं सम्बन्धित होवै है। कहावतां भी भांत–भांत तरै री होवै है। धरम, दरसण, सगुन–अपसगुन, लोक विस्वासां सूं सम्बन्धित भी व्है सकै है। राजस्थान रा न्यांरा न्यांरा विद्वान इणांनै न्यांरै न्यांरै भागा में बाट्यो है।

Mk- lR;Un j e|tc &

(1) सामान्य कहावतें

(2) स्थानीय कहावतें

Mk- ';ke ijekj j e|tc&

(1) कृषि संबंधी

(2) सास–बहु संबंधी

(3) नीति परक

(4) रीति–रिवाजा सम्बन्धी

(5) जाति सम्बन्धी

(6) मानव सुभाव सूं सम्बन्धी

(7) सामान्य कहावतें

Mk- ';ke lnj j e|tc &

(1) विसयानुसार

(2) स्थानानुसार

(3) भासानुसार

(4) जातिनुसार

Mk- dUg;kyky lgy j e|tc &

(1) स्थान सम्बन्धी

(2) समाज सम्बन्धी

(3) शिक्षा–ग्यांन–साहित्य

(4) धरम–जीवन–दरसण

(5) कृषि सम्बन्धी

(6) वर्ष सम्बन्धी

(7) सगुन सम्बन्धी

(8) खेती बाड़ी सम्बन्धी

Mk- lkgunku pkj.k j e|tc &

(1) मानव अर मानवीय जीवण सूं सम्बन्धित

(2) ईसर अर प्रकृति सूं सम्बन्धित

राजस्थानी री चांवी कहावतां रा उदाहरण इण बाबत है –

(क) मानखै सम्बन्धित कहावतां –

(1) मिनखां री माया अर रूंखा री छाया।

(2) लुगाई रौ न्हांवणौ, मरद रौ खांणौ।

(ख) स्थान सम्बन्धित कहावतां –

(1) मारवाड़ मनसूबा में डुबी, पूरव डुबी गांणा मांय।

(2) मारवाड़ में नर नीपजै, नारी जैसळमेर।

(ग) जाति विसेस सम्बन्धी कहावतां–

(1) बींद मरो के बींदणी, बांमण रो टक्को तिंयार।

(2) बांमण जीमण नै राजी।

(3) रजपूती धोरा में रळगी ऊपर रळगी रेत।

(4) नाई री जान में सगळा ई ठाकर।

(5) भील रै कांई ढ़ील।

(घ) लोकविश्वास सम्बन्धी

(1) बांझा ब्यावे नीं टूर बाजै नीं।

(2) थावर कीजै थरपणां, बुध कीजे व्यापार।

(ड़) नीति–सम्बन्धी

(1) सांच नै आंच नीं।

(2) करो पाप खावौ धाप।

(3) पांणी पीजै छांण, गुरु कीजै जांण।

(च) कृषि सम्बन्धी

(1) मेह–मेह करतां बडेरा मरग्यां।

(2) खेती पाती वीनती, मौरां तणी खुजाळ।

(छ) भगवान समबन्धी

(1) देवता तो वासना रा भूखा व्है, परसाद रा थोड़ाई व्है।

(2) भोळा रा भगवान व्है।

(3) खुदा री मैर तो लीला लै'र

(झ) भूत–प्रेत सम्बन्धी

(1) डाकणियां रै किसा गना।

(2) मार आगे भूत ई न्हावै।

इण तरै कहावतां में सास्वत संदेस आधुनिक जीवण रै परिपेख में भी लाभदायक नै मारग–दरसक होवै है।

14-7 jktLFkkuh igfy;k & vkd fuj[k vkd ij[k

राजस्थानी भासा में रचित लोक साहित्य री विधावां में पहेलियां भी मिळै है। मनोरंजन रै साथै बौद्धिक

विकास री दीठ सूं पहेलियां राजस्थानी समाज में घणी चांवी है।

'पहेली' सबद संस्कृत रै 'प्रहेलिका' रौ विकसित रूप है। पहेली नै किणी री बुद्धि या समझ री परीक्ष लेण रै काम में लियो जावै है। पहेलियां बूझण री कळा अठै प्राचीन भारत में 64 कळावां में मानी जावै है। संत महात्मावां नै आपरै भजना में पहेलियां गूंथी ही। राजस्थान अर दूजा प्रान्तां में जमाई री वाक–चतुराई जांचणै खातर कैई पहेलियां प्रयोग में ली जावती ही। इणांनै आडी, आडवी, पाळी आद नाम सूं भी जाण्यौ जावै है।

पहेलियां नै ''हिवाळी साहित्य'' भी कैयो जावै है। पहेलियां रौ मूळ उद्देस्य मनोरंजन अर लोक संस्कृति री अभिव्यक्ति है। पहेलियां ग्यांन री अनमोल निधि है। ब्याव रै पछे सालियां नै अडौस–पडौस री लुगाईयां द्वारा जमाई सूं पहेलियां पूछण री भी लाम्बी परम्परा री है। गांव में चौपाळां माथै बूढ़ा–बढ़ेरा अजै भी पहेलियां सूं मन बहलाव करै है।

उच्छब–तिंवारा माथै लुगाईयां पहेलियां पूछ–पूछ ने आपरै हिये रै उच्छाह नै प्रकट करै है। अै पहेलियां भी भांत–भांत विसयां सूं सम्बन्ध राखै है। राजस्थानी पहेलियां में दैनिक उपयोग री कैई चीजां रौ बरणाव मिळै है। ज्यां – ताळौ, दीयौ, हळ, चरखा, तलवार आद।

पहेलियां रा वरण्य–विय बौत व्यापक नै विस्तृत है। इणांरी संख्या सिमरध सतत गतिमान है।

पहेलियां रौ वरगीकरण– राजस्थानी पहेलियां रा वरण्य विसय भी न्यांरा– न्यांरा होवै है। भोजन सम्बन्धी, घरेलु वस्तुवां सम्बन्धी, प्रकृति सम्बन्धी, पसु–पखेरूवां सम्बन्धी, आभूसण अर परिधान, खेती–बाड़ी सम्बन्धी, काम–धंधे सूं सम्बन्धित, देवी–देवतावां सम्बन्धी आद रूपां में मिळै है।

¼d½ 'kjhj lEcU/kh &

(1) अचरज आवै मरणूं जीवणूं तुरन्त बतावै (हाथ री नाड़ी)

(2) सर–सर आवै नै सर–सर जावै, सिद्ध पुरुस नै घणौ सुहावै। (सांस)

(3) साथ में आवे साथ में जावे, लुके नहीं पण लुकावै (वाणी)

¼[k½ tho&ftukojk lEcU/kh &

(1) छोटी सी लकड़ी, तमक तैया, हाथ लगातां हो हो भैया। (बिच्छू)

(2) छोटी सी भीमळी राजा भेळै जीमळी। (मक्खी)

(3) अेक जिनावर अैसो, जिणरी पांख माथै पैसो। (मोर)

(4) काळी हैपण काग नीं, बिल में बैठे नाग नीं। (चींटी)

(5) टेड़ो मेढो हाले, घर बड़तां सीधो हुय जाय। (सांप)

¼x½ ?kj|y| oLr|ok lEcU/kh &

(1) आगे चाली बींदणी, लारै चालै बींद। (सूई–धागौ)

(2) राजा रै अनोखी रांणी, राव्यूं पगां सूं पीवै पांणी। (दीयौ)

(3) अेक सींग री गाय, बीनै घालै जितरौ खाय। (चाकी)

(4) आठ पगां ऊँटड़ी, मगरां पाछै पूछड़ी। (तराजू)

(5) आपरै घर में चतुर कुण। (बुहारी)

(घ) खाद्य–सामग्री सम्बन्धी

(1) छोटो सो गोपाल दास, कपड़ा पैरे सौ पचास। (कांदौ)

(2) देवा रै सिर चढ़ै, इणरौ करो विचार। (नारेळ)

(3) मोतियां रो झूमको, पांणी रो दरियाव। (मतीरो)

(4) एक लुगाई रै पेट में दांत। (ककड़ी री बीज)

(5) नीली कोथळी में हरी मिर्चा रा बीज। (बैंगन)

(ङ) व्यवसाय सम्बन्धी–

(1) अेक नार पीहर सूं आई, पांच खसम दस देवर लाई, अस्सी धीयड़ पेट में लाई, दस गीगला गोदी लाई। (पसेरी)

(च) सस्त्र सम्बन्धी –

(1) काळी सी राण्ड डैर में ब्याई, बाछ्यो छोड़ घरां नै आई। (बन्दूक री गोळी)

(2) काळी छै कोडयाली छै, काला बिल में बसती है। लाल पांणी पीती है, मरदां रै कांधे रैवती है। (तलवार)

इण तरै अै पहेलियां स्त्री समाज में घणी चांवी है। जिणमें घर–गृहस्थी खेती–बाड़ी, व्यापार, खानपान आदसूं सम्बन्धित वस्तुवां रौ उल्लेख लेखौ–जोखां मिळै है। इणांमें आपरी संस्कृति अर इतिहास री जाणकारी भी मिळै है।

14-8 bdkbZ jk lkj

इण इकाई रै सार रूप में औ कैयो जा सकै है कै राजस्थानी लोकसाहित्य सतरंगौ नै निराळौ रैयो है। देस री ग्रामीण संस्कृति सूं रूबरू व्हैणौ है तो लोकसाहित्य री महत्ता घणी महताऊ है। लोक साहित्य री अै भांत–भांत विधावा में लोक जीवण, मनोरंजन अर संस्कृति री छट्टां निहारण मिळै है। जुग–जुगान्तर सूं पनपी अै विधावां राजस्थान री संसकृति री प्राण बणी व्हीं है। आ विधावा रै द्वारा मानव समाज आपरै सामाजिक अर सांस्कृतिक जीवण में सुख–दुख रै मनोभावां नै प्रकट करतौ रैयो है। लांककथा, लोकगाथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोक कहावतां अर पहेलियां सूं निर्मित औ लोक साहित्य बण्यों है।

14-9 vH;kl jk loky

नीचै लिख्यां सवालां रौ पडूतर दिरावौ–

(1) राजस्थान रा लोकगीतां में राजस्थानी संस्कृति री छवि निराळी रैयी है? कथन री पुस्टि सोदाहरण समझावौ।

(2) राजस्थानी लोककथा अर लोकगाथा रै अन्तर नै स्पस्ट करावौ।

(3) राजस्थानी लोकनाट्यां रै बारे में आप कांई जाणौ हो?

(4) किणी दोय लोकनाट्यां माथै टिप्पणी लिखो–

(अ) तुर्रा–कळंगी (ब) गवरी (स) ख्याल (द) भबाई (य) गैर

(5) राजस्थानी कहावतां मानखै रै जीवण अनुभवां माथै आधारित होवै है? इण कथन री पुस्टि सोदाहरण करो।

(6) राजस्थानी लोकसाहित्य में पहेलियां रौ स्थान निर्धारण करो।

(7) राजस्थानी लोकसाहित्य री भांत–भांत विधावां माथै लेख लिखो।

14-10 lanHkZ xzUFk lwph

(1) डॉ. सत्येन्द्र – लोक साहित्य विज्ञान।

(2) डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय – लोकसाहित्य की भूमिका।

(3) डॉ. सोहनदान चारण – राजस्थानी लोक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन।
(4) डॉ. महेन्द्र भानावत – राजस्थानी लोक नाट्य परम्परा एवं प्रवृतियां।
(5) सूर्यकरण पारीक – राजस्थानी लोकगीत।
(6) नानूराम संस्कर्ता – राजस्थान का लोकसाहित्य।
(7) डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा – राजस्थानी लोकगाथा।
(8) डॉ. कन्हैयालाल सहल – राजस्थानी कहावते – एक अध्ययन।
(9) डॉ. सोहनदान चारण/डॉ. वंदना अरोड़ा – लोक साहित्य स्वरूप और सिद्धान्त।
(10) डॉ. सोहनदान चारण – राजस्थानी लोकोक्ति साहित्य।
(11) डॉ. बाबूराव देसाई – लोक साहित्य।

इकाई - 15

राजस्थानी भासा रा कहावतां अर मुहावरा

इकाई रो मंडांण

15.0 उद्देस्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 कहावतां री ओळखांण अर वर्गीकरण

15.2.1 कहावतां री ओळखांण

15.2.2 कहावतां रौ वर्गीकरण

15.3 कहावतां रौ महत्त्व अर निरमाण

15.3.1 कहावतां रौ महत्त्व

15.3.2 कहावतां रौ निरमाण

15.4 कहावतां री उतपत, परिभाषा अर नमूना

15.4.1. कहावतां री उतपत

15.4.2 कहावतां री परिभाषा

15.4.3 कहावतां रा कीं नमूना

15.5 मुहावरां री उतपत, ठौड़, महत्त्व अर परिभाषा

15.5.1 मुहावरां री उतपत

15.5.2 मुहावरां री ठौड़

15.5.3 मुहावरां री परिभाषा

15.6 कहावत अर मुहावरां मांय फरक

15.6.1 कहावत अर मुहावरां मांय फरक

15.6.2 मुहावरां रा कीं नमूना

15.7 इकाई रौ सार

15.8 अभ्यास सारू सवाल

15.9 पढणजोग कीं महताऊ पोथियां

15.0 उद्देस्य

इण इकाई मांय राजस्थानी कहावतां अर मुहावरां बाबत खास-खास सगळी जांणकारी दी जावेगी। इण इकाई नै पढियां पछै 'राजस्थानी कहावतां अर मुहावरां' री सांगोपांग ओळखांण हुय सकै ली।

- राजस्थानी कहावतां अर मुहावरां री अथाह भंडार रौ भलीभांत ठाह पड़ैला।
- विचार बळ रौ विकास व्हैला मागड़ भासा रै खातर लगाव, जुड़ाव अर प्रेम री जाणकारी मिळैला।

- राजस्थानी कहावतां अर मुहावरा रै प्रयोग सूं भासा मांय रौचकता किंया बधै आ ठाह पड़ैला।
- मिनखाजूंण मांय कहावत अर मुहावरां री ओप, बरसाव, छिब अर महत्त्व रै बखांण री जाणकारी मिळैला।

15.1 प्रस्तावना

राजस्थान री वीर भोग्या वसुन्धरा में जठै हजारूं कवियां आपरी काव्य कळा माध्यम सूं राजस्थानी साहित्य री सेवा करी। वठै कितरा ई अज्ञात जन कवियां आपरी सरळ अर सरल वाणी मायं आपरै लौकिक अनुभवां नै जन-जन री निधि बणाई। लोकगीत, पवाड़ा, लोक कथावां, कहावतां अर मुहावरां आद राजस्थानी लोक साहित्य रौ अणमोल खजानौ है।

अठै राजस्थानी लोक साहित्य रौ खेतर घणौ विसाळ है अैड़ौ सायत भारत री किणी दूजी भासा मांय नीं मिळै। अठै भांत-भांत री लोक गाथावां रौ खजानौ मिळै हैं तौ सुबह, सिंझ्या, खेतां मांय, पणघट ऊपर, मेळां अर तीज त्यूहारां रै मोकै माथै गाया जावण वाळा लोक-गीत राजस्थानी संस्कृति रा रूखाळा कैईज सकै। बूढ़ां-वडेरा अर नानी-दादी सूं सुणियोड़ी लोक कथावां, जन-जन नै बहळावण रै वास्तै खैलिजणिया लोक नाट्य, बात-बात में बरतीजण वाळी कहावतां अर भासा मांय चमत्कार करण वाळा मुहावरा, लोक जीवण रै मन मांय रमती पहेलियां-अै लोक साहित्य री मणियां है।

जुगां-जुगां सूं औ साहित्यजन मानस रौ मनोरंजन करियौ है, अर एक जीवण दरसण ई दियौ है।

राजस्थानी साहित्य नै प्राणवान बणावण अर भासा नै नवौ रूप दैवण रौ अणमोल कारज भी कहावता अर मुहावरा पूरा करियौ है।

विगत - मुहावरां रौ इतिहास घणौ पुराणौ है। संस्कृत, पालि, प्राकृत अर अपभ्रंस मांय इणरौ प्रयोग सांगोपांग मिळै है। मुहावरै सूं अरथ किणी खास भासा मांय चावा वै वाक्य अथवा वाक्यांस सूं है जिण सौ अरथ लक्षणा या कै व्यंजना सूं निकळतौ व्है। वौ अरथ जिकौ सबदां रै परतख अथवा साब्दिक अरथ सूं अलग अर विलक्षण व्है। श्री रामनरेश त्रिपाठी मुहावरां री परिभासा दैवता थका लिखियो है' कै ''मुहावरा किणी भासा अथवा बोली मांय परौटिजण वाळौ वाक्य खण्ड है जिकौ आपरी उपस्थिति सूं सगळै वाक्य नै सबळ, सतेज, रौचक अर चुस्त बणाय दैवै है। संसार मांय मिनख आपरै लोक वौहार में जिण-जिण वस्तुवां अर विचारां नै बड़े कौतुहल सूं देखियौ है, समझियौ है अर बारी-बारी सूं उणरौ अनुभव करियौ है, उणनै उणां सबदां मांय बांध दियौ है, वे इज मुहावरा कैईजै है।''

लोक जीवण में घणां'ई मुहावरा चावा है आंमें मिनखाजूण रै संचित अनुभवां री निधि अंवरियोड़ी रैवै है। अै जीवण रै भांत-भांतीलै रंगां सूं सरौबार हुयोड़ा मिळै है। आमांय कठैई गंभीर अनुभव रौ जीवट दरसण भरियौ तौ कठैई हमेस रै गिरस्थ जीवण रौ वैवारिक ज्ञान भरियोड़ौ रैयौ है।

इण भांत मुहावरा भासा रौ सिंणगार है। इणरै प्रयोग सूं भासा में जीवटता अर फुरती रौ संचार हुय जावै है। मुहावरां रै बिना भासा वैड़ी' है जियां लूंण रै बिना भोजन।

राजस्थानी भासा मुहावरा री दीठ सूं घणी राती-माती है। अठै कहावतां मुहावरां रौ अखूट खजानौ है। जितरै तरै री बोलियां राजस्थान परदेस रै अंचळ मांय बोली जावै है, बां सब में अलेखूं री संख्या में कहावतां अर मुहावरा चावा है।

15.2 कहावतां री ओळखांण अर वर्गीकरण

15.2.1. कहावतां री ओळखांण

लोक साहित्य किणी देस अथवा जन-समुदाय री स्वाभाविक चेतना, जीवन, विस्वास अर संस्क्रती रौ सांचौ अर सांगोपांग उणियारौ होवै। समाज री भांत-भांत री प्रवृतियां रौ जिण रूप मांय चित्रण इण में मिळै है वो आपां रै सिस्ट साहित्य

में नीं मिळै। मिनखा जूंण रै क्रमिक बधापै रै साथै लोक साहित्य पूरी तरै जुड़ियोड़ो है। इण वास्तै लोक साहित्य री परम्परावां भी मिनखाजूंण रै जलम अर बधापै री भांत अजर-अमर है।

भारतीय लोक साहित्य रा जूनां उद्धरण रिगवेद मांय मिळै है। इण ग्रंथ मांय जठै लोक गीतां रा अैनांण मिळै वठै फूठरी लोकोक्तियां रा भी दरसण हुवै। महाभारत अर शतपथ ब्राह्मण व एतरेय ब्राह्मण में अलेखूं लोक कथावां रौ समाहार कियौड़ो है। पालि भासा मांय भगवान बुद्ध रै जीवन चरित्र ले'र घणकरी कथावां रौ सिरजण हुयौ है जिकै जातक कथावां रै नांव सूं जगचावी है।

इण भांत लोक साहित्य री परम्परा घणी जूंनी अर चराचर काल सूं अठै रै जनमानस मांय प्रवाहमान हुवती रैयी है।

जद सूं नवी भारतीय भासावां रौ बधापौ भारत रै भांत-भांत रै परदेसां मांय हुवण लागौ, बां भासावां में लोक-रुचि अर सूझ-बूझ रै मुजब लोक साहित्य री सिरजणा हुवण लागी जिणमें उणरी जूंनी परम्परा रै संबंध सूत्र 'ई अलेखूं रूपां मांय विद्यमान है। राजस्थान रै खनै लोक साहित्य रौ अणमौळ खजानौ है। जिण रौ इतिहास अेक हजार बरसां सूं जूनौ है। इण भांत जूंनै काळ मांय अठै रौ लोक साहित्य अलेखूं रूपां मांय फळियौ-फूळियौ है, जिणमें अठै री संस्क्रती री छिब घणैं मनमोवणैं जीवतै-जागतै रूप मांय थरपीजी है।

इण लोक साहित्य री खास विधावां मांय लोक गाथावां, लोक नाट्य, पहेलियां, कहावतां अर मुहावरा घणा बखाण जोग रैया है। कहावतां इणमें आपरी ठावी ठौड़ राखै। कहावतां में लोक-अनुभव रौ कोस (खजानौ) संचिव रैवे है। अनुभव रै सांचै में वै खुद ढळ'र समाज मांय चावी होवै। हरेक कहावत रै लारै कोई न कोई कथा छिपियोड़ी रैवे है पण उणरौ पतो लगावणौ घणो दोरौ है, क्यों'कै वा कथा विसेस समै रै अंधारै सूं लारै रैय जावै है, पण उणरी आतमा सूत्र रूप में कहावत बण'र जन जीवण री बोलचाल नै सबळ बणावती रैवै है। राजस्थानी भाषा इणी दीठ सूं घणी'ज रातीमाती है। जीवण रै हरेक पख अर छोटी सूं छोटी समस्या नैं ले'र अलेखूं कहावतां चावी। दारसणिक तत्वां सूं ले'र जिनावरां-पंखरूवां री अभिलासावां अर जीव जगत रै सूक्ष्म कारज व्यापारां तक नै इणमें ठौड़ मिळी। वास्तव में किणी समाज रौ सांचेलौ म्यांनौ लेवण वास्तै उण समाज री चावी कहावतां नै जांणियां बिना उणरौ ठाह नीं पड़ सकै, इण वास्तै कहावतां री भणांई-गुणांई कैई दीठ सूं महताऊ लागै।

राजस्थानी भाषा में कहावत रै पर्याय रै रूप में 'ओखाणो' सबद चावो है। गढ़वाळी भाषा में भी कहावत रै वास्तै 'ओखाणो' कै 'पखाणो' उपाख्यान सूं बणिया है। राजस्थानी 'ओखाणो' री निरुक्ति भी संस्कृत 'आख्यान' सूं की जा सकै। गढ़वाळी भाषा में कहावत नै 'आणो' अर संस्कृत में आभाणक कैवै। आणो अर आभाणक अेज इज है। आभाणक इज आणौ व्है ग्यौ है। इणमें मूळ धातु 'भण्' है जिणरौ अरथ व्है है 'कहना'।

ऊपर लिख्यै मुजब औ ठाह पड़ै'क कहावत में जिण अनुभव री अभिव्यक्ति होवै है, वा घटना मूळक व्है। इण वास्तै कहावत रै पर्याय रूप मांय अखाणौ, ओखाणो, आणो अर पखाणो जैड़ा सबद चरचित हुया व्हैला।

मंझन रै रचियोड़ी 'मधुमालती' में कहावत रै वास्ते 'उपखान' सबद आयौ है। जियां :-

यह उपखान जानि मन हँसी।

गारुरी ससुर कुठाहर डँसी।।

आ' ईज कहावत राजस्थानी भाषा मांय भी मिळै,

जिंया-'सुसरौ वैद कुठौड़ खाई'

'बाइबल' में ग्यांनी लोगां री उक्तियां नै कहावत कैयौ गयौ है। चावा विचारक ट्रैंच रै अनुसार लोकोक्तियां नै कहावतां अैड़ा कथन है, जिणांरा सिरजणहार अनाम नै अग्यात व्है। कहावतां नै देस अर संस्क्रति रौ अखूट खजानौ कैयौ जाय सकै। राजस्थानी कहावतां तौ घणी अमोलक है। अै नीति-सास्त्र रै साथै जीवण रा सब काम धंधा सूं संबंध राखण वाळी है।

किणी ग्यांन री बात नै सिखावण री कळा रा गुण कहावतां में देख्या जा सकै। इणी वास्तै कहावतां नै नसीहत री कळा भी कैयौ जावै। लोक कहावतां गैहरी चोट करणवाळी अचूक व्यंग्य रचनावां हुवै। कहावतां में अनुभव अर परतखता रौ सार भर्‌यौ हुवै जिणनै सांच रौ साक्षी कैयौ जा सकै। कहावतां, सरल अर आम बोल चाल री भाषा वाळी पण अै हिरदै माथै गैहरौ असर करण में सामरथ वाळी होवै।

अेक व्यक्ति नै कहावत सूं जित्तौ ग्यांन मिळ सकै उत्तौ ज्ञान दूजा साधनां सूं संभव नीं है। किणी परिस्थिति में आदमी नै किण तरै रौ वैवार करणौं चाईजै, औ ग्यांन कहावत द्वारा आसानी सूं हुय सकै। कम सूं कम सबदां में ज्यादा सूं ज्यादा गैहरी नै असरदार बात रौ दरसाव करणौ कहावतां रौ खास गुण है।

15.2.2 कहावतां रौ वर्गीकरण

कहावतां रौ वर्गीकरण-1. मेन वारिंगने-मराठी प्रावर्बस् नामक पुस्तक में कहावतों की कृषि, जीव-जन्तु, अंग प्रत्यंग, भोजन, नीति स्वास्थ्य और रुग्णता, गृह, धन, नाम, प्रकृति, संबंध, धर्म, व्यापार तथा परकीर्ण नाम के चौदह वर्गों में विभक्त किया है। 2. बिहार प्रावर्ब् स के सम्पादक कहावतों के निम्नलिखित 6 वर्ग निर्धारित करते हैं-(क) मनुष्य की कमजोरियों, त्रुटियों तथा अवगुणों से संबद्ध। (ख) सांसारिक ज्ञान विषयक। (ग) सामाजिक और नैतिक। (घ) जातियों की विशेषताओं से संबद्ध। (ङ) कृषि और ऋतुओं संबंधी। (च) पशु और सामान्य जीव-जन्तुओं से संबंधित। 3. डाक्टर शंकरलाल यादव अपनी पुस्तक में लोकोक्तियों के 6 वर्ग करके अध्ययन किया है। (क) जाति परक, (ख) स्थान परक (ग) इतिहास परक, (घ) कृषि वर्षा परक, (ड़) नीति परक, (च) व्यंग्यात्मक।

डॉ. सत्येन्द्र इण बाबत कह्यौ है-'लोकोक्ति के दो अर्थ माने जा सकते हैं-एक पहेली दूसरा कहावतें। बृज में उक्तियों के कुछ रूप और मिलते हैं। वे हैं-अनमिल्ला, भेरी, अचका, ओठपाव, खुसी, गहगढ़ और ओलना।' डॉक्टर सत्येन्द्र कहावतां नै अलग मान'र उणरा सामान्य अर स्थानीय नाम रा दो भेद भी मान्या है।''

डॉ. श्याम परमार कहावतां रौ इण भांत वर्गीकरण कियौ है:- ''विषयानुसार, स्थानानुसार, भाषानुसार, जाति अनुसार। कहावत साहित्य मनीषी श्री मुरलीधर जी व्यास ने इनके दो विभाग (क) सार्वदेशिक व सार्वकालिक (ख) एक देशीय व एक कालीक नाम की सूक्ष्म रूपरेखा द्वारा किया है।''

डॉ. कन्हैयालाल सहल कहावतां रै रूप अर वरण विसय दोनां नै ले'र राजस्थानी कहावतां रै बाबात लिखियौ है:- ''रूपात्मक अध्ययन में तुक, छन्द, अलंकार लौकिक न्याय, अध्याहार, संवाद, संख्या, व्यक्ति आदि सभी उक्त तत्वों पर विचार किया है। 1. वर्ण विषय को लेकर उन्होंने राजस्थानी कहावतों का निम्नलिखित वर्गीकरण किया है-1. ऐतिहासिक, 2. स्थान संबंधी, 3. राजस्थानी कहावतों में समाज का चित्र (क) जाति संबंधी कहावतें (ख) नारी संबंधी कहावतें। 4. शिक्षा ज्ञान और साहित्य-(क) शिक्षा संबंधी कहावतें। (ख) मनोवैज्ञानिक कहावतें। (ग) राजस्थानी कहावतें। 5. धर्म और जीवन दर्शन-(क) धर्म और ईश्वर संबंधी कहावतें। (ख) शकुन-संबंधी कहावतें। (ग) लोक विश्वास विषयक कहावतें। (घ) जीवन दर्शन सम्बन्धी कहावतें। 6. कृषि विषयक कहावतें 7. वर्षा विषयक कहावतें। 8. परकीर्ण कहावतें। अर विषय को हम भी नीचे लिखे हुए वर्गों से वस्तुत: राजस्थानी कहावतों को भलीभांति स्पष्ट कर सकते हैं-1. मिनखांजूण अर उणरी बिरादरी सूं। 2. इतिहास अर स्थान सूं। 3. ईश्वर नीति अर धर्मोपदेश रे जीवण सूं। 4. कृषि, वर्षा तथा लोक शकुन विसवास

से। 5. मनोवैज्ञानिक अर व्यंग्य से 6. प्रकीर्ण परिधि से (क) कहानियां की कहावतें। (ख) राजस्थानी साहित्य की कहावतें। (ग) अन्य कहावतें।''

15.3 कहावतां रौ महत्त्व अर निरमाण

15.3.1 कहावतां रौ महत्त्व

सदियां सूं कहावतां जनता नै सीख देवण रौ काम करती आय रैयी है। जॉनसन रै सबदां में ''हमसे त्रुटि और मूर्खतापूर्ण कार्य इसलिए नहीं होते कि हम कर्म के सच्चे सिद्धान्तों से अनभिज्ञ हैं बल्कि इसलिए कि समय-विशेष पर हम उन्हें भूल जाते हैं। इसलिए उस व्यक्ति को, जो जीवन के नियमों को छोटे-छोटे वाक्यों में आबद्ध कर देता है, यदि मानवता का उपकारी माना जाय तो यह उचित ही है। संक्षिप्त कहावती वाक्य स्मृति पर शीघ्र ही अंकित हो जाते हैं और उनकी बार-बार आवृत्ति होने से वे स्वभावत: ही मनश्चक्षुओं के सामने आते रहते हैं।''

जीवण में फैल्योड़ी अलेखूं मानसिक व्यथावां सारू कहावतां पेटेंट दवा रौ काम करै। वे अेक तरै सूं छोटी-छोटी घूंटी री भांत है जिणनै आसानी सूं संचित कर'र राखियौ जा सकै, सोराई सूं आंनै कठैई प्रयोग की जा सकै अर साव सोरी याद राखी जा सकै अर इणां नै कैयी जा सकै।

सगळी भांत रौ वैवारिक ग्यान कहावतां में अंवेरिजियोड़ी लाधै। किण माथै भरौसौ करणौ अर नीं करणौ, सुख-दुख में किण भांत वैवार करणौ, सगा-संबंधियां अर मित्रां रै साथै कैड़ौ वैवार करणौ, सज्जन अर दुरजण नै किण भांत ओळखणौ आद सगळा प्रसंगा री राजस्थानी कहावतां मिळै। इण सारू कहावतां माथै मनन कर'र इणरै उनमान आचरण करण वाळौ मिनख पक्कावट वैवार कुसळ व्है सकै, इणमें कीं मीनमेख नीं है।

आं नै काम री जाण'र अरस्तू जैड़ा महापुरस ई कहावतां रौ संग्रै कियौ। खुद ईसा मसीह बाइबिल में कहावतां रौ प्रयोग करियौ। कहावतां रा चावा विवेचक ट्रेंच रा सबदां में ''अधिकांश कहावतों में सद्भावना और सामान्य बुद्धि का निदर्शन, स्वाभाविक संतुलन, दया जीवन के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण व्यावहारिक नियम, ज्ञान, मितव्ययिता, धैर्य, अध्यवसाय, पुरुषोचित स्वातन्त्र्य, मानव-स्वभाव का ज्ञान, मित्रों का चुनाव, बच्चों का लालन-पालन, सम्पत्ति तथा विपत्ति में व्यवहार, असीम आकांक्षाओं का संयम आदि के सम्बन्ध में जो उपयोगी संकेत मिलते हैं, व अन्यत्र दुर्लभ हैं।''

सागर में भाटौ फेंकण सूं जिण भांत पाणी री तरंगां चारूं कांनी फैल जावै, उणीज भांत कहावत रूपी तरंगां ई मानव समाज रूपी सागर में रमण लाग जावै। कोई करसौ गाडी हांकता थकां कै बळदां री पूंछ मरौड़तौ थकां कै कोई अग्यानी गांवेती लुगाई बातचीत में कहावतां रौ प्रयोग करती देखी जा सकै।

कहावतां सगळां सारू अलेखूं उपदेसकां रौ काम करै। केई वेळा कहावतां री पांण केई भांत रा संदेहां रौ निराकरण व्है जावै। अरस्तू रा सबदां में ''लोकोक्तियां साखी का रूप धारण किये रहती है।'' इण बाबत किणी कैयो है ''आंपां भलां ई बूढा हुय जावां पण कहावतां आपांणै सारू नवी बणियोड़ी रैवै। मानव-जीवण में अक्सर सगळां खेतरां में कहावतां बापरियोड़ी निंगै आवै। उणारै निरमाण में प्रतिभा री झळक दिखै, उणांरी विनोद-वृति मानव-मन नै हरखित करै, उणांरौ हास-परिहास समाज सुधार रा उद्देस्यां री पूरति करण में मददगार हुवै। मानव-हिरदै कहावतां सारू खुलौ रैवै, वे उणमें झांक'र देखण री खिमता राखै। इण भांत कैयौ जा सकै के कहावतां सदियां सूं मानव-जीवण में घुळी-मिळी निंगै आवै।

15.3.2 कहावतां रौ निरमाण

कहावतां रौ निरमाण मिनखां करियौ कै लुगायां? इण बाबत नारी विसयक कीं राजस्थानी कहावतां देखण जोग है:-

1. लुगाई कै पेट में टाबर खट ज्याय पण बात कौनी खटावै।

2. गाड़ी को फाचरौ, र लुगाई को चाचरौ कूटयोड़ो ई चोखो।

इण भांत कहावतां रौ निरमाण करण वाळा घणा तौ मिनख इज रैया है। पण राजस्थानी में कीं कहावतां रौ निरमाण लुगायां करियौ व्है तौ कीं अजोगती बात नीं है। राजस्थानी री लुगायां केई भांत री कहावतां रौ प्रयोग सैज भाव सूं करै भलांई वे कहावतां उणारै खिलाफ ई क्यूं नीं हुवै।

कैवण रौ मतळब औ है के कहावतां जन-समाज री दीपायमान मणियां है, जिका चिर काल सूं जन-मानस नै आलोकित करती रैयी है। इण सारु मार्लो इणां रा बखाण इण भांत कियौ है, के किणी देस री कहावतां नै पढण-सुणण सूं अेड़ौ लागै के छोटै कमरै मांय अपरिमित खजानौ राख दियौ हुवै।

कहावतां अणमोल निधि है, औ कैयौ जावै, के अरस्तु कहावतां नैं पैलमपोत भेळी करी, इण रै पछै तौ इणरी महिमा घणी चरचीजी।

जग चावा नाटककार सेक्सपियर नै तो कहावतां अैड़ी दायआयी अर मन भायी के उणारौ बरताव नाटकां मांय कियौ अर घणकर नाटकां रा सीरसक भी उणां कहावतां री भांत राखिया। इणी तरै कहावतां, लोकोक्तियां रौ बधापौ हजारूं बरसा सूं साधारण भाषा-भेद रै साथै आज'ई राजस्थान में हुवतौ आ रैयौ है।

15.4 कहावतां री उतपत, परिभाषा उर कीं नमूना

15.4.1 कहावतां री उतपत

1. महापंडित राहुल सांकृत्यायन-कहावत कथा वारता या कहा-वत/कहा-वट-कहावत।

2. लालचन्द्र भगवान गान्धी-प्राकृत में 'कहावत्ता', संस्कृत में 'कथा-वार्ता' सबद रै साथै 'कहावत' सबद रौ नैड़ौ संबंध रैयौ है।

3. डॉ. वासुदेव सरण अग्रवाल-कहावत सबद री निस्चै उतपत रै विसै में अजै तांई अेक मत नीं है। प्लाट कहावत सबद री उतपत कथावत् सूं मानी है, अरथात जिणरै मूळ में कोई कथा हौ। प्राकृत कहाप् धातु सूं भाववाचक संज्ञा बणावण रै वास्तै 'त्त' प्रत्यय जोड़'र-कहापत्त बण सकै है।

4. डॉ. एच.एल.जैन-कहावत री उतपत अजै तांई विचारजोग है। मूळ धातु 'कथ' है, इण में तो मीन मेख'ई नीं है। उण सूं बणियोड़ो कथापित, कथोद्घात या कथावृत्त सूं इण री उतपत हुवणी संभव है। अपभ्रंस में 'अहाणउ' (आभाणक) रौ उपयोग तौ याद आवै है पण कहावत रै किणी पैली रौ नीं।

5. डॉ. भोगीलाल खांडेसरा-'कहावता' (गुज़ कहेवत) रौ पर्याय गुजराती में 'कहेती' ई है।

6. आचार्य मुनि जिनविजय-कहावत सबद रौ मूळ 'कथा वार्ता' है।

7. डॉ. उदयनारायण तिवारी-संस्कृत में कहावत रै वास्तै लौकिक न्याय उकति सबद रौ प्रयोग हुवै है। दूजी आर्य भाषावां में कहावत रै वास्तै नीचै लिख्या मुजब सबद चावा है:-

उर्दू	-	जुर्बल मिस्ल
बंगला	-	प्रवाद वाक्य, प्रचलित वाक्य
मराठी	-	म्हण, म्हणणी, आणा, आहणा, न्याय, लोकोक्ति (इणमें म्हण अर म्हणणी घणी चावी है।)
गुजराती	-	कहेवत, कहेणी, कथन, उखाणु

लहंदी – अखाण

गढ़वाली – पखाणा

चावा अर ठावा विद्वानां कहावतां री परिभाषा इण भांत की है–

15.4.2 कहावतां री परिभाषा

(1) अेक री सूझ जिणमें घणां मिनखां रौ चातुर्य भेळौ व्हे। – लार्ड रसेल

(2) जनता में निरंतर व्यूहत हुवण वाळा छोटा–छोटा कथन। – जॉनसन

(3) जनता मांय चावौ कोई छोटौ 'क सारगरभित वचन, अनुभव अर निरीक्षण निस्चै या सबां नैं ग्यात किणी सत नै परगट करण वाळी कोई छोटी उकति – आक्सफोर्ड–इंगलिस डिक्सनरी

(4) कहावत ग्यांनी जनां री उकतियां रा निरूपण है। – बाइबिल

(5) कहावतां वै चावी अर ठावी उकतियां हैं, जिणरी विलक्षण ढंग सू रचना हुई है। – इरेस्मस

(6) कहावतां वै छोटा वाक्य है, जिणमें सूत्रां री तरै आदिम मिनखां आपरी अनुभूतियां नै भर दी। –ऐग्रिफोला

(7) कहावतां छोटा–छोटा वाक्य है जिका जीवण रै आदि कालीन अनुभवां नै समेटियोड़ा व्है। –सर्वेटीस

(8) कहावतां वै रतन है जिकै अनन्त काळ री अंगुळी मांय हमेसूं चमकता रैवे। –टेनीसन

(9) कहावतां ज्ञान री संक्षेपीकरण है। –जूबर्ट

(10) वै कथन जिकां अनाम हैं, जिणरै रिजणहार रौ पतो नीं। –ट्रैंच

(11) कहावतां आपां रै देस री निधि है, जिका प्राचीन महानता री परिचायक है।

–भारतीय कृषि कहावतें–रामेश्वर अशान्त

(12) वैवारिक जीवण मांय मारग दरसक वचन। –फीरस्ते

15.4.3 कहावतां रा कीं नमूना :

1. अकल सरीरां ऊपजै दीयां लागै डाम–दूजा लोगों रै सिखावण सूं समझ कोनी आवै नीं, बा तौ खुद रै हीया में ई उपजै है।
2. अठीनली छियां ऊठी नै आयां सरै–सुख अर दुख बारी–बारी सूं सगळां रै जीवण में आवै ई है, कुण हमेसा ई सुखी रैवै अर कुण हमेसा ई दुखी रैवै है।
3. अणभणियां घोड़ां चढ़ै, भणिया मांगै भीख–जिन्दगी में अणपढ़ मौज करै अर भण्या–गुण्या लोग दुख पावै है औ तौ तगदीर रौ खेल है।
4. अलूणी सिला कुण चाटै–लाभ रै बिना कुण काम करै है।
5. आक में आंबो नीपज्यौ–ना कुछ रै कुळ में गुणवना पुत्र जनम्यौ है। अणहोनी बात व्ही।
6. आखड्यां चेतो हुवै–ठोकर खाय नै आदमी हुस्सार होवै है।
7. आगो दिया पाछौ पड़ै–घणौ मालदार।
8. आज हमां तो काल तमां–दुनिया में अेक–दुजांसू काम पड़ै ई है।
9. आभौ रातौ मेह मातौ–बरसात री रुत में दिन उगतां दिन आथता बादळा राता हूवै तौ सांठौ मेह हुवण रौ अन्दाज हुवै।

10. आम फळै नीचे लुळै अैरंड आकासां जाय–बडो आदमी धनवान् हुवण पर ई मान–आदर सूं दरजौ पावण पर नरमाई राखै अर ओछौ आदमी इतरावै है।
11. आंधा रौ तन्दूरौ रामदेव जी बजावै–निबळां री मदत भगवान करै है।
12. इंदर–री मां तिसी फिरै–मातबर आदमी (आछा खाता–पीता आदमी) गरीबी सूं रैवे कै दूजां सूं मांगतौ फिरै।
13. उधार घर री हार–उधार देवणो खोटो है।
14. अेक दिन पावणौ दूजै दिन अणखावणो–पांवणौ थोड़ो रैवे तोई चोखो लागै है।
15. ओछी पूंजी धणी नै खाय–थोड़ी पूंजी सू दूकानदारी करबा सूं नुकसान हुवै है।
16. कदै घी घणा, कदे मुट्ठी चिणा–जिन्दगी में सगळी टेम अेकसी नीं हुवै, उतार–चढ़ाव आंवता ई रैवै।
17. काळ में इधक मासौ–संकट में और संकट आवणौ।
18. कांकरा कंवळा हुवै तौ छाळियां कद छौड़े–जे सहजां ई फायदौ हुवै तौ बीं नै कुण छोड़ै?
19. खारी बोली मावड़ी ने मीठी बोली लोक–मायड़ रौ तौ खारौ बोलणौ भी सन्तान रै फायदै रै वास्तै इज हुवै है।
20. खावै सूर कुटीजै पाडा–गलती करै जका नै डंड नीं देय'र जद किणी दूजा नै डंड देवै तो आ कहावत काम में आवै। ई रौ भाव है–गळती कुण करै ई अर, डंड कोई बीजो ई भोगै।
21. घर में नाणा बींद परणीजै कांणा–पईसां सूं सगळा काम हुय सकै है।
22. घी अंधारा ईं ही छानौ को रै नीं–आछी बात छिप्योड़ी नीं रेवै।
23. चतरा री च्यार घड़ी मूरख रौ जमारौ–हुंस्यार आदमी जिण काम नै थोड़ीक टेम में कर लेवै उण नैं मूरख उमर–भर नीं कर सकै।
24. ऊंदरै रा जाया बिल ही खोदसी–बंस रौ सुभाव नीं बदळै।
25. चोर रा पग काचा–गळती करवा आळा नित ई डरै।
26. छदाम रौ छाजलौ टकौ गंठाई रौ–थोड़ाक फायदा रै खातर घणौ खरच हुवणो।
27. जहर खावण नैं ई टको कौनी–बिलकुल गरीब।
28. ठावे–ठावे टोपली बाकीं नैं लंगोट–खास–खास लोगां री बूझ कर'र दूजा सैंग लोगां नैं कींई नीं गिणनो।
29. डाकण्यां रै ब्यांव में न्योतार रौ गटको–दुष्ट लोगां रौ पास पड़ोस ई दुख देवै।
30. डूंगरां नैं किसी छियां हुवै–समरथ आदम्यां री मदत गरीब नीं कर सकै।
31. तोत रा घोड़ा किताक चालै–छळ सूं काम नीं निभै।
32. दमड़ी री हांडी बजाय'र लेवणी–मामूली चीज ई खूब देख–जोख कर ई लेवणी।
33. देखती आंख्यां माखी कोनी गिटीजै नीं–जाणबूझ कर खोटा काम में हाथ नीं घालीजैं।
34. दो मामां रौ भांणजौ भूखौ रैवै–सोमलात रौ मामलौ खोटौ हुवै।
35. नकटा देव सूरड़ा पुजारी–जिस्या नैं तिस्यौ मिळै।
36. नटियौ मूंतौ नैणसी तांबौ देण तलाक–पक्की बात।
37. नीची बोरड़ी नैं सै कोई धूणै–छोटा नैं सगळाई सतावै।
38. नेम निमाणै धरम ठिकाणैं–आखिर धरम री इज जीत हुवै।

39. पाणी-पाणी री ढाल बेवै-काम काम रै तरीकै सूं हुवै।

40. पी'र भरौसे धाबळियौ ई बाळयौ-आंवता आछा दिनां री आस मांय वर्तमान रौ नास कर दीनौ।

41. पूत रा पग पालणै में पिछाणीजै-होणहार रा आसार पैली ई दीख ज्यावै।

42. पोसाळ में कांगसिया जोवै-कठैई कीं चीज री मिळगत बिळ्कुल नीं हुवणी।

43. पग पिणियारी गावै-घणी थकावट।

44. फूटा भाग फकीरां रा भरी चिलम गुड़ ज्याय-भाग खोटा हुवै बण्यौ-बणायौ काम बिगड़ ज्यावै।

45. बाळक देखै हीयौ, बूढ़ो देखै कीयौ-बाळक प्रेम सूं अर बूढ़ौ काम सूं राजी हुवै।

46. बूठै री बात तौ बटाऊ केवैला-सगळां में जाहिर बात लुकीजै कोनीं।

47. बैठी सूती डूमणी घर में घाल्यौ घोड़ो-आराम सूं रहतां थकां आफत बुलावणी।

48. बोल्या'र बोया-मुंडै सूं बोलता ई खोटी बात निकळै।

49. भागी रै भूत कमावै-भाग्यवान् नैं बिगर मैनत ई फायदौ हुवै।

50. रायां रा भाव रात्यूं गिया-मौको चूक गा।

15.5 मुहावरां री उतपत, ठौड़, महत्त्व अर परिभाषा

15.5.1 मुहावरां री उतपत

मुहावरां रौ स्थान संसार री सगळी भाषावां मांय विसेस है। मुहावरा अर कैणावतां (कहावतां) रै कारण किणी भाषा'र संस्क्रति रौ सांचौ सरूप जाणीजै है। जिण देस रा जिसा लोक जिसौ, जळवायु बिसी उवांरी बोलचाल री भाषा उणारौ भेस अर उणारौ सुभाव। अंचल विसेस-री संस्क्रती रौ जिण तरयां भाषा मुंडौ कैईजै, मुहावरा उण अंचळ विसेस में चालू बोळचाल अर वैवार री आतमां मानीजै। बिना मुहावरा री भाषा इयां दीसै जियां बिना पाग रौ बाणियौ। जित्ता मोकळा मुहावरा सक्ति मानीजै। मिनख लुगायां मांय हरख बधावण अर सादी ब्यांव रा औसर उछाव, सुख-दुख रा आपसी बखाण, जीवण मौत रा गैरा प्रसंग, अर नेह विछोह रा निरा नवा रूप, इण सगळां रा आंचल सारू रंग जितना मुहावरा रै मांयनै मिळै उतरा और कठैई कदास'ई मिळै इणी बात रौ ध्यान राख'र जीवण रै बिसेस-बिसेस प्रसंग रा मुहावरा सम्पादित हुया है।

'मुहावरौ' अरबी भाषा रौ मूळ सबद है। औ 'हौर' सबद सूं बणियौ है, जिणरौ अरथ है-बातचीत करणौ कै सवाल रौ जबाब दैणो। अंग्रेजी भाषा में इयै नै, 'इडियम' कैवै।

संस्क्रत अर हिन्दी में मुहावरै रौ कोई अरथबोधक सबद नीं मिळणै रै कारण कोई इयै नै 'वाग्धारा' तौ कोई 'भाषा सम्प्रदाय' कैवणौ वाजब समझै। कैई विद्वान इणनै 'वाक्पदद्धर्ति' 'वाक्रीति', 'वाक्व्यवहार', 'वाक् सम्प्रदाय', 'प्रमुक्तर', 'रूढ़ि', 'वाक् वैचित्र्य', 'वाग्योग', 'इष्ट प्रयोग' कैवणौ ठीक मानै है। अे सगळा सबद घड़ियोड़ा है अर इणां रौ प्रचार जाबक ई थोड़ौ है।

धीरै-धीरै ओ लोगां रौ लाडलौ वण'र बा में रम-फैलग्यौ है। पछे बुद्धिमानं लोगां इणरै अण-ओपतै गंवारू रूप नै सुधार'र इणरौ रूप निखार लियो है।

बोलचाल में सगळां सूं पैली किणी ई भाषा में 'मुहावरा' नीपजै है। पछै वे बोली सूं 'विभाषा' उर उण सूं 'भाषा' रै खेतर में जाय बड़ै है।

बोली, विभाषा अर भाषा रौ मुहावरां सूं नैड़ौं नातौ है इण कारण पैला इणां रै ऊपर विचार कर लेवणौ ठीक रैसी।

बोली–बोली रौ मुतळब उठतै–बैठतै सूंवतै–जागतै, खांवतै–पीवतै समै री घरेलू बातचीत सूं है। इणरौ खैतर विसाळ को हुवैनी, कदैई–कदैई तौ अेक 'ई गांव में बोलीजण वाळी बोली में मोकळौ भेद रैवे है। इणमें साहित जानक ई को मिळैनी।

विभाषा–किणी अेक प्रान्त तथा उप–प्रान्त री बोलचाल अर साहित री रचनावां री भाषा नै 'विभाषा' कैवे है। बोली सूं इण रौ खैतर मोकळौ मोटौ हुवै है। इणनै लोग 'प्रान्तीय भाषा' पण कैवै है। असल में 'बोली रौ ई सुद्ध', बधियोड़ौ अर व्याकरण रै नेमा मुजब बणियोड़ौ रूप ई 'विभाषा' हुवै है।

भाषा–केई प्रान्तां अर उप प्रान्तां में बापरीजण वाळी अेक सुळझियोड़ी चलत 'विभाषा' ई 'भाषा' कैसबावै है। आ भाषा, विभाषांवा ऊपर आपरौ प्रभाव नाखती रैवै है अर बौत–सा सबद अर मुहावरा उणां सूं लेंवती रैव।

आपनै रै मन रै भावां नै खुलासा तौर पर प्रगट कर 'र बीजा नै समझाय दैवण रै साधन रौ ई नांव 'भाषा' है। वे सगळै सारथक सबद अर मुहावरा जिकां नै आपां मूंडै सूं काढा हां अर वे सगळा क्रम ई जिण में आपां वा सबदां अर मुहावरां नै बापरां हां भाषा रै मायंनै आय जावै है।

आक्रति बणाय 'र दूसरां सूं तथा अस्पष्ट धुनियां सूं ईं आपरा विचार किणी हद तांई बीजां पर प्रगट किया जाय सकै है। जियां–मूंडो चढाय लेवणौं, आंख्यां लाल कर लेवणी, बूक मांडणी, आंख्यां फाड़णी, खड़–खड़ कड़ी खड़कावणी, पग पीटणां अर ताळी बजावणी इत्याद।

15.5.2 भाषा में मुहावरां री ठौड़

1. 'मुहावरा' सूं संक्षिप्त सोरी, स्पष्ट फूठरी अर जोरदार बणै।
2. 'मुहावरा' सूं किणी बात नै उजागर करणै में घणै सबदां री जरूरत को पड़ैनी अर घड़ी–घड़ी बात नै दुहरावण रै दोस सूं बंचियौ जाय सकै।
3. 'मुहावरां' सूं भासण में चमक अर सोवणोपण आवै।
4. 'मुहावरां' सूं साधारण प्रयोग करतां बधारै अर बैगो असर पड़ै।
5. 'मुहावरां' सूं भाषामूळक पुरातत्व ज्ञान, ज्ञान प्राप्त करणै में घणी सायता मिळै।
6. 'मुहावरां' में रिसियां–मुनियां, संत–मातमावां अर देस भगत सहीदां री स्मृतियां ढाबी मिळै।
7. 'मुहावरां' सू किण समाज रै, मामूली तौर पर पूरै राष्ट्र री सांस्कृतिक फेर–बदल री थोड़ी–घणी जाणकारी मिलै।
8. 'मुहावरां' सूं पूरांणी सभ्यता संस्क्रति अर मत–मतांतरा रै न्यारै–न्यारै रूपां रौ ज्ञान सोरप सूं हुय जावै है।
9. 'मुहावरां' में किणी राष्ट्र रौ अतीत निश्चित अर स्पष्ट रूप सूं उबरियोड़ौ रैवै है।
10. 'मुहावरां' भाषा रा जीवण अर प्राण हुवै है। इणां में मानखै री साधारण परम्परावां रा चित्र रैवै है।
11. 'मुहावरां' में व्याकरण अर तरक–सम्बन्धी गड़बड़ियां हुवतै थकां पण उणां रौ आपरौ किणी भाषा में महत्त्व रैवै है।
12. 'मुहावरां' भाषा रौ सिंणगार है, सगती है, फुटरापै अर भाव विकास सारू इणां री सरजणा हुई है। भाषा में (साहित में) इणां री बरजणा–उपेक्षा वाजब कोयनी।
13. 'मुहावरा 'रै व्याकरण रै नेमां नै उलांघतै थकां पण उणां रै उरथ प्रगट करणै री सगती में अड़चन को पड़ैनी उल्टी उण में सायता मिळै है। इणी 'ज कारण मुहावरा नै भाषा रा भूसण समझणा जौयीजै–कळंक नीं।
14. 'मुहावरां' किणी भाषा री श्रेष्ठता, व्यापकता अर लोक–व्हाळै पण री कसौटी है।
15. 'मुहावरां' बायरी भाषा वैगी 'ई निस्तेज, नीरस अर प्राणहीण हुय जावै है।
16. मुहावरै–छोटे सैक में जिकै भाव भरिया रैवै है। उनरी जथारथ व्यंजणा आछै सूं आछै सबदां में हुवणी ओखी है।

17. किणी पद या वाक्य में बरतियोड़ै मुहावरै रै सबदां री जागा कदास बीजा सबद राख दिया जावै, तो वो, पद-वाक्य साचांणी जावक निरजीव हुस जासी अर बैरौ सगळो, फुटरापो व रौचकता खतम हुय जासी।

ऊपर लिखी बातां रै परवती, भळै, बीजी अमोळी बातां, 'मुहावरा' में ठावी अर बचियोड़ी लाधै है। जियां-

1. 'मुहावरां' में इतिहास रौ रूप-1. जुधिष्ठर होवणो, 2. द्रोपदी रौ चीर होवणो, 3. लाट साब होवणो, 4. सतवंती सीता होवणो, 5. राखस होवणो।
2. 'मुहावरां', में धरम रौ रूप-1. श्री गणेस करणो, 2. राम-राज होवणो, 3. राम राजी होवणो, 4. राम नीसरणो, 5. जै माताजी री करणी।
3. 'मुहावरां' में संस्क्रति रौ रूप-1. गंगा न्हावणो, 2. कंठी लेवणी, 3. टूणा-टामणां करणा, 4. इग्यारस करणी-करावणी 5. पींपळ पोखणो।
4. 'मुहावरां' में समाज नै बिगाड़णियां नै खरी-खोटी, 1. गधो होवणो, 2. उल्लू होवणो, 3. कसाई होवणो, 4. चंडाळ होवणो, 5. भंवरो होवणो, 6. डाकी होवणो।
5. 'मुहावरां' में सास्त्र, 1. वेद व्यास होवणो, 2. माघ पिडंत होवणो, 3. खट सास्त्री होवणो।
6. 'मुहावरां' में प्राचीन मुद्रावां अर धातां

   1. अकबरी मोहर, 2. जैपुरी मोहर, 3. सोटंच रौ सोनो होवणो, 4. गिन्नी रौ सोनो, 5. कथीर निकळणो।
7. 'मुहावरां' में व्यंग्य (घणैं में कैंवणो) 1. जैपरी लोटो, 2. थाळी रौ बैंगण, 3. दो मूंडा री बोधी 4. पैणो सांप 5. लजवंती रौ पान।

15.5.3 मुहावरां री परिभाषा

देस-परदेस रै जाणीता-मानीता विद्वानां, भाषा-सास्त्रियां अर कोसकारां 'मुहावरै' री परिभाषा अरथात मुहावरौ कैंने कैवे है-उण रै उरथ-विस्तार री हटबंधी कठै तांई होवणी जोयीजै, री बाबत आप-आपरा मत नीचै लिखै माफक दिया है जिकै नै भली-भांत समझणों अर उण ऊपर गम्भीरता पूर्वक मनन करणो घणौ जरूरी है:-

हिन्दी शब्द कोश रै मुजब 'मुहावरौ संज्ञा. पु.-लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य या प्रयोग, जो किसी एक ही बोली या लिखी जाने वाली भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष से विलक्षण हो, अभ्यास, आदत। जैसे-खाना।'

हिन्दी सबद सागर में लिखियौ है-''मुहावरा संज्ञा, पु.-लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य या प्रयोग जो किसी एक ही बोली अथवा लिखी जाने वाली भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थ से विलक्षण हो। किसी एक भाषा में दिखाई असाधारण शब्द योजना अथवा प्रयोग। जैसे लाठी खाना। 'खाना' शब्द अपने साधारण अर्थ में नहीं आया है, लाक्षणिक अर्थ में आया है। कुछ लोग इसे 'रोजमर्रा' या बोलचाल भी कहते हैं।''

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में मुहावरा रै बारै में इण भांत लिखियौ है-''शब्दों, व्याकरण सम्बन्धी रचनाओं, वाक्य (रचनाओं) में वर्णन का वह ढंग जो किसी भाषा के लिए विशिष्ट हो, कभी-कभी किसी भाषा की विचित्रता भी, एक विभाषा, ग्रीक इडियोमा, कोई विचित्र और व्यक्तिगत चीज।''

इन्टरनेशनल डिक्शनरी (वेवस्टर) में मुहावरा रौ वरणाव इण भांत व्हियौ है:-''किसी जाति-विशेष अथवा प्रान्त या समाज-विशेष की भाषा या बोली। किसी भाषा का विशेष ढांचे में ढला वाक्य। वह वाक्य, जिसकी व्याकरण सम्बन्धी रचना उसी के लिए विशिष्ट हो और जिसका अर्थ उसकी शब्द योजना से न निकल सके।''

किणी अजूबा अरथ नै परगट करण वाळा वाक्य नै मुहवरा कैयौ जा सकै। ज्यूं-दांतां में तिणकौ दबाणौ।

श्री ब्रह्मस्वरूप शर्मा 'दिनकर' आपरी पोथी 'हिन्दी मुहावरे' में इण बावत लिखै-'मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है बातचीत करना, अथवा प्रश्न का उत्तर देना। परन्तु पारिभाषिक हो जाने के कारण 'मुहावरौं' का प्रयोग विलक्षण अर्थ में किया जाता है। जैसे-पानी-पानी होना, एक मुहावरा है। इसके शब्दों का सीधा अर्थ नहीं किया जाता किन्तु इसका प्रयोग एक विलक्षण अर्थ में किया जाता है 'लज्जित होना'। मुहावरे का निर्णय किसी व्यक्ति विशेष द्वारा नहीं होता। अनेक व्यक्तियों द्वारा बहुत दिनों तक एक वाक्यांश विलक्षण अर्थ में प्रयुक्त होने के कारण मुहावरा बन जाता है। वाक्यांश होने के कारण मुहावरे में उद्देश्य और विधेय का अभव रहता है।

श्री रामचन्द्र वर्मा री पोथी 'अच्छी हिन्दी' में मुहावरां रौ हवालौ इण भांत मिळै : ''शब्दों और क्रिया प्रयोगों के योग से कुछ विशिष्ट पद बना लिए जाते हैं जो मुहावरा' कहलाते हैं। अर्थात् मुहावरा उस गठे हुए वाक्यांश को कहते हैं जिससे कुछ लक्षणात्मक अर्थ निकलता है और जिसकी गठन में किसी प्रकार अन्तर होने पर वह लक्षणात्मक अर्थ नहीं निकल सकता।''

15.6 कहावत अर मुहावरां में फरक

15.6.1 कहावत अर मुहावरा मांय फरक

अबै, अन्त मांय इण दोनूं रै सांगोपांग विवेचण रै पछै इण मांय खास फरक कांई है इणनै आछी तरै आपां समझ लेवां। कारण कै ओ भेद जाणन-समझण में दाना-सैणा विद्वान भी गोटाळै में पड़ जावै है। 'मुहावरै' रै संग्रह री पोथ्यां में भी कहावतां रौ भेळ देखण में आवै है अर आई बात कहावतां रै संग्रह री पोथ्यां बाबत देखीजै है।

कहावत-'कहावत' रौ वाक्य, घणाखरौ सगळी ठौड़ ज्यों रौ त्यौं रैवै है भलांई कदै-कदास कोई सबद आगै-लारै राख दियो जावै। जियां-'नीपी-पोती गार अर पैरी-ओढ़ी नार।' सगळै जणा इण रौ ओ ईज बंधियौ-बंधियौ रूप बोलसी-बरतसी-लिखसी।

'कहावत' रौ रूप अेक वाक्य रौ रूप हौवे है जद कै मुहावरै रौ वाक्यगत प्रयोग कियो जावै है। अरथ री दीठ सूं कहावत अपणै-आपमें पूरण होवै है पण मुहावरौ नीं।

'कहावत' में भूतकाळ रै अणभौ रौ परिणाम अर सिद्धान्त दोनूं रैंवै है।

'कहावतां' में मानव-जाति रै सगळै जीवण रौ घणो लम्बो अणभौ संचै कियोड़ो रैवे है जिकौ पीढ़ी-दर-पीढ़ी होंवतो हुयो आपां तांई पूगै है। अे संसार रै वैवारिक जीवा री चाब्यां (कूंच्यां) रौ काम देवती आई है। जाति रै रीत-रवाज, आचार विचार, सुख-दुख ओण (बगैरा) ऊपर कहावतां सूं चोखो प्रकास पड़ै है।

'कहावतां' जाति रै जिन्दा जीवण री सूचक होवै है। जिकी जातियां घणी आणदी, घणी उछाव-उमंग भरी अर घणी प्रगतिसील होवै है। उणां में ई कहावतां खास तौर पर जलम लेवै है अर प्रयोग में आवै है।

'महावरै' रौ वाक्य, काळ, पुरुष, वचन अर व्याकरण रै बीजै जिका चीज है-नेमां रै माफक बदळती रैवै है। जियां-मूंडो सूजाय लियो, मूंडो सूजाय ले सी, मूंडो सूजायोड़ी राखै है, अजकाळ मूंडो सूजावणो छोड़ दियो।

'मुहावरौ' एक तरै सूं कारज-वैपार है जद कै कहावत एक तरै नैतिक अथवा वैवारिक कथण है।

'मुहावरौ' किणी भाषा री आपरी निजू चाल-ढाल है। जियां मिनखां रा उणियारा न्यारा-न्यारा होवै है इणीज तरै न्यारी-न्यारी भाषावा रां, न्यारा-न्यारा मुहावरा होवै है। पण देस-परदेस री कहावतां में भिन्नता को मिळै नी।

'मुहावरौ' किणी वाक्य रै अरथ में चमत्कार पैदाकर'र असरकारी, जोसीलो अर फड़कतौ बणाय देवै है जद कै कहावत रौ वाक्य में किणरी बात रौ समरथण अर पुष्टी अथवा विरोध अर खण्डण करण सारू बरतीजै है।

'मुहावरौ' साधारण वाक्य में काम आय सकै पण 'कहावत' सारू विसेस वाक्य री जरूरत पड़ै है।

'कहावता' में भूतकाळ रै अनुभव रौ परिणाम अर सिद्धान्त दोनूं रैवे है।

इणां दोनूवां में समानता इत्ती ईज है कै दोनूं रौ अरथ विलक्षण होवै है, दोनूं में व्यंजना री प्रधानता रैवे है, दोनूं रौ ई खास उद्देश्य प्रस्तुत रै मारफत-अप्रस्तुत री अभिव्यंजना करणी है। दोनूं री उतपत अर विकास रौ क्रम घणखरौ समान ई होवै है।

15.9.2 मुहावरां रा कीं नमूना

			अरथ
1.	आंख्या चार हुवणी	-	प्रेम हुवणो
2.	आंख्यां दिखावणी	-	डरावणो
3.	आंख्यां में आवणो	-	अणखावणो लागणो
4.	आंख्या में घाल्यों ई नीं रड़कणों	-	घणो सूधो होवणो
5.	आंख्यां में धूड़ नांखणी	-	ठगणो, धोखो देवणो
6.	आंटा-खोड़ी घालणी	-	कुबद करणी
7.	आडो आणो	-	मदत करणी
8.	आदमी बणणौ	-	समझ लेवणी
9.	कानांटाळी करणी	-	त्यार नीं होवणो
10.	आई गी करणी	-	भूलणो, छोडणो, माफ करणो
11.	आबरू उतारणी	-	इज्जत गमाणी
12.	आडो बोलणो	-	चुबती बात कैवणो
13.	उगणीस-बीस रौ फरक होणो	-	थोड़ो सोक फरक होणो
14.	उपरली कमाई	-	रिस्वत
15.	उलटी माळा फेरणी	-	बुरौ सोचणो
16.	ऊपर रौ काम	-	छोटो-मोटो काम
17.	एक पग अठै एक पग बठै	-	काम में घणो उळझयोड़ो
18.	एकां रा एक्कीस होवणा	-	खूब फूळणो-फळणो
19.	कंठ सूकणां	-	तिस लागणीं
20.	काच्छकड़ो मरणो	-	त्यार होवणो
21.	कंठी बांधणी	-	चेलो मूंडणो
22.	जीव नैं कहाड़ी चढ़ाणी	-	घणी परेसानी करणी, जी बाळणो
23.	कानां रौ काचो होवणो	-	बिना तपास सुणी-सुणाई बात झटकै बिसवात कर लेणो।
24.	कागला उडावणा	-	उमाव सूं उडीकणो
25.	कार तोड़णी	-	बंध्योड़ी मरजादा तोड़णी
26.	कबड्डुयां खेलणी	-	मौज करणी
27.	कबूल करणो	-	साच-साच कहणो

28. कमर पाधरी करणी – थोड़ो सोक सोवणो, बिसराम करणो, घमंड मिटाणो
29. कमर कसणी – पक्की तरै सूं त्यारी करणी
30. करम ठोक होणो – खोटा भाग वाळो होणो।
31. करम में कागला रौ खोज होणो – भागहीन होणो
32. कलम रा कसाई – नुकसाणा करबा आळा राज रा अहलकार।
33. काळजो काढणो – घणो नुकसाण करणो।
34. काळजा में बेझका करणां – घणों दुख देवणो
35. काळजै री कोर – घणो प्यारौ
36. काजल स्या 'रणो – सिंणगार करणो, त्यार व्है 'र वैठणो
37. खटपट होवणी – लड़ाई–झगड़ो होवणो
38. खातो खोलणो – किवी भांतरी गुंवी सरूआत करजी
39. खाम लागणी – ठमणो, आराम होणो
41. खाली बैठो रहणो – बेरुंजगार रहणो
42. खूंटी ताण 'र सोवणो – बेफिकरी सूं सोवणो
43. खेल बिगाड़णो – बणता काम नै बिगाड़णौ
44. खोपड़ी चाटणी – बकवास सूं तंग करणो
45. गंगाजळ उठाणो – साचो होवण री सोगन खावणी
46. गांठ बांध लेणी – मन में बैठा लेणी, पक्को इरादो करणो
47. गोडा ठेकणौ – हिम्मत हारणो
48. गढ़ जीत लेणो – दौरो काम कर लेणो
49. गपड़ चौथ करणी – काम बिगाड़णो
50. घोचो घालणो – होता काम में अड़ास लगाणी
51. घिच–पिच करणी – आनाकानी करणी
52. चकळ–बकळ करणो – बहका, देवणो, घणौ बोलणो, व्यर्थ बोलणौ
53. चालता बळद रै आर देणी – काम करता आदमी नैं हकना 'क छेड़णो
54. चलाचली रौ डेरु होणो – कदीमी रिवाज होणौ
55. चींथड़ा चुगतो फिरगो – गरीबी की हालत
56. चिलम भरणी – खुसामद करणी, गरज राखणी, चापलूसी करणी।
57. चोटी पकड़णी – बस में करणो
58. छांट पड़ै अठै बंदो पड़ै बठै – चालाक होणो, चतर होणो
59. छाती पर मूंग दळणा – सताणो
60. छाती–माथा करणा – बुरी तरै रौणो–पीटणो करणो
62. जड़ पकड़णी – सांठो होवणो
64. जबान देणी – बात पक्की करणी
65. जाळ बिछाणो – षड्यंत्र रचणौ
66. जीव देणो – मर ज्याणो

67. जूत्यां उठावणी – चापलूसी करणी
68. टांग ऊपर राखणी – आपरी बात ऊपर राखणी
69. टिप्पा खाणा – बिगर काम फिरणौ
70. टोटा री राबड़ी – गरीब री मिजमानी
71. ठौड़ रौ ठांव – एक जागा बैठा रैवण आळा, कमजोर, बेमार
73. ठौल्या खावणा – तांणा सुणना
74. डोड पंच बणणौ – खुद नै घणो हुस्यार दिखाणो
76. तांण देणी – घणों जौर देणो
77. ताती लागणी – चोकी नीं लगणी, मन में चुभणी
78. थूक 'र चाटणो – बात बदळ देणी, हां कर 'र ना कर देणी
79. थोबा देवणां – राजी करवा री कोसिस करणी
80. थूक उछाळणो – बिना मतळब बोलणी, निर्थक बोलणौ
81. थांबो लगाणो – सा 'रौ देणो
83. दांता चडणो – लोगां री चरचा रौ विसै बणनो
84. दांता कस्सी करणी – कळह करणी
85. दांत पीसणा – किरौध करणौ, रीस करणी
87. धोळा नैं धोक देणी – बुजुरगां री इज्जत करणी
88. धोळा में धूल पड़गी – बुढ़ापै में बदनामी होवणी
89. नाथ घाळणी – बस में करणो
90. नागाई धारणी – बेसरम बणणौ
91. पगां में पागड़ी मेलणी – रूठयोड़ा नैं मनावणो
92. पापड़ बेलणा – तकळीफ झेलणी
94. पाणी पैली पाळ बांधणी – आगू हुंस्यारी
96. बट काढणो – अकड़ मिटा देणी
98. माल मारणो – मुफ्त में बीजा रौ धन मिलणो
99. मूंडै आणो – परगट होवणो, भर ज्याणो
100. लाऊ-झयाऊ करणो – घणौ लालची होवणो
101. रांदण-खांदण परणो – भारी दु:ख पड़णो।

15.7 इकाई रौ सार

कहावतां अर मुहावरा लोगों रै भावां विचारां री अभिव्यंजना शक्ति नै बढावण में घणौ जोरदार काम करै। जको असर दस-बीस वाक्यां रौ वक्तव्य नीं कर सकै उण सूं घणौ बत्तौ असर अेक छोटी-सीक क्हावत कर नांकै क्यूं कै कहावतां में लोग-बागां रै ज्ञान अर अनुभव रौ तपौ-तपायोड़ौ खरौ निचोड़ रेवै। आंरौ प्रयोग सांमला आमदी रै दिल-दिमाग माथै तीर ज्यूं तुरन्त अर घणौ असर करै। ई सूं अै कहावतां जनबोली रा तीर कहीजै। अेक अरबी कहाबत मुजब भाषा में कहावतां रौ बो इंज स्थान है जको स्थान भोजण में लूंण रौ है। जियां रसोई लूंण बिना पूण कहीजै बियांई कहावतां बिना भाषा रूपरूड़ी अर लोच-लावण्य-भरी नीं होय सकै।

कहावतां री तरै मुहावरां सूं भी भाषा में प्रवाह अर सुन्दरता आवै। वै बात नैं रोचक अर वळी बणावै। 'मुहावरौ'-अरबी भाषा रौ सबद है जीं-रौ मूळ अरथ तो धूरी पर फिरतो रेवणो है पण भाषा रै सन्दर्भ मांय धूरी पर फिरतो रैवणै रौ मतलब है- दोय जणां में सवाल अर जबाब रौ तांतो चालतो रैवणौ, मतलब और व्हायों'क दोय जणां री आपस री बातां, बोलचाल री बातां इज मुहावरौ कहीजै। भाषा में मुहावरां रै प्रयोग सूं आ बात साफ होवै, क मुहावरां रौ प्रयोग बीं रै साब्दिक अरथ नै नीं होवै किणी खास अरथ में इज हुवतो आयौ है। असल में तो मुहावरा लाक्षणिक अरथ में रूढ वाक्यांस है।

कहावतां अर मुहावरा दोन्यू भाषा रौ सिंणगार करै पण दोनूं अेक ई चीज नीं है। दोन्यां में फरक है। कहावत अेक पूरौ वाक्य हुवै अर कथन में ईं रौ प्रयोग ज्यूं रौ त्यूं हुवै पण मुहावरौ पूरौ वाक्य नीं हुवै। बो किणी वाक्य रौ अेक अंस ई होया करै है। ई सूं प्रयोग करती बगत लिंग, वचन अर कारक रै मुजब ईं रौ रूप बदळ ज्यावै है। कहावतां अर मुहावरा भाषा नैं जीवन्त अर बळी बणावै। ई वास्तै ईज भाषा रा पारखी आं रै प्रयोग माथै जोर देवै। अठै खास-खास कहावतां अर मुहावरां री ओळखांण कराईजी है जिका जन मानस में आपरी इधकी अर मेहताऊ ठौड़ राखै। आ इण रा अरथ समझ नै आपरै बोलण में अर लिखण में इणां रौ अभ्यास कर सको। इण भांत कहावतां अर मुहावरा सूं ओ खुलासो होय जावै क राजस्थानी इतिहास अर संस्क्रति री सही ओळखांण करावण वाळै लोक साहित री दीठ सूं राजस्थांन घणौ समरद्ध है। लिखित नीं होयां रै बाद भी जन-जन रै सुख-दुःख सूं सम्बन्धित होवण रै कारण लोक साहित अजर-अमर है। इणरौ रचयिता व्यक्ति विसेस नीं बल्कि पूरौ समाज होवै।

कहावतां अर मुहावरा लोक जीवण री लोक साहित्य रूपी आ संपदा मौखिक परम्परागत रूप सूं अेक पीढ़ी सूं दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होवै।

कहावतां अर मुहावरां, राजस्थानी लोक साहित री गौरव गुमैज पूरण संस्क्रति री ओळखांण करावण वाळौ है। कहावतां अर मुहावरां सूं काव्य मांय रौचकता रौ बधावौ हुवै अर पाठकां नै रस सिक्त कर दैवे। इण मुजब अे काव्य री भासा रौ अणमोल सिंणगार है।

15.8 अभ्यास सारू सवाल

(अ) नीचै लिखिया सवालां रौ पङूत्तर 150 सबदां मांय देवौ-

1. कहावतां अर मुहावरां में मोटो कांई फरक है ?
2. कहावत सूं आप कांई समझो ?
3. मुहावरै री परिभाषा दिरावो ?

(आ) नीचै लिखिया सवालां रौ पङूतर 500 सबदां मांय देवौ-

1. कहावतां अर मुहावरां रौ मिनखाजूण में कांई महत्त्व है ?
2. कहावतां रौ वरगीकरण करावौ।
3. भासा मांय मुहावरां री ठौड़, महत्त्व अर अणरा लाभ कांई व्है। ओळखांण करावौ।
4. मुहावरां री उतपत अर उदाहरण दिराय'र सिद्ध करौ'क मुहावरा भासा रौ अणमोल सिंणगार है ?

15.9 संदर्भ पोथ्यां

1. डॉ. कन्हैयालाल सहल - राजस्थानी कहावतें
2. डॉ. सद्दीक मोहम्मद - राजस्थानी मुहावरा कोस

3. श्री जगदीश सिंह गहलोत – मारवाड़ी कहावतें
4. श्री जगदीश सिंह गहलोत – मारवाड़ की कृषि कहावतें
5. डॉ. कन्हैयालाल सहल – राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन
6. श्री नानूराम संस्कर्ता – राजस्थानी लोक साहित्य
7. डॉ. नारायणसिंह भाटी – राजस्थानी लोक साहित्य
8. श्री मुरलीधर व्यास – राजस्थानी भारती (आलेख)